THE
CARAKA SAMHITA

EXPOUNDED BY THE WORSHIPFUL ĀTREYA PUNARVASU,
COMPILED BY THE GREAT SAGE AGNIVEŚA
AND REDACTED BY CARAKA & DṚḌHABALA

VOLUME VI



EDITED AND PUBLISHED
IN
SIX VOLUMES
WITH TRANSLATIONS IN HINDI, GUJARATI AND ENGLISH
BY

SHREE GULABKUNVERBA AYURVEDIC SOCIETY

JAMNAGAR
INDIA

POPULAR EDITION 1949 RUPEES 75/-

First Impression 1949

4000 Copies

Published by

SHREE GULABKUNVERBA AYURVEDIC SOCIETY, JAMNAGAR.

Printed in India

At The Ayurveda Mudranalaya, JAMNAGAR.

चरकसंहिताया विषयानुक्रमणिका।

Caraka Plants

विषयः पृष्ठाङ्कः

Caraka Animals and Birds

चरकसंहितागतोद्भिज्जद्रव्याणां संस्कृतपर्यायाः।

Sanskrit Synonyms of the Plant Substances mentioned in the Caraka Samhita

अक्षोटः–अखरोट, पार्वतीय, फलस्नेह गुडाशय, कीरेष्ट, मधुराल, स्वादुमज्ज, पृथक्छद, रेखाफल, वृत्तफल, मदनाभफल, अक्षोट, आक्षोट, अखरोट, कन्दराल, आस्फोटक, अक्षोटक, आखोट, मधुमज्ज, बृहच्छद ।

अगुरुः–कृमिज, लोह, राजार्ह, वंशक, लघुलोहाख्य, जोङ्गक, कृष्ण, वर्णप्रसादन, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक, अनार्यक, असार, अग्निकाष्ठ, कृमिगन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज, अनार्यज, कृष्ण, कालागुरु, कृष्णागुरु, वसुक, मंगल्य, विश्वरूपक, काकतुण्ड, शृङ्गारशीर्ष, केश्य, कृशकाष्ठ, धूपार्ह, वलर, मिश्रवर्ग, गन्ध, शीतशालिग, जोंगक, अरुणक, काष्ठक ।

अग्निमन्थः–अग्निमन्थिनी, अरणि, गन्धपत्रा, गन्धपुष्पा, गणिकारिका, जया, नादेयी, कृशानुगा, क्षुद्राग्निमन्थ, लघुमन्थ, तपन, तनुत्वच, तेजोवृक्ष, हविर्मन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, जयन्ती, श्रीपर्ण, तेजोमन्थ, ज्योतिष्क, पावक, आरणि, वह्निमन्थ, मथन, जय, पावकारिणी, अग्निमथन, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, विजया, अनन्ता, नदीजा, तनुत्वक, पित्तमाता, वह्निमूल, अग्निबीजक, विजया, वातघ्नी, तर्कारि, वैजयन्तिका ।

अङ्कोटः–अंकोटक, अंकोठ, अंकोल, बोध, दीर्घकीलक, दीर्घकान्ता, गन्धपुष्प, गुप्तस्नेह, गूढवल्लिका, गुणाढ्यक, कोलक, कंकोल, कंटक, कठोर, लम्बकर्ण, मदन, निकोचक, निकोटक नेदिष्ठ, पीत, पीतसार, रोचन, रेची, रामठ, ताम्रफल, वामक, विषघ्न, विशालतैलगर्भ, भूषित, मलत, दृढकण्टक, गूढपत्र, दीर्घकील ।

अजकर्णः–सर्जक, चलदल, धपाग, चिरपत्रक, ससासंवरक, शूर, शाल, सर्ज, सर्जरस, कालकूट, रजोद्भव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, राल, कार्श्य, सर्ज्जक, मरिचपत्रक ।

अजगन्धाः–खरपुष्पा, वस्तगन्धा, विगन्धिका, कारवी वर्वरा, गन्धा, तुङ्गी, पूतिमयूरिका, सुरपुष्पी, उग्रगन्धा, ब्रह्मगर्भा, ब्राह्मी ।

अजमोदाः–खराह्वा, मयूर, दीप्यक ब्रह्मकुशा, कारवी, लोचमर्कट, बस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोदा, गन्धदला, हस्तिकारवी, गन्धपत्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, ब्रह्मकोशी, विशाला, हृद्यगन्धा, उग्रगन्धिका, मोदिनी, फलमुख्या, विशल्या, दिव्या, हस्तिमयूरिका, खराह्वा, यवानी, दीप्य, मयाह्वा, भूकदम्ब, ब्रह्मदर्भ, क्षेत्रयवानिका, यवसाह्वा, दीपनी, दीप्तिनी, वातारि यवज-दीपनीय, शूलहन्त्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अश्मोदिका, तीक्ष्णगन्धा, हृद्या, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक, यवाग्रज, यवानिका ।

अतसीः–पिच्छला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, क्षुमा, हैमवती सुनीला, नीलपुष्पिका, चणका, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, नीलपुष्पी, पार्वती, मसृणा, तैलोत्तमा ।

अतिबलाः–बलिका, बल्या, भूरिबला, घंटा, कंकती, ऋष्यप्रोक्ता, शीता, शीतपुष्पा, विकंकता, वाट्यपुष्पिका, वृष्यगन्धिका, वृष्यगन्धा, कंकतिका, पीतपुष्पा ।

अतिविषाः–अरुणा, अतिसारघ्नी, भंगुरा, शृंगी, शुक्लवल्लभा, काश्मीरा, मादी, प्रतिविषा, प्रविषा, शिशुभैषज्य,

शोकापहा, शृङ्गी, शृङ्गीका, श्वेता, शुक्लकन्दा, श्वेतकन्दा श्वेतवचा, श्यामकन्दा, उपविषा वीरा विरूपा, विषा, विषरूपा, विश्वा, अमृता, शुक्लकन्द, महौषध शृङ्गी ।

अपामार्गः-अधोघण्टा अधामार्गव, अघाट, अध्वशल्य, अपाङ्गक, चमत्कार, दुर्ग्रह, धामार्गव दुरभिग्रह, कीशपर्णी, किणिही, कान्तरिक, कटिपिप्पली, किणी, कण्टी, खरमञ्जरी, क्षुरक, क्षारमध्य, कुब्ज, कुब्जमालाकण्ट, मर्कटी, मयूरक, पाण्डुकण्टक, पराक्पुष्पी, प्रत्यक्पुष्पी, प्रत्यक्पर्णी, शैखरिक, शैखरेय, शिखरी, स्थलमञ्जरी, तालकण्ट, वशिर, वृत्तफल, कपिपिप्पली, क्षुद्रापामार्ग, आघट्टक, दुरधनिका, रक्तविट्, कल्पपत्रिका, क्षव, प्रत्यक्श्रेणी, स्वरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, ताम्रकण्ट, वण्डकण्ठ, अधःशल्य, पङ्क्ति, कण्टक ।

अम्बष्ठकीः-पाठा, अम्बष्ठा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेशिका, अम्बष्ठिका प्राचीना, पापचेलिका, यूथिका, स्थापनी श्रेयसी विद्धकर्णिका, एकाष्ठीला, कुचेली, दीपनी, वनतिक्तिका, तिक्तपुष्पा, वृहत्तिक्ता, शिशिरा, चक्री, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णा, तिक्ता, विद्धकर्णा रसा, अविद्धकर्णा, पाटिका, अविद्धकर्णी, पाठिका सुस्थिरा, प्रतापिनी, वत्सादनी, मालती, त्रिशिरा, त्रिवृत, वृत्तपर्णी रक्तघ्नी, विषहन्त्री, महौजसी, रुचिष्या, दीपनी वीरा, वल्लिका, वरतिक्ता, वृद्धिकर्णिका, द्विद्विसिता ।

अम्लिकाः-आम्ली, अम्ला अम्ली, पङ्क्ति आम्लिका, आम्लिका, अत्यम्ला भुक्ता, भुक्तिका चुक्रिका, चुक्रा, चिंचका, चिंचा, चुक्र, चरित्रा दन्तशठा, गुरुपत्रा, पङ्क्तिपत्रा, पिच्छिला, सर्वाम्ला, सुचुक्रिका, शाकचुक्रिका, सुतिन्तिडी, तिन्तिड, तिन्तिली, तिन्तिका तिन्तिडीका, तिन्तिडीक, यमदूतिका तिन्तिडी, वृक्षाम्ल, चरित्रा शुक्ता ।

अरिमेद -इरिमेद, परिमेदक गोधास्कन्ध, अरिमेदक, अहिमेद, अहिमारक, अहिमार, पूतिमेद ।

अर्कः-आदित्यपुष्पिका अलर्क, विक्षीर, दीर्घपुष्प, दीर्घपुष्पिका रक्तपुष्प, दिव्यपुष्पिका, गणरूपी, गणरूपक, करवीर, मन्दार, प्रताप, रक्तार्क, राजार्क रुचिरा, सदापुष्प, सदापुष्पी शम्भु शीतार्कक, शिव ह्वय, शुक्लफल, श्वेत, श्वेतार्क, तपन, वसुक, वेधा, श्वेतमल्लिका, शुकफल, शुक्लार्क, श्वेतमन्दार, शर्करापुष्प, क्षीरदल, तूलफल, सदाकुसुम, प्रताप, क्षीरकाण्डक, विक्षीर, भास्कर, हरिदश्व, विवस्वान् अहर्बान्धव, अर्यमा अहर्मणि, उष्णरश्मि, भानु, विकर्तन, गणरूप, मन्दार, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विभावसु सप्ताश्व, सविता, सूनु, आस्फोत, वसुक, हिमाराति, पुच्छी, क्षीरी, खर्जूघ्न, पीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विकीरण, सदापुष्प, सूर्याह्व, आस्फोतक, हरि, कीर, तनुफल, क्षीरार्क, अहर्पति, आस्फोटक, रवि ।

अर्जकः-दीर्घकेशी, निद्रालु रामतुलसी, शोफहारी, सुगन्धी, सुगन्धक, सूक्ष्मपत्रक, सुमुख, मुखक, वनबर्बरिका, त्रिपत्र वृद्धतुलसी, गन्धपत्र, कुठेरक, उग्रगन्ध, बर्बरी, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण सुमार्जक, जम्बीर, कुठेर, कठिञ्जर, सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, गन्धबहुल, पटुपत्रक, श्वेतच्छद पाता, श्वेतपर्णास, आम्रार्जक, तीक्ष्ण, तीक्ष्णगन्ध, कृष्णार्जक, कामल मालुक, कृष्णमालुक कृष्णमल्लिका गरघ्न, वनबर्बर, कृष्णवर्णी, कालपर्णी, करालक कृष्णपर्णी सुरभिमालक, कालमालक, कबरी, तुलसी, लघुपुष्पा, अजगन्धिका, कबरा, खरपुष्पिका सुरभी, तुलसीद्वेषा, सुरसा, अपेतराक्षसी अमुरघ्ना, वर्वा अजगन्धा ।

अर्जुनः-धाराफल, ककुभ, कृष्णत्वक्, निस्सारफल्गु, सारद्रु, श्यामसारक, वनजवृक्ष, वीरवृक्षक पार्थ, कार्तवीर्य, मयूरक, मातुरेकसुत, चित्रयोधी वीरान्तक किरीटी नदीसर्ज, पाण्डव इष्वर, धनञ्जय, वैरान्तक गाण्डीवी, शिवमल्लक, कर्णारि, सव्यसाची कुरुवीरक, कौन्तेय, इन्द्रसूनु वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, फाल्गुन, धन्वी, इन्द्रद्रु, इन्द्रद्रुम, वीर, वीरवृक्ष ।

अवाक्पुष्पीः-शतपुष्पा, मिशि, घोषा, पीतिका, माधवी, शिफा, अतिच्छत्रा, शताह्व, कारवी, संघातपत्रिका छत्रा, वज्रपुष्पा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, बहुला पुष्पाह्वा, शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा सुगन्धा, सूक्ष्मपत्रिका, गन्धारिका अहिच्छत्रा ।

अशोकः-अपशोक, अंगनाप्रिय, विचित्र नक्तपुष्प, दोषहारी दोहली, गन्धपुष्प, हेमपुष्प, कर्णपूरक, कान्ताङ्घ्रिदोहद, कान्ताचरणदोहद, नट, पिण्डीपुष्प, पल्लव, प्रपल्लव, रक्तपल्लव, रामा, रोगितरु, श्यामा, शोकनाश, सुनग,

स्त्रीनिरीक्षणदोहद, शोकहर्ता, स्मराधिवास, ताम्रपल्लव, वीतशोक, विशोक, वञ्जुलद्रुम, वञ्जुलमधुपुष्प, वामांघ्रिघातक, मधुपुष्प, पिण्डपुष्प, वामांकघातन, षट्पदमञ्जरी, चित्रराणी, कंकेली, कंकेल्लि, केलिक, कर्णपूर ।

अश्मन्तकः–कुशली, अणुपुष्पक, श्लक्ष्णत्वक् वनराज, यमलपत्रक, यमपत्र, चन्द्रक, कुद्दाल, अम्लपत्रक, वालुकापर्ण, इन्दुक, अश्मान्त, शिलान्त, इन्दुशफरी, अम्बुद, पाषाणान्तक ।

अश्वगन्धाः–गन्धान्ता, वाजिनामा, हयाह्वया, वाराहकर्णी, वन्दा बलदा, कुष्ठगन्धिनी वाजिगन्धा, कटुका, अश्वावरोहक, वाराहकर्णी, तुरगी, वन्या, वाजिकरी, हया, अश्वकन्दिका, काम्बुका, कम्बुकाष्ठा, वराहिका, अश्वरोहा, वनजा, वाजिनी, हयी, पुष्टिदा, पुण्या, हयगन्धा, पीवरा पलाशपर्णी वातघ्नी, श्यामला कामरूपिणी, कालप्रियकरी, गन्धपत्री, हयप्रिया, वराहपत्री अश्वगन्धिका, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका, बलजा, अवरोहिका पुष्टिपीवरा, फलक, प्रियकरी, कुष्ठगन्धिनी, कुष्ठगन्धा, वरवाजकरी ।

अश्वत्थः–अच्युतावास, अश्वत्थ, बोधिद्रु बोधिवृक्ष, बोधिद्रुम, बोधितरु, चैत्यद्रु चैत्यवृक्ष, चलदल, चलपत्र देवात्मा, धर्मवृक्ष गुह्यपुष्प, गजभक्षक गजाशन गजपत्र गुरु, कपीतन, केशवालय मङ्गल्य, महाद्रुम, नागबन्धु, पवित्रक, विप्रक, क्षीरद्रुम, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, श्यामल, श्रीमान, शुभद, याज्ञिक विप्र, कुञ्जराशन, विशाखा, वृक्षराज, कृष्णावास, हरिवास, देववालय, विप्र, माङ्गल्य गुह्यपत्र ।

असनः–महासर्ज, सौरि, बन्धूकपुष्पक, प्रियक, बीजक, कराम, प्रियशालक, सुनील, बीजवृक्ष, पीतसार, पीतसालक, पीतशाल, पीतशालक, पीतमाल परमायुध, बन्धूकपुष्प, नीलक, प्रियसालक ।

आखुपर्णीः–आखुभू, बहुकर्णिका, बहुपादिका बहुदिवसा बहुपादस्थिता भूमिचरी, चण्डा चित्रा दन्ती, कुलिका, माता, मूषाकर्णी, भूधराश्रया मूषकपर्णी, मूषिकभवा, मूषिकाह्वया, मूषपर्णिका, मूषीकर्णी न्यग्रोधी, द्रवन्तीश्रेणी, पुत्रश्रेणी, पञ्जिका, प्रतीर्णशाखा, पत्रश्रेणी फञ्जपत्रिका, रण्डा, प्रचित्रा, सहस्रमूली, शम्बरी, शतमूलिका, सुवर्णा, सुवर्णिका, अपचित्रा, उन्दुरुपर्णी, वृषा, वृषपर्णी, वृश्चिकपर्णी विक्रान्ता, आखुपर्णी, आखुपर्णिका, उपचित्रा, मूषिका ।

आढकीः–तुवरी, तुल्या, करवीरभुजा, वृत्तबीजा, पीतपुष्पा, वयस्था, मृत्ताल, मृत्तालक, काक्षी, सुराष्ट्रजा, मृत्स्ना, तुवरिका, शणपुष्पिका ।

आत्मगुप्ताः–कपिकच्छु, अजडा, अव्यण्डा, कण्डुरा, जटा, प्रावृषायणी, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बी मर्कटी, कपिप्रभा, शूकपिण्डी, स्वयंगुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बिका, जटा, अव्यण्डा, वृषःशोधा, शूका, शूकवती, गात्रभञ्जा, कच्छूमती, कच्छूरा, ऋषभी कपिकच्छुरा, ऋषभजटा, स्वगुप्ता अजहा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजदा, वानरी, कपोतकच्छू, शूकपिण्ड, शूकपिण्डी, व्यग्रा, मर्कटी, लाङ्गली कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा कपिरोमफला, गुप्ता, दुःस्पर्शा, प्रावृषेण्या, बदरी, गुरु, आर्षभी शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमालु, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या ।

आदित्यवल्लीः–आदित्यभक्ता, वरदा, अर्कभक्ता, सुवर्चला, सूर्यलता, अर्ककान्ता, मण्डूकपर्णी, सुरतम्भना, सौरि, सुतेजा, अर्कहिता, रवीष्टा, मण्डूकी, सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता, भास्करेष्टा, सूर्यावर्ता, रविप्रिया, रविप्रीता, आदित्यकान्ता, सुखोद्भवा, सूर्यभक्ता, सूर्यमुखी, सूर्यलता ।

आमलकः–आमलिका, अमृतफल, वहुफली, धात्रिका, धात्री, धात्रिफल, जातिफल, कायस्था, कर्षफला, पञ्चरसा, रोचनी, शिव, शिवा, शान्ता, श्रीफल, श्रीफली, तिष्या, तिष्यफला, वयःस्था वृष्या, वृत्तफला, आदिफला, अमरा, आमलकी, अमृतफला, अमृता, जातीफल, जातीफलरस ।

आम्रः–रसाल, सहकार, अतिसौरभ, कामाङ्ग, मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, अतिसौरभ, चूतक, फल-श्रेष्ठ, फलोत्पत्ति नृपालक, चूत, षट्पदातिथि, वसन्तद्रु, स्त्रीप्रिय गन्धबन्धु, अलिप्रिय, शरेष्ट, मदिरासख, पिकबन्धु केशवायुध, कोपी, कामशर, परपुष्ट महोत्सव कामवल्लभ, कीरेष्ट, माधवद्रुम, भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस, मधूली, कोकिलोत्सव, वसन्तदूत, मोदाढ्य, मन्मथालय, मन्मथाम, सुमदन, पिकराग, नृपप्रिय, प्रियम्बु, कोकिलावास, वसन्त-पादप, अमरप्रिय, मनोज्ञ, मन्मथावाण, शुकप्रिय, फलोत्तम, मदाढ्य, मञ्जरी ।

आम्रातकः—अम्रात, पीतनक, कपिचूत, अम्लवाटक, शृङ्गी, कपि, रसाढ्य, तनुक्षीर, कपिप्रिय, वर्षपाकी, तनुक्षीरी, कपिचूडा, कपिप्रिया, पीतन, कपीतन, मधुराम्लक, शृङ्गीफल, अम्बरातक, अम्बरीष, अम्रात, अध्वगभोग्य, मर्कटाम्र, तुङ्गी ।

आरग्वधः—अरुज, आरोग्यशिम्बी, आमघ्ना, चक्रपरिव्याध, चतुरंगुल, दीर्घफल, द्रुमोत्पल, हिमपुष्प, ज्वरान्तक, जटामुत्, कृतमाल, कण्डूघ्न, कुष्ठसूदन, कर्णाभरणक, कर्णिकार, कुष्ठघ्न, कुण्डली, महाराजद्रुम महाकर्णिकार, मन्थान, नृपद्रुम, नक्तमाल प्रमेहघ्न, राजवृक्ष रोचन राजतरु, रेचन, शम्पाक, शम्याक, सुवर्णक, स्वर्णपुष्प, स्वर्णद्रु, स्वर्णांग स्वर्णभूषण कृतमालक, व्याधिघात, हेमपुष्प, शेफालिका, स्वर्णवृक्ष, सारफल आरेवत, ज्वरान्तक, हिमपुष्प, व्यथान्तक, स्वर्गस्थाली द्रुमोत्पल ।

आरुकः—आरुक, वीरसेन, वीर, वीरान्तक आलूक भल्ल भल्लूक, रक्तफल ।

आर्द्रकः—शृङ्गवेर, कटुभद्र, वट्टरकट, गुल्ममूल मूलज, वर, कन्दल, महौज, सैकतेष्ट, अनूपज, अपाकशाक आर्द्रिका, राहुच्छत्र, सुशाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, सच्छाक, आर्द्रिका ।

इक्षुः—दीर्घच्छद, भूरिरस गुडमूल, असिपत्र, मधुतृण, मधुयष्टि, विपुलरस, गुडदारु, रसालु कोशकार, इक्षुर, असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक, वंश, कान्तार सुकुमारक, असिपत्र, वृष्य, गुडतृण, मृत्युपुष्प, गुडद, गण्डीरी, खड्गपत्रक, गुडकाण्ड, तृणाधिप ।

इक्षुरकः—इक्षुर, कोकिलाक्ष काकेक्षु, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, शृगाली शृङ्खलि, शरगत, शृगालघण्टी, वज्रास्थि, शृङ्खला, वज्रकण्टक, वज्र शृङ्खलिका, त्रिकेक्षणा, पिच्छिला, भुजनसम्मिता, इक्षुगन्धा, कोकिलनयन, शूरका वीरतरु क्षुर शुक्लपुष्प, कुलहक ।

इङ्गुदी—अंगारवृक्ष, अनिलान्तक, अङ्गुलिदला भल्लकीवृक्ष दीर्घकण्टा, दारुपमफला, गौरवृक्ष इङ्गुद इङ्गुल, इङ्गुलि, त्रिपुत्र, क्षारक, कोष्ठफल, मुनिपादप, पुत्रिपत्रा, पूतिगन्ध, शूलारि, तिक्तक, विषकण्टक, तैलफल, तापसवृक्ष, तापसतरु, तनुपत्र, तीक्ष्णकण्ट, विषगन्धक, विगन्धक, तिक्तमज्ज, तैलबीजा, तापसद्रुम अनिलान्तक, तैलफल, जलजन्तुविनाशक, दीर्घकण्टा, तैलबीजा ।

इन्द्रवारुणी—आत्मरक्षा, बृहत्फला, वृद्धदारुणी, चित्रफला, चित्रवल्ली, चित्रला, दीर्घवल्ली, देवी, गजचिर्भिटा, हस्तिदन्ती, काया, बहुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, महाफला, महेन्द्री, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादनी, रम्या श्वेतपुष्पा, सौम्य, त्रपुसा, त्रपुसी, तंबसी, ऊरुप्रिया, विशाला, ऐन्द्री, इन्द्रा'हा, इन्द्रवारु, गवादनी, क्षुद्रफला, वृषभाक्षी, गवादनी, महेन्द्रवारुणी गजचिर्भटिका विषघ्नी, अमरा, सुवर्णिका, मात, सुवर्णा, सुफला, तारका, इन्द्रवल्लरी, बालकप्रिया ।

उच्चटकः—शितवार, शितिमर स्वस्तिक, सुनिषण्णक श्रीवारक सूचिपत्र, पर्णाक, कुक्कुट, शिखी चितुश, सुनिषण्ण, चञ्चु सुतपत्र, शितिचार, सूच्याह्वय, सूच्याह्व, सूचि, पत्रक, श्रीवारक, बभ्रु, कुक्कुट, कुक्कुट, सूचिदल, श्वेताम्बर, मेघकृत, ग्राहक, शितिवार ।

उत्पलः—इन्दीवर, कुवलय, कुन्दोट, नीलपत्रक, उत्पलक, कन्दोत्थ, सौगन्धिक, सुगन्ध कुड्मलक, असितोत्पल, इन्दिरावर, इन्दीवार नीलाम्ब्र ।

उदुम्बरः—अपुष्पफलसंबन्ध उदुम्बर, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, हेमदुग्धक हेमदुग्ध, हरिताक्ष, जन्तुफल, जघनफल, कालस्कन्ध, कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्षीरवृक्ष, किमिकण्टक, पवित्रक, पुष्पशून्य, पाणिमुख, पुष्पहीन, सौम्य, सदाफल, शीतवल्क श्वेतवल्कल, सुचक्षु, सुप्रतिष्ठित, यज्ञसार, यज्ञिय, यज्ञयोग्य यज्ञफल, यज्ञोदुम्बर, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल, शीतफल, मधुसंज्ञ, जन्तुफल ।

उपकुञ्चिकाः—कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्धा, कृष्णजीरक, वर्षाकाली, काश्मीरजीरक, काली, कालपेशिका हया, उद्गारशोधिनी, कृष्णा, बहुगन्धा, मेदिनी, पटु, भेदनिका, रुच्या, नीला, नीलकणा वान्तिशोधिनी, वाल्मेषी सुगन्ध, सुगन्धा, कृष्णजीर, उद्गारशोधक, उपकुञ्ची उपकुञ्ची, उपकालिका, सुपवी, कुञ्चिका, कुञ्ची, पृथ्वीका, स्थूलजीरक, स्थूलकणा, पृथु, मनोज्ञा, जारणी, जीर्णा, तरुणी ।

उपोदिका:–उपोदक, पोतकी, मालवा, अमृतवल्लरी, कलम्बी, पिच्छिला, पिच्छिलच्छदा, मोहिनी, मदशाक, विशाला नलिपोदकी, उपोदिका, उपोती, वृश्चिकप्रिया, अपोपिका, पूतिका पूतीका ।

उशीर:–मृणाल, अभय, समगन्धिक, रणप्रिय, विरतर, वीर, वीरणमूलक नलद, अमृणाल, सेव्य अवदाह, जलाशय, लामज्जक, लघुभय, इष्टकापथ, लघुलय, अवदात, अवदाहेष्टकापत्र, इन्द्रगुप्त, उशीरक, जलवास, हरिप्रिय, वीरण, रणप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद गन्धाढ्य, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्भु, कटायन, वीरभद्र, बहुमूलक, तृणवालुक जलवास हरिप्रिय ।

एरका:–गुन्द्रमूला गुन्द्रा, शरी, शिम्बि, शिम्बिगुन्द्रा, गुन्द्र, पटेरक रुच्छ, शृङ्गवेराभमूलक, शिविर्गुन्द्रा ।

एरण्ड:–आमण्ड, अमङ्गल, अमण्ड, चित्रक चंचुक, चित्रबीज, कान्त, दीर्घदण्डक, दीर्घदन्तक, गन्धर्वहस्तक, गन्धर्वहस्त, इरड, पञ्चाङ्गुल, रुबूक, शूलशत्रु, शुक्र, स्नेहप्रद, त्रिपुटीफल, तुच्छद्र, त्रिपुटी, तरुण, वातारि, वर्धमान, व्रणहा, व्याघ्रपुच्छ, व्याघ्रदल, व्यडम्बक, व्यडम्बन, उरुबूक, वुक, एरण्डक, रुबूक, मण्ड, दीर्घपत्रक, रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुबु त्रिबीज, उत्तानपत्रक, उरुबुक, नागकर्ण, चंचु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रबल, रुबक, चित्रबीज, हस्वैरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, स्थूलैरण्ड, महैरण्ड, महापञ्चाङ्गुल ।

एर्वारु:–कर्कटी, व्यालपत्रा, लोमशा, स्थूला, तोयफला, हस्तिदन्तफला, व्यालपत्री, बृहत्फला, छर्दापनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकन्दा चिर्भटी, कर्कटाक्ष, शान्तनु, बहुवल्ली, त्रपुपी, उर्वारु ईर्वारु, इर्वारु ।

एलवालुक:– एलावालुक, आलूक, वालुक, हरिवालुक, कपित्थ, दुर्वर्ण, प्रसर, हउ, <u>ऐलेय</u>, सुगन्धि, आलुक, कपित्थत्वक्, गन्धत्वक्, कुष्ठगन्धी, गन्धात्वक्, एलालु, एल्वालु ।

एला:–बहुरथा, तीक्ष्णगन्धा, सूक्ष्मैला, द्राविडि, त्रुटि, कोरंगी भृङ्गपर्णिका, उपकुञ्चिका, तुल्या, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, त्रुटिका, चन्द्रसम्भवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रबाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरांगी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धि, चन्द्रिका, श्वेतैला, छर्दिकारिपु, त्वचि-सुगन्धा, बहुला, मालेया, ताडीफल, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवोद्भवा, सुरभित्वक्, महिला, कन्याकुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्था, कान्ता, घृताची, भद्रैला, गर्भसंभवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्कुटी, चर्मसम्भवा, बाला, बलवती, एलाक्षी, सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ, महैला ।

एलापर्णी:–कुलञ्ज, गन्धमूल, कुलञ्जन, तीक्ष्णमूल ।

कक्कोल:–कंकोल, कंकोलक, कोषफल, कोरक कोरक, काकोल, कटुकफल, कटुफल, काल, कटुक, कोल, तैलसाधन, गन्धव्याकुल, माधवोचित, मारिच मागधोषित, सुगन्धिफल, स्थूलमरिच, फल, कृतफल, द्रव्य, मरिच, द्वीपसम्भव, कन्दफल, द्वीप, तक्कोल ।

कङ्गु:–पीततण्डुल, प्रियङ्गू, कङ्गू, प्रियङ्गु, चीनक, कंगुका, काङ्गुनी कुंगुनिका ।

कटभी:–नामिका, शौण्डी, पाटली, किणिही मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा, कैडर्य, श्यामला शिरीषपत्रा, कालिन्दी, शत-पादी, विषघ्निका, महाश्वेता, महाशौण्डी ।

कटुफला:–लताकस्तूरी ।

कटुरोहिणी:–कट्वी, कटुका, तिक्ता, कृष्णभेदा, अशोका, मत्स्यशकला, चक्रांगी, शकुलादनी, मत्स्यपित्ता, रोहिणी, काण्डरुहा, अरिष्टा, तिक्तरोहिणिका, जननी, तिक्ता, शतपर्वा, नकुलप्रादनी, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोकरोहिणी, कृष्णभेदा, कृष्णा, कृष्णमेदी, महौषधी, चक्री, अंजनी, कटु, वेदारकटुका, वामदरी धन्वन्तरिग्रन्था, वान्तिदा, कटंवरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डरुहा, तिक्तका, चित्रांगी ।

कट्फल:-अरण्य, भद्रा, भद्राञ्जनक, भद्रावती, कुमुदा, कायफल, कृष्णगर्भ, कुम्भी, कुमुदिका, कैटर्य, काफल,

कुम्भीपाकी, कुमुदी, लघुकाश्मर्य, महाकुम्भी, नापाणु, पुरुष, प्रचेतसी, रोहिणी, रामसेनक, श्रीपर्णी, सोमवृक्ष, श्रीपर्णिका, उग्रगन्ध, लकुफल, सोमवल्क, कुम्भीका, कुमुदिका, रञ्जनक।

कदम्ब:-अशोकारि, दास, देव, हरिप्रिय, हलिप्रिय, हारिद, जाल, जीर्णपर्ण, कदम्ब, कादम्बर्य, कर्णपूरक, ललनाप्रिय, सीधुपुष्प, नीप, नदिज, प्रावृष्य, पुलकी, प्रियक, षट्पदप्रिय, सुरभि, वृत्तपुष्प, विपद्म, व्रणहारक, प्रावृषेण्य, महाढ्य षट्पदेष्ट, धाराकदम्ब, धूलीकदम्ब, भृङ्गवल्लभ, मेघाम, केशराढ्य, बहुफल, कादम्ब, महाकदम्ब, भ्रमरप्रिय, भूमिकदम्ब, प्रियक, भूमिज, लघुपुष्प, भूनीप, सिन्धुपुष्प, मदाढ्य।

कण्टकारी:-दुःस्पर्शा, क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका, कण्टालिका, कण्टकिनी, धावनी दुष्प्रधर्षिणी, कुली, कासघ्नी, कण्टकारिका, स्पृही, धावनेरा कण्टश्रेणी, बृहती, प्रचंदिनी, राष्ट्रिका, अनाक्रान्ता, भण्टाकी, सिंही कुलि, निदिग्धा, क्षुद्रकण्टिका, बहुकण्टा, क्षुद्रफला, चित्रफला, पुत्रप्रदा, सर्पतनु।

कण्टकीकरञ्ज:-कुबेराक्षी, ककचिका, करञ्ज, तिगगाच्छिका, वारिणी, तीरिणी, वल्ली कण्टकिनी।

कतक:-कतक, छेदनीय, कत, कतफल, अम्बुप्रसादन-फल, अम्बुप्रसाद, चक्षुष्य, गुच्छफल, काल्य, कतकरेणु, श्लक्ष्ण, तोयप्रसादन, शोधनात्मक, लेखनात्मक, रुचिष्य, पयःप्रसादि, तिक्तफल, रुच्य, तिक्तमरिच, तोयप्रसादफल।

कदर:-खदिर, श्वेत, कच्छ, व्याधिभेद, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी बालपत्र बहुशल्य, याज्ञिक, बालतनय, पार्थद्रुम, तिक्तसार, कण्टकीद्रुम प्रसख, यूपद्रु, बलपुत्र कर्कटी, जिह्मशल्य, कुष्ठहृत, बालपत्रक यूपद्रुम, खदपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, कण्टक, यज्ञांग, जिह्वाशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, बहुसार, मेध्या।

कदली:-आल्बु, अम्बुसारा, अंशुमत्फला, बालकप्रिया, भानुफला, हस्तिविषाणी, कदली, मोचा, नगरौषधि, निःसारा, राजेष्टा, रम्भा, रोचक, सकृत्फला, सुकुमारा, सुफला, तन्तुविग्रह, तत्पत्री, ऊरुस्तम्भा, वनलक्ष्मी, वारबुषा, वारबूषा, चर्मण्वती, वारणवल्लभा, वारणबुषा, काष्ठीला, कदल, वारणबुषा, गुच्छफला, गुच्छदन्तिका, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, आयतच्छदा, स्वादुफला, दीर्घपत्रा, निस्सार, हस्तिविषाणिका।

कपित्थ:-अक्षस्तम्य, भृङ्गपित्थ, चिरपाकी, दधित्थ, दन्तफल, दधिफल, दन्तशठ, देवापाराढय, गन्धफल, ग्रन्थिफल, ग्राहिफल, गोपटल, ग्राही, कपित्थ, कवैरय, कपीत्थ करभवल्लभ, काठिन्यफल, कण्ठफलक, कपिप्रिय, कपीष्ट कुचफल, मालूर, मङ्गल्य, मन्मथ, नीलमल्लिका, पुष्प-फल, फलानुगन्ध करण्टफलक।

कपीतन:-पारीश, फलीश, कपिचूत, पारीप, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, कन्दराल, सुपार्श्वक, प्लक्ष, चारुदर्शन, प्लवक, प्लव, क्षीरी, वरोहशाखी, दृढप्ररोह, प्लक्ष, महाबल, पुण्ड्र, महावरोह, ह्रस्वपर्ण, पिम्परि, भिदुर, मङ्गलच्छाय।

कम्पिल्लक:-बहुपुष्प, चन्द्र, कर्कश, कम्पिल, काम्पील कम्पिल्य, काम्पिल्य, कांपिल्ला, लोहितांग, लघुरञ्जक, मधुक नदीवास, पिङ्गाक्ष, पुन्नाग, पुङ्केसर, पुन्नागा, रक्तचूर्णक, रक्तफल, रेचना, रेचन, रेची, रञ्जक, रेचनी, रोचन, रक्तांग, बहुपुष्प, बहुबल, काम्पील्लक।

कमल:-पङ्कज, पद्म, अब्ज, नलिन, अम्बुज, श्री, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह पाथोज, नल, अम्बुजन्म, अम्बुरुह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वार्ज तामरस, कुब्ज, कज शतपत्र, विसकुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, वारिरुह, सरसिज, पंकेरुह, विसप्रसून, वारिज, कञ्जार, आसपत्र वनशोभन, जलजन्म जलरुह, जलरुह, सरोज, सरोजन्म, पंकेज, सरोरुह, श्रीवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कंज, नालीक, नालिका, वनज, अम्लान, पुटक, सारज, सरसीरुह, कुटप, सहस्रपत्र।

करञ्ज:-नक्तमाल, पूतिक, चिरबिल्वक, रोचन, पूतिपर्ण, वृद्धफल, प्रकीर्यक, पूतिपत्रक, कैडर्य, कलिमार, उदकीर्य, करज।

करमर्द:-अविग्न, अविम, सुषेण, योक, कराम्लक,

दृढकण्टक, डिंडिम, गुच्छी, अतिपुष्प, करमर्दक, कराम्ल, करमर्द, कृष्णपाकफल, वरावर्द, कृष्णपाक, कृष्णफल, कृष्णफलपाक, कण्चूक, करमर्दी, कराम्लक, कण्टकी, करमर्दिका, वनालय, क्षीरी, क्षीरफल महाराम्बुक, पाकफल, पाककृष्ण, पाणिमर्द, फलकृष्ण, सुपुष्प, सुषेण, वनालक, वश, वनेक्षुदा, फल ।

करवीरः–अश्वमारक, अश्वघ्न, अश्वहा, अश्वरोधक, अश्वान्तक अश्वनाशक चण्डात, हयमार, हयघ्न हरिप्रिय, करवीर, कुम्भ कुन्द, प्रतिहास, प्रचण्ड, रक्तारि, रक्तपुष्प, तुरंगारि श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, शतप्रास शीतकुम्भ शातकुम्भ, शतकुन्द, शंकुद्रु, वीर, वीरक, तुंगारी, दिव्यवीर्यशंका, रक्तप्रसव, चण्डीकुसुम, रविप्रिय, भूतद्रावी, स्थूलकुसुम, दिव्यपुष्प, सिद्धपुष्प, हयमारक, गौरिपुष्प, गणेशकुसुम, लगुड, नखरात्, क्रूर ।

करीरः–निष्पत्रक ग्रन्थिल, करीर, गूढपत्र, करक तीक्ष्णकण्टक, शाखपुष्प, वट्टफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, मरुद्रुम, मरुभूरुह, ककर, निष्पत्रिका, करिर, करक मृदुफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, निदाघिक शतकुन्त, सुफल, दन्तसुन्दर, विन्दकपत्र, कृशशाख, चक्रक ।

कर्कटकीः–कर्कटी एर्वारु, बृहत्फला, बहुवल्दा, कर्कटाक्ष, कण्टालु, कण्टकीफल, कोषफला, कण्टकीलता, पीतपुष्पा, स्थूला, सुशीतल, सुधावास, त्रपुष, त्रपुषी, तोयफला, तुन्दिलफला, शान्तनु, कण्टालु उर्वारु, ईर्वारु, इर्वारु मूत्रला, मूत्रफला, हस्तिपर्णी, हस्तिदन्तफला, पीनसा, व्यालपत्रा, लोमशा, चिर्भटी वल्ली, छर्दापनिका, लोमशी, व्यालपत्री, लोमशकाण्डा, त्रपुष, त्रपुकर्कटी, बहुफला, छर्दापनिकी, सुधावास ।

कर्कशृङ्गीः–शृङ्गी, कुलीरा, कर्कटाह्वया, कुलीरशृङ्गी, चक्रा महाघोषा नवांगिनी, चन्द्रास्पदा, विषाणी, वनजमूर्धजा, कर्कटशृङ्गिका, कासविनाशिनी, कुलिङ्गी, घोषा, चक्रांगी, कर्कटी, वनमूर्धजा, कर्कटाख्या, कुलीरविषाणिका, नतांगा नतांगी, वक्रा, अजशृङ्गी, कुलीरशृङ्गी ।

कर्कन्धुः–बदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धू, कोलि, कुवल, पिच्छला, बदरीच्छदा, सौवीरक, घोण्टा; गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, खादिर, कण्टकी, फलशैशिर, वृत्तफल, गूढफल, दृढबीज, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल, पिच्छिल, स्वादुफल, तुलक, कोलिक अजाप्रिया, उभयकण्टक ।

कर्कोसः–दशाङ्गुल, फलराज, अमृताह्व, पट्टगुना, मधुफला, पटोला, वृत्तकर्कटी, तिक्ता, तिक्तफला, मधुपाका, श्वेतवार्क पण्मुला ।

कर्कोटकीः–कर्कोट, स्वादुफला, कर्कोटी, मनोज्ञा, कुमारिका अवन्ध्या, विषप्रशमनी पीतपुष्पी, महाजाली, पीतपुष्पा, महाजालिनिका, अवन्ध्या, बोधना, जाली, मनोज्ञा, मनस्विनी ।

कर्चूर–वेध्य, मुख्य द्राविड, कल्पक शटी, कार्श्य, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धसार, जटा, गन्धमूल ।

कर्पूरः–भोषधीश, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चन्द्रभस्म, निशापति, तरुसार, भस्माह्वय, रेणुसार, इन्दु, हिमाह्वय, वेधक; रेणुसारक, शीतमरीचि भस्मवेधक विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रहस, जैवातृक शशी, कुमुदबान्धव, सिताभ, हिमवालुका, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेश, सोम, निशीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, क्षपाकर, शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, शाम्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र, कारमिहिक, ताराभ्र, चन्द्रार्द्रक, चन्द्र, नाकतुषार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह, स्फटिक, शशि, हिमोपल ।

कर्णिकारः–पामभार, अश्मान्तक, आस्फोत, उद्दालक, काञ्चन, कान्तार, कनकप्रभा, करक, काञ्चनारक कुशी, गण्डारि, कोविदार, चाकनक, रक्तपुष्प, गिरिज, ताम्रपुष्प, चमरिक, चम्पविटल, महापुष्प, युग्मपत्र, युगपत्रक, सुवर्णार, शोणपुष्प, स्वल्पकेसर, पाकारि, कुद्दाल, कुहार, यमलपत्रक कुद्दाल, यमलच्छद, काञ्चनाल, चमरी कुद्दाल, रक्तकाञ्चन ।

कलम्बः–शतपर्वा, कलम्बू, बहुतोयज, शायक, शोष, नालिशाक, कडम्बी, कलम्बी, कलम्बिका ।

कलायः—मुण्डचणक, हरेणु, सतीन, त्रापुस, नलक, हरेणुक, वर्तुल, सतीलक, खीण्डक, त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन, तीलक, कण्टी, सतील, सतीनक ।

कसेरुकः—गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, सुकेरुट, सुगन्धि, सुगन्ध गन्धकन्द, राजकसेरुक ।

काकनासाः—ध्वांक्षनास, काकतुण्डफला, सुरंगी, तस्कारस्नायु, काकाङ्गी, वायसी, ध्वांक्षतुण्डा, सुनासिका, वायसाह्वा, ध्वांक्षनखी, काकाक्षी, ध्वांक्षनासिका, काकप्राणा, काकम्मधु, चोरस्नायु, शिरोचल ।

काकमाचीः—बहुफला, बहुतिक्त, ध्वांक्षमाची, गुच्छफला, जघनेफला, काका, काकमाचिका, काकमाता काकिनी, कुष्ठघ्नी, रसायनी, सर्वतिक्ता, सुन्दरी, स्वादुपाका, तिक्तका, वायसाह्वा, वायसी, काकाह्वा, कटुफल, कटु, रसायनवर ।

काकोदुम्बरिकाः—फल्गू, राजिफल्गुः, श्विाङ्का, फल्गुनी, फलसंभारी; मलयू, चित्रभेषजा, उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, अमुना, काकोदुम्बर, क्षीरी, खरपत्रिका, राजिका, क्षुद्रोदुम्बरिका, कुष्ठघ्नी, फल्गुवाटिका, अजाक्षी, फल्गुनी, मलयू, चित्रभेषजा, ध्वांक्षनाम्नी, फल्गु, जघनेफला, बहुफला खरदला मलयु, फल्गुफला, काकोडुम्बर, अजाक्षी, भद्रोदुम्बरिका ।

कारवेल्लिकाः—अङ्गारवल्ली, दौर्गन्धक, पचारु, बाहुवल्ली, कठिल्लकः, वृद्धवल्ली, चिरिपत्र, कारवेल्ली, काका, कारवल्ली, कठिल्लका, कण्टफला, कठिल्लक, कठिल्ल, कण्डूर, कण्डकटक, पटु, पीतपुष्पा, नासंवेरन, राजवल्ली, सुकाण्डक, सूक्ष्मवल्ली, सुपवी, शुपवी, तोयवल्ली, बृहत्काण्ड, ऊर्ध्वसित, वारिवल्ली, वीसकण्टक, अम्बकाण्ड, सुकाण्ड, कटिल, अम्बुवल्लिका ।

कार्पासः—नमजित्, तुण्डी, तुण्डिकेरी, पटपटी, नीचानन्ता, समुद्रान्ता, कार्पासी, सुसुमा, अनंगनीक, बदरा, वध्या, छादन, गुण, वलान्तान्त, माधवि, सारिणी, मरुद्भवा पाटङा, पीचु, समुद्रान्ता, सूत्रपुष्पा, तुला, तुण्डकेरिका, बादर, बदरी कार्पासिका पटलन ।

कालशाकः—कालशाक, नाडीक, श्राद्धशाक, कालक,

कालेयकः—कालीय, कालीयक, पीताभ, हरिचन्दन, हरिप्रिय, कालसार, कालानुसार्यक, नारायणप्रिय, पीत, हरिचन्दन, पीतकाष्ठ, जापक, जावक, कान्तिदायक, कालानुसार्य, कालेय, वर्णद, पीतक माधवप्रिय, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार ।

काशः—काण्डेक्षु काशेक्षु, वायसेक्षुक, इक्ष्वारिक, इक्षुकाण्ड, इक्षुरक, श्वेतचामरपुष्प, इक्षुकुसुम, सुकाण्ड, काशेक्षु, नादेय, नीरज, वायसेक्षु शिरि, इक्षुगन्धा, पोटगल, कर्ममूल, इक्षुगन्धिका, इषीका, अश्ववाला, चामरपुष्पा, काशी, चामरपुष्पिका, कांशा, अमरपुष्पक, काशक, वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, शारद; सितपुष्पक, दर्भपत्रक, लेखनी, काण्ड, काण्डक, कच्छलकारक, दर्भपत्र ।

काश्मरीः—काश्मर्या, हीरा, काश्मरी, मधुपर्णी, श्रीपर्णी, सर्वतोभद्रा, गम्भारी, कृष्णवृन्तका, मधुपर्णिका, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका, काश्मर्य, कम्भारिका, कुमुदा, सदाभद्रा कृष्णफला, कटुफला, कृष्णवृन्तिका, सर्वतोभद्रका; स्निग्धपर्णी, सुभद्रा, कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी विदारिणी, महाभद्रा, मधुभद्रा, स्वरुभद्रा, कृष्णा, अश्वेता, रोहिणी, गृष्टि, स्थूलत्वचा, मधुमती, सुफला, मन्दिनी, महाकुमुदा सुदृढत्वचा, काश्मीरी, पीतरोहिणी, मधुरसा, महाकुमुदिका, पीतनका, वातहा ।

कासमर्दः—राजवृक्ष, कासघ्न पीतपुष्पक, कासारि, परिमर्द, वर्णक, कासमर्दक, अरिमर्द, दीपन, काल, कनक, कासमर्द, कर्कश, कालकूत, विमर्द, जरण ।

किराततिक्तः—किराततिक्तक, कैरात, कटुतिक्त, किरातक, काण्डतिक्त, अनार्यतिक्त, भूनिम्ब, रामसेनक, किरातक, तिक्तक सुतिक्तक, हैम, नेपालनिम्ब, नैपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारि, सन्निपातहा ।

कुङ्कुमः—काश्मीरज, कुङ्कुम, रुधिर, रक्त, असृक्, अस्र, पीतक, काश्मीर, वाह्लीक, सङ्कोच पिशुन, वर, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, पीतक, रक्तचन्दन, हरिचन्दन घसृन, रक्तसंज्ञ, सङ्कोचपिशुन, खल रज दीपक, लोहित, सौभर, चन्दन, काश्मीरजन्म, अग्निशिख, वीर, लोहितचन्दन, चारु, वरवाह्लीक,

मतिशेखर, रुचिर, गद, शोणित, सुसग, वर्णप, अरुण, कालेयक जागुड कान्त वह्निशिख, केसर, केशर, धीर, अस्र रुधिर ।

कुटजः—कौटज, कौट, वत्सक, गिरिमल्लिका, कलिङ्ग, मल्लिकापुष्प, इन्द्रवृक्ष, वृक्षक, शक्रपर्याय, शक्र, वरतिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटक, शक्राशन, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्राह्व, काली, कूटज, प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, संग्राही, पांडुरद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शक्रशाखी, इन्द्रयवफल ।

कुतुम्बकः—छत्र, अतिच्छत्रक, द्रोणा, द्रोणपुष्पी, वैकुण्ठ, द्रोणका, द्रोणवैकुण्ठका, फलेपुष्पा, क्षवपत्री कुम्भयोनि, कुम्भिका, चित्रक्षुप, कुरम्बा, सुपुष्पी, श्वसनक चित्रपत्रिका, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक ।

कुमुदः—श्वेतजलज, अब्ज, अम्भोज, अम्बुज, पङ्कज, अरविन्द, कहार, कुशेशय, धवलोत्पल, कुमुद, कैरव, शशिकान्त, इन्दुकमल, शीतलक, चन्द्राब्ज, चन्द्रिकाम्बुज ।

कुम्भीः—कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका, पानीय, आकाशमूली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल, श्वेतपर्णा, पृश्न, अम्बुकुम्भी, खली, पर्णी, पृश्नी, वारिकर्णिका दलाढक, वारिकर्णी ।

कुरण्टकः— किंकिरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीतसैरेयक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुर, सैरेय ।

कुलत्थः—अरण्यकुलत्थिका, चक्षुष्या, चिपिटा, कुम्भी, कुलाली, दृढ़सारा, कुम्भकारिणी कुम्भकारिका, कुल्माष, कुलबिल्वक, कानतोया, लोचनहिता, कुलत्थिका कुलित्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर, कालवृन्त ताम्रवृक्ष, ताम्रवृन्त ।

कुष्ठः—रोग, गद, व्याधि, उत्पल, पाकल, वानीरज, वाप्य, किंजल्क, आप्य, आमय, अगद, भास्वर, दुष्ट, गदाख्य, गदाह्व, गदाह्वय, हरिभद्रक जरण, पद्माख्य, कौबेर कुष्ठिक, काकल, कुत्सित, नीरुज, पारिभाव्य, पालक, पवन, पद्मक, पारिभद्रक, रुजा, रोग, रोगाह्वय, वाणीराज ।

कूष्माण्डः—पुष्पलता, फलवल्ली, वल्लिका, गुरुयोगफला, पीतपुष्पिका, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल, बृहत्फला, घृणावास, तिमिष, ग्राम्यकर्कटी, कर्कारु, कूष्मांड, शिखिवर्धक, कुम्भाण्ड, कूष्माण्डी, कर्कोटिका कुम्भाण्डी, सुफला, कुम्भफला, नाडुपुष्पफला ।

कुसुम्भः—पावक पीतमलक, वस्त्ररंजन, कीलता, लट्वा, पद्मोत्तर, अग्निशिख, ग्राम्यकुङ्कुम, कमलोत्तम, कुक्कुटशिख, कमलोत्तर, लोहित, महारजन, पीत, पाचक, रक्त, वह्निशिखा ।

कुस्तुम्बुरुः—अवन्तिका धाना, कुनटी धेनिका, अलका, हयगन्धा वेशण, धान्यक, धान्य, धाना, धानी, धनेयक, अल्का, छत्रधान्य, वितुन्नक धन्याक, मनिक, धान्य, धन्य, धनीयक, कुस्तुम्बुरी, छत्रा, धन्या, तुम्बुरु, वितुन्नक, धान्याक, धानक, धानेय, सुगन्धि शाकयोग्य सूक्ष्मपत्र, जनप्रिय, धान्यबीज, बीजधान्य, वेधकनिःसार ।

कृतवेधनः—कोशातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधनी, क्ष्वेडा, सुतिक्ता, घंटाली, मृदंगफलिका मृदंगफलिनी, स्वादुफला, सुपुष्पा, कर्कोटकी, पीतपुष्पा, धाराफला, दीर्घफला, सुकोशा, धामार्गव, राजकोशातकी राजीमत्फला ।

केशरः—चाम्पेय, केसर, नागकेशर, नागपुष्प नाग कनकाह्वय, महौषध, राजपुष्प, फलक, स्वर्णपातन, केशर, काञ्चनाह्वय, सुवर्णाख्य भुजङ्गाख्य, षट्पदप्रिय, इभाख्य, पुष्परेचन, नागाख्य, केशरी, किञ्जल्क, नागकिञ्जल्क, नागीय, काञ्चन सुवर्ण, हेमकिञ्जल्क, रुक्म, हेम, पिञ्जर, फणिकेसर, पन्नगकेशर, पुन्नागकेशर ।

कैडर्यः—कालशाक, महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, कडर्य, शुक्रसार, अलगाह्व, छर्दिघ्न, प्रियसाल, वरतिक्त, ककाह्वय, शुक्रशाल, सुरभि, कृष्णनिम्बक, श्रीपर्णिका, कुमुदिका, कटुकपत्र, सुरभिच्छदा ।

कोद्रवः-कोद्रव, कोरदूष, वनकोद्रव, उद्दाल, कोरदुष, कुद्रव, कोरदूषक, कोद्दार, मदनाग्रक, उद्दालक, कोरदुष्क, कोद्दाल कोर्दव ।

कोविदारः-काञ्चनार, कुद्दाल, कनकारक, कान्तपुष्प, करक, कन्तार, यमलच्छद, आम्मन्तक, आस्फोत, उद्दालक, काञ्चन, कान्तार, कनकप्रभ, काञ्चनारक, काञ्चनक, रक्तपुष्प, गिरिज, कुण्डली कुली, स्वल्पकेशर, चमरी, काञ्चनाल, कर्बुदार, पाकारी गण्डारि, ताम्रपुष्प, चम्पकदल, महापुष्प युग्मपत्र, युगपत्रक, सुवर्णार, शोणपुष्प कुद्दार, रक्तकाञ्चन, महायमलपत्रक ।

कोशाम्रः-घनस्कन्ध, वनाम्र, जन्तुपादप क्षुद्राम्र रक्ताम्र, लाक्षावृक्ष, सुरक्त, कृमिवृक्ष, सुकोशक ।

क्रमुकः-पट्टिकालोध्र, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी लाक्षाप्रसादन, पट्टिकाख्य, पट्टिका, पट्टिलोध्र, पट्टिलोध्रक, वल्कलोध्र बृहद्वल्क, जीर्णपत्र अक्षिभेषज, शाबर, श्वेतलोध्र, गालव, बहुलत्वच लाक्षाप्रसाद, वल्क ।

क्षवकः-छिक्कनी, क्षवकृत्, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, उग्रा, उग्रगन्धा कृमिघ्ना, संवेदनापटु ।

क्षीरविदारी-इक्षुगन्धा, इक्षुवल्ली, इक्षुवल्ली, क्षीरवल्ली, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पय, कन्दा, पयोलता, पयोविदारिका ।

क्षुरकः-क्षुरक, तीक्ष्ण, क्रूर, भूतांकुश, क्षव, राजोद्वेपशमन, भूतद्रवी ।

खदिरः-श्वेतसार, कदर, सोमवल्कल, सोमवल्क, बहुशल्य, खदिरोपम, कार्मुक, कुन्तकण्टक, सोमसार सोमवृक्ष, पथिद्रुम, श्यामसार, नेमिवृक्ष, कंटाढ्य, महावृक्ष, द्विजप्रिय, गायत्री, दन्तधावन, बालपत्र, जिह्वाशल्य, क्षितिक्षम, बालपुत्र, होम, हिमसंज्ञा, कण्टकीद्रुम, खदपत्री, क्षितिक्षम, कुष्ठहृत्, कुष्ठारि मेध्य, सूक्ष्मपत्रिका, यज्ञांग, याज्ञिक, यूपद्रु रक्तखदिर, वाप्रतनय ।

खर्जूरः-पिण्डखर्जूरिका, पिण्डखर्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्गरिका, दीप्या, स्वादुपिण्डा, मधुस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, दुरारोहा ।

गजपिप्पली-चविका कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, चव्यफला, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, इभकणा, करिपिप्पली, तेजसी वर्तुली, कपिवल्लिका, गजाह्व, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोषणा, स्थूलवैदेही, गजकृष्णा, कपिल्लिका, चव्यजा, हस्तिमगधा ।

गवेधुकाः-गवेधु, गवेडु, गवेदुका, कुम्भ, क्षुद्रा, गोजिह्वा, गन्धतृण कर्षणी, गोजिह्वा ।

गिरिकर्णिकाः-अश्वक्षु श्वेतपुष्पी, श्वेता, कटभी, श्वेतनामा, श्वेतस्यन्दा, अपराजिता, आस्फोता, गिरिकर्णी, भूमिलग्ना, नागपर्यायकर्णी, गवाक्षी, गिरिशालिनी, अश्वक्षुरादिकर्णी, दधिपुष्पिका, गर्दभी, सितपुष्पा, विगिही भद्रा, सुपुष्पी, विषघ्नी, सुपुत्री, सिंहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी ।

गुग्गुलुः-कालनिर्यास, जटायु, कौशिक, पुर, नक्तंचर, शिव, दुर्ग, महिषाक्ष, पलङ्कषा, धूर्त, देवधूप, कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोलु, कुम्भोलूखलक, सर्वसह, उष, कुम्भी, कुन्ती, रक्षोघ्न, पवनद्विष्ट, भवाभीष्ट, निशाटक, जटाल, पुट भूतहर, शाम्भव, वायुघ्न, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरुद्विष्ट, मरुदेश्य, रक्षोहा, पलंकष, रूक्षगन्धक, दिव्य वातघ्न ।

गुञ्जाः-चूडामणि, रक्तफलिका, काकचिञ्चिका काकादनी, काम्बी काकचिञ्ची, कृष्णला, कृष्णरक्तिका, गुञ्जिका, गुञ्जा, घाका, रक्तिका, काकजंघा, शिखण्डिनी, काकिनी, ककथा, कनीची, शांगुष्ठा, काकतिक्ता, काकतुंडिका, काकिणी, चूडामणी सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्भोजी, नीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिंचिका, काकपीलु, काकणन्ती काकवल्लरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्रशल्या, ध्वांक्षनखा, दुर्मोघा, वायसादनी, चटकी, तुलाबीजा, अङ्गारवल्ली ।

गुडूचीः-अमृतवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली विशल्या, तन्त्री, निर्जरा, वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, वातरक्तारि, पामरोद्धारा, पित्तघ्नी, रुद्धारा, ज्वरारि, श्यामा, मुक्ता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमलतिका, भिषक्प्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छद्मिका, चन्द्रहासा, अमृतसंभवा, अमृतवल्लरी, जीवन्ती, सोमा,

चक्रलक्षणिका, धीरा, नागकन्या, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी, वारा, धीरा, ज्वरनाशिनी, मण्डली, पिण्डमूता, बहुच्छिन्ना, कन्दरोहिणी, रसायनी, मृत्तिका, भिषग्जिता, कन्या, कन्दोद्भवा, नन्दा, अमृतानन्दा, गुडूचिका, चण्डहासा, पिण्डगुडूचिका, बहुरुहा, पिण्डालु ।

गोक्षुरकः–क्षुरकोषी त्रिकण्टक, स्वादुकण्टक, गोकण्टक गोक्षुर, वनशृङ्गाट, पलंकषा, श्वदंष्ट्रा, इक्षुगन्धिका, षण्डी, क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्टक, षडङ्ग, बहुकण्टक, क्षुर गोकण्ट, कण्टफल क्षुरक्षुर भक्षक, चणद्रुम स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, भक्षक, क्षुराङ्ग, कण्टक व्यालदंष्ट्र, क्षुरक, महाङ्ग, दुःक्षक्रम ।

गोजिह्वाः–गोजिका, गोभी दार्विका, खरपर्णिनी, कुरसा दार्विपत्रिका अनड्डुजिह्वा, दर्विका, दर्वी, दार्वी गोजिह्विका खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अधःपुष्पी, प्रतना, धेनुजिह्वा ।

गोधूमः–बहुदुग्ध, अपूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुष क्षीरी, रसाल सुमना, अल्प गधूम यवक, सुमन, गिरिजा, सतिनामा, रसिक ।

चक्रमर्दः–प्रपुन्नाट दद्रुघ्न मेषलोचन, पद्माट एडगज, चक्री पुन्नाट तर्दिण, तर्किल, प्रपुनड, मेषाक्षि, कुसुम, प्रपुन्नाल, अण्डगज, गजाह्वय, मेषाह्वय, एडहस्ती, व्यावर्तक, चक्रगज, पुन्नाट, विमर्दक, तर्वट, चक्रह्वा शुक्रनाशन, दद्रुघ्नबीज प्रपुन्नाड, खर्जूघ्न चक्रमर्दक, उरणाख्यक, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माक, तरवट, मेषाक्ष अण्डगज, अण्डहस्ती, चक्रिका ।

चणकः–हरिमन्थ, सुगन्ध, कृष्णकञ्चुक, बालभोज्य, वाजिभक्ष, कञ्चुकी, वाजिमन्थ, जीवन, हरिमन्थक, हरिमन्थज, चण, वाजिभक्ष्य, कञ्चुकी, बालभोज्य सकलप्रिय ।

चन्दनः–श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष भोगिवल्लभ, भद्रसार, मलयज, गन्धसार, भद्रश्री एकाङ्ग, पटीर, वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिण, ग्राम्य, सर्पेष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, तिलपर्ण, मंगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धाढ्य, पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक, चन्द्रद्युति, भद्रश्री, हिमहिम, सर्वप्रिय, राजयोग्य ।

चविकाः–चव्य, ऊषणा, कणामूल, चवण, उच्छिष्ट, कोलवल्लिका, चवि, चवी, पुरंदर, तेजोवती, कोला, नाकुली, उषणा, चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, कोलवल्ली, कुक्कुटगल्लक, कोला कुक्कुर, तीक्ष्णा, करिकणा, वल्ली, कुटिलपत्रक, कटुका, कटुपाकिनी ।

चित्रकः–अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊषण, कृष्णवर्त्मा, जातवेदा, वह्नि, विभाकर, विभावसु, बृहद्भानु, वैश्वानर, शिखावान्, शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, हिमाराति, हिरण्यरेता, अनल, अग्निशिख, पाली, माली, चित्र, चित्राङ्ग दाहक, दहन, दारुण, द्वीपी हिमाराति हिरण्यरेता, हुतभुक् ज्योतिष्क, जातवेदा, कृष्णवर्त्मा, वालमूल, कुट, कृशानु, लोहिताङ्ग, पालक, पावक, पाठीन पाची, सप्तार्चि, शार्दूल शिखी, शम्बर शूर, शिखावान्, ऊषण, वैश्वानर, वह्नि, वल्लरी, वह्निनामा, व्याल, मार्जार, अग्निदीप्त, उषर्बुधाह्वय, रक्तचित्र, महाङ्ग, रक्तचित्रक द्रव्याग्नि, हस्ताग्नि ।

चिरबिल्वः–प्रकीर्य, पूतिकरंज, पूतिक, कलिमारक, पूती, प्रकीति, नक्तमाल, चिरबिल्वक, पूतीक, रोचन, पूतिपर्ण, गुच्छफल, गुच्छपुष्पक, स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक ।

चिर्भटः–धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी, सुचित्रा, चित्रफल, क्षेत्रचिर्भिटा पाण्डुफला, पथ्या, रोचनफला, चिर्भटिका, कर्कचिर्भिटा ।

चिल्लीः–वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्, पांशुपत्र, शाकश्रेष्ठ, शाकवीर, कंकेल, धनाधन, वास्तु, वसुक, हिल्मोचिका, शाकराज, राजशाक, चक्रवर्ती, चिल्लिका, तुनी, अम्ललोहिता, मृदुपत्री, क्षारदला, क्षाराम्ला, वास्तुकी, मरुद्दला, गौडवास्तु, पलाशलोहिता, नीरपत्री ।

चुक्रिकाः–चुक्र, चुक्रवास्तुक, लिकुच, अम्लवास्तुक, चोका, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य, अम्लहिल्मोचिका, पद्माम्ला, रोचनी, शतवेधनी, भेदनी, भेदी, भीमा, गुल्मद, गुल्मकेतु, महाक्षुरा, मानसाद्राव, फलाम्ल, राजाम्ल, रसाम्ल, रक्तसार, शङ्खद्राव, सारसवेधनी, शतवेधनी वसन्तमाला, वीराम्ल, वेतसाम्ल, वाराही, वराभिध ।

चोरकः–शङ्कित, चण्ड, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, नगहाय, कोपनक, कितव, फलचोरक, चपल, धूर्त, पटु, नीच, निशाचर, दुष्कुल, ग्रन्थि, सुगन्धि, पर्णचोरक, तस्कर, चण्डा, क्रोधमूर्च्छित, दुष्कुलीन, विरोध, कोरक, धनहारी, स्तेन, राक्षसी, खर, सुगन्धि ।

जम्बुः–जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा, राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, बृहत्फला, राजजम्बू, कोकिलेष्टा, महाजम्बू, महानीला, महाफला, महापत्रा, नन्द, फलेन्द्र, स्वर्णमाता, सुरभिपत्रा, जम्बुक ।

जातीः–जातीफल, जातीकोष, जातिशस्य, जातिकोष, जातिसार, जातिपत्री, जातिफल, कोश, कोषक, मदशौंड, मदसार, मालतीफल, फल, पुट, राजभोग्य, मालूक, सुमनःफल, जाती कोष, जातिकोष, कोश, जातिशस्य, जातीसार, जातिरस, सौमनःफल ।

जलपिप्पलीः–अग्निज्वाला, बहुशिखा, चित्रलांगी, लाङ्गली, महाराष्ट्री, मत्स्यगन्धा, प्राणदा, शारदी, शकुलादनी, तोयवल्ली, तृणशीता, वाचीर ।

जातीः–(प्रवाल) जाती, मनोज्ञा, सुमना, राजपुत्री, चेटिका, मालती, हृद्यगन्धा, चेतिका, तैलभाविनी, केतकी, चेतकी, सुकुमारी, सुप्रिया, संध्यापुष्पा, मनोहरा, जनेष्टा, गन्धपुष्पिका, जातिका, मालिनी, वासन्ती, प्रहसन्ती, सुवर्णा, वसन्तजा, वार्षिका ।

जिङ्गिणीः–झिङ्गिणी, सेवदली, सुदमञ्जरी, पार्वतेया, मुनिनिर्मोक, मदनमञ्जरी ।

जीमूतः–देवदाली, वेणी, कर्कटी, नगराणी, देवताडी, कृतछेदन, जालपर्णी, विषघ्नी, जीमूतक, कण्टफल, गरा, कोशफल, वृत्तफला, घोरा, कदम्बा, विषहा, कर्कटी, सारमूषिका, कृतवेधना, दाली, लोमशपत्रिका, तुरंगिका, तरङ्गी, गरनाशिनी, घोष, आखुविषहा, चतुरंगक, देवदालिका, पीता ।

जीरकः–जरण, जीर, जीर्ण, दीप्य, दीपक, अजाजिक, वह्निसंज्ञ, वह्निशिख, मागध, अजाजी, कणा, जीरण, दीर्घक, मनोज्ञ, वहन, हृद्य, पीताभ, पूज्यमानक ।

जीवन्तीः–अर्कपुष्पी, जीवनी, स्वर्णजीवन्तिका, स्वर्णलता, स्वर्णजीवा, सुजीवन्ती, सुवर्णिका, मृगगन्धि, शाकश्रेष्ठा, तिक्तजीवन्ती, हैमा, हैमपुष्पी, हेमवल्ली, हेमाह्वा, हिमाश्रया, स्वर्णपर्णी, हेमपुष्पी, हेमवती, सौम्या, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुलकारी, रक्तजी, भाणरा, भद्रा, मंगल्या, मेदराटिका, जीवनीय, सवा, मधुस्रवा, यशस्या, शाकटी, जीवपुष्पी, जीवपुष्पा, काञ्चिका, शशजन्तिका, मुष्टिका, मृगाटिका, पुत्रभद्रा, मधुस्वादा, जीवदा, जीवपत्री, जीववर्धिनी, वराकारी, बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, तिक्तजीवन्तिका, तिक्तभद्रा, तिक्तप्रियंकरी, विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, रामुष्टि, डोडीक्षुप, हेमजीवन्ती, स्वर्णजीवन्ती, हेमक्षीरी, सुमङ्गला, हेमलता, जीवदात्री ।

जूर्णाह्वः–यवनाल, देवधान्य, जूर्णाह्व, जूर्णाह्व, जूर्णनाल, वायनाल, यवनाल, शिखरी, वृत्ततण्डुल, दीर्घनाल, सुगन्धर, क्षेत्रेक्षु, क्षुपवन, इक्षुपत्रक, दीर्घशर ।

ज्योतिष्मतीः–लक्ष्मी, सुवर्णलतिका, ज्योतिष्का, अग्निभाषा, लवणा, दुर्जरा, पीततैला, ककणा, स्फुटबन्धनी, पारावतपदी, पिण्य, पीततैला, कटुम्भी, पारावताङ्घ्रि, निष्फला, इङ्गुदी, स्वर्णलता, अनलप्रभा, ज्योतिर्लता, सुपिंगला, तीव्रा, मेध्या, मतिदा, गतिदा, सरस्वती, अमृता, कङ्गुनी, अग्निभाषा, दुर्मदा, दिङ्गुरा, आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीडवा ।

टुण्टुकः–श्योनाक, शोषण, नट, कट्वङ्ग, मण्डूकपर्ण, पत्रोर्ण, टिण्टुक, टिण्टुक, शुकनास, कुटन्नट, दीर्घवृन्त, अरलु, पृथुशिम्ब, कटम्भर, स्योनक, मयूरजङ्घ, अरलुक, प्रियजीवी, कटङ्ग, भल्ल, अरल, वटु, विषघ्नु, भल्लाततापन, पूतिवृक्ष, मण्डूक, मण्टूक, भूतपुष्प, शोण, कटु, दीर्घवृन्तक, भल्लातशाखव, स्वर्णवल्कल, शल्लक, प्रियजीव, शोषण, कुक्कुट, भल्लूक, कन्दर्प, पादवृक्ष, भूताङ्कुश, पारिराटक ।

तगरः–कालानुसार्य, कुटिल, कालानुसारिवा, जिह्म, दीपन, चक्रकपुष, महोरग, पिण्डतगर, पादिक, दण्डहस्त,

पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण, नत, वक्र, विनम्र, शठ, कुंचित नहुपाख्य, दीन, वर्हण, दण्डहस्त, पालानुसारक ।

तण्डुलः–दसक, अक्षत, परिव्यय ।

तण्डुलीयकः–मेघनाद, काण्डेर, तण्डुलेरक, भण्डीर, तण्डुलीबीज, विषघ्न, अल्पमारिष, तण्डुलीक, तण्डुल, तण्डुली, तण्डुलीयक, अन्थिल, बहुवीर्य, घनस्वन, सुशाक, पथ्यशाक, स्फूर्जथु, स्वनिताह्वय, बीर, तण्डुकनामा काण्डीरमारिष, पथ्यशाक, कण्टकमारिष ।

तमालपत्रः–अंकुश, छदन, दल, दलाह्वय, गन्धजात, गोमेद, गोमेदक गोपन, इष्टगन्ध, पत्रक, पाकरञ्जन, पत्राख्य, पलाश, राम, रोमश, शीतल, सुगन्धिगन्ध, सुरस, सुकुमारक, तेजपत्र, तापस, तमालक, तमाल, तमालपत्र, वसनहा, वस्त्र, वसन, पत्र, वासस्, गोमेद, पत्राख्य ।

तरुणीः–रामतरुणी कर्णिका, देवकेसरा, सहा, कुमारी, गन्धाढ्या, भृङ्गेष्टा, सूत्रगन्धा, द्विरेफगणसम्मता, अतिकुला, अतिकेशर, भद्रतरुणी, बृहत्पुष्पा, बहुपत्रा, देवतरुणी, कर्णिका, तरुणी, कुब्जक, संकुल, कण्टाढ्या, नीलालिकुलसंकुला, महासहा, वारिकण्टक, वृत्तपुष्प, शतपत्री, रामतरुणी, सेवंती, सुरता, चारुकेसरा, शिखलता, सुमना, सुशीता, लाक्षापुष्पा, सुवृत्ता ।

तामलकीः–चोरट, हिल्लोलिका, आमलकी, पुत्रश्रेणिका, अमली, विश्वपर्णी, दृढपादा, सूक्ष्मदला, बहुपुत्रा, दलस्पर्शिनी, भूपत्री, बहुफला, बहुपत्रा, भूम्यामलकिका, अहहा, हिमालया, वृष्या, शिवघ्नी, बहुपत्रिका, बहुवीर्या, अहिमपदा, वीरा, तनालिका, उचटा, दृढपादी, वितुषा, वितुन्तिका, भूधात्री, चारटी, तामलकी, अजटा, तालि, ताली, तमाली, तमालिनी, विनुन्नभूता तमक, भूधात्री, भूम्यमली, शिवा, क्षेत्रामली, झारिका, बहुपुत्री, जटा, अध्यण्डा, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झटा, अफला, अमला, झाटा, माला, झाटामला, अमलजुटा ।

ताम्बूलपत्रः–भक्ष्यपत्रा, भुजगलता, मुखभूषण, भुजङ्गवल्ली, दिवासीटा, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, नागवल्लरी, पर्ण, ताम्बूली, पर्णलता, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, ताम्बूलवल्लिका, पर्णगृहाश्रया, ताम्बूल, विल्लिका, फणिलता ।

तालः–आसवद्रु, भूमिपिशाच, लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, तल, दीर्घतरु, द्रुमश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, मधुरस, मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, यस्यत्ववान्, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्यास, तन्तुगर्भ, शतपर्वा, प्रांशु, दुरारुह, गजभक्ष, दृढच्छद, चलच्छद, गुड, स्वादुफल, लेख्यच्छद, जलज ।

तालमूलीः–अर्शोघ्नी, भूताली, दीर्घकन्दिका, गोधापदी, हेमपुष्पी, काननपुष्पिका, खर्जूरी, खर्जूरी, महावृष्या, मुसली, तालमूली, ताली, तालमूलिका, तालपत्रिका, तालिका, वृष्यकन्दा, सुवहा ।

तालीशः–अर्कवाह, करिपत्र करीपत्र, अर्कवेध, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, पत्राढ्य, तालीसपत्र, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रन्थिकापत्र, पत्राढ्य, शुकपीच्छ, पत्राख्य, अर्कवन्ध, ताल, तलाह्वय, तमाह्वय, तालीपत्र, तालीयक, तालीसपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हृद्य, सुपत्र, आमलकीपत्र, तामलकीपत्र, घनच्छद ।

तिनिशः–अश्मगर्भक, अक्षक, अतिमुक्तक, चक्री चित्रकृत्, रथद्रु, रथ, रथिक, तिनाशक स्पन्दन, स्यन्दन, सर्वसार, स्पन्दनद्रुम, शतांग, शकट, भस्मगर्भ, मेषी, जलधर, वञ्जुल, नेमी, चित्रकर्मा, स्पन्दनी ।

तिन्दुकः–नीलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, तुण्ड, रामण, अनिलसार, खण्ड, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक, शितिसारक, केन्दु, तिन्दु तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुक, नीलसार, स्फूर्जक, स्पन्दनाख्य ।

तिलः–होमधान्य, जटिल, पापघ्न, पवित्र, पितृतर्पण, पूरफल, पूतधान्य, स्नेहफल, तैलफल, वनोद्भव ।

तुम्बीः–अलाबू, तुम्ब, तुम्बक, पिण्डफला, महाफला, आलाबु, एलाबु, लाबु, लाबुका, तुम्बिका, अलाबु,

कटुशालाबु, लम्बा, इक्ष्वाकु, क्षत्रियवरा, तिक्तबीजा, महाफला कटुतुम्बी, कटुफला, तुम्बिनी, कटुतुम्बिनी, वृहत्फला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तिक्ततुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका।

तुम्बुरुः–तेजस्विनी, तेजवती, तेजवन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजात, शीता, तिना, अतितेजनी, हेजोह्वा, तेजिनी, अश्वघ्ना वल्ली, स्वर्णनाकुली, विडालशी, सुतेजसी, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, स्फुटफल, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अगन्धक, गन्धालु, स्फुटितफल।

तुरुष्कः–अश्मपुष्प, कपिनामा, कपितैल, कृत्रिम, कपिश, चला, तुरुष्क, मुक्ति, मुक्ता, पिण्डित, सैंहिकारस, कपि, तैल, कपिल, चला, पिण्डतगर, सिंहपिण्डक, सिद्ध, पावन, पवन, यान, धूम्र, धूम्रवर्ण सुगन्धिक, सिह्लक, सिह्लसार, पीतसार, यावल, पिण्याक, कपिज, कल्क, पिण्डीतैलक, करेवर, कृत्रिमक, लेपन, शल्लकीद्रव, पिष्टक, तैलपर्णी, वृक्षधूप, कपिचंचल, तैलाख्य, पिण्डक, यावन, शज, यवनदे, चंचलतैल, कृतक।

तूदः–क्रमुक, ब्रह्मदारु, तूत, ब्रह्मकाण्ड, ब्रह्मकाष्ठ, मृदुसार, मदसार, नीलरंगक, तूल, नीलवृन्तक, ब्रह्मण्य, सुपुष्प, सुरूप, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, विप्रकाष्ठ, पुण, नूद, पुष, पलाशिक, यूप, यूप, तूल।

तृणशून्यः–स्वर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुवर्णकेतकी, सुगन्धिनी, हेमकेतकी, कनकप्रसव, पुष्पी, हैमी, छिन्नरुहा, विष्टारुहा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला।

त्रायमाणाः– देववला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा, वलभद्रा, त्रायन्ती, गिरिजानुजा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, वार्षिक, वलभद्रिका, वलदेवा, भदनामिका, कुलजा, त्रायमाणिका, सुकामा, गिरिजा, वार्षिका, अनुजा, मङ्गल्याह्वा, कृतत्राणा।

त्रिवृत्:– अर्धचन्द्रा, कालमेषी, काली, काकलिङ्गिका, कालपर्णी, रेचनी, लघुरोचनी, मालविका, मसूरी, पालन्दी, पालिन्धी, रेचनी, सरसा, सहा, सरणा, श्यामा, सरा, सुवहा, सर्वानुभूति, सुषेणी, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, त्रिवृता, त्रिवृत्तिका, त्रिवेला, सारा, विदला, सरला, मालविका, मसूरविदला, काला, कालमेषिका।

त्वक्:–वर, शीत, त्वक्पत्र, रामवल्लभ, तनुत्वक्, दारुसिता, त्वच, वरांग, भृङ्ग, चोच, शकल, उत्कट, सैंहल, लाटपर्ण, मुखशोध्य, वनप्रिय, रामेष्ट, विज्जुल, त्वचा, चोल, गुडत्वच, पत्र, सुरभिवल्कल, सूत्कट, त्वक्पत्र, वराङ्गक, त्वचा, हृद्य, वल्कल, मुखशोधन, सिंहल, वल्य, सुरसा, कामवल्लभ, बहुगन्ध वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्कल।

दन्तशठः– जम्बीर, जम्भल, जम्भ, गम्भीर, वक्त्रशोधी, रोचन, दन्तहर्षण, जम्भीर, रोचनक, मुखशोधी, जाड्यारि, जन्तुजित्, जम्भक, जम्भर, दन्तकर्षण, जेवल, दन्तहर्षक, जम्भी।

दन्तीः–मकूलक, वराहाङ्गी, गुणप्रिय, लघुदन्ती, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, एरण्डदल, शीघ्रा, श्येनघंटा, घुणप्रिया, वाराहाङ्गी, निकुम्भ, मकूलक, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, निःशल्या, निकुम्भ, नागस्फोता, दन्तिनी, उपचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तरुणी, एरण्डपत्रिका, अणुरेवती, विशोधनी, कुम्भी, उदुम्बरदला।

दर्भः–कुश, बर्हि, सूच्यग्र, यज्ञभूषण, दीर्घपत्र, क्षुरपत्र, कुथ, पवित्र, याज्ञिक, ह्रस्वगर्भ, कुतुप।

दाडिमः–करक, रक्तकुसुम, शुकवल्लभ, सुफल, दाडिमीसार, कुट्टिम, फलषाडव, रक्तबीज, दन्तबीजक, मधुबीज, कुचफल, रोचन, मणिबीज, वल्कफल, वृत्तफल, पिण्डपुष्प, दाडिम्ब, पर्वरुह्, स्वाद्वम्ल, पिण्डीर, सुखवल्लभ, रक्तपुष्प, डालिम, शुकादन, सुनील, नीलपत्रक, नीलपत्र, दन्तबीज, लोहितपुष्पक।

दारुहरिद्राः–दार्वी, पर्जन्या, पर्जनी, कटंकटेरी, द्वितीयाभा, कपीतक, पीतद्रु, कलियक, हरिद्र, पचम्पचा, हरिद्रा, काष्ठा, मर्म्मरी पीतिका, पीतदारु, स्थिररागा, कामिनी, पीता, दारुनिशा, कालीयक, वामवती, दारुपीत, कर्कटिनी, हेमकान्ती, पीतत्वक्, पीतचन्दन, काष्ठरजनी, हैमवती, हेमकान्ता, कुसुम्भका, कर्कटकिनी।

दुग्धिका:–दुग्धी, क्षीरारिमका, क्षीरी, क्षीरावी, मरूद्भवा, स्वादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीरविका, वच्छरा, ग्राहिणी, ताम्रमूला।

दूर्वा:–नीलदूर्वा, सहानन्ता, भार्गवी, शतपर्विका, शष्प, सहस्रवीर्य, अमर, शतवल्ली, शाद्वल, हरित, शतपर्वा, शीतकुम्भी, शीतला, वाहिनी, शीतली, हरिता, शाम्भवी, श्यामा, शीता, शतग्रंथि, अमृता, धूर्ता, अनुवल्लिका, शिवा, शिवेष्टा, मङ्गला, जया, सुभगा, भूतहन्त्री, शतमूला, महौषधी, विजया, सौम्य, गौरी, शान्ता, रहा, अनन्ता, भार्गवी, शतवल्ली, गुणा, नन्दा, अमरी, महावरी, हरवल्लिका, तिक्तपर्वा, दुर्मरा, बहुवीर्या, हरिताली, वच्छरहा, असितालता, पूता।

देवदारु:–सुरदारु द्रुकिलिम, भद्रदारु, सुरालय, देवकाष्ठ पीतद्रु भद्रवत्, शतपादप, पारिभद्रक, पीतदारु, दारु, पूतिकाष्ठ, फलपादप, किलिम, अमरदारु, दारुक, स्निग्धदारु, शिवदारु, शाम्भव, रुद्रवत्, भूतहारि, भवदारु शक्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, दारुभद्र, इन्द्रदारु, मस्तदारु, सुभूरुह, स्नेहवृक्ष सुरद्रुम, सुरकाष्ठ, स्नेहविद्ध, मद्रदारु, सुकाष्ठ, अरिनय-दारुक, काष्ठदारु।

द्रवन्ती:–शम्बरी, चित्रा, न्यग्रोधा, मूषिकाह्वया, प्रत्यक्श्रेणी, चिवा, चण्डा, पुत्रश्रेणी, आखुपर्णिका, वृषदन्ती, सुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विषभद्रा, भद्रदन्ती ज्योतिष्का, जयावहा, शिफा, प्रतिपर्णी, सहस्रमूली, दिक्कान्ता।

द्राक्षा:–स्वादुफला, मधुरसा, मृद्वीका, हारहूरा, गोस्तनी, स्वाद्वी, कृष्णा, चारुफला, रसा, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, प्रियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, फलोत्तमा, सुफला, कपिलीरिका, करमर्दिका।

धन्वन:–धामनी, धनुर्वृक्ष, धर्मन, महावल्क, रुजासह, रूक्ष, स्वादुफल, पिच्छलत्वक्, पिच्छिलक, रक्तकुसुम, रुजापह।

धव:–नक, धुरन्धर, धवल, गौर, घट, कषाय, मधुरत्वक्, मधुरवल्क, नन्दितरु, पिशाचवृक्ष, पाण्डुतरु, पाण्डुर, पीतफल, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, शाकटाख्य, स्थिर, शकटाख्य, दृढतरु, शुक्लवृक्ष, वटय।

धातकी:–अग्निज्वाला, अग्निवला, बहुपुष्पिका, धात्री, धातृपुष्पिका, धातृपुष्पी, धातुपुष्पी, धावनी, गुच्छपुष्पी, कुमुद, कुञ्जरा, मद्यवासिनी, मद्यपुष्पा, पार्वती, रोध्रपुष्पिणी, सुभिक्षा, सीधुपुष्पी, संघपुष्पी तीव्रज्वाला, ताम्रपुष्पी, वह्निशिखा, वह्निपुष्पी, वह्निज्वाला, मदकरा, इन्दुपुष्पिका, पार्वतीय, दाहनी, लोध्रपुष्पिणी।

धान्यक:–धान्यक, धान्यका, धान्या, धानी, धानेयक, कुस्तुम्बुरु, छत्रधान्य, वितुन्नक, अवन्तिका, अलका, छत्रा, धन्याक, धनिक, धन्य, धनीयक, धनेयक, धानक, धान्यबीज, वेधिका, धाना, हृद्यगन्धा, जनप्रिय, कुनटी, कुस्तुम्बुरी, निःसार, कुस्तुम्बर, शाकयोग्य, सुगन्धि, सूक्ष्मपत्र वेधक, वेशण, बीजधान्य, धना, धानी, धनिका।

धामार्गव:–महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, घोषक, हस्तिपर्ण, बृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, ग्राम्यकोशातकी, ऐशी, महत्पुष्पा, राजीतका, हस्तिघोषातकी, कर्कोटकी, पीतपुष्पा, महाजाली, धन्या, वृत्ता।

नन्दीतक:–क्षुद्र कुवेरक, कुनी, अश्वत्थभेद, नन्दीवृक्ष, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति, नन्दीरीक्षा, तुन्न, कण्टलक, कान्तलक।

नल:–नड, नल, पोटगल, धमन, नर्तक, रन्ध्री, शून्यमध्य, विधीवण, कुक्षिरन्ध्र, कीचक, दीर्घवंश, छिद्रान्त, मृदुपत्र, वंशपत्र, मृदुच्छद, नट, नटी, मृत्युपुष्प, नालवंश।

नलिका:–विद्रुमलता, नलिक, कपोतचरणा, नली, सुषिरा, धमनी, शून्या, निर्मध्या, नर्तकी, नटी, विद्रुमलतिका, कपोतवाणा, स्तुत्या, रक्तदला, नर्तकी।

नाकुली:–सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका ईश्वरी, नागगन्धा सुरसा, अहिभुक्, सर्पादनी, व्यालगन्धा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेश, भुजंगाक्षी, सर्पाङ्गी, विषनाशिनी, भोगिगन्धिका, सर्पसुगन्धा विरिजपत्रिका।

नागबला:–अरिष्टा, भद्रौदनी, गाङ्गेरुकी, खरा, ह्रस्वगवेधुका, महागन्धा, खरगन्धिनी, गोरक्षतण्डुला, खरगन्धा, चतुःपला, महोदया, महापत्रा, महाफला, विश्वदेवा,

अनिष्ट, देवदण्डा, महागन्धा, घण्टा, खरवल्लरिका, विश्वदेवी, खण्डा, खर्वा ।

नागरङ्गः– नागङ्ग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय, नार्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरक, वक्त्राधिवासी, किर्मिर, किर्मीरत्वक्, सुरङ्ग, रक्तगन्ध, इरावत, वक्त्रवास, योग ङ्ग, गन्धाढ्य, गन्धपत्र, वरिष्ठ, वक्त्राधिवासन, ऐरावतिक, योगी, सुरङ्ग, गन्धपत्र ।

नाडीः पट्टशाक, नाडीक, नाडीशाक, नाडीच, पेचुकी, पेचुली, पेचु, विश्वरोचन ।

नालिकेरः–नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्षक, तुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, नारिकेर, नाडिकेली, नारीकेली, नारीकेरी, नारिकेरि, नारिकेलि, सदापुष्प, शिरःफल, मृदुफल, पुटोदक, नारिकेर, रसफल, सुतुङ्ग, कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मङ्गल्य उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरारुह, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, तुङ्ग, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभद्र, फलकेशर, दरफल, महाफल सदाफल, रोमगर्भ, त्र्यक्षफल, तालवृक्ष, लाङ्गली ।

निष्पावः-राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक, श्वेतशिम्ब, पालकाख्य, मुखप्रिय, माषिका, मधुशर्करा, पलङ्कषा, स्थूलशिम्बी, वृता, मधुसिता, सिता ।

नालिकाः–नीली, नीलिनी, नीला, मेचवर्णा, कुन्तला, तूली, क्लीतकिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रजनी, श्रीफली, तुत्था, तूणी, दोला, दोलिका, द्रोणिका, अक्षिका, प्रामणी, प्रामिणी, तूली द्रोणी, मेला, तुच्छा, नीलपत्री, राज्ञी, नीलपुष्पी, काली, श्यामा, शोधिनी, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, मकाफला, स्थिररङ्गा, रङ्गपुष्पी, वृन्तिका, अञ्जनकेशिका, चारटी, विजया, गन्धपुष्पी, स्थिररगा ।

नीवारः-तापस, मुनिभक्त, प्रसाधिक, अरण्यधान्यनामा, रक्तिक, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव, तृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यजाली, प्रसाधिका ।

पटोलः–कुलक, तिक्त, पाण्डुक, कर्कशच्छद, मण्डली, मधु, राजीफल, पाण्डुफल, राजनामा, अमृताफल, राजीमान्, तिक्तोत्तम, बीजगर्भ, कुष्ठघ्न कुष्ठारि, कासमर्दन, पत्रराजिफल, ज्योत्स्ना, कच्छुघ्न, ज्वरनाशन, तिक्तक, पटु, पटुक, कर्कशदल, कुलज, वाजिमान, लताफल, राजफल, राजपटोल, वरतिक्त, तिक्तभद्रक, पटुफल पटुक, कटु, अमृतफल, पाण्डु, नागफल, पञ्जर, ज्योत्स्नी, कच्छुघ्नी, प्रतीक, कुष्ठहा, कासभञ्जन ।

निकोचकः–कोलक, दीर्घदल, पीतसार, गूढमल्लिका, मदन, गुप्तस्नेह, चारुफल, मंकोट, फलस्नेह, निकोच, जलगोरक पित्त, मुकूलक, दन्तीफलसमाकृति, अङ्कोट, अङ्कोल, करेची, दीर्घकीलक, पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प, अङ्कोल, कंटर, गूढपत्र, लम्बकर्ण, रोचन, विज्ञातैलगर्भ, गुणाढ्यक ।

निचुलः–इज्जल, हिज्जल, अम्बुज, जलवेतस, समुद्रफल, अब्धिफल उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधिफल ।

निम्बः-अरिष्ट, अर्कपादप, छर्दन, छर्दिघ्न हिंगु, कैटर्य, काकफल, कीरेष्ट, कीटक, मालक, नेता, निम्बक, निर्यास नियमन पर्ककृत्, पारिभद्रक, पिचुमन्द, पीतसार, प्रभद्र, पूकमालक, पूयारि, पीतसारक, गजभद्रक, रविप्रिय, सर्वतोभद्र, सुमना, सुतिक्तक, सतिक्तक, सुभद्रक, सुभद्र, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, शीत, वरत्वच, विशीर्णपर्ण, यवनेष्ट, यवनेरा, पारिभद्र, धमन, ज्येष्ठमालक, हिङ्गुनिर्यास, अग्निधमन ।

निर्गुण्डीः–सुगन्ध, शीतसहा, नीलसिन्दुक, सिन्दुकच्छदिका, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलका, नीलिका नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, पीतसह, कपिका, शेफालिका शीतभीरु, नीलमञ्जरी, कर्तरीपत्रा, वनजा, मरुत्पत्री, वनेन्द्राणी, श्वेतसुरसा पीतसहा ।

पत्रः–तमालपत्र, पत्र, पलाश, छदन, दल ।

पद्मकः–चारु हिम, केदारज, केदार, मलय, मालय, पीत, पीतक, पद्मवृक्ष, पद्मगन्धी पद्माह्वय, पद्मकाष्ठ पाटलापुष्प, वर्णक, रक्त, शुभ्र, सुरभ, सुगर्भ, पीतरक्त, शीतल, शीतवीर्य, पाटलापुष्पसन्निभ ।

पनसः–महासर्ज, फलिन, फलवृक्षक, स्थूल, कण्टकफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पूतफल, आशय, अपुष्प,

अतिबृहत्फल, चम्पालु, चम्पा, चम्पकालु, कण्टीफल, कण्टाफल, कण्टकिफल, कोष, मृदङ्गफल, महासर्ज, मूलफलद, पानस, फणस फलद, फलस, फलिन, फलवृक्ष, स्थूलकण्टफल, मुरजफल, पलस ।

पयस्याः-क्षीरकाकोली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, वयस्था, क्षीरमधुरा, वीरा, क्षीरविषाणिका, जीववल्ली जीवशुक्ला ।

परूषकः-परु, वन्यपत्रक, नीलवर्ण, परापर, परिमण्डल, अल्पास्थिक, परुष, परूष, गिरिपीलु, रोपण, नागदलोपम, परावत, नीलचर्म, नीलमण्डल धन्वनच्छद, मृदुफल, परावर, नीलपर्ण ।

पर्पटकः-शीतप्रिय, पर्पटक, ज्वरघ्न, सूक्ष्मपत्रक, वरतिक्त, पित्तघाती, कृशशाख, कवर, रेणुनामक, अरक, कवचनामक, कल्पाङ्ग, कृष्णशाख, कटुपत्र, चरक, रजस्, रेणु, रक्तपुष्पक, पांशुपर्याय, पांशु, पित्तारि, शीतप्रिय, शीत, सुतिक्त, शीतवल्लभ, पर्पट, नक्र, तिक्त, त्रियष्टि, वरतिक्त, वरक, वर्मकण्टक, प्रगन्ध, त्रियष्टि, तृष्णारि ।

पलाण्डुः-राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय, मुकन्द, मुखदूषण, लतार्क, दुद्रुम, दुर्गन्ध, मुखदूषक, मुकन्दक, निकेतन, नीचभोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, दीपन, क्षुद्रप्रिय, कृमिघ्न, मुखगन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, मुकुन्दक, राजप्रिय, नृपकन्द, नृपेष्ट, नृपप्रिय, रक्तकंद, राजेष्ट, उल्ली, ऊलि, श्वेतकन्द ।

पलाशः-किंशुक, यज्ञिय, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, पर्ण, याज्ञिक, वातपोथ, करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतद्रु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु, बीजस्नेह, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी ।

पाटलाः-पाटली, ताम्रपुष्पी, कुम्भिका, रक्तपुष्पिका, वसन्तदूती, अमोघा, स्थाली, विटवल्लभा, स्थिरगन्धा, अम्बुवासा, कालवृन्ती, थर्घुर, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कुम्भी तोयाधिवासिनी, काचस्थाली, कुबेराक्षी, तोयपुष्पी, सुपुष्पिका, अम्बुवासी, कामदूती, अलिप्रिया, मधुदूती, अलिवल्लभा, कोकिला, ताली ।

पाठाः-अम्बष्ठा, विद्धकर्णी, स्थापनी, श्रेयसी, रसा, एकाष्ठीला, पापचेली, प्राचीना, वनतिक्तिका, कुचेला, छिन्नवेसिका, अम्बष्ठिका, पापचेलिका, यूथिका, विद्धकर्णिका, कुचेली, दीपनी, तिक्तपुष्पा, बृहत्तिक्ता, शिशिरा, वृकी, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, अविद्धकर्णी, पाटिका, अविद्धकर्णा पाठिका, सुस्थिरा प्रतापिनी, वराप्रादनी, मालवी, शिशिरा, त्रिवृत्, वृत्तपर्णी, रक्तघ्नी, विषहन्त्री, महौजसी, वृचिष्या, वीरा, वल्लिका ।

पारावतः-कलरव, अरुणलोचन, मदनकाकुरव, कामी, रक्तेक्षण, मदनमोहन वाग्विलासी, कण्ठीरव, गृहकपोतक ।

पालङ्क्याः-पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपत्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा, ग्रामीणा, ग्राम्यवल्लभा, क्षुरिका, वास्तुकाकारा, छुरिका, चोरितच्छदा, पालंकी ।

पाषाणभेदः-अश्मघ्न, शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, श्वेता, नगभित्, शैलगर्भज, अश्मभित्, अश्मभेदक, पाषाणभेदक, पाषाणभेदन, पाषाणभेदी, उपलभेदी, उपलभित्, शिलागर्भज, गिरिभित्, भिन्नयोजनी, दवज्जित्, अश्मजित् ।

पिण्डालुः-ग्रन्थिल, पिण्डकन्द, कन्दग्रन्थि, रोमश, रोमग्रन्थी, रोमकन्द, रोमालु ताम्बूलपत्र नानाकन्द, पिण्डक, पिण्डीतक, पिच्छिल, स्वादुकन्दक ।

पिप्पलीः-मागधी, कृष्णा, वैदेही, चपला, कणा, उपकुल्या, उषणा, शौण्डी, कोला, तीक्ष्णतण्डुला, चञ्चला, कोल्या, तिक्ततण्डुला, उष्णा, कटी, एरण्डा, मगधा, ऊषणा, कृकला, कटुबीज, कोरङ्गी, श्यामा, सूक्ष्मतण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा ।

पीलुः-शीत, सहस्रांशी, शीतसह, स्रंसी, गुडफल, वाहनान्न, विरेचनफल, शाखी, श्याम, करभवल्लभ, पीलुक, कलभवल्लभ । पीलुवृक्ष, दहन, तपन,

पुनर्नवाः-श्वेतमूला, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका, क्षिद्रबीजक, पृथ्वीज, कठिलक, शशिवाटिका, पृथ्वीर, क्षुद्रवर्षाभू, दीर्घायुष्य, कठिल्लक, स्फोटहेतु, पृथ्वी, सितवर्षाभू, विशाटिका, पृथ्वी, वीरक्ष । वर्षाङ्गी, वर्षाही, घनपत्र ।

पुष्करः—पौष्कर, पुष्करमूल, पद्मवर्णक, पद्मकर्ण, पद्मपत्रमूल पद्मपर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कर ह्वया, काश्मीर, ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूलपुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिफा, वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुण्य, सागर शूर, ब्रह्मरुह, सुमूलक, शूलघ्न कुष्ठभेद ।

पूगः—उद्वेग, संधि, घोण्टाफल, चिक्कण, चिक्कणा, चिक्का, गुवाक, खपुर, दीर्घपादप, वल्कतरु, दृढवल्क, मुनिह्वय, गुवाक, क्रमुक, घोण्टा, गूवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, अक्षोट तन्तुसार, सुरेजन, गोपदल, राजताल छटाफल, करमट्ट, पूगफल ।

पृथ्वीका:—एला, स्थूलैला, बहुला, मालेया, ताडकीफल, स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवं द्भवा, सुगन्धित्वक्, महिला, कन्या, कुमारी, कुमारिका, पृथ्वी, गोपुट, कायस्था, कान्ता, इन्द्री, घृत ची, भद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, चर्मसम्भवा, वाला, बलवती, एलकी, महैला, सागरगामिनी गन्धालीगर्भ कन्यका, पुटा, स्वक्सुगन्धा ।

पृश्निपर्णी:—पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलशी सिंहलांगुली, चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुकमेखला, दीर्घा शृगालवृन्ता, क्रोष्टुपुच्छिका, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, घष्टिला, चित्रपर्णिका, कलशी, क्रोष्टुपुच्छी, कदला, कंकशत्रु, चक्रकुल्या, चक्रपर्णी, शीर्णमाला, महागुहा, धमनी, शृगालविन्ना, मेखला, लांगुलिका, ब्रह्मपर्णी, दीर्घपर्णी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी, गुहा, लाङ्गुलिका, शृगालिका, चित्रपर्णी, उपचित्रा, श्वपुच्छा ।

प्रसारिणी:—प्रसारणी, राजबला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढ्या, सारणी, सरणी, गन्धभद्रा, भद्रपर्णी, शरणा, गन्धोली, भद्रबला, प्रतानिनी, सुप्रसरा, प्रसर, सरा, पर्णी, प्रबला, प्रभद्रा प्रतानिका, राजपर्णी, चन्द्रपर्णि

नीवारः वल्या ।

ोक, अरण्यधान्य,

व्रीहि, अरण्यजाली, प्रचुः:—पानीयामलक, वारिवदर, प्राची-

प्रियङ्गुः:—फलिनी, कान्ता, लता, श्यामा, गन्धफला, गोवन्दनी, विष्वक्सेना, कृष्णपुष्पी, कृशाङ्गी, महिलाह्वया, गुन्द्रा, कारम्भा, प्रियक, कङ्गु, गोवर्णा, मेदिनी, मिथवल्ली, फलप्रिया गौरी, वृत्ता, कङ्गु, कङ्गुनी, भङ्गुरा, गौरवल्ली, सुभङ्गा, पर्णभेदिनी, शुभा, पीता, मङ्गल्या, प्रेयसी, अङ्गना-प्रिया, वनिता नारिवल्लभा, प्रियवल्ली, वर्णभेदिनी, सुभगा, श्रेयसी ।

प्रियालः:— खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, धनुष्पट, अखट्ट, ललन, चारक, बहुवल्कल, सन्नद्रु, तापसप्रिय, स्नेहबीज, उपवट, मोक्ष-वीर्य्य, द्रुसल्लक, राजातन, प्रियल, धनु, पट, हृसन्नक, धनुःपट, प्रियालक, खट्टु, नवट्टु, भक्ष्यबीज ।

प्लक्षः:—जटी, पर्करी पर्कटी, कपीती, चारुदर्शिनी शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी पिम्परी, वटी, कन्दरालुतरु, कपीतन; क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, पीतन, दृढप्ररोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल वन्दगालु पर्कटी, जटि, शीक्षा वटलव, कपीतरु ।

फञ्जी:—फञ्ज्या, फञ्जिका, पद्मा, अङ्गारवल्ली, अपराजिता तर्कारी, चूचुक ।

फल्गुः:-अञ्जीर, मञ्जुल, काकोदुम्बरिकाफल ।

फेनिलः:—अरिष्टक, माङ्गल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपातन, रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मङ्गल्य, कुम्भबीजक, प्रकीर्य्य, सोमवल्कल

बकुलः:—वकुल, केशर, कण्ठ, तैलाङ्ग, मधुपञ्जर, सिंहकेशर, मुकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पद्ममोद, चिरपुष्प, मद्यगन्ध मधुगन्ध, शोर्दकेशरक सिद्धासंज्ञ, विशारद, मद्यामोद ।

बदरः:-कर्कन्धु, कर्कन्धुक, कर्कन्धू कोल, फेनिल, कुवल, घंण्टा, सौवीर, बदर, पिच्छिला, अग्निप्रिया, कुह, कोली, विषम, उभयकण्टका, सुरस, बदरीच्छदा, सौवीरक,

बालेष्ट, फलशैशिर, गरफल, गोपघोंटा, हस्तिगोलि, गोपघोंटी, शृगालकोलि, बादिर, गुडफल, दृढबीज, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुबीज, सुफल स्वच्छ, कोला, स्वादुफल, गृध्रनखी, पिच्छिल, स्वादुफला सौविक, अजाप्रिया, उभयकण्टक गुडफल, फेनिल।

बला:-भद्रोदनी, वाटी, समङ्गा, खरयष्टिका महासमङ्गा ओदनिका, शीतपाकी, ओदनाह्वा, वाट्यपुष्पी, कल्यांशा, विल्ला, बलिनी, बला, वाट्यालक, ओदनी, भद्रा, भद्रौदनी, खरकाष्टिका कल्याणिनी, भद्रबला, मोटावाटी, बलाह्वा, शीतपाकी, वाट्यायनी, निलया, वाट्याली, वाटिका, वाट्यालिका, ओदनह्वा, वाह्नी, धना, रक्ततण्डुला, क्रूरा, प्रहासा, वारिया फणिजिह्विका, जयन्ती, कठोरयष्टिका।

विभीतकः-कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, विभीतकी, विभीत, तुष, कर्षफल, भूतवास कलि, कुशिक बहुवीर्य, तैलफल, भूतावास, संवर्तक, वासन्त कलिवृक्ष, बहेडुक, हार्य, विषघ्न, कलिन्द, अनिलघ्नक, कासघ्न, कलियुगालय तौलफल, तिलपुष्पक, कल्क, बहेडक, कर्षघ्न, हलिक।

बिम्बी.-रक्तफल तुण्डी, तुण्डिकेरी बिम्बिका, ओष्ठोपमफला, पीलुपर्णी, ओष्ठी, कर्मकारी तुण्डिकेरिका, तुण्डिकेशी, बिम्ब, बिम्बक, कम्वजा, दन्तच्छदोपम, गोह्री, रुचिरफला, छर्दिनी, तिक्ततुण्डी, तिक्ताख्या, कटुका, कटुतुण्डिका।

बिल्वः-महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मङ्गल्य, मालूर, शिशिर, शाण्डिल्य, शैलूष, मालुर, कपीतन, महाकपित्थ, अतिमङ्गल्य, महाफल, शैल्य, ह्यगन्ध, शलाटु, कर्कटाह, शैलपत्र शिवेष्ट, पत्रश्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल दुरारुह, त्रिशाखपत्र, शिवम, सदाफल, सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यधर्म, आनरारुह, चण्डाल्य, सितानन नीलमल्लिक पीतफल, गोमहरीतकी, वातसार, अरिमेद, सत्यकर्मा, वरारुह, सभूतिक, खरकाष्ठ वंटक, असितानन।

बीजकः-पीतसार, पीतसालक, बन्धूकपुष्प प्रियक, सर्जक, असन, पीतशाल, पीतशालक, पीतसाल, पद्मायुध, महासर्ज, सौरि, बीजवृक्ष, नीलक, प्रियसालक, श्याम, सुनील असन, प्रियशालक।

बीजपूरकः-बीजपूर, मातुलुङ्ग, रुचक, फलपूरक, बीजक, अम्लकेशर, बीजपूर्ण, पूर्णबीज, सुकेशर, मातुलिङ्ग, सुपूर, बीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल, छ्ट, अम्लकेसर, सुमनःफल, केसरी, केसराम्ल, वराम्ल, मध्यकेसर, कृमिघ्न, गन्धकुसुम, सिन्धुरादप, दन्तुरत्वच।

बृहती:-महती, सिंही, हिंगुली, प्रसहा, कुली, धान्ता, क्षुद्रवार्ताकी, रक्तपाकी, लता, बृहतिका, आक्रान्ता, वार्ताकी, सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्टा, दुष्प्रधर्षा, भण्टाकी, महोटिका, बहुपत्री कण्टतनु, कण्टालु, कटुफला, डोरली, वनवृन्ताकी, पारावेदी, विषदा, कान्ता, स्थूलकण्टाकी, महती, डोरली।

ब्राह्मी.-वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी, वरा, सोमवल्लरी, सरस्वती, सौम्या, सुरश्रेष्ठा, सुवर्चला, कपोतवेगा वैधात्री, दिव्यतेजा, महौषधि स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, दिव्या, भारती परमेष्ठिनी, शारदा, कपोतवङ्का, सोमवल्ली, सोमा, ब्रह्मसुवर्चला, त्वाष्ट्री, सुरेज्या, ब्रह्मकन्यका, मध्या, शारदी।

भद्रमुस्ता:-गाङ्गेय, कुरुविल्व, भद्रमुस्त, कुटन्नट, मुस्तक मुस्ता, कशेरुका, वराही, ग्रन्थि, भद्रकाशी, कशेरु, क्रोडेष्टा, कुरुविन्दाख्या, सुगन्धि, ग्रन्थिला, हिमा, वलय, कच्छोला, अर्णोद, वारिद, अब्द।

भल्लातकः-अरुष्कर, भल्लात, शोथकृत्, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत्, भूतनाशन, भल्लातकी, अग्निमुखी वीरवृक्ष, अन्तःशत्रु, भल्लिका, अग्निहिता, भल्ली, निर्दहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलबीज, वातारि, स्फोटबीजक, पृथग्बीज, धनुर्वृक्ष, बीजपादप, वह्नि, महातीक्ष्ण, क्रमिक, स्फोटहेतु, शोफकृत्, स्नेहबीज, रक्तहर, वीरवृक्ष।

भव्यः–भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्त्रशोधन, पिच्छिलबीज, लोमफल, आविक, संपुटाङ्ग, कुसुमोदर, रोमफल।

भारद्वाजीः–कूकराट, व्याघ्राट, पुण्यदर्शन।

भार्गीः–पद्मा, ब्राह्मणयष्टिका, अङ्गारवल्ली, फञ्जी, ब्रह्मसुवर्चला, शुक्रमाता, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवा, अङ्गारवल्ली, वालेय, ब्राह्मणी, ब्राह्मणयष्टिका, ब्रह्मयष्टी, ब्रह्मयष्टिका, ब्राह्मिका, ब्रह्मी, ब्राह्मी, भृगुजा, भृगुभवा, भ्रमरेष्टा, भृङ्गजा, भार्ङ्गी, दूर्वा, दिव्यदण्डी, गर्दभशाक, गर्दभशाका, हञ्जिका, कालिङ्गवल्ली, कासघ्नी, कासजित्, खरशाका, सुखधौता, फञ्जिका, शक्रमाता, सुरूपा, स्वरूपा, यष्टि, कालेयशाका, वान्तारि, वर्धक, वर्षा, शाकवालेय, भारङ्गी, अङ्गारवल्लरी, वर्बर, गर्दभशाखी।

भूर्जः–भूर्जपत्र, चर्मी, बहुलवल्कल, सुचर्मा, छदपत्र, वल्कद्रुम, भूर्जपत्रक, चित्रत्वक्, बिन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतघ्न, मृदुपत्र, मृदुचर्मी, शैलेन्द्रस्थ, चर्मद्रुम, छत्रपत्र, शिवि, स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, दलनिर्मोक, पत्रकी, विषादक, पत्रपुष्पक, भुज, बहुपट, बहुत्वक्, मृदुच्छद, वल्कद्रुम, विचित्रक, भूतघ्न।

भृङ्गराजः–मार्कव, भृङ्गाह्व, केशरञ्जन, पितृप्रिय, रङ्गक, केश्य, कुन्तलवर्धन, भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मर्कर, मार्क, नागमार, पारु, भृङ्गसोदर, अङ्गारक, एकराज, कञ्जक, भृङ्गार, अजागर, केशराज, भृङ्गारक, मेकराज, पङ्कजात, तेकराज, मेघाख्य, महानील, हरिवास, हरिप्रिय,

मकुष्ठः–मकुष्ठक, वनमुद्ग, क्रमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, मुकुष्ट, राजमुद्ग, मयष्ठ, वरक, निगूढक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ट, मयष्टका, मयुष्ट, मयुष्ट, मयक, मयुष्टक, निरूढा।

मञ्जिष्ठाः–विकसा, जिङ्गी, समङ्गा, कालमेषिका, मण्डूकपर्णी, भण्डीरी, काला, योजनवल्लिका, योजनवल्ली, मण्डूकी काण्डीरा, वस्त्ररञ्जनी, रक्ताङ्गी, रक्तयष्टि, रक्ता, भण्डी, योजनपर्णिका, लतायष्टि, हेमपुष्पी, भिण्डीरी, काण्डीरी, मण्डिल, भण्डी भण्डि, भण्डितकी, रसायनी, गण्डीरी हरिणी गौरी वशा, रोहिणी, चित्रलता, चित्रा, चित्राङ्गी, जननी, विजया, रक्तयष्टिका, मञ्जूषा, छत्रिणी, रागाढ्या, कालमण्डिका, अरुणा, ज्वरहन्त्री, छदा, नागरकुमारिका, मण्डीरलतिका, रागाङ्गी, वस्त्रभूषणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूली, ताम्रिका, लोहितलता, ताम्रवल्ली, वाला, कालमेषी, गण्डाली, पद्मा, कालमण्डिका, नागकुमारिका।

मण्डूकपर्णीः–माण्डूकी मडूर्वा, भेकी, मण्डूकपर्णिका, माण्डूकी त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममाण्डूकी, सुप्रिया, दर्दुरच्छदा।

मदनः–छर्दन, पिण्डीतक, पिण्डीतक, करहाट, मरुवक, शल्यक, विषपुष्पक, पिचुक, मुचुकुन्द, कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, राममच्छर्दनक, रामाच्छर्दनक, कैडर्य, धाराफल, तगर, राठ गाल, ग्रन्थिफल, वस्तिशोधन, तरट, राहु, पिण्डातक घण्टाल, मादन, दर्प, घण्टारव, वस्तिरोधन।

मदयन्तिकाः–तिमिर, कोरदन्ता, द्विरन्त, नखरञ्जक, मेन्दिका, रागगर्भा, रञ्जका, नखरञ्जनी, सुगन्धपुष्पा, रागाङ्गी, यवनेष्टा।

मधूकः–मधुवृक्ष, मधुष्ठील, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोध्रपुष्प, वानप्रस्थ, माधव, मध्वग, तीक्ष्णसार, डोलाफल, महाद्रुम, मधु, मधुसार, मध्वल, जलज, मधूलिका।

मरिचः–पवित, श्याम वेणुज, यवनप्रिय, शुद्ध, वल्लीज, वेल्लज, कोलक, धर्मपत्तन, कोल, ऊषण, वरिष्ठ, यवनेष्ट, वृत्तफल शाकाङ्ग, वेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, वार, कफविरोधि, सृष्ट, वीर, सर्वहित, कृष्ण, पलित, रुचिर, रूक्ष, धन।

मरुवकः–मरुत्तक, मरुत्, मरु, फणी, जम्बीर, फणिज्झक, प्रस्थपुष्प, समीरण, खरपत्र, गन्धपत्र, बहुवीर्य, शीतलक, सुराह्व, प्रस्थकुसुम, मरिच, आजन्मसुरभिपत्र, कुलसौरभ।

मसूरः–रागदालि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, सूर, कल्याणबीज, गुरुबीज, मसूरक, मङ्गल्यक, मसुर, ब्रीहिकाञ्चन, गभोलिक, ताम्बूलराग, हालासक, मसुरा, मसूरा, मसूरिका, मसूरि, मङ्गल्या, माङ्गल्या।

महाश्रावणीः–महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, छिन्ना, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, अतितपस्विनी, महामुण्डी, कदम्ब-

पुष्पी, लोचनी, विकचा, कोडपुडा, पलङ्कषा, नदीकदम्बा, मुण्डाख्या, महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भूकन्द, अलम्बुषा, वृद्धा, छिन्नग्रन्थिका, नीलकदम्बिका, वोडा, लोभनीय, लोचनी, कोडचोडा, लोभनी, लम्बुजा ।

मांसी:-जटामांसी, जटी, केशी, लोमशा, जटिला, मिशी, मांसी, तपस्विनी, हिंस्रा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, नलद, नलिनी, कृष्णजटा, किराततिनी, भूतजटा, कव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मांसिनी, जटाला, नलदा, मेषी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावनी, मृगभक्षा, जडामांसी, मीसिका, मिसि, मिसी, मिषि, केशिनी।

मारिषः-मारीष, बाष्पक, मार्ष ।

मालती:-सुमना, जाती, चारुन्ती, सुवती ।

माषः-कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषांकुर, मांसल, वलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन, बीजरत्न, बली, बीजवर ।

माषपर्णी:-कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, अपिच्छिका, हयपुच्छी, काम्बोजी, सिंहपुच्छिका, महासहा, सिंहपुच्छी, पाण्डुलोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मंगल्या, हयपुच्छिका, हंसमाषा, अश्वपुच्छी, कल्याणी, माषपर्णिका, वज्रमूली, शालिपर्णी, विसारपर्णी, आत्मोद्भवा, बहुफल, स्वयम्भू, सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशम्बिका, सूर्यपर्णी, पाण्डुरा, माषपर्णिका, विसारिणी ।

मुद्गः सुपेष्ट, वर्णार्ह, रसोत्तम, भुक्तिप्रद, हयानन्द, भूवल, वाजिभोजन, सुफल ।

मुद्गपर्णी:-क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्जारगन्धिका, वनजा, रिङ्गिणी, ह्रस्वा, शूर्पपर्णी, क्षुद्रशिम्बी, दासिका, काकमुद्गा, वनमुद्गा, वनोद्भवा, अरण्यमुद्गा, वन्या, सहा, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी, वनजा, पशिका ।

मुष्ककः-मोक्ष, गोक्षर, गोलीढ, गोलिह, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, मुष्क, मुष्टि, मूर्खक, मोचक, गोलिर, मेहन, पाटली, विषापह, जटाल, वनवी, सुतीक्ष्णक, क्षारोपण, शिखरी, वननाशी, घण्टापाटलि, मुषक, क्षुद्रापाटलि, जटालु, पाटल, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु, कालमुष्क, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, कालस्थाली ।

मुस्ता:-मेघाख्य, मुस्तक, मुस्त, वालेय, परिपेलव, घन, कुरुविन्द, मेघनाम, अम्बुवाह, अम्बुभृत्, तडित्वान्, वारिवाह, बलाहक, स्तनयित्नु, तोयद, तोयधर, अभ्रनामक, गाङ्गेय, भद्रमुस्तक, श्रीभद्रा, भद्रक, भद्रा, राजकसेरु, कसेरुक, वारिदनामक, नादेय, जीमूत, वृषध्वांक्षी, जलद, जलावह, पिण्डमुस्त, नागर, वारिद, अम्भोद, नीरद, वराही, गुन्द्रा, ग्रन्थि, भद्रकाशी, कशेरु, कोडेष्टा कुरुविन्दाख्या, सुगन्धि, ग्रन्थिला, हिमा, वन्या, कच्छोत्था, गुण्डग्रन्थि ।

मूलकः-मूलक, हरिपर्ण, मृत्तिकाक्षार, नीलकण्ठ, नीलकन्द, महाकन्द, हस्तिदन्त, भूमिक्षार, रुचिष्य, हस्तिदन्तक, राजालुक, कन्दकन्दक, मूलाह्व, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मृत्क्षार, कन्दमूल, सित, रुचिर, शङ्खमूल, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षामामूल, शिम्बीफल, हरितपर्ण ।

मूर्वा:-मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढसूत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णी, धनुलाला, धनुर्गुणा, स्रवा, मधुलिका, धनुःश्रेणी, कर्मकरी, धनुःशाखा, श्रवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथक्त्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, तिक्ता, गोपवल्ली, मोरटा, त्रिपर्णी, स्वादुरसा, स्निग्धपर्णी, अमरा, भिन्नदला, अमरी, मधुमती, पृथक्पर्णिका, गोकर्णी, लघुपर्णिका, दहनी, पीलुनी, रक्तला, सुलोपिता ।

मृगलिण्डिकाः-गाङ्गेरुक, कर्कटक, वार्वट, तोदक, क्रन्दन, मृगविट्कृदश, मृगलेंडक ।

मृष्टकः-राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, रक्तिका, क्षुज्जनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्षप, क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, आसुरी, काकोदुम्बरिका, रक्तसर्षप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, ज्वलन्ती, ज्वलत्प्रभा ।

मेषशृङ्गी:-मेषवल्ली, चक्षु, मेषविषाणिका, नन्दीवृक्ष, चक्षुर्वहल, मेढ्रशृङ्गी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृङ्गिका, विषाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौर्वी, नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रश्रृङ्गी, कर्णिका, अक्षिभेषज ।

यवानीः-दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, यवाह्वा, भूकदम्बक, ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह्व, दीपनी, दीपिनी, वातारि, यवक्षदीपनीय, शूलहन्त्री, यमानिका, उग्रा, हृद्या, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक, अजमोदा ।

यवः-सितशूक, मेध्य, दिव्य, अक्षत, कञ्चुकि, धान्यराज, तीक्ष्णशूक, तुरगप्रिय, शक्तु, हयेष्ट, पवित्रधान्य, शीतशूक, शितशूक, हयप्रिय, यवक, श्वेतशुङ्ग, प्रवेट, तुरंगप्रिय ।

यवासकः-यास, अनन्ता, बालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल, समुद्रान्त, दीर्घमूल, मरूद्भव, यवास, कण्टकी, बहुकण्टक, क्षुद्रेङ्गुदी, रोदनिका, विघ्न, धन्टकालुक, त्रिपर्णिका, गन्धारी, वासन्त, वनदर्भ, विवर्णक, तीक्ष्णकण्टक, सूक्ष्मपत्र, अतिकण्टक, खर, कच्छुरा ।

यष्टिमधुः-मधुयष्टी, यष्टि, यष्ट्याह्वा, मधुयष्टिका, यष्टिमधु, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिका, यष्ट्याह्वक, क्लीतक मधुस्रवा, मधुम, क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुवल्ली, मधूली, मधुररसा, अतिरसा, मधुरनाम, शोपापहा, सौम्या ।

यूथिका:-बालपुष्पा, पुष्पगन्धा, गुणोज्ज्वला, गणिका, चारुमोदा, शिखण्डी, स्वर्णयूथिका, यूथि, वासन्ति, बालपुष्पी, शिखण्डिनी, अम्बष्ठा, मागधी, प्रहसन्ती, बालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुण्यगन्धा, गुणज्वला, हारिणी, शङ्खयूथिका, सुगन्धिका, यूथितरुणी, सुगन्धा, मोदनी, बहुगन्धा, गजाह्वया ।

रक्तचन्दनः-ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तसार, क्षुद्रोद, रक्तबीज, कुचन्दन, क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, रक्ताक्ष, ताम्रवृक्ष, चन्दन, लोहित, लोहितचन्दन, अर्क, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, तिलपर्ण, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग, पत्राङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, हरिचन्दन, शोणित, हिम, अर्कचन्दन ।

राजादनः-फलाध्यक्ष, राजन्या, क्षीरिका, राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्बबीज, मधुफल, माधवोद्भव, क्षीरी, गुच्छफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुक्ल, क्षीरी, क्षीरशुक्र, नृप, प्रियदर्शन, शुकेष्ट ।

रास्नाः-नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पलङ्कषा, घ्रोणगन्धिका, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजङ्गाक्षी, छत्राकी, सुवहा, रस्या, श्रेयसी, रसना, एलापर्णी, रसा, सुगन्धिमूला, रसाढ्या, अतिरसा, मुक्तरसा, युक्तरसा, पुत्तिरसा ।

रुहाः-गन्धमादनी, रोहिणी, वन्दा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया, वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वलदक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, कामवृक्ष, शेखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादिनी, कामिनी, तरुभुक्, श्यामा, द्रुपदी, पदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्गा ।

रोहिणीः-मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकषा, वसा, प्रहारवल्ली, विकषा, वीरवती, अग्निरुहा, मांसरोही, कशामांसी, महामांसी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, चन्द्रवल्लभा, मुनि ।

रोहितकः-रोहीतक, रोहित, कुशाल्मली, दाडीमपुष्पसंज्ञक, सदाप्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिका, रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तक, रुच्य, प्लीहनाशन, प्लीहघाती, रक्तप्रसादन, रोही, प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, प्लीहघ्न, मांसदलन, यकृद्वैरी, चलच्छद, प्लीहारि, रोहितेय, रोहिण, रोचन ।

लक्ष्मणाः-पुत्रजननी, रक्तबिन्दुच्छदा, नाशिनी, शूलिनी, नागवती, मर्मकमा, क्षेत्रदूती, सितार्सिही, कुमतिका, सुश्वेता, कण्टकारी, दुर्लभा, महौषधी, सिता, सितकण्टारिका, श्वेता, सितसिंही, सितक्षुद्रा, क्षुद्रवार्ताकिनी, क्षिंगा, कटुवार्ताकी, क्षेत्रजा, कपटेश्वरी ।

लवङ्गः-देवकुसुम, भृङ्गार, शिखर, दिव्य, चन्दनपुष्प, श्रीपुष्प, वारिसम्भव, श्रीसंज्ञ, कलिकोत्तम, सुपिर, तीक्ष्ण, वारिज, शेखर, लव, प्रसून, लवङ्गक, लवङ्गकलिका, रुचिर, ग्रहणीहर, तोयाधिप्रिय, वारिपुष्प, तीक्ष्णपुष्प, गीर्वाणकुसुम, दिव्यगन्ध, श्रीप्रसूनक, भृङ्गाङ्गी ।

लवलीफलः-सुगन्धमूला, लवली, पाण्डु, कोमलवल्कला, स्निग्धा, स्कन्धफला ।

लशुनः-रसोन, उग्रगन्ध, महौषध, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, शुक्लकन्द, महाकन्द, वातारि, दीर्घपत्रक, रसुन, गृञ्जन, रसोनक, कटुकन्द, राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट, भूतघ्न, यवनेष्ट, शीतमर्दक।

लाङ्गलकी-कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भघातिनी, अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्त्रा, लाङ्गुली, हलिनी, गर्भपातिनी, विशल्या, अग्निमुखी, हली, नक्ता, सीरी, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका, लाङ्गलिका, गर्भनुत्, इन्दुपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, तृणहृत्, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, लाङ्गल्या ।

लामज्जकः-सुनाल, अमृणाल, लय, लघु, इष्टका-पथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, शवदाहक, लव, इष्टकापथक, जलाश्रय ।

लिकुचः-लकुच, क्षुद्रपनस, डहु, लकच, ऐरावत, अम्लक, निकुच, कषायी, दृढवल्कल, कार्श्य, शालसूर, स्थूलस्कन्ध, ग्रन्थिमत्फल, शाल, दृढ, शूर,

लोणिकाः-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका ।

लोध्रः-रोध्र, तिरीटक, शाबर, गालव, लोध्र, लोध्रक, लोध्रवृक्ष, मार्जन, तिन्दुक, लक्तकर्मा, शुक्ल, शबरलोध्र, महालोध्र, बलिप्रिय, वानरावास, बलभद्र, भिल्लतरु, तिल्वक, काण्डकीलक, शम्बर, हस्तिलोध्रक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भिल्ली, शावरक, तिरीट, तरु, शम्बरपादप, काण्डहीन, वृक्ष, तिल्वक ।

वंशः-वेणु, यवफल, कार्मुक, त्वक्सार, कर्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा, मस्कर, तेजन, किलाटी, पुष्पघातक, बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, तृणकेतुक, कण्टालु, कण्टकी, महाबल, दृढग्रन्थि, दृढपत्र, धनुर्द्रुम, धानुष्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, षट्पदालय, कमठ, मृत्युबीज, यादनीय, फलान्तक, तृणकेतु, पर्वयोनि, सुपर्वन्, तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह, सुषिराख्य ।

वचाः-उग्रगन्धा, गोलोमी, षड्ग्रन्था, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिला, तीक्ष्णा, गालिनी, लोमशा, विजया, उग्रा, रक्षोघ्नी, वच्या, कांक्षा, भद्रा, क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, स्मारणी, बोधनीया, भूतनाशिनी, श्लेष्मघ्नी, तीक्ष्णपत्रा, जलजा, इक्षुपत्रिका ।

वटः-रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद, वनस्पति, नन्दी, शुङ्ग, बृहत्पाद, वैश्रवणालय, यक्षवर्णोदय, वृक्षनाथ, यमप्रिय, कर्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण, विटपी, स्कन्धरुह, मण्डली, बृहच्छाय, महाच्छाय, शृङ्गी, यक्षवास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह, बहुपात्, जटिल, जटी, अवरोही, विटपी ।

वत्सनाभः-काकोल, गरल, क्ष्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौल्किकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन, आहेय, अमृत, गरद, गर, कालकूट, कषाकुल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, घोर, हालाहलद, हलाहल, शृङ्गी, मुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन, जङ्गुल, जाङ्गुल, जीवनाघात, किपुल, किङ्गुल, प्राणहर ।

वरकः स्थूलकङ्गु, स्थूलप्रियङ्गुक, रूक्ष ।

वरुणः-श्वेतपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतु-वृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह, वरण, कुमार, अश्मरीघ्न, सेतुक, सेतु, वराण, शिखिमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमाल, गन्धवृक्ष, श्वेतपुष्प ।

वातामः-वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, सुफल, बादाम ।

वार्ताकः-कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका, निद्रालु, वार्ताकी, मांसलफला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, षट्फला, मिश्रवर्णफला, सिंही, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला, हिङ्गुली, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, वार्ता, वार्ताकु, वातिकुण, वार्ताक, शाकबिल्व, राजकूष्माण्ड, महाबृहती, शाक, बिल्वक, वार्तिक, वाधिगम, धेर, वृन्ताक, वङ्गण, अङ्गण, नीलवृन्ता, भाण्टिका, नीलकण्टक ।

वालकः-वारितोय, ह्रीबेर, वारिद, बाल, केशनामक, कचामोद, वरपिङ्ग, कुन्तल, वारिनामक, बर्हिष्ठ, उदीच्य,

केश, केशनामा, अम्बुनामक, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीवेर, वारि, तोय, जल, अम्बु, आचमन, पिङ्ग, कच ।

वासाः–वाषक, सिंहपर्णी, वृष, सिंहमुखी, आटरूषः, सिंहिका, भिषग्माता, आटरूषक, वासिका, वाश, रामरूपक, मातृसिंही, वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, अटरूष, सिंहीवृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, वाशिका, वाजी, वैद्यसिंही, वसादनी, रक्तदानी, कण्ठीरवी, सितपर्णी, सितकर्णी, वाजिदन्ता, वाजिदन्ती, नासा, पञ्चमुखी, सिंहपत्री, मृगेन्द्राणी, आटरूख, अटरूख, सिंहानन, सिंहमुखी ।

वास्तुकः–वास्तूक, क्षारपत्र, शाकराट्, यवमध्य, गौडवास्तुक, यवशाक, पांशुपत्र, शाकश्रेष्ठ, शाकवीर, कंकेल, घनाघन, वास्तु, वस्तुक, हिलमोचिका, शाकराज, राजशाक, चक्रवर्ती, वस्तुक ।

विकङ्कतः–स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक, यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद, वैकङ्कत, बृतिकर, कण्टारी, किङ्किरी, स्रुग्दारु, कण्टपत्र, स्रुग्दारु, मधुपर्णी, कण्टपाद, बहुफल, गोपघोण्टा, गोपघोण्टा, स्रुवद्रुम, मृदुफल, दन्तरा, यज्ञिय, यज्ञपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिङ्किणी, पृथुवीज, सुधावृक्ष, पादरोहिण, रावण, काकपाद, किङ्किरी, पूत, पिण्डरोहिणक ।

विडङ्गः–क्रिमिघ्न, भस्मक, मोघा, कृमिकण्टक, वेल्ल, वेल्ल, केवल, तण्डुल, चित्रतण्डुला, विडङ्गा, अमोघा, तण्डुला, जन्तुनाशक, क्रिमिकण्टक, रसायन, पावक, क्रिमिरिपु, जन्तुघ्न, चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, कृमिहा, चित्रा, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, कैराली, गह्वरा, गह्वरा, वापाली, वरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतन्दुला, शूद्रतण्डुला, चित्रबीजा, घोषा ।

वृक्षाम्लः–तिन्तिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, अत्यम्ल, अम्लबीज, अम्लशाख, चुक्राम्ला, तिन्तिडीक, शाकाम्ल, चुक्रफल, अम्लपूर, पूराम्ल, रक्तपूरक, वृक्षाम्ल, बीजाम्ल, फलाम्ल, अम्लवृक्ष, अम्लफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, तिन्तिडीफल ।

वृश्चिकालीः–विषघ्नी, विषाणी, उष्ट्रिका, अलिपर्णी, नेत्ररोगहा, दक्षिणावर्तकी, कलिका, आगमावर्ता, देवलाङ्गुलिका, करभा, भूरिदुग्धा, कर्कशा, अमरा, स्वर्णपुष्पा, युग्मफला, क्षीरविषाणिका, मातुलपुष्पा ।

वेतसः–नम्रक, वानीर, वञ्जुल, वञ्जुलप्रिय, अभ्रपुष्प, विदुल, रथशीत, निचुल, निकुञ्जक, परिव्याध, नादेय, जलवेतस, शाखाल, पुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नीरप्रिय, नदीकूलप्रिय, सुशीतल, व्याधिघात, कलन, मञ्जरीनम्र, सुषेण, गन्धपुष्पक, नादेयी, जलकाम, मेघपुष्प, निकुञ्जक, जलौक, संवृत, दीर्घपत्रक ।

शङ्खपुष्पीः–मेध्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, शङ्खाह्वा, पीतपुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, कम्बुमालिनी, किरीटी, भूलग्न, शङ्खकुसुमा, शङ्खमालिनी, मांगल्य, कुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुकान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी, तिलकी, चिरिण्टी, शंखमालिनी ।

शणः–माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशावन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपत्र, वमन, निशावन ।

शतकुसुमाः–शतपुष्पा, मिशि घोषा, शताह्वा, शताक्षि, शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शीतका, मिसि, शिफा, अतिच्छत्रा, अवाक्पुष्पी, छत्रा, संघातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, बहला, पुष्पाह्वा, पोतिका, शतपत्रिका, शालेय, शालेय, पोति, अहिच्छत्रा, तालपर्णी, मिशी, शालेया, शीतशिवा, शालीना, वजना, पोतिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, सुगन्धा, सूक्ष्मपत्रिका, गन्धारिका ।

शतावरीः–शतपदी, पीवरी, इन्दीवरी, शतमूली, महाशीता, भीरुपत्री, बहुसुता, भीरु, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, नारायणी, अहेरु, अभीरु, अभीरुपत्री, महापुरुषदन्तिका, रंगिणी, द्वीपिशत्रु, ऋष्यगता, काञ्चनकारिणी, मदभञ्जिनी, शतपदी, पीवरा, वृष्या, दिव्या, द्वीपिका, दरकण्टिका, सूक्ष्मपत्रा, सूक्ष्मपत्रिका, सुवहा, बहुमूला, शताह्वया, द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शताह्वा, लघुपर्णिका, आत्मगुप्ता, जटामूला, शतवीर्या, महौषधी, मधुरा, केशिका, शतपत्रिका, विश्वस्था, वैष्णवी, वार्णी, वासुदेवप्रियंकरी, दुर्मना, तैलवल्ली,

अर्धकण्टका, सुपत्रिका, शतवीर्य्या, महाशतावरी, महोदरी, सहस्रवीर्य्या, सुरसा, महापुरुषदन्तिका, वीरा तुरंगिणी, बहुपत्रिका, ऊर्ध्वकण्ठी, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशता, सुवीर्य्या, महती, अर्धकण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपत्रिका, स्वादुरसा, आत्मशल्या, शतनेत्रिका ।

शठीः–गन्धपलाशी, पलाशी, षड्ग्रन्था, सुव्रता, गन्धमूलिका, गन्धारिका, गन्धवधू, पृथुपलाशिका, गन्धमूली, ग्रन्थिका, कर्पूर, पलाशसठी, शटी, गन्धशटी, कर्चुर, कर्चुर, सुगन्धाशटी, सुगन्धा, गन्धमूला, गन्धोली, गन्धमूलक, गन्धशटी, गन्धमूल, जीमूतमूल, कचूरा, हिमजा, हैमी, षड्ग्रन्थि, पलाशा, गन्धाली, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धेरी, शठिका, पलाशिका, समुद्रा, तूर्णी, दूर्वा, गन्धा, सठी, अम्बहरिद्रा, सौम्या, हिमोद्भवा, द्राविड, कार्श्य, वेधमुख्य, दुर्लभ, वधू, चन्द्रणी, चन्द्रगन्धा, दुर्विधेया, तूणी ।

शमीः–शंकुफला, शक्तुफली, केशहन्त्री, शिवाफला, मङ्गल्या, शिवा, शुभदा, लक्ष्मी, पवित्रा, पापनाशिनी, सक्तुफली, शक्तुफला, सक्तुफला, शाननारि, तुंगा, कचारिफला, केशमथनी, तपनतनया, ईशानी, इष्टा, शुभकरी, हविर्गन्धा, मेध्या, दुरितदमनी, समुद्रा, शक्तुफलिका, वह्निगर्भा, समीर, ईशान, सुरभी, पापनाशिनी, पापशमनी, भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशान, शंकरा, शंकुफलिका, सुभद्रा, कचरिपुफला, दुरितशमनी, सुरभिरथ, शापशमनी, शान्ता ।

शल्लकीः–गजभक्ष्या, गजभक्षा, ह्लादिनी, राजप्रिया, महारुहा, वसा, मोचा, सुरभी, सुरभिरसा, शिल्हकी, सिल्हकी, सल्लकी, सिल्हकी, सिल्हभूमिका, सुवहा, सुरभी, महेरुणा, वल्लकी, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरणा, महारण, अश्वमूत्री, अश्वपुत्री, कुम्भा, अस्रफला, करका, सुस्रमोदा, सुगन्धा, सुरभिस्रवा, गजवल्लभा, ह्लादा, बहुस्रवा, गन्धवीरा, सुस्रवा, वनकर्णिका, नागवधू, सुश्लिष्टा, गन्धमूला, रसाला, जलतिक्तका, ह्लादा, कुन्दुरुकी, शल्ली, सल्लक, मुक्तामोदा, जलविक्रमा, हृद्या, कुण्टरिका, व्यस्तफला, छिन्नरुहा ।

शाकः ककचपत्र, खरपत्रक, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतरु, शाकवृक्ष, शाकाख्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिरम,

सोमराजीः–कृष्णफला, वाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, ... वेजानी, कालमेषिका, अवल्गुज, सुवल्ली, करच्छद, मेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, वांगुजी, ...न्दवी, शूलोत्खा, फिमिघ्नी, सुवल्लिका, ...पा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, ...गेषापहा, कान्तिदा, ... शशिलेखा, ...गी ।

शालः–सर्जक, साल, सर्जकार्श्य, अश्वकर्ण, शस्यशम्बर, उपवेत्र, दीर्घशाख, लताशंख, शंकुतरु, शंकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, द्रुव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, राळकार्श्य, अजकर्णक, कषायी, ललन, गन्धवृक्षक, वंश, रालनिर्य्यास, दिव्यसार, सुरेष्टक, शूर, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, तार्क्ष्यप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ण, कुषिक, कौशिक, अश्वकर्ण, चिरपर्णी, सालनिर्यास, देवधूप, चिरूप, वह्निवल्लभ, कलकल, पाल, फलयज, सर्वरस, बहुरूप, धूपन, सालज, शालनिर्यास, सर्ज्य, धूनक, शालसार, शालवेष्ट, सर्जमणि, कलकलोद्भव, ललन, देवेष्टशीतल, सालरस, सुरभी, सर्जनिर्यासक, सुरधूप, कलकलज, महारूप, क्षण, शालरस, क्षणक, सर्जक, कषाय, चिरपत्रक, शूर, कालकूट, रजोद्भव, वल्लीवृक्ष, राल, गन्धवृक्षक, वंश ।

शालिपर्णीः–शालपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, अतिगुहा, ध्रुवा, पीवरी, विदारिगन्धा, अंशुमती, दीर्घमूला, सुपत्रिका, गुहा, दीर्घाङ्घ्रि, दीर्घपत्रा, सुदला, सुपत्री, कुमुदा, सुपर्णिका, दीर्घपत्रिका, वातघ्नी, पातिनी, तन्वी, सुभा, सर्वानुकारिणी, शोफघ्नी, सुभगा, देवी, शोथघ्नी, निश्चला, व्रीहिपर्णिका, सुमूला, सुरूपा, शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, शालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी, कीटविनाशिनी, कुमुदा, पित्तला ।

शालेयः–मधुरिका, सिता, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती, सुगन्धा, छत्रा, तृषाहरा, शालिन, मिश्रेया, मधुरा, मिसी, शीतशिवा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पुष्पाह्वा, मिशी, घोषा, पोतिका, अहिच्छत्रा, माधवी, कारवी, संघातपत्रिका, अवाक्पुष्पी, तालपर्णी, मंगल्या, शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी, शतपुष्पा, मिश्रेया, वनजा, संहितपुष्पिका, वन्या, सुरसा, तालपर्णी, तालपत्री, तालपत्रा ।

शाल्मलीः–अपरणी, शाल्मलि, शाल्मली, शल्मलि, पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारुहा,

केश, केशनामा, अम्बुनामक, केश्य, वज्र, ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीवेरक, वारि, तोय, जल, अम्बु, आचमन, पिङ्ग, छच ।

वासाः—वासक, सिंहपर्णी, वृष, सिंहमुखी, आर्त्त, सिंहिका, भिषग्माता, आटरूषक, वाजि, कण्टकद्रुम, मातृसिंही, वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, दीर्घद्रुम, दीर्घायु, वाजिदन्तक, आमलक, दीर्घपादपा, कपला, वेद्रक, वसादनी, रक्तदा, ...रस, मोचनिर्यासक, चिरजीविका, वाजिदन्त ...अ, मुदगी, कल्पवृक्ष, कुक्कुटवंदक, पञ्चपर्णी।

शिंशपाः—कृष्णसारा, पिच्छला, युगपत्रिका, पिच्छला, धूम्रिका, वीरा, कपिला, अगुरुशिंशपा, अगुरु, पिच्छिला, युग्मपत्रिका, कालानुसार्य्य, श्यामा, धीरा, मण्डलपत्री, तीव्रधूमक, महाश्यामा, तीक्ष्णसारा, कृष्णशिंशपा।

शिग्रुः—शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णगन्धक, अक्षीव, सुभाञ्जन, सोभाञ्जन, सौभाञ्जन, विदधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरितशाक, शाकपत्र, शिग्रुक, मुखत्रक, उपदंश, शमादंश, कोमलपत्रक, बहुमूल, दंशमूल, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शोभाञ्जन, शौभाञ्जन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण, वनपल्लव, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कार्शवक, मेचक, आक्षीव, श्रोचित्तहारी, व्रणनाशन, कृष्णगन्धा, मूलकपर्णी, मोच, तिलशिग्र, जलप्रिय, मुखमोद, कृष्णशिग्रु, चलुवा, रुचिराञ्जना, अवदंश, मुखभङ्ग, श्वेतक, मधुशिग्रक, रक्तक, दंश ।

शिरीषः—भण्डील, भण्डी, भण्डीर, कपीतन, शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय, कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डिर, मृदुपुष्प, विषघाती, विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्प, शुकेष्ट, बर्हपुष्प, विषहन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिङ्ग, श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, ध्वग, श्यामवर्ग, शंखिनीफल, मृदुपुष्पक, भण्डिक ।

शुण्ठीः—महौषधी, विश्वा, शुष्कार्द्र, विश्वभेषज, भेषज, श्रृङ्गवेर, विश्व, कफारि, नागर, शुण्ठी, इन्द्रभेषज, महौषध, विश्वौषध, कटूपणि, कटुभद्र, शुण्ठ्य, कटूत्कटक, सौवर्ण, आर्द्रक, शोषण, नागराह्व, आर्द्रज, सौषध, ऊषण, कटूषणक, दूषण, सौपर्ण ।

श्रृङ्गाटकः—जलफल, त्रिकोणफल, जलसूचि, जलकण्टक, जलवल्ली, जलाशय, जलकन्द, श्रृङ्गाटिका, श्रृङ्गाट, श्रृङ्गरुह, श्रृङ्गकन्द, श्रृङ्गमूल, त्रिकोट, त्रिकट, त्रिक, वारिकण्टक, वारिकुब्जक, शुकदुग्ध, संघाटिका, क्षीरशुक्र, विषाणी ।

शैलेयकः—शैलेय, शैलाख्य, पलित, वृद्ध, कालानुसार्य्य, स्थविर, शिलाद्रु, शिलापुष्प, शिलोद्भव, अश्मपुष्प, गिरिपुष्पक, गृह, जीर्ण, शिलोत्थ, कालानुसार्यक, शैलक, शिलाख्य, शिलाभव, शिलज, शिलोत्थ शैलज, शिलाप्रसून, सुभग, शैलक, कालानुसारिवा, शीतशिव, शिलाघन, शैलज, शीतल, शैल, शिलेय ।

शैवलः—शैवाल, जलनीली, जलज, शेवान, शेवाल, शिवल, शेवाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुंतल, मञ्जुल, सैवाल, शेवार, वारिचामर, सलिलकुण्डल, हठपर्णी, अम्बुताल, जलशुक, जलाञ्जन, अरक, जलकेश, कावार, जलवल्कला ।

श्लेष्मातकः—बहुवार, उद्दाल, बहुवारक, शेलु, पिच्छिल, भूतवृक्षक, लघुश्लेष्मातक, लघुशेलु, लघुशीत, लघुपिच्छिल, भूकर्बुदार, क्षुद्रश्लेष्मातक, श्लेष्माटक, शलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, उद्दालक, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाटक, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, शीतल, सेलु, लघुभूतद्रुम, सूक्ष्मफल, बाहुवीर।

सप्तपर्णः—शुक्तिपर्ण, विशालत्वक्, शारद, विषमच्छदा, विद्ध, विनद, विन्याक, सारद, देववृक्ष, दलेगन्धि, शिरोरुजा, महनाश, सुतिपत्र, मदाशी, ग्रहनाशन, गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुक्छद, अयुग्मच्छद, युग्मपर्ण, मुनिच्छद, बृहत्त्वक्, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण, सप्तच्छद, छत्रपर्ण, शारदिपुष्प, गूढपुष्प, सुपर्णक, सप्तवर्ण, पत्रवर्ण ।

समङ्गा—लज्जालु, शमीपत्रा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, लज्जा, नमस्कारी, ताम्रा, खदिरका, कन्दिरी, स्पृक्का, खदिरपत्रिका, संकोचिनी, प्रसारिणी, समपर्णी, खदिरी, गण्डमालिका, लज्जिका, स्पर्शलज्जा, अस्ररोधिनी, ताम्रमूला, रक्तमूला, स्वगुप्ता, महासीता, वशिनी, महौषधी, नम्रकारी, स्पर्शसंकोचपर्णिका ।

सर्षपः—कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, सुगन्धक, ग्रहघ्न, तन्तुभ, कदम्बक, सरिषप, कदम्बद, विम्बट,

कदम्ब, तन्तुक, कटुस्नेह, राजक्षवक, शुभ्रगौर, सिद्धार्थ, भूतनाशन, कटुक, रक्षोघ्न, राजिकाफल, तीक्ष्णक, दुराधर्ष, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन, सितसर्षप, कुष्ठनाशक ।

सातला:-सप्तला, सारी, विदुला, विमला, मला, बहुफेना, चर्मकषा, सारा, भूरिफेना, अमला, फेना, दीप्ता, शिवाणिका, स्वर्णपुष्पी, पुत्रघना, महालिका, चित्रघना ।

सारिवा:-शारिवा, अनंता, गोपी, उत्पलशारिवा, भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, शारदा, गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू, धवलशारिवा, कृशोदरी, श्वेता, स्फोटा, चन्दना ।

सिञ्चितिकाफलः-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सेवित, सेवि ।

सुधा:-स्नुही, समन्तदुग्धा, नागद्रु, बहुदुग्धिका, भद्र, महावृक्ष, वज्रा, सिहुण्ड, शीहुण्ड, सीहुण्ड, दण्डवृक्षक, स्नुक्, स्नुषा, स्नुहा, वज्र, वज्रद्रुम, वज्रद्रु, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, गुडि, गुला, बहुशाल, कृष्णक्षार, निस्त्रिंश, पत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिंहतुण्ड, वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, स्नुही काण्डरोहक, स्वर्णेन, नागद्रु, निस्त्रिंशपत्रक, गण्डीर, वातारि, वज्रवृक्ष, क्षीरकाण्डक, व्याघ्रनख, दण्डवृक्षक, बहुशाखा, त्रिधारक, समन्तदुग्ध ।

सुनिषण्णकः-शितिवार, शितिमर, स्वस्तिक, सुनिषण्ण, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाक, कुक्कुट, शिखी, वितुन्न, चञ्चु, सुतपत्र, शितिचार, सूच्याह्वय, सुच्याह्व, सूचिपत्रक, बभ्रु, कुरण्ट, कुक्कुट, सूचिदल, श्वेतावर, मेधाकृत, ग्राहक, शिति-चार, शितिवर, शितावरी, कुरट, श्वेताम्बर, पर्णक ।

सुरसा:-तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा, गन्धहारिणी, अमृता, पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी, सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, कायस्था, सुरदुन्दुभि, सुरभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराक्षसी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी, भूतघ्नी, भूतपत्री, पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक, पुण्या, माधवी, सुरवल्ली, प्रेतराक्षसी, सुवहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी, मालश्रेष्ठा, पापघ्नी, लक्ष्मी, श्रीकृष्ण-वल्लभा, पूतपत्री ।

सोमराजी:-कृष्णफला, वाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, बेजानी, कालमेषिका, अवल्गुज, सुवल्ली, सोमवल्लिका, कालमेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, बाकुची, वाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्खा, क्रिमिघ्नी, सुवल्लिका, सिता, सितावरी, चन्द्री, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिगंधा, वल्गुजा, चन्द्रराजी, त्वग्दोषापहा, कान्तिदा, अवल्गुजा, चन्द्रप्रभा, पूतिगन्धिका, सुपर्णिका शशिलेखा, सोमा, कुष्ठघ्नी, कण्डूघ्नी, असितत्वचा, इन्दुलेखा, चान्द्री ।

स्थौणेयकः-बर्हिशिख, बर्हिचूड, भानाग्रीवा, भ्रान्ती, हरित, कीरवर्णक, कुक्कुर, मयूरचूड, शीर्णरोम, शीर्णरोमक, शुकपुच्छक, शुकच्छद, शुकपिच्छ, विकीर्णरोम, विकच, स्थौणेय, विकीर्णरोम, शुकबर्ह, शीर्णरोमक, बर्हिबर्ह, शुकपुच्छ, विकर्ण ।

स्पृक्का:-लता, कोटिवर्षा, मरुन्माला, लतामरुत्, लङ्कारिका, समुद्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, देवपुत्री, देवी, पृक्का, पिशुना, लघु, वधू, लङ्कायिका, लङ्काविका, ब्राह्मणी, मरु, मालालिका, मालानी, लघ्वी, पत्रगुप्तिरसा, समुद्रकान्ता, मरुत्, माला, कोटि, वर्षा, लङ्कोपिका, वर्षालङ्कायिका, तस्कर, चोरक, चण्ड, अस्रक्, मालाली, कोटिका, पञ्चमुष्टि, निर्माल्या, ब्राह्मणिका, सुगन्धा, सुकुमारा, भूतलिका, पत्रगुप्ति, नखपुष्पी ।

हंसपादी:-कीटमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा, सुवहा, हंसपदी, गोधांघ्रि, त्रिफला, गोधापदिका, हंसवती, चित्रपदा, हंसपदिका, हंसाङ्घ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमंडलिका, विश्वग्रंथि, त्रिपदिका, त्रिपदी, कीटमारी, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, हेमपादी, ब्रह्मादनी, पदाङ्गी, शीताङ्गी, सूतपादिका, सञ्चारिणी, पदिका, प्रलाङ्गी, कीटपादिका, धार्तराष्ट्रपदी, गोधापदी, त्रिपादिका, रक्तपदी, ताम्रपात्री, विक्रान्ता, कीलपादिका, त्रिपादी ।

हपुषा:-विपुषा, विस्रा, हपुषा, विस्रगन्धा, विगन्धिका, अविगन्धिका, विश्रा, विश्रगन्धा ।

हरिद्रा:-निशाह्वा, पीता, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेहघ्नी, वरवर्णिनी, यामिनी, क्षपा, तमस्विनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, मंगलप्रदा, कावेरी, उमा,

वर्णवती, पिङ्गा, पीतवालुका, हेमरागी, रंगवासा, घर्षणी, पीतिका, रजनी, निशा, बहुला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित, सुवर्ण, शिवा, दीर्घरागा, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विषघ्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगाह्वया, श्यामा, जयन्ती, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया, हट्टविलासिनी, कृमिघ्नी, निशाख्या, वर्णविलासिनी, हलदी, रजनी, वारवर्णनी, हलदिका, मङ्गलता, रङ्गिणी, दीर्घरङ्गा, रञ्जिनी, जनिष्टा, रजनीनाम्नी, पिङ्गला।

हरीतकी:—अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रोहिणी, सुधा, वल्या, रसायनफला, पाचनी, प्रमथा, शाका, रुद्रप्रिया, वनतिक्ता, गुरुकण्ठा, सुधोद्भवा, जया, चेतनकी, प्रपथ्या, जीवप्रिया, जीवनिका, भिषग्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या, देवी, दिव्या, हिमजा, गिरिजा, नन्दिनी, रोहिणी, विजया, चेतनिका, कायस्था।

हरेणु:—रेणुका, कपिला, कौन्ती, भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, चरनादिनी, द्विजा, अभीष्टा, मतकटी, वरसुटी, वरा, कान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, वृत्ता, हेमगन्धिनी, घर्मिणी, कपिलोमा, हैमवती, पाण्डुपत्नी, राजपुत्री, कपिलोला, हैमवती।

हारिद्र:—मेघाभ, प्रियक, बहुफल, हरिद्रुम, भृङ्गवल्लभ, धाराकदम्ब, धूलिकदम्ब, प्रावृष्य, महाकदम्ब, केशराढ्य, सुपुष्प, षट्पदाप्रिय, पुलकी।

हिङ्गु:—शूलद्विट्, बाह्लीक, रामठ, जतु, जतुक, सहस्रवेधि, जन्तुघ्न, सूपधूपन, हिङ्गुक, रमठ, पिण्याक, वाह्री, गृहिणी, मधुरा, केसर, जातुक, रामठध्वनि, शूलहृत्, उग्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन, रक्षोघ्न, उग्रवीर्य, अगूढगन्ध, जरण, भेदन, दीप्त, शूलनाशक, अगुम, भूतनाशन।

हिङ्गुपर्णी:—नाडीहिंगु, पलाशाख्य, जन्तुका, वशात्री, पिण्डाह्वा, सुवीर्या, हिंगुनाडिका, वेणुपुत्री, पिण्डा, हिंगु, शिवाटिका, पलाश, वेणुपत्री, शिवाटिका, पिण्डहिङ्गु।

पञ्चविंशत्या भाषाणां संक्षिप्तसंज्ञाः ।

Abreviations of the names of twenty-five languages

A.	...	...	Arabic	M.	...	...	Marathi
B.	....	....	Bengali	Ma.	...	....	Malayalam
Bi.	...	...	Bihari	P.	....	...	Persian
Bu.	....	....	Burmese	Pu.	...	...	Punjabi
C.	....	...	Canarese	S.	...	...	Sanskrit
Cu.	....	....	Cutchi	Sinh.	...	....	Sinhalese
E.	...	....	English	Si.	...	...	Sindi
F.	....	...	French	T.	....	....	Tamil
Guj.	...	....	Gujarati	Te.	...	...	Telugu
Ge.	....	...	German	Tu.	....	...	Turkey
H.	....	...	Hindi	U.	....	...	Urdu
I.	....	...	Italian	Ur.	...	...	Uriya
L.	...	....	Latin				

चरकसंहितागतोद्भिज्जद्रव्याणां पञ्चविंशत्यां भाषासु नामानि

The Nomenclature of the Plant Substances in twenty-five languages

S.	अक्षोट	अगुरु	अग्निमन्थ	अङ्कोट
A.	Gawz	Ud, Udchindi, Ud en nadd,		Alanginum
B. Bi.	अखरोट, अकुट	अगुरु, अगर		अङ्कुल, अङ्कुरा
Bu.	Sickhyasi	Akyau		
C.	अकोडु	अगरु	तिगि	अङ्कोल
Cu.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
E.	Wall nut tree	Eagle wood	Wind Killer	Alangy
F.	Noyer	Agalloche, Boisd'aloes, Boisde calambac		Alangier
Guj.	अखरोट	अगर	अरणी	अंकोल
Ge.	Echte walnuss, Walnusse	Agallochabaum Alderholzbaum		Angolanibaum
H.	अखरोट	अगर	अरणी, टेकार	अंकोल, टेरा
I.	Noce [illegible]	Calambucco, [illegible], Aloe delle Indie		Alangio
L.	Juglans regi[illegible] L.	Aquilaria Agallocha, (Roxb)	Clerodendron Phlomoides L.	Alangium lamarkii (Thw' E num)
M.	अक्रोड	अगर	एरण	अंकोल
Ma.			तिरुत्तालि	करङ्कोलम्
P.	Charmaghy	Agar, Agrehindi		
Pu.	अखरोट, अखरोट			विसमार
Sinh.			धरयत्	ईपाटा
Si.		कींह		
T.	अक्रोट्टु	अगर	तिरुदुहलै	अङ्गोलम्
Te.	अक्रोट्टु	अग्र	तेक्कलि	नल्लङ्कोलमु
Tu.	Ceviz ag	Yalan öd ag Hind öd ag, Nasr ag		Alang
U.		A gar		Ankol
Ur.			जयरिनि, होन्तरि	अङ्कुलो

	चन्द्र			अतसी
S.	अजकर्ण	अजगन्धा	अजमोद	अतसी
A.	Mukilljraka		Karafs, karafs Nabati	Kattan, Malsag
B.	सुनद्रुस्		रांधुनी, चनु	मासीना
Bi.				चि.ना, तिसि
Bu.				
C.	विरिःधूप, गुग्गुड, धूप, लोमान			अलसि
Cu.	अजकर्ण (वेद)		अजमो	अ ळसी
E.	White Dammer		Celery	Linseed
F.			celeri, ache	
Guj.	सफेदडामर	चाफली	बोडी अजमोद	अलसी अळसी
Ge.			Echter sellerie Celleric.	Echter lein Gemeiner Flacs
H.	सुफेद चामर	डुक	अजमोद	तीसी, अलसी
I.			Appio, Arcio, Sedano, Seleno	Commune, Lino, usuale L. mazzese
L.	Vateria indica L.	Peucedanum grande (Bc)	Apium graveolens L.	Linum usitatissimum L.
M.	[illegible] (धुप)	चाफली	[illegible] (Bazaar) [illegible]	[illegible]
	कुन्दुरुक्कम्, पान्टम्			
Ma.	पेरुंपायनै, वेलक			
P.	Buejhudan	Duku	Karasb	Bazarug
Pu.			भूतजटा	अलिश
Sinh.				
Sl.	हाल			
T.	कुंगिलि, तूवम्, अट्म्, कुण्डुरुक्क			अलसि
Te.	तेल्लगुग्गुलमु, दूपदमारु			अतसि
Tu.			Kereviz	Keten
U.	Guggul		Ajmod	Alasi
Ur.				पेसु

S.	अतिबला	अतिविषा	अन्तः कोटरपुष्पी	अपामार्ग
A.	Khitmi hindi Deishar			Nuaym, Mahhut, Hhamshad.
B.	पोटारी		वीवातारक,	अपांग
Bi.				
Bu.	Bonkhoe			Kivalamon
C.	श्रीमुद्रे, गिडुगिगि, तुत्ति	अतिवजे	समुद्रवल्ली, समुद्रशोगे	उत्तरेग
Cu.	खापटो	अतिविज	समदरसोस	अघाडो
E.	Common mallow	Indian Atees	Elephant creeper	Rough chaff tree
F.	Fausse guimauve Satinee Althœa			Herbe d' Inde
Guj.	खपाट, कांसकी	अतिविषनी कली	वरधारो	अनेडो
Ge.				
H.	कंघी	अतीस	समंदरसोख	चिचिडा, चिचिडा
I	Fiore di dodici ore			Sciamitre
L.	Abutilon indicum [G. Don]	Aconitum heterophyllum [wall]	Argyreia speciosa [sw. cet]	Achyranthes aspera L
M.	पेटारी, मुद्रा	अतिविष	समुद्रशोक	आघाडा
Ma.	तुत्ति, [illegible], पिटिकपट्ट		समुद्रयोगम्, समुद्रप्पाल, समुद्रस्तोकम्	कटालटी
P.	Darakhteshanah.	Vajjeturki.		Kharevazhu
Pu.		चोनगा, पतिस		कुट्टी, कुत्री
Sinh.	अनोदनहा			करलहयो
Si.	खपाटो			
T.	नहुतुट्टि, पेरुंतुट्टि; टुट्टी	अतिविडम्	कंदरवालै चमुद्दिरप्पाकै, पेयमुनै	नायुरिवि
Te.	अडविबेण्ड, पेद्दबेण्ड	अतिवस	पालसमुद्र, कोकिट, चन्द्रशोड	अपामार्गमु
Tu	Oylen cic Yalan Gülhätem			Saman ag
U	Kangbi		Samandrasotha	
Ur	नाको, चोनो		बिडो, मोन्डा, टोरके.	

S.	अंग्न ी	अम्बष्ठकी	अम्लचाङ्गेरी	अम्लिका
A.		Ābuta	Hhamdid Hhamidah hhullvah	umbli Tamr hindi, Hhawmar
B.		अकानाधी, नीमुका	अमुल, अमुलसाक	तुलि, तिन्तिरि, अम्लि
Bl.				
Bu				magi
C.		पाडावली	पुलंपुच्ची, सप्पु	आम्ल, हुणसे, हुलि
Cu.		बंगजीवल	खाटखटुम्बो	आम्वली
E.	Small Asparagus	False pareira brava	Yellow wood sorrel	Tamarind Tree
F.		Fanx pareira brava	Trefle, Surelle Jaune, Ixalode corniculee, petit	Tamarineer, Tamarin
Guj.	एकलकण्टो दरियाई गजवेल	वेणीवेल, करंढियु	खाटीचांगेरी	आंबली
Ge.		Fal sche pareciraw	Gehornter Sauerklee, Gelber sauerklee	Tamarinde Tamarin denbaum
H.		पाढी, दु:खनिर्विषी	तिनपत्तीआ, अम्ल	इमली
I.		Abuta	Ossalide Carnicu-lata, Erba lujula, pancucco. Trifoglio ace-toso	Tamarindo dolce Tamarindzio Tamarindo
L	Asparagus Dumosus (Bak)	Cissampelos pareira L.	Oxalis Corniculata L.	Tamarindus indica L
M.		पहाडवेल	अंबुटी	चिंच
Ma.		कटुवेली, पटुवेली	पालीयारला	अमलम्, चुकम्, पुलि
P.				Ambalah, Tamarihindi
Pu.		वेल, कटोरी	अम्लिका, अमुल	अम्लि, इम्लि
Sinh		वेणीवेल	हिनेम्बुलम्बिलिया	महाशियाम्बाला
Si.		कटोरी		
T.		अप्पटा, चिना, वट्टितप्पी	पुलियाराइ	आम्बिलम्, तिन्ट्रिडम्, अमिलिगै
Te.		अडिविबंकतीगे, पाटा विसबोधि	पुलिचिन्ता	आम्लिका, चिंचा कामु, तिन्त्रिणी
Tu.		Abuta	Eksi, youca	Temir hindi ag Hind hur masi Temarhindi ag.
U.				
Ur.		ओकानो पिम्पि		कोण्या, ओम्लिका, तिन्तिडो

S.	अम्लिकाकन्द	अरिमेद	अर्क	
A.			Ushar, Ashur	Furanj misk
B.		सफेदबबुल	आंकड़ा, आकन्द	रामतुलसी
Bi.			मूर्तकन्द	
Bu.		Tanaung	Maioh, mayo	
C.	नीरबट्टे, ताषिनेरे, इनासर	नायिश्रेल, विल्जालि	एक्के अर्क	
Cu.	अमरियो कन्द	हरमुं	ाक	नारातुलसी
E.	Betel yam	White babool	Mudar	Shrubby basil.
F.			Asclepiade	Basil deceylone
Guj.	आंबलियो कन्द	हरमो बावल	आकडो	रामतुलसी
Ge			groose mudarpflanze	
H.		रीन्झ	मदार, आक	दवना
I.			Asclepiode, Beidelossa	
L.	Dioscorea oppositifolia L	Acasia leucophlœa (willd)	Calotropis gigantea (R B R.)	Ocimum gratissimum (L.)
M.	माण्डा	हीवर	रुई	रामतुलसी
Ma.		वेलवेलकम्, वेल्लवेलम्	दिनेशम, एरिक्कु	रामतुलसी
P.			Khark	Palangmishk,
Pu.		रेरु, सफेद कीकर		वानेजरी, वन्जेरे
Sinh.	हिरिताल	अंदार	मुदुवार	गासताल, गसताल
Si			लैक्कोरपा	
T.	वेरिरलैवल्ली	पट्टैयम्, वेल्वेलम्	अरुचुनम्, एरुक्कम् चडाविदम्, अरक्कम्	एलुमिचण्डुलची, पेरुंडुलचि
Te.	आग्नेतगलु, अडविदुम्मटिगे	तेल्लतुम्म	जिल्लेडु, मन्दारमु	निम्मतुलसी, रामतुलसी
Tu.			Kuzuotu	
U.			Ak..	Ramtulasi
Ur.	गौरोषि, पित्ताल्लु	गोइरि	आंकोडो, ओर्को, कोतकी	रामोतुलसी

S.	अर्जुन	अवाक्पुष्पी	अशोक	अश्मन्तक
A.				
B.	अर्जुन	छोट्कुल्य, छोटोकुल्प	अशोक	वनराज वनराजि
Bi.				
Bu.	Toukhyan		Thawgabo	Hpalan
C.	अर्जुन,बिलिमट्टि, नीरमट्टि		अशंके, असुगे, कँकलि	बिंद्दरिश अरलुमन्दार
Cu.	अर्जुन (वैद्य)	ऊंधफूली	अशोक (वैद)	आपटो
E.	Arjun	Iudian borage	Asoka	Common mountain ebony
F.				
Guj.	अर्जुन	ऊंधाफूली	अशोक	आमोतरी
Ge.				
H.	कौहा	छोटा कुल्फा	अशोक	आपटा
I.				
K.				
L.	Terminalia Arjuna (W & A)	Trichodesma indicum (R Br)	Saraca indica L.	Bauhinia racemosa (Lam)
M.	अर्जुनसादड़ा	सिंधीनी	अशोक	आपटा
Ma.	वेक्कमारुट्ठु, मारुट्ठु		हेमपुष्पम्, वान्चुलम्, अशोकम्	कोतुपुकी, मन्दारम्
P.				
Pu	अर्जुन		अशोक	कोसुनद्र
Sinh.	कुम्बक		दियेरातेम्बेला	मयिला
Si.		गौझवान्		
T.	कुलमारुडु, नीर्मारुडु	कल्हदाइतुम्बई	कागौळी, मलैक्करुनै अचोगम्, अनागम्	चळगि आरे, आरिध
Te.	तेलमद्दि, ककुभमु	गुण्डागुट्टी	वञ्जुलमु, अशोकमु	मंचियेर, पचारे अडवियविसे
Tu.				
U.	Arja.			
Ur.	कोर्जुनो, पोरजोन्योसारानो		ओशोको	ओम्पोरोडावनरेजा

S.	अश्वत्थ	असन	आखुपर्णी	आढकी
A.	Tin assnam, Arak el hind		Ajanaulfar	Lubya sudani Bisillah hindiyah,
B.	अश्वत्थ, अशुद		उन्दरकानिपन	अरहर, कोल, ओगेर
Bi.				
Bu.	Nyaungbaudi			Pai-si-song, pesigon
C.	अरलि, अश्वत्थ, वृक्षदारु	करोई, सिडिगुलिगे		तोगरि, दाळु, कारिगु
Cu.	पिपरो	असन	उन्दरुकनी	तुवर
E.	Sacred fig	Spinous Kino tree		Pigeon pea.
F.	Figuier des pagodes			Ambrevade, Cajan
Guj.	पीपळो	असन	उंदरकनी	तुवेर
Ge.	Indischer gottesbaum, Pagodenbaum			Angolische erbse, Catjang
H.	पीपल	खाज, खरक, गोंदनी	मूषाकर्णी	अरहर
I.	Fico del diavolo			Pisello d' Angola, citiso dell Indie
L.	Ficus Religiosa L.	Bridelia montana (wallr)	Ipomœa Reniformis (Chois)	Cajanus. indicus (Spreng)
M.	पिंपळ	असाणा	उन्दीरकानी	तूर
Ma.	अरत्तु, अरय ल, चलयलम्			तुवर, आडकी, काचि
P.			Goromusha, Goshamosha	Shakhil, shakull
Pu.	भोर, पिपल	गोंदती		अरहर, तोहर, डिंगर
Sinh.	बो			रतातोरा
Si.	पीवर			
T.	अशुवद्दम्, चुवलै, अरत्तु; वेंगैमारम्		पेरेट्टैक्किरय	इयवै, परप्पु, तुवरै, आदगि
Te.	अश्वत्थमु, चलदलमु, रावि	पन्तेगि, सन्नकोदरि तेल्लमीगिरा	तोइन्गुआतलि	चित्रकण्डि, कण्डुल
Tu.	Asnami incirag Bo inciri			Hind bizelyasi
U.	pipal		Chukakani, Sharadam	Arhar
Ur.	पिप्पोळो, ओश्वोथो, पुरुटो	नुआनालि		होरोदो, काण्डुलो

S.	आत्मगुप्ता	आदित्यवल्ली	आमलक	आम्र
A.	Miyukunat el baqar	Abbad esh shams	Amlag, As sauanir,	Mango
B.	अकोलपि, बिचौटी, कामाच	सुरयामुक्ति, सुरजमुकी	आम्ल, आमलकि, आम्ला	आम्र, आम्र
Bi.				
Bu	Khuele,Khwele		Hziphyu shabju	Thayet.
C.	नसगुणी	सूर्यकान्ती	नेल्लि, धात्रि, आमलक	मावु, सीमावु, तोरोमावु
Cu.	कौंचा	सूरजमुखी	वडी आमरीजो झाड	आंबेजो झाड
E.	Cowage	Sun flower	Emblic myrobalau	Mango
F.	Pois a gratter, Mucune	Helianthe,Grand-soleil, Tournesol	Emblique officinale, Cmyrobalau Emblic	Manguier, Arlre de mango
Guj	कौवच	सूरजमुखी	आमळा	आंबो
Ge.	Jackf asel, Stechende-echte tfasel	Echoe stnuenblume	Graue myrobalane	Mangobaum
H.	केवाँच	सूरजमुखी	आँवला	आम
I.	Fagiolo di Rio Negro	Corona del sole, Coppa di sole	Mirobalano embelica	Mango,Mangifera-comune
L.	Mucuna pruriens (D.C.)	Helianthus Annuus (LINN)	Phyllanthus emblica. L.	Mangifera indica L
M.	कुहिली	सूर्यफूल	आंवळा	आंबा
Ma.	शोरीवल्ली		आमलकम, नेल्लि	आम्रः
P.	Auareghorash	Aftabi, Guliaftab	Amelah, Amuleh	Amba, Ambeh, Naghyak
Pu.	गुल्चगजी, कुम्च		आम्वाल, आम्ल	आम, आम्बू, मव'पि
Sinh.	आचार्यपल्ले		औसदनेल्लि, नैल्ली	आम्ब, माकण्ड, वालाम्ब
Si.				आम्ब
T.	अमुदारि		आमळगम्, तात्तिरि	आम्बिरम्
Te.	दुलगोंडि	आदित्यभक्ति, चेट्टु	पुल्युसिरिक, अ'सरिकय	आम्रमु
Tu.		Ay Cic, Gun cic Gune bakan	Amlac.	Mangu ag Hind Kiraz ag
U.	Kavaucha	Surajamakkhi	Auwala	Amba
Ur.	कन्चु, आलोकुशी		खोन्डोना, ओनोला	आम्बो

S.	आम्रातक	आरग्वध	आरुक	आर्द्रक
A.		Kharrub hindi, Qitha hindi Khiyar shanbar, Bakbar hindi	Khawkh, Persik	Zangabil
B.	आम्र	आमुलतास		आदा
Bi.				
Bu.	Grve	Gnookye		Khyenseing
C.	मरहुनिसे, अमटे, अवेटकाई	कक्के, कोण्डे, आरिवत	पिकेसु, पिचेसु	हसिशुण्ठी, अह
Cu.				आदु
E.	Indian Hog-Plum	Purging Cassia	Peach Tree	Green ginger
F.		Caneficier, Casseen silieue, Cassier	Pecher	Amome des endes, Gingembre.
Guj.	अम्बाडो	गरमाळो	आलुक	आदु
Ge.		Purgier Kasie Rohrenkasie	Echter pfirsich	Iogwer, gingiber
H.	अम्बाडा	अमलतास	आरु, आड़ू	अदरक
I.		Cssia solutiva, Cassia in bastoni c. di Levante	Pesco, Persico	Pepe, Zenzero, Zenzero, Zenzevero
L.	Spondias mangifera Willd	Cassia fistula. L.	Prunus persica B & H F	Zingiber officinale (Rosc.)
M.	अम्बाडा	बहावा	अरु	आले
Ma.	कट्टांपलम्, मांपुली, अम्बयम्	कोन्न, स्वर्णकम्, कृतमालम्,		चिंचटकम्, चक्कु
P.	Darakhtemoryam	Khiyarchanbar	Aru, Shuftalu	Shangabir Zangabil.
Pu.	अंबर	अली, कियार	अरु	अदक, अद
Sinh.	अम्बरेल्ल	अहल्ला		इञ्जुरु
Si.		चिमकानि इरागविरहम्		
T	मावुलिंकि, गिरांगै	अरक्कुवेडम्, चरक्कोंरै		आरत्तिरेगम्, चीगरम्, वेरक्कोम्बु
Te	अडविमामिडि, बोण्डमामिडि	कोलपोन्न, आरग्वधमु	पिचेमु	अल्लमु, सोंटि
Tu.		Hiarsember ag	Seftali Ag	Zencefil, Zencebil.
U.		Amaltas	Adud	[illegible]raka
Ur.	आम्बोटो, आम्राटोको	सुनारी चोरंगेल्लो	पिचु, पिञ्चु	[illegible]को, शुण्ठि

S.	इक्षु	इक्षुरक	इङ्गुदी	इत्कट
A.	Qassab essukkar. Qassab		Heghelig.	Sasban Sayasban
B.	अक, गन्ना, कम्जुली, पुरी	कण्टकलिका	हीगोन	धनीचा, धूनची, धूनचा
Bl.	कटारि, उख	तालमखाना		
Bu.	Kyan, Keyan			Pouk, Najan ben.
C.	कब्बु, कण्टर	घोळवळिके बीज	इङ्गलक, इङ्गळरे	सुळ, जीनगि
Cu.		एकरो	इङ्गोरिया	गडोडेजो झ ट
E.	Sugar Cane	Long Leaved barleria	Zachum oil plant	Prickly sesban
F.	Canne a sucre, Cannamelle		Dattier du Desert	Sesbanie, sesbane
Guj.	शेरडी	एखरो	इंगोरियुं	इकड
Ge.	Zuckerrohr		Zachunbaum	Sesbanie, schnurfrechme
H.	ईख, गन्ना	तालमखाना	इङ्गोट इङ्गुआ हिंगोट	जयन्ति
I.	Canna da zucchero, Cannamele		Dattero Deserto	Sesbania.
L.	Saccharam Officinarum L.	Hygrophila spinosa (Andres)	Balanities Roxburghii Planch.	Sesbania aculeata (Pers)
M.	उस	कोळसुन्दा	हिंगण	चिंचिणी
Ma.	कान्तारकम्, वेळकरिम्पु	वयाकल्लुळी	नाम्जुण्ट	किटंडु
P.	Naishakar			
Pu.				जैन्तर
Sinh.	उक्, उकगास	कर्रैरिकि		
Si.	कामण्ड			गदोरेजी
T	अङमारिगै, कलै, करुम्बु	नीरमळी	तोटवङ्ु, नाम्जुण्डन	मुळ्चम्बै, नीरचेम्बै
Te.	चेरकु, इक्षु, कान्तारमु	नीरगुब्बी	गार, इन्गुदि	एररजीलुग
Tu.	Seker kamisi		Haglig	Sesban
U.	Gana	Talimkhana	Hingot	
Ur.	इक्षु, आकु, गुडेदार		इङ्गुदीला	टेण्टुआ

S.	इन्द्रवारुणी	उच्चटक	उत्पल	उदकीर्यका
A.	Hhanzal, Hhadag Mararetees sahhari	Zughaf shuqaf		
B	इन्द्रायण, मखल	पुयानी	नीलपोद्म	उमुलकुचि
Bi.				
Bu.	Khiasi		Kyanyu	Sunletthe
C.	कुन्दीबाई			
Cu.	कुजाडेश	कण्डेरा गोखरु	कमर	
E.	Colocynth		Blue water-lily	Prickly Brazil wood climber
F.	Coloquinte, echicotin	Blepharie		
Guj	इन्द्रवारुणी	उटींगण	नीलकमल	वाकेरीमूल
Ge.	Bitterzitrulle, Bitterapfel			
H.	इन्द्रायण	उतंजन	कृष्णकमल, नीलोफर	वाकेरीमूल
I.	Coloquinda, Coloquintida, Popone amaro	Blepfaride		
L.	Citrullus colocynthis (Schard)	Blepharis edulis (pers)	Nymphæa stellata (willd)	Caesalpinia digyna (Rohl)
M.	इंद्रावण	उटझन	निळेंकमल	वाकेरी
Ma	पेयटोकोमुट्टि		सितमपेल	
P.	Hindavanahe-talkh	Anjara		
Pu.				
Sinh.	याकोमड्डु, पेतिपुत्त		मानेल	
Si.	त्रुजपर			
T.	पेयक्किमुट्टी		नीलोत्पलम्	
Te.	चेरिपुच्छ		नितिकुलव	नूनेगचा
Tu.	Abu Cehl Karpeazu, Hıncal acielma, Hanzal	Kajit		
U.	Indrayan	Uttanjan		
Ur.			सुन्दिकैन	गिलो

S.	उदुम्बर	उपकुञ्चिका	उपोदिका	उशीर
A.	Jamiza	Barakah, Kamun aswad, Hbabbah sawda Hhabbecel shūniz	Malabār	Usir
B.	यज्ञडुम्बर	कालीजीरा	पुइशाक	खसखस
Bi.				
Bu.	Thapan	Samonne		Miyamoe
C.	अत्ति	करेजीरिगे	कँपावसले	लामंचा, लावंच
Cu	उमर		पोई	वाळ
E.	Gular fig tree	Black cumin	Indian spinach	Cuscus grass
F.		Araignee, Quatre, epices	Baselle, Epinard-demalabar	Vetiver
Guj	उमरडो, उमरो	कलौंजी जीरुं	पोई, पोथी	वीरणनो वाळो
Ge.		Echter schwarz Kummel	Weisse Beerblum malabar spinat,	
H.	गुलर	मगरैल, काला जीरा	पोय, पोइ	खस
I.		Erbaspezie. Melanzie-lomestica	Spinacio della china, Badella	
L.	Ficus glomerata (Raxb)	Nigella sativa. L.	Basella Rubra. L	Andropogon muricatus Vetiveria zizanoides
M.	उम्बर -	काळेजीरे (Khory)	मयाळ	वाळ
Ma.	अत्तियाल, जन्तुफलम्	करुजीरकम्	वसेल्लाकिरा	वेट्टिवेर
P.	Tamarpi shah	Shuniz		Khas
Pu	चातया			पन्नी
Sinh.	अत्तिका	कालुदुरु	निविति	सैवन्देरा
Si.			पोइ	
T.	अत्तमारइम्, अदवम्, आर्ति	करुञ्जीरगम्	वसलकिरै	वेट्टिवेर
Te.	ब्रह्ममेडि, पैडि, अट्टि	नेल्लाजीलकैरा	बच्चलकूरा	वट्टिवेरु
Tu.		Coregotu, karamuk, sehniz	Pazu, cin Ispannagi,	
U.	Gular		Poh	Khas
Ur.	डिमिरि, उदुम्बोरो			

S.	एरका	एरण्ड	एर्वारु	एलवालुक
A.		Khirwa	Kissakadam	Qurassya, karaz
B.	होग्ला	भेरेण्डा	काँकुर	
Bl		अण्ड		
Bu.		Kesu		
C.	जम्बुहुलु, आपु	औंडल, चिट्टहरळु, हरळु	वल्लीगट्टे	
Cu.	घासजरीओ	एरण्डियुं	काकडी	
E.	Elephant grass	Castor oil plant	Melon cucumber	Cherry Tree
F.		Ricin, palma, Christi		Cerisier Griottier, Cerise aigre
Guj.	घासजरियुं	एरण्डो	काकडी	एलवा
Ge.		Echter-wunderbaum Palme christie		Sauerkirschen, Sauerkirsch
H.	होगला, पटेर	रेंडी, एरण्ड	ककडी	आलूबालू
I.		Fogiolo d' india mano aperta Risino, Palma Christi		Ciriegio, Ciliegio, Agerotto, Ciliego, Agerotto
L.	Typha Elephantina Roxb	Ricinus Communis L.	Cucumis Utilissimus L.	Brunus Cerasus L.
M.	पाणकणीस रामबाण	एरण्डी	काकडी	आलुबालु
Ma.		आवणक्कु, आवणक्कु, तकम्	वेल्लरिक	
P.		Bedangir	Khiya jard, Khiyatajara	Alubalu, Alubuali
Pu.	बोज़् बोरि, दाब्	एरण्ड		गिलास
Sinh.		तेलेन्दारु		
Si.	बुरी	हेरन्		
T.	आनैक्कोरै, आनैप्पुल, चम्बु	आमणक्कु, अट्टमानम्	ककरीक्काई	
Te.	एनुगजम्मु, जाम्मुगड्डी, कान्द्र	आमुदमु, चिट्टामुदमु	दोसाकाई	
Tu.		Beydencir, Harra, Hint; Geneotu, Gene greek	Ficle	Kiraz ag
U.		Eranda	Kakri	Alubala
Ur.	होगोला	भेरोण्डा, चिग्रोडो, गोवो	काकनाई	

S.	एला	एलापर्णी	कक्कोल	कङ्गु
A.	Qaqullah shiran	Khawlangan	Hbaabb el arus	
B.	इलाची, ईलायिच्	बाराकालिजान्	सुगंध मरिच	
Bi.				
Bu.	Bala, Bhala, pala	Padagoji		
C.	एलकि, इलनि, कौराङ्गो	दुम्पुरास्मे, दुम्प्रास्ट, सुगन्धवाचि	गन्धमेणसु	
Cn.				
E.	Lesser Cardamon	Galangal	Cubeb pepper	Italian millet
F.	Cardamoma petit	Galanga Majeur	Boirrier cubebe, Cubibe	
Guj.	एलची	कुलिंजन	चणकबाब	कांग
Ge.	Kleine kardamomen	Galgant Grosse galgant	Cubebenstrauch	
H.	इलायची, एलची	बड़ा कुलिंजन	कबाबचीनी	कंगनी, कोरा
I.	Cardamomo minore	Alpainia, Galanga maggiore	Cubebe, pepe a coda	
L.	Elettaria Cardamomum (maton white en)	Alpinia galanga (Swartz)	Piper Cubeba (miquel)	Panicum italicum L.
M.	वेलदोडा	कोष्टकोळिंजन	कंकोळ	कांग
Ma.	एल्, एलक्काय, काहैवि, तुटि,	अरत्त, पेररत	चीनिमुळकु	
P.	Hail, Hil	Khurduwara	Habelarus	
Pu.	ईलायचि			
Sinh.	इनासाल, ईनुसाल			
Si.		कुंजर		
T.	एलम्, चिर्रेलम्	आणन्दम्, आरत्तै	वाल्मिळगु	
Te.	कोरंगि, एलकि	दुम्पुराष्ट्रकसु, कचोरमु	चलुव मिरियामु	
Tu.	Kucuk, kakule	Havlincan, Galanga	Kebebiye, Kebebe	
U.	Ilayachikhurd	Kulanjan		
Ur.	एला, ओलैयो			

	कटभी	कट्टफला	कट्टरोहिणी	कट्फल
A.		Hhabb el misk, Anbarbul	Kharba gehindi	Azuri
B.	बोरी, कोरोय्	मुषकदाना	कट्की, कुरु	कायफल् कायाफुल्
Bi.				
Bu.	Seet, sit	Baluwa		
C.	अघधि, वागे वेक्वि	कस्तरमेण्टे		
Cu.	सरसडो			
E.	White siris	Musk mallow	Kurroa	Boxmyrtte
F.		Ambrette, Graine de musc, Ketmic, Musquee		
Guj.	सरसियो	लताकस्तूरी भींडो	कडु	कायफळ
Ge.		Abel mosck, Bisam e ibisch		
H.	सफेद सिरीष	मुश्कदाना, दुल्ला	कुटकी	कायफल
I.		Fior muschiato, Ibisco muschiato, Ambretta		
L.	Albizzia procera Benth.	Hibiscus abelmoschus L	Picrorrhiza Kurrooa Benth.	Nyrica nagi Thunb.
M.	किन्हई	कस्तुरभण्ड	कुटकी	कायफल
Ma.	परुन्तकर, कुटुम्पाल	कट्टकस्तूरी	कट्टुरोहणी	मारुत
P.		Mushkdana	Kharbaqehindi	Dareshishamkandul
Pu.			कालिकुट्की, कार	कहेला, कही, कायफल्
Sinh.		कापुकिमिस्सा		
Si.				कायफल
T.	वेल्लुविलू, कल्वागै, वेल्वागै	कट्टुकस्तूरी	कट्टुरोगणी	मरुदम्
Te.	गमाड, पेद्दचरा	कर्पूरमेण्डा	कटुकरोगणी	कैडर्यमु
Tu.		Amber cic		
U.		Mushkdanah	Kutakisafed, Kutakisiyah	Kalphal
Ur	सिरिषि सुरोपोट्टो			

S.	कटुङ्ग	कण्टकारी	कण्टकीकरञ्ज	फतफ
A.		Badankare	Bundu, hindi, Qarahh	Naqud
B.		कण्टकारी	नाटा	निर्मळी
Bi.		रेंगनी		
Bu.			Kalein	Kamonyeki
C.	दोड्वेवु, हेवमणि, हेम	विकसोण्डे,नैलगु.	गाडिगा	चिल, अन्दुगु, चलियीग
Cu.	वडोनिम	भोरिंगणि	ककचीआ	
E.	Tree of heaven	Yellow berried nightshade	Bondue	Clearing nut
F.			Bondue, Chicot du canada	Strychnos des buveur
Guj.	अरलु	बेठी मोरींगणी	कांकच	निर्मली
Ge.			Gemeiner Schusser baum Nicke—baum	Bergk ra Henaugenbaum
H.	अरलु	कटेरी, भटकटैया	कंजा	निर्मली
I.		Bondue, Niceheri		
L.	Ailanthus excelsa (Roxb)	Solanum xanthocarpum (sche)	Cœsalpinia bonducella (Flem)	Strychno pota to rum (L.)
M.	महारुख	भुईरिंगणी	गजगा	निर्मळी
Ma.	पेरु	कण्टकारिचुण्ट, पुत्त्चुण्ट	कलिमारक	तेरुपेरलु, फतकम्
P.		Badanaganedoshti		
Pu.	अरुआ	कटेला, वान्कटिया	फिन्दुक्	निर्मली
Sinh.	कुम्बलु	इलावट्टु	कुम्बुरुवेल्	इङ्गिनी
Si.		अदरेजदेने	करबत्	
T.	अगाल, नारु, पैरुवें	चुट्टरम , उदरवनि	गच्जी	अक्रोलाम, इलम, तेरु
Te.	पेद्दमाण्डु, पेद्दवेप	चेलमुलग, जिट्टुस्थे, नेलवकुडु	गच	इण्डुपु, अण्डुगु, फतगमु
Tu.			Bonduc	
U.		Katilla, Bhakkatiya	Brnduk	Nirmali
Ur.	गोरिमाकाच्चा, महानिम्ब	आण्कोराण्टि, चौकोन्नायूहौटि	नोटा	कोटोशो, निर्गळा

S.	कदम्ब	कदर	कदली	कनकपुष्पी
A.		Shab qatad	Moz, Jalhh	
B.	कदम्ब		काला, केला, केलि,	
Bi.				
Bu.	Mau		Hugapyan	
C	वट्टे, कदुवले, कदम्ब		जेनुवाळे, रसदाळे, वूविदोळ	
Cu.		अच्छोखेर		
E.	Cadamba	Gum arabic Tree	Plantain	Hirtiz (Kashmir)
F.		Gommier blanc	Bananier, Figuier d' ladam	
Guj.	कदम्ब	गोरड, सफेद्खेर	केळ	हीरवी (का)
Ge.		Weissliche akazie, Verekbaum	Echte banane, Adams apel	
H.	कदम्ब	सफेदखैर	केलि	हीरवी (का.)
I.		Acacia del senegal	F. Banano meladi Paradiso	
L.	Anthocephalus cadamba Miq.	Acacia senegal (Willd)	Musa Sapientum (Okunty)	Euphorbia thomsoniana, Boiss
M.	कदम्ब	गोरड, पाढराखैर	केळ	
Ma.	आहट्टेक, कटम्प, कट्टुचक		पूवान्	
P.			Mouz, Tuhltula	
Pu.				
Sinh.	कदम्ब	खोर	केहल्, वाल्केहेल	
Si.			केविरो	
T.	मरट्टम्, इन्डुलम्, कडप्पै		चुगाण्डम्, इरच-डालै	
Te	कदम्बमु, कडिमि, पेद्कम्ब		अुगन्धाळ, सेनेयारटि	
Tu.		Beyaz zamk ag	Moz ag, inciri adem	
U			Kela	
Ur.	कदोमो, नीपो		कोनोकोरम्म	

S.	कपित्थ	कपीतन	कम्पिल्लक	कमल
A.	Tuffahh Kabit		Qanbil, Wars	Al ful el masri
B.	बैट्, कद्बेल	गजशुण्डी, पलाशपिपल्	कमलगुण्डी, कामिल	पद्म, कोमोल्
Bi.				
Bu.	Hman, Mahan		Tanthieden Tawthidin	Padungma
C.	दाडिफल, वेळल		सुरहोषि, चन्द्रहिट्टु	तावररिगट्टे
Cu.	कोठ	पारसपीपरो		कमर
E.	Wood apple	Flowering peepul Portia Tree	Kamala	East Indian lotus
F.	Feronic de L' Inde	Thespesia afeuilles de peuplier	Rottliere des Teinturiers	Nelambo, Feve d' Egypte Lotus sacre Lotus du nil
Guj.	कोठी	पारसपीपळो	कपीलो	कमळ
Ge.	Elephant-enapfel		Kamalabaum	Nillilie Addorisind
H.	कैथ	पारसपिप्पल, भेंडि	रोरी, रोहिना	कमल
I	Pomo d' elefante		Kamala	Nimfea d' Egitto, Rosa des Nelo
L.	Feronia elephantum (Correa)	Thespesia populnea (soland)	Mallotus philippinensis (Muell)	Nelumbium speciosum (willd)
M.	कंवठ	भेण्ड	कपिला	कमळ
Ma.	दाधीफल, कपित्थम्, वेळवु	चन्द्मारम्	चेंकोळि, कुरामट्टुक	तामर
P.	Kabit		Kampileh	Beykhneelufer Nilufer
Pu.	कैथ	पहारिपिपल	कामल, काम्पल	पाम्पोष्
Sinh.	दिव्वुल्	सूरिय, गमसूरिय	हम्परान्देल	नेलुम्बो, नेलम्
Sl.	कवठ			पद्मम्
T.	विळाम्, विरिलम्	पिरम्	कुक्कुचारि, कपिलपोडि	अम्बल
Te.	वेलग, दुप्पफलमु	गंगारेनी	कदम्बिगुण्डुमुडु, चेन्दिरमु	तामर
Tu.	Fil Elmasi			Fuli masri
U.	Kaitha		Kalleh	Nilufer
Ur.	काइठो वेलो, कोइठो	पोरोशो दिप्पोलि	चोसोम्तोगुण्डि, कुकुमी	पद्म

S.	करञ्ज	करमर्द	करवीर	करीर
A.	Shanaf ed dik			Sodab
B	दहुरकरञ्ज, दालकरमूय	बाइनचि, करमूच	करबी	
Bi.				कारि
Bu.	Simizu, Thawen			
C.	होङ्गे, हुलिगिलि, वट्टि	दोड्डवळि, हेगरिचिगे	कणिगले, पट्टिल	चिप्पुरि. करीर
Cu.				केरेओ झाड
E.	Indian beech	Bengal Currant	Oleander	Caper
F.	Arbre de pongolote	Calac		
Guj.	करञ्ज	करमर्दां	करेण	केरडो
Ge.	Mond bohne		Wohlriechender	
H.	करञ्ज	करोन्दा	कनेर	करर
I.				
L.	Pongamia Jlabra (vent)	Carissa Carandas, L.	Nerium odorum (Soland)	Capparis, aphylla (Roth)
M.	करञ्ज	करवंद	कण्हेर	नेपती
Ma.	मिनारि, पुन्नु, उण्णु	कळवु, कारक, कारञ्ज	अरलि, कणवीरम्	
P.	Khaiulmalisa		Kharzahrah	Bergesodab
Pu.	करञ्ज		गनेरा, गन्हिरा	करिया, डेलहा
Sinh.	मगुरु, करण्ड	महाकरम्ब, महाकरण्ड		
Si.				किरल
T.	काञ्चनम्, कीलैयम्	काळा, काळकाय	अगम्, अलारिडा	चेण्णम्, सिरक्कालै
Te.	कानग, कोवि, कानु	कालिवे, पेद्दवाक, वा	गन्नेरु, कस्तूरिपट	करीरमु
Tu.	Dalbercia			
U.	Karanjwah	Karawanah	Kanir	Titali.
Ur	कोरोञ्जो, कोञ्जा	कोरोन्ड खिरोकोलि	कोनियोरो, कोरोबे	

S	कर्कटकी	कर्कटशृङ्गी	कर्कन्धु	कर्फास
A.	Khiyar Qathad	Summaq, Kadheb	Zariab	Quawun
B.	खीरा, शशा	काकश्रिङ्गि		फुति, फाकरी, काकुर, सर्मुज
Bi.				
Bu.	Thagwa, Thakhwathee			Takhva
C.	सौतेकाई	कर्कटकशृङ्गी	पसेके, मुक्कुहण्णु	दोदकाई
Cu.			चणिआंबेर	
E.	Common cucumber	Crabs Claw,	Wild jujube	Melon
F.	Coucombre	Sumac batard, Sumacsuccedane		Melon Commun
Guj.	काकडी	काकडाशिंगी	चणीबोर	सकरटेटी
Ge.	Echte, gurke Kukumer	Tapanischer Sumach, Wachsbaum		Melone
H.	खीरा	काकडासिंगी	झड़बेर	खरबूज
I.	Cocomero Cetriolo	Sommacco da sego		Popone, Melone, M. moscato
L	Cucumis sativus L.	Rhus Succedanea L.	Zizgphus nummularia W.C.	Cucumis melo. L.
M.	खिरा	काकटशिंगी	गंगेर, जंगलीबोर	खरबूज
Ma.	वेल्लरिक			
P.	Shiyare Khurd		Shabaraka	Kharbuzeh
Pu.	खीर. खियार	अरगर	वाळू, फेल्, गिरेट	
Sihn.	पिपिनच			
Sl.			बेर, गोगरा	मिश्रो
T.	पिपिनकाई	करकटगशिङ्गी	कोर्नोडि	फदरीकै
Te.	दोसेगाई	काकरशिङ्गी	नेलरेगु	पेद्दाकै
Tu.	Hiyar, Fidam	Joponya mom ag, Yalan summak		Kavan fidani
U.			Zariab	Khavibuzah
Ur.	काकनाई			

S.	कर्कोटक	कर्चूर	कर्पूर	कर्बुदार
A		Gadwar, Satwal, Zadwar		Argat elqurun,
B.	कांकरोल	एकाङ्गि, कचूरा	कर्पूर	
Bl.				
Bu.	Sabyet, sapyit	Thannwen		
C.	गिडगाडु		कर्पूर	बिलिकङुवाल, वनसम्पिगे
Cu.	कंटोल जीवल			
E.		Zedoary	Camphor	White mountain ebony
F.		Giugembre, Batard zidoaire		Senne baterd, Ebenier de montagne
Guj.	कंकोडा	पट्कचूरो	कपूर	काचनार
Ge.		Zittewer, Kurkame Zedoararirzel		Unachte senna Berge-benholg
H.	ककोडा	कचूर	कपूर	कचनार
I.		Zedoaria, Zedoarialunga		Bauhinia, Ebano moutano
L	Momardica-dioica (Roxb)	Curcuma Zedoaria (Rose)	Dryobalanops aromatica (goertn)	Bauhinia acuminata. L.
M.	कर्टोली	कचोरा	कापूर	कांचन
Ma.	एरिमपावेल			वेळ्ळमन्दारम्, वेउट्टमन्दारम्
P.		Kazhur, Urukelkafur		
Pu.	धारकरेला, किरारा			
Sinh.	तुम्बकरविला	हाराङ्कह:		
Sl.				
T.	पडुप्पकाई		कर्पूरम्	कोडुमन्दारै, वेळ्ळमन्दारै
Te.	पेंडु [illegible]		कर्पूरमु	देवकाञ्चनमु, काञ्चनमु
Tu.		Gulpa hamra, Cevdar		Bohinia, dag abanozi
U.		Kachura		
Ur				चोट्टा

S.	कलम्ब	कलाय	कशेरुक	काकनासा.
A.		Gufan, Khullar		
B.	कालमिसक्, नलिते	करतूर, खेसारि		
Bi.				
Bu.				
C.				
Cu.	नारी-चल			घोघे-जीवल,
E.	Wild pot herb	Chickling Vetch		Small stinking wort
F.		Lentille d'Espagne, Gesse		
Guj.	नाडानी भाजी	लांग	कसेला	कौवादोढी, शींगरोटी
Ge.		Satplatterbse		
H.	नारीशाक, कलमी	खेसारी	कसेरु, चीचन्दा	शींगरोटी, कौआठोठी
I.		Robigelio, Cicerchia, Moco, Pisello, Collivata		
L.	Ipomoea aquatica Folsk.	Lathyrus Sativas L.	Scirpus kysoor. R.	Pentatropis microphylla (W & A)
M	नाडिशाक, नाळ	लांग	कचरा	शिंगरोटा
Ma.				पारप्पारम्
P.		Masang		
Pu.	गान्धियान्, नालि	चुराल्, कारस्	कशेरु, दिला	
Sinh.	कानकुन्			
Si.	नारो	मटर		
T.	सरकरैवल्लि			उप्पिलि
Te.	तुतीकुरा		गुण्डातुङ्गागडी	चेकुर्तितिव, पूलपाल
Tu.		Muirdemeg, Yasimercimek		
U	Narikakal			
Ur.				

S.	काकमाची	[illegible]	काकोदुम्बरिका	कारवेल्लिका
A.	Enab-ththalab, Ribriq	Fasulya sayfiyah	Tin barri	Ulhimar
B.	काकमाची [illegible]	[illegible], [illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]
Bl.				
Bu.		Paikalag	Kaaung kadot	Kehingabin
C.		[illegible]	[illegible]	[illegible]
Cu	[illegible]	[illegible]		
E.	Black night shade	Sword bean	Red wood-fig tree	Carilla fruit
F.	Morella noire, Amourette	Pois sabre, Haricotsabre		Paudipane
Guj.	पीलुडी	[illegible]		कारेली
Ge:	Schwarzer nachtschatten		RangoonLauchuk-feigen baum	
H	मकोय	सेम	[illegible]	करेला
I.	Solano hero, solatro ortense, Morella	Canavalia		
L.	Solanum nigrum. L.	Canavalia ensiformis D.C.	Ficus. hispida L.	Momordica charantia.
M.	कामोणी	[illegible]	[illegible]	कारली
Ma.		[illegible]	[illegible]	[illegible]
P.	Rubahtareek		Anjirdashete	Karelah
Pu.	[illegible], [illegible]	सेम	[illegible], [illegible]	करेला, [illegible]
Sinh.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
Si.	[illegible]			कारेलो
T.	[illegible]	[illegible], [illegible], [illegible]	[illegible], [illegible], [illegible]	[illegible]
Te.	काकमाची	[illegible], [illegible], [illegible]	[illegible], [illegible]	काकरा
Tu.	Kopek Uzumu	Kilic fasulyasi	Yabani incir	
U.	Makoya	Sem		Karella
Ur.		[illegible], [illegible]	[illegible], [illegible]	[illegible]

S.	कार्पास	कालशाक	कालानुसारिका	कालेयक
A.	Qutn mulablab Qutn esh sharq	Jut		
B.	कापास, तुला	घीनालोटापाट, वाची	दुधी	
Bi.				
Bu.	Wa, Wah		Tansapai	
C.	अरके, अंगर, हत्ति		करिहम्बु	
Cu.	मारियोनपा	टोडरी		
E.	Levant cotton plant	Jute plant	Dark blue creeper	Yellow sandle-wood
F.	Cotonnier d'Asie	Chanvr de-Calcutta, jute, Correte-Capsulaire		
Guj.	कपास	छुंछ	काळां फूलवाळी उपलसरी	पीळुं चन्दन
Ge.	Ktrze Ugeorgia baumwolle	Julepkanze, Indischer flacks		
H.	कपास	नरिचा	कालीसर	पीला चन्दन
I.	Cotone delle anchine, Cotone annuo,	Corcoro siliquoso		
L.	Gossypium herbaceum L.	Corchorus Capsularis. L.	Ichnocarpus fructeseens (Bit)	Santalum flavum L.
M.	धापूस	चौंचे	श्यामलता	
Ma.	कार्पास, पहत्ति, वन्र		पाल्वल्लि	
P.	Pambah			
Pu.	रुई			
Sinh.			किरिवेल	
Si.				
T.	पशुट्टिराण्डग, कार्पासम्, ईपरुत्ति, तुलवम्		उदर, गोडी	
Te.	वदारक, पिचुलमु, कार्पासमु		इट्टुकेट्टु, सुण्दगडानमु	
Tu.	Pambuk fidani	Hind keneviri		
U.	Rui			
Ur.	कार्पासी, कोपा		भूतखोळि, माडोवि	

S.	काश	काश्मरी	कासमर्द	किराततिक्त
A.				Qasabuzzarirah
B.	काश, काशीया	गभारी, गुमार	कालकसुण्द	चिरेता
Bi.				
Bu.	Thekkaygyee	Kyunboc, Yanamai	Kalan, Mezali	Sekhagi
C.	दर्भे, होदिकेदल	शोचाणिगे, गुप्ति, कुलु	दोडुतगसे	नेलाबेरु
Cu.	कांसियो धा	सवनजो झाड	सुन्द्रो	
E.	Thatch grass	White teak	Round podded Cassia	Chiretta
F.			Bsols puant	
Guj.	कास, कासडो	शीवण	कासुंदरो	करियातुं
Ge.				
H.	काश	गंभार, खंभार	कसौंदी, कासिदा	चिरायता
I.				
L.	Saccharum spontaneum L.	Gmelina arborea L.	Cassia occidentalis L.	Swertia chirata-(Ham.)
M.	काश	शिवण	कासविन्दा	किराईत
Ma.	नन्नाण,	कुम्पिल, कुमल	पोन्नाविरम्	निलावेप्पा
P.				Nenilawandi, Qusabuzzarirah
Pu.	काही, कान्हु	गुम्हार, कुम्हार		
Sinh.		अटडेम्माटा	पेनिटोर	
Sl.	खौ			
T.	अचवारम् , अंचन्नि	अरिवा, कूम्बाल, पूळिगुंमिल	पोन्नाविरै	निलवेम्बु
Te.	विक्षुपङ्डि, काकिचरुकु	अडविगुन्मुडु, गुमुडु	कासिन्दा	निलवेमु
Tu.				
U.			Kasonji	Chiarayata
Ur	इण्कोरो	भोद्रोपर्णी, काइमोरि	कासुन्दि	

S.	कुङ्कुम	कुटज	कुतुम्बक	कुमारजीव
A.	Zafarau, Kruku	Lisanel assafir el murr		
B.	कुंकुम	कुर्चि	हाल्काष, हाल्कुरस	पुत्रजीव, अंपुगा
Bl.		इंदरजग्तुलरव		
Bu.	Thanwai	Letong Kye, Letto pgyee		Badibyu Egayit
C.	कुट्कुमकेसरी	कोडसिगे, सण्णहाले, बेप्पाले		पुत्रजीव, मणसिनगाळे
Cu.				
E.	Saffron	Kurchi	White dead nettle shrub	Putranjiva
F.	Safran, Safran cultive	Holarrhine-antidysenterique		
Guj	केसर	कडो	झीणको कुबो	पुत्रंजीव
Ge.	Echter safron	Ruhr holarrhena		
H.	केसर	कोरैया, कुडा	गुमा	जियापुत
I.	Zafferano, Erocofiorito Fiori, Forcuculo	Olarhena		
L.	Crocus sativus L.	Holarrhena antidysenterica (Wall)	Leucas linifolia Spreng.	Putranliva Roxburghii (wall)
M.	केशर	कुडा	गुमा	पुत्रंजीवा
Ma.		पालाप्पइ, कैपाटोटकप्पाल		पेण्कोलम्
P.	Larkimasa	Inderjave, Talkh		
Pu.		क्वार, कुरा		जियापुत्र
Sinh.				
Si.				
T.	कुंगुमपु	वट्लरषि, इन्दिरपम्	तुम्बै	पाङ्पिलै, पिचान्नै
Te.	कंकुमपावे	गिरिमल्लिगा, कोडुगु	पुल्तुम्मि	कुदुरुजीव
Tu.	Zafran	Aci Serce dili		
U.	Jafranekar		Guma	
Ur.		इन्द्रोजेबो, कया		भोलोकोळि

S.	कुमुद	कुम्मी	कुरण्टक	कुलत्थ
A.	Hhash es samak			Qalath, Hubulkilat
B.	कमल	कुम्भ्, कुम्भी	कान्ताजटि	कुर्तिकलाय्
Bi.				
Bu.		Bambway,Banbwe	Leithaywe	
C.	बिळेतवरे	कवल, हण्णुमट्टि, दट्टाल, आलगण्वेले	मुकुमोरण्टे, गोरटे	हुरळि
Cu.			वज्रदौल, कंडा असेरीमं	
E.	White water lily	Saffron mango	Yellow nail dye	Horse gram
F.	Nenuphar blanc, Lis des etangs Nymphe. Lunifa, Lune d' eau,			Dolic biflore, Graindecheval
Guj	कुमुद	वाकुंभो	पीळाफुलनो कांटाशेरियो	कळथी
Ge.	Weisse seerose			Pferdekonn
H.	गंडे, गंडे छोटा कंवल	कुम्मी	पीले कटसरैया	कुल्थी
I.	Giglio Deglistagni, Lund d'aoqua, Ninfea blance. Nenufaro			Dolico Cavalina
L	Nymphoea alba L.	Careya arborea (R.)	Barleria prionitis. L.	Dolichos biflorus L.
M.	पांढर कमल	कुम्भी	कोरांटी	कुळीथ
Ma.	नीरम्पल	आलम, पेकु, युक, पेरा	चेम्मुळ्ळि	मुथेरा
P.	Nilufur			
Pu.	पम्पोश	वाखुम्ब		कुलत्थ,
Sinh	ओलुपु, ओलु	काहत, अहट्टे	कटुकुरण्डु	कोल्लु
Si	कुनी			कुलित्थ
T.	अम्बल	आयूमा, करेकु	वरलुमुटी	कोळु
Te.	अम्बल, तामर	अरय, बुद्दारिजि, गडवा	गोळी मुल्लु, गोरण्टा	उलुवा
Tu	Ak nilufer, Sazamvagi			At boyruce
U.	Alliphul			Kulathi
Ur.	भावल्कन	कुम्मी	दासोकोराण्टि	

S.	चविका	भारती	चित्रक	चिरबिल्व
A.	Dar fulful		Shitrag	
B.	चोई, गरछा	तुनबो	चिता, चित्रक	
Bi.				
Bu.			Kanchopphiyu	Myau kseik
C.	चव्य		चित्रमूल, मूलिके	कवद्रि, निलवद्रि
Cu.				
E.	Long pepper		Lead wort	Indian elm
F.	Poivrier long			
Guj.	चवक		चितरो	चरेल, कणजो
Ge.	Langer pfeffer			
H.	चाव	रतनपुरुष	चीता	चिलबिल, चिरा, चिरबिल
I.	Pepe lungo			
L.	Piper chaba (Hank).	Ionidium suffruticosum (D. c.)	Plumbago zeylanica L.	Holoptelia integrifolia (Planch).
M.	चवक	रतनपुरुष	चित्रक	पावळा
Ma.		ओरिलातमार	तुम्पुकोटुवेली	मावल
P.			Shitarak, Shitirak	
Pu.			चित्रक	अर्जन, घाचाम्
Sinh.			नितुल	ग्डाहिरिला गोडकिरिला
Si.				
T.		ओरिलैतमारै	काणिलम्, चेक्रिकोविवेलि	चेळ्ळाय, आचा
Te.	सेवासु	नीलकोमरी	अग्निमाता, चित्रमूलमु	पेदनेविलि, तपसि
Tu.	Dar biberi			
Ur.			Chitalakri	
			चितामुलो, चित्रानु	धारंगो

S.	चिभंट	चिल्ली	चुक्रिका	चुञ्चुपर्णी
A.	Qawun	Fisa el Kilab	Hhummad, Hhanbit	Mulukhiyah
B.	काकरी, काकुर, फुटी	बाथुशेग चन्दनबेट्ठ	चाक, चुक, चुका	बानपाट, भुन्गीपाट
Bi.				
Bu.	Takhva		Kala Khenboun	
C.	कलिंगड, बचंगाई	चक्रवती		चुंचुलगिडा
Cu.				
E.	Melon	Goose foot, Wild spinach	Sorrel	Jews mallow
F.	Melon common	Grasseline, Poulegrasse	Oseille d' Ameroque	Mauvedes Iuilos, Melochie
Guj.	चीभडुं	चील, टांको	चूको	छुंछ
Ge.	Melone	Weisse melde, Weisser gan sefuss	Amerikanischer Sauerampfer	Judenmalve, Me' ·hie
H.	फूटककरी	बथुआ	चूका	पाट
I.	Melone, Popone	Rosso, Gallina Grassa, Farnaccio	Romice d'·America	Malva dei giardini Cororo ortense
L.	Cucumis melo L.	Chenopodium album L	Rumex Vesicarius L.	Corchorus olitorius L..
M.	चिबुड	चाकवत	चुका	चूंच
Ma				
P.	Kharbuzeh	Khurfa, Khuruelasafir	Turbak	
Pu.		बाथु, बाथुआ	काह्टमीथा, खाटमीठी	बनफल
Sinh.			सूरी	
Si.	गिध्रो	झील	चूका	बनपाट्
T.	कक्करिकै	पद्दुक्किरै	शाकन्कीराई	पेरही
Te	पेद्दाकै	पप्पुकुरा	चुक्काकुरा	परिण्टा
Tu.	Kavun fidani	Ak pazi	Humad otu	Muluhia
U.	Kharbuzah		Chukakasag	
Ur.				झोटो

S.	चोरक	जम्बु	जया	जलपिप्पली
A.		Tuffahh el ward	Sasban, Saysaban	Libyah, Bulayahhah
B.		गोलाजाम्, गोलाजाम्	जयन्ती	बकन्
Bi.				
Bu.		Thabye	Yethugyi	
C.		ने०ळे, जम्बुनेरिळे	जयन्ति, शीननमि	नेल्हिप्पली
Cu				
E.		Jambol	Sesban	Fog friut
F.		Eugenier jambos, Jambosier	Sesbane, Sesbanie	Fraise de mer
Guj.	चोरक	जांबु	रायशिंगनी	रतवेलियो
Ge.		Jambosenbaum	Sesbanie, schuurfrechme	
H.	चोरक, चोरा	जामुन	जयन्ति	जलपिप्पली
I.		Prugna di Malabar, Mel arosa. Pomo rosa	Sesbania	
L.	Angelica glauca (Edgew)	Eugenia Jambos (Lamk)	Sesbania œgyptica (Pers)	Lippia nodiflora (mic'ix)
M.		जांभूळ	शेवरी	रतवेल, जलपिप्पली
Ma.		जांबु, चांपा, पनेम्	मेळित्ताळि, शेम्प	कट्टुतिप्पली
P.			Sisiban	
Pu.	चोरक, चुरा			बाकन, बुकन, जलनीम
Sinh.		जांबु		हेरिमनदत
Si.		जामु		बकेम
T.		चम्बुनागै, पेरुनावल	सायुदै, चिरगत्ति	पोडुतलैइ
Te		जम्बुनेरेडु	गाचिम्भा, सोमिण्ट	बोकेनाकु
Tu.		Jamboz ag	Sesban	Su cilegi
U.		Julab Jaman	Jait	
Ur.		जांबु	जोयोन्ति	बुकन्

S.	जाती	जाती (प्रवाल)	जिङ्गिनी	जीमूत
A.	Gawz et tib, Gawz´buwa	Pasmain		
B.	जाीफल	जाती	जीओल	देयताड
Bi				
Bu.	Myatle, myatloe			
C.	जाति	अजुगे, जाईपत्रे	चडिमर, औरीथ	देवडांगर
Cu.				
E.	Nut meg	Jasmine		Bristly luffa..
F.	Muscadier	Jasminede catalogne		
Guj	जायफल	चमेली	मवेडी	कुडडवेला
Ge.	Muskatnussbaum			
H.	जायफल	चमेली	झिंगन	विंडाल, बंदाल
I.	Noce moscata, Miristica			
L.	Myristiea fragrans (hout)	Jasminum granlaiforum L.	Odina wodier (Rorb)	Luffa echinata (Roxb)
M.	जायफळ	चमेली	शिपटी	देवडंगरी
Ma	जातिक, जातिफलम्	मालति, पिचकम्	एति	देवताडी
P.	Gauzibuya	Hashim		
Pu.		चम्मेली, जाती		
Sinh.	सधिक			
Si.			मुई	जंगधोरी
T.	जादिपलम्, अद्दिगम, चडि	चादिमल्लिग, वाणम्	ओदियमरम्	
Te.	लवङ्गमु, जातिफालमु	जाजि. मालति	ओड्डिमानु	पादिगिर
Tu	Kucuk hindistan, Cevizi ag			
U.		Chambeli		Kukarabel
Ur.	जातिफोलो, जाईत्रि	चोम्पेलि, जाईफुलो		

S.	जीरक	जीवन्ती	जूर्णाह्वा	ज्योतिष्मती
A.	Kammun, Sannut		Dhurahnili, Dhurah sayji	
B.	जीरा		जोवार, जुर्नि	मालकाङणी
Bi.				
Bu.	Ziya		Pyoung	Myinkounguayoung
C	जीरगे		जाउ	गवनगोङ्गे, कंगवने
Cu.				
E.	Cumin seeds	Cork swollow wort	Great millet	Staff plant
F.	Cumin		Sorgho Commun grand millet Great millet	
Guj.	जीरुं	डरी, खारडरी	जुवार	मालकांगणी
Ge.	Echter romerkummel		Agyptische reiskorn Mohrenbartgros.	
H.	जीरा	डोडी, जीवन्ती, जैनी	जुआर	मालकांगनी
I.	Comino-domestico Ciminodolce		Sorgo a scopa, Miglio	
L.	Cuminum cyminum	Leptadenia reticulata (W&A)	Sorghum vulgare (pers.)	Celastrus paniculatus (willd)
M.	जिरे	रायडोडी, डोडी	जोधळा	मालकांगोणी
Ma.	जीरकम्	-	चाचेला	पालुकावम्
P	Zira			
Pu.			बाजाजुपान्य, जोआर	साखु
Sinh.	दुरु, सुदुरु		करलिरिङु	डुडु
Si	जीरो			
T.	सीरगम्	पालैक्कोडि	चोलम्	अडिवारिचम, चेरियम्
Te.	जीरक	पुष्टदुम्पुङु, पालटीगे	जोन्नु	एरुङड, मालकाङुनि
Tu.	Cimen. Kimyon		Dari Zura	
U.	Jirah			Malkanguni
Ur.				कारोवेचो

S.	टङ्क	टुण्टुक	तगर	तण्डुल
A.	Kumnathra, Ingass		Asarun	Ruz
B.		सोना, नासोना	तगेर, बालचुर	चाल-धान
Bi.				
Bu		Kyaungya		Chan, San
C.		सोनेवट्टे, टुण्टुकार	नन्दिवट्टल	अक्की
Cu.				
E.	Peer tree	Indian calosanthes	Indian valarian	Rice
F.	Poirier			Riz
Guj.	रटङ्क (कारमीर)	टेंटु	तगर	चखा
Ge	Echter birnbaum			Reis
H.	नासपती, नशपाति	टेंटु	तगर	चावल-धान
I.	Pero			Riso
L.	Pyrus-communis L.	Oroxylum-indicum (vent)	Valeriana hardwickii (wall)	Oryza sativa L.
M.	नास्पती	टेंटू	तगरमूळ	भात
Ma		अरलु, पलगपायाणि		अरि
P.	Nashpati			Biranj
Pu.	बटङ्ग, नशपाती	मिरिङ्ग, मोरि	बाल, तगेर	मुंजी, चालियान, तायँ
Sinh.		तोटिल्ला		हल, गोयान्
Si.				सारि
T.	पेरिकाय	अचि, अरण्ड, पन		नेल्लु
Te	बेरिकाय बेरीपाण्डु	दुण्डुगु, सोंकनेर		धान्यमु
Tu.	Armud ag			Pirinc
U.		Arlu		Chan-wal
Ur.		पोम्पिडि, सोणो		चौल, धान

S.	तण्डुलीयक	तमाल	तरुणी	ताडक
A.		Zarmab	Wardah kathirat ul waraq	Tal, Dom, Shag elmaql
B.	चम्पनातिया	तेज्पाट्	गोलाप	ताल
Bi.				
Bu.		Thitchabo	Huinsi	Tau
C.	किरकसाले	दा्लचिनी, पत्रक	गुलाबि	ताळ, वरिताळे
Cu.				
E.	Prickly amaranth	Tamala	Cabbage rose	Palmyra palm
F.			Rose a cent feuilles	Borasse, Rondier,
Guj.	तांदळजो	तमालपत्र	गुलाब	ताड
Ge				Palmyrapalme, Weinpalme
H.	चौलाई	तेजपात	गुलाब	ताड
I.			Doppia, Rosellina dimacchia	Palmadel ferro, Palmadel palmira
L.	Amaranthus polygamus (willd)	Cinnamomum tamala (Frncss)	Rosa Centifolia L.	Borassu flabellifer L.
M.	तांदुळजा	तमालपत्र	गुलाब	ताडपत्र
Ma.			गुलाब	करिम्पन, तालम्
P.		Sadrasu	Gul, Varda	
Pu.			गुलाब	
Sinh				ताल
Si.				
T.		तालिशप्पहिरि	इरोस	पहप्पनै, करदाळम्
Te.		तालीशपत्रि	गुलाबि, गेजा	ताडु, करताळमु
Tu.			Van giilii	Tedmir hurma ag, Tal
U.		Tejapat		Tad
Ur				ताळो, ताल्लो

S.	तामलकी	ताम्बूल (पत्र)	तालमूली	तालीश
A.		Tambul, Shah Sini, Tamul		
B.	भूंईआमली	पान	तालमूली	तालीसपत्र
Bi.				
Bu.	Mizi phiyu	Kun, Kwan		
C.	बिरिनेल्लिगिडा	वीळ्यदवल्लि, नागवल्लि,	नेलताळिगड्डे	तालीसपत्रे
Cu.				
E.		Betel leaf	Black musale	Himalayan silver fir
F.	Harbe du chagrin	Betel, Temboul, Poivrier betel		
Guj.	भोंयआंवली	नागरवेलनां पान	काळी मुसली	
Ge.	Weisse blatt blume	Betel Peffer strauch, Betel		
H.	भूंईआमला	पान	मुसली	
I.		Betal		
L.	Phyllanthus niruri L	Piper betel L	Curculigo orchioides (gaert)	Abies webbiana (windl)
M.	भूयआंवळी	नागवेल	काळी मुसली	
Ma.	किरिगानेल्लि	ताम्बूलम्, वीतिक	नेलप्पनकिळङ्ङ	तालीसपत्रम्
P.		Bargetanbol	Musali	
Pu.				
Sinh	पित्तवाका	बलात बुलानवेल्	हिनविन्ताल	
Sl.	निरुरी			
T.	किलनेल्ली	वुकुलि, इलैक्कोडि	निलप्पनै, कोलहाग्गु	
Te.	नेलाबुसारी	तमलपाकु, कम्मेराकु	नेलताडी	
Tu.		Tambul, Betal		
U.	Bhui amla	Pan.	Musali	
Ur.	भुईंअंओला	नागेवल्ली		

S.	तिनिश	तिन्दुक	तिल	तिलपर्णी
A.		Abnus chindi	Sim, sim	Tamalikah, Abu, Qam
B.	तिनिश	नकुरकन्दी गाब	कालातिल, तिल	हुलहुल
Bi.				
Bu.			Hnan	
C.	बेटहोसे, हुलि, भल्लेहोने	होनिश्चण्ड, कुसुरे, गोविन्दु	एळ्ळु	श्रीफल
Cu				
E.	Chariot tree	Riber ebony	sesame	Caravalla seeds
F			Sesame, Jugeoline	Brede caya
Guj.	तणछ	टिंबरवो	तल	धोळी तलवणी
Ge.			Sesam, ollinge	Kleome senfkapper
H.	सन्दन	गाब, तेंदु	तिल, जिंजली	हुरहुर
I.			Sesamo, Giuggiolena	
L.	Ougeinia dalbergioides (Benth)	Diospyros embroypteris (Pers)	Sesamum indicum L.	Gynandropis pentaphylla (D. C)
M	तिवस	टेंबुरणी	तीळ	पांढरीतिळवण
Ma.	मलवेम, नेमि	पानषि, वनषि	एळ्ळु	वेल
P.		Abnuschindi	Kunjad	
Pu.	सन्दन		कुनजाद, तील, तिली	
Sinh		तिंबिरि	तल	वेला
Sl.			तिल	किन्हरो
T.	नारिवेङ्गै	काट्टत्ति, पानिचै	एळ्ळु	वेलै
Te.	मग्गमोदुकु, नम्मि	एट्टिदुम्मिकि, गाबु	नुव्वु	वेळाकुरा
Tu.			Susam, Sirlagan	Tamalika
U.		Tindu	Til	
Ur.	बान्धोनो	केण्डु		

S.	तुम्बी	तुम्बुरु	तुरुष्क	तुवर
A	Qar tawil, Qar dubba	Fagirch	Basiasayal	Shura Qurram
B.	मिष्टलाऊ	नेपाली धनिया, जीर, गैरा		बानी मीना
Bi				
Bu.	Busiuswai		Nantayok	Lameb, Theme
C	कट्टिरं र	चिम्मि	चिराग	उप्पटि
Cu.				चेगिआन
E.	Bottle gourd		Storax	White mangrove
F.	Bouteille, Calebasse d Europe			Paletuvier
Guj.	कडवी · तुंबडी		शिलारस	तवरीया
Ge.	Echter flaschenkurbis			Saizbaum .
H.	कडुलौकी	तेजफल	शिलारस	वी र
I.	Zucealunga, Za fiasco z bottiglia			Avicenuia
L.	Lagenaria vulgaris (Ser)	Zanthoxylum alatum (Roxb)	Altingia excelsa (Noronha)	Avicennia . officinalis L.
M	कडूभोंपळा	नेपाळीधने	शिलारस	तिवर
Ma.	चेळशोरा		ग	यूरि, यूरप्पम्
P.	Kaddushirin	Kababe, Jahanulsha	Asleluvui	
Pu	तुम्बा	कबाब, तेजबल		
Sinh.	दियालाबु			
Si.	कडु			तिवर
T.	· राक्के		नेरिशुरिशिप्पला	कण्डल, मदप्पट्टै
Te	अलाबुन		शिलारसमु	तेल्लमड, एरिबोगु
Tu.	Sukabagi, Sukabak			Kuram
U	Kadugol	Kababe	Silaras	
U		तुण्डोपोट		

S.	तूद	तृणशून्य	त्रायमाण	त्रिवृत
A.	Tut	Kadi	Zarir	Turbud
B.	तूत	केओरी, केतुकी		दधकल्मी
Bi.				
Bu	Posa	Satthapu		
C.	हिप्पलिनेरिळे, कोरिहण्णु	केतकि, मुण्डगे, केदिगे		आडुतिगडे, बिळेनागदन्ति
Cu.				
E.	Mulberry	Screw pine		Indian Jalap
F.		Baqusis, Vacouet Vaquois		Turbith
Guj.	शेतुर	केवडो		नसोतर
Ge.		Pandanus palme.	त्रायमाण	Turbith
H	तूत	केवडा		निशोथ
I.		Pandano odorasa, pandano cacca		Turbide
L.	Morus indica L	Pandanus odortissimus L	Delphinium zalil (Aitch)	Ipomoea turpethum (Br)
M.	तूत	केवडा	त्रायमाण	तेड, निशोत्तर
Ma.	चेरुकमुक, तूलम्	कैट, पुलिपाम्बु, ताळे		चिवाक, रोचणि
P.	Shihatuta, Tut	Gulkiri, Kadi		
Pu.	करन, तुत			चितबकस
Sihn.		हम्पी		
Si.	तुत			
T.	नादिनी, मुसुकट्टे	काण्डालु, केदिगै, ताळै		पगण्रै, कुम्बम्
Te.	पुतिक	गेदगि, गोज्जगि, मोगलि		एररतेगड, तेल्लतेगड
Tu.			Zerdecop	Tarbit
U	Shahetuta	Keora		Turbud
Ur.	तूतो	कायकोण्टा, केतोकी		दुधोलोमो

S.	त्वक्	दन्तशठ	दन्ती	दर्भ
A.	Darsini, Qirfah	Qalambah	Habbussalati-nebarri	
B.	दालचीनी	वरानेबू, करणानेबू	दन्ती, दाकुम्	दर्भ
Bi.				
Bu.	Hmauthin	Kigisamyasi	Natcho	
C.	दालचिनि, लवङ्गत्वके	बीजपूर	दन्ती	
Cu.			दन्तीमूल	
E.	Cinnamon Tree	Lemon	Wild croton	Sacrificial-grass
F.	Cannellier de ceylan, Cinnamone	Limonier		
Guj.	तज	मोटुं लिम्बु	दन्तीमूल	दर्भ, दाभडो
Ge.	zimtbaum	Citrone		
H.	दालचिनी	जंबीर	दन्ती	दाभ
I.	Cannella, C. del ceylon, Albero della Cinnamo,	Limone		
L.	Cinnamomum zeylanicum (Br)	Citrus limonum (Sp Riss)	Baliospermum montanum (Mudy)	Poa cynosuroides (Retz)
M.	दालचिनी	ईडलिंबु	दान्ती	दर्भ
Ma.	एरिकोलम्, करुन	मातलम्	दंतिका	
P.	Talikhahe	Kalimbak	Bedangirckhatai	
Pu.	दारचीनी	गुलगुल		दाभ
Sinh.	कुरुण्डु	नत्रम्		
Si.		सीडारेन		दाभ
T	पुत्रामुक्तिलाबु, पुत्रमिबाबु	मुरुक्षु	याटमगणु, पेयामणगु	
Te	लवङ्गपट्ट, समलवणुन	बीजपूरम्	कोण्डेगुदगु, नेलजीडि	दर्भ
Tu.	Tar cin ag, kurfa ag			
U.	Darchini			
Ur	दालोचिनि, गुडेलत्वी	बीजपूर	दोन्ति	

S.	दाडिम	दारुहरिद्रा	दुग्धिका	दुःस्पर्शा
A.	Rummau, al Lufan	Aargis		Hhulawa, Shukan
B.	दलिमगाच्छ		दुधाघेरू	दुगलभा
Bi				
Bu.	Salebiu, Talibin			
C.	उाडिम्मे, दालिम्बे	दगिसूत्र, मरदरिशिन	अम्मेगिडा	
Cu.				धामाक, धमासो
E.	Pomegrante	Indian barberry	Australian asthma weed	Cretan prickly clover
F.	Grenadier			Trifle epineux de candie
Guj.	दाडम	दारुहळदर	दूधेली, दूधी	धमासो
Ge.	Echtergranatabaum			
H	अनार, दाडिम	दारुहल्दी	दूधि	धमासा
I.	Pomogranato, pomo punico			Trifoglio spinoso
L.	Punica granatum L.	Berberis aristata, (D. C.)	Euphorbia pilulifera L	Fagonia arabica L
M.	डाळिंब	दारुहळद	मोठीदुधी	धम्मासा, धमासा
Ma.	मातलम्, रक्तबीजम्	मरमञल, मरमञाल	नेलपले	
P.	Anar	Chitra, Zirishk		Badavard
Pu.	अनार	चित्रा, कावमाल्		धमा, समन
Sinh.	देलुन्, देलुगह		बूदहदिरिया, बिरित.लु	
Si.	अनार, दालिम्			धमा
T.	मादळै, ताडिमम्	मुरुपाळ, मूलिपाळ	पच्चयारिसि	
Te.	दाडिम्ब, दाडिमनु		नानबियान	चिट्टिगारा
Tu.	Nar ag.			Dikeuli youca
U.	Anarmitha			Badavard
Ur.	दालिम्बो, दालिमो			

S.	दूर्वा	देवदारु	द्रवन्ती	द्राक्षा
A.	Nigll Nagir, Thil	Abhol hindi, Shag el ginu	Abate khrub	Karm Enab अङ्गुर
B.	दूर्वा, दूब्	देवदारु, देवदार	लालमेरेण्ड	
Bi.	-			
Bu.				Sabisi, Sabyit
C.	गरिकेहुल्लु	भद्रदारु, पीतदारु	तेतलागिडा	अङ्गूर, द्राक्षे
Cu.	उञ्चर			
E.	Scutch grass Hariali couch grass	Deodar		Grape vine
F.	Hurbe du bermudes, Chiendent	Cedre deodar		Vigne, vigne noble
Guj.	धरो, धरो	देवदार	रतनजोत	द्राक्ष
Ge	Echter hundrzahn	Indische ecder		weinrebe
H.	दूब	देवदार	जंगली एरण्डी	अङ्गुर
I.	Dente cauino, Capriola	Cedro deodara		Vite
L.	Cynodon dactylon (pers)	Cedrus deodara (Loud)	Jatropha glandulifera (Roxb)	Vitis vinifera L.
M.	दूर्वा	देवदार	जंगली अरंडी	द्राक्ष
Ma.	कशिहरुका	देवतारम्	[illegible], नाकदन्ति	चारुफल, मधुरसम्
P.		Deodar	Baide angira	Angur
Pu.	दौर्ग, कब्वार	देवदर्, दादा, केली		अङ्गुर, दाख्
Sinh.				मुद्दाप
Si.	छब्बर			द्राक
T.	अरुगम्पिल्लु	देवदारम्, वण्डुगोङ्गि	आदर्क, पुळियमकु	चीमुडै, कोट्टणि, निराडकम्
Te.	घेरिचा	देवदारु	दुण्डिगमु, नेपाळेमु	द्राक्ष, किसुमीसु
Tu	Buyukayrikotu	Cin ag, Deodar		Asma
U.	Dub	Deodara	Jangli erauda	Angur
Ur.			सीमजोरोखोकाको	द्राक्ष्य, गोस्तोनि

S.	धन्वन	धव	धातकी	धान्यक
A.		Kahti	Zahret el baqur	Kuzbarah
B.	धामनी	धाओया	धाई, धोव	धने
Bi.				
Bu.			Patlugyi, Yelkyi	Naunau
C.	चुट्टेळे, तउचळि	चेत्मालु, दिण्ड्ळ	आरे, वला	कोत्तम्बरी
Cu.				
E.		Button tree	Fulsee flower tree	Coriander
F.				Coriander
Guj.	धामन	धावडो	धावडी	कोथमीर
Ge.				Echter Koriander
H.	धामनी	धव	धाऊ	धनिया
I.				Erba Cimiana, coriandro
L.	Grewia tilliœfolia (vahl)	Anogeissus latifolia (wall)	Woodfordia floribanda (salisb)	Coriandrum sativum L.
M.	धामण	धावडा	धायटी	कोथमीर
Ma.	चटचि, उना	मालकाण्णिरम्, वेळुन्नव	तातिरे	कोत्तमल्लरि
P.		Baklu, Banti		Kashmir khuska
Pu.			दहि, खुर्द	
Sinh.	दमिनि	दवु	मलित	कोथमल
Si.			धाई	धनो
T.	चटचि, उण्णु	नामे, वेक्नागे, वेक्कलि	वेळक्के	कोत्तमल्लि
Te.	एरुतड, तुलिसान	चिरिमानु, सिरिमानु	धातकी, गोडारि	कोत्तिमिरि, धान्यलु
Tu.			Vudfordia Inekcic	Kişnis otu
U.		Bakla, Banti		Dhania
Ur.	धामोनो	धौंड	धातुमी, धातुकी	

S.	धामार्गव	नन्दीतक	नल	नलिका
A.	Luf			Udhun el hhimar, unuma
B.	धुन्दुल, हस्तिघाप	कामरुप, जीर	नल	
Bi.				
Bu.	Thabwot	Nyaungok	Kaing	
C.		हिह्राल, पिळाल	हुळिगिलु, हुळुगलगु	
Cu.				
E.	Towel gourd,		Nodding reed	Hairy okosma.
F.	Eponge vegetale		Cannette	onosme
Guj.	गलका	नन्दीवृक्ष	नाली	
Ge.	Agyptische schwammkurbis			Sandlotwurz
H.	घिया तुरई	गिर ,पिलखन, कमरुप	नरकुल	रतनजोत
I.	Petuolo, Spugna vegetale			Borrana salvatica onosma
L.	Luffa aegyptiaca (mill)	Ficus retusa L	Phragmites karka (Trin)	Onosma echioides L.
M.	घोसाळे	नान्दुक	नळ	रतनजोत
Ma.		इट्टियाल्	नळम् , नावल्	
P.	Khujar			
Pu	घितुराय		नल	लालजडी
Sinh.	नेयाडनत्तकोलु	पनुनुग		
Si.	तुरि			
T.	पिकु	इच्चि. मलैयिचि	पेरुनाणाळ	
Te	गड्डिबिरा	कोण्डपिल्लर, वेररिजुव्वि	विकपगाड्डि, पेरेन्डु	
Tu	Misir kol kabagi Luf			Sincar, Yalan bavaciva otu
U	Turi			
Ur			नोलो	

S.	नवमालिका	नाकुली	नागगला	नागरङ्ग
A.	Full	Zaravande hindi		Burtuqal, Burtuqan
B.	वनमल्लिक, बेल.	इसरमूल	गोरखचाकुले	कामलानेबु, नारंगी
Bi.				
Bu.	Mali, sabay			Liengman
C.	चण्डुमल्लिगे, मल्लि	ईश्वरीबल्लि		कित्तळे, नादेई
Cu.		अर्कमूल		
E.	Tuscan jasmine	Indian birth wort		Orange
F.	Jasmin d' Arabie	Aterlusi		Oranger, Oranger franc
Guj.	मोगरो	नोळवेल, अर्कमूल	गंगेटी	नारंगी
Ge	Sambac jasmin Arabischer jasmin			Orangenbaum
H.	बेल, मुग्रा	ईशरमूल	गंगेरन	नारंगी
I.	Mugarino doppio Gelsomino a fiori grandi.			Melarancio arancio dolce cetrangolo, Portogallo
L.	Jasminum sambac (Ait)	Aristolochia indica L.	Grewia populifolia (vahl)	Citrus aurantium L.
M.	मोग्रा	सापसन्द	गांगेटी	संत्रे
Ma.	पिचकम, चेरुपिचकम्	गरलवेगम, पेरुमरुन्न	वलिय उरकं	मधुरनारण्ण
P.	Gulesuped, Zambak	Zaravande hindi		Narang narerdj
Pu.	मुग्रा, चंबेली			नारंगी, सनतरा
Sinh.	पिच्छिमल			दोडन, दोदंग
Si.				
T.	कोगुडम्, मल्लिगै	इचडेचट्टि, ईचुर		नारंगम
Te.	बोड्डुमल्लि, मल्लै.	ईश्वरवेरु	कट्टेकोट्टु, कट्टदरि	नारिंज
Tu.	Full, Misir Yasemini			Portokal ag Portukal ag
U.	Azad, Raibel	Shapesand		Narangi
Ur.	बेलोफुलो, मोल्लिका	गोपोशेरोणि		नागेङ्गो

S.	नाडी	नालिकेर	निकोचक	निचुल
A.		Gawzel hind, Nargil	Fustuq	
B.	कलमी शाक	दाव, नारिकेल	पेस्तेल	हीजल, कुमींआ
Bi.				
Bu.		On, Ondi, Oug, Onti		Kyaitha
C.		तेंगु तेंगिनकाई		नीरुगणिगुलु, होलेकव्व
Cu.				
E.		Cocoa-nut	Pistachio tree	
F.		Cocotier	Pistachier d levant	
Guj.	नाडानी भाजी	नालियेर	पिस्ता	समुद्रफल
Ge.		Indian ischer nusbaum, kokos-palme	Echte pistazie, Pistazienbaum	
H.	करमी साग	नारियल	पिस्ता	हिजल
I.		Albero del cocco, Cocco palm di latte	Pistacchio comune, Pistacchio	
L.	Ipomoea aquatica (Forsk)	Cocos nucifera L.	Pistacia vera L.	Barring tonia-acutangula (Geertn)
M.	नाळ	माड	पिस्ते	सधूफल, समुद्रफल
Ma.		चौन्चम , कुळिट्टै, तेङ्ङ,		आरटपेर, निरप्पेर
P.		Badinj, Nargil		
Pu.	नाळी			
Sinh.	कांगकुन	पोल नाखिवली		इङ्गपीडेल्ला
Si.	नारो			
T.	कोइलङ्गु, वारकोवली	नाडिगडम् , तेंनै		मारम , कणाडि
Te.	तुतिकुरा	टेङ्काय, नारिकेडमु		कडपु, कणिपि
Tu.		Narcil ag, Hindustan cevizi ag	Sam fistik ag	
U.	Narikakal	Narivel		Samandarphala
Ur.		नोडि. नाडोलि		हिंजोलो, निझिरा

S.	निम्ब	निर्गुण्डी	निष्पाव	नीलिका
A	Shagarah, Hho-rrah, Zauzalakht, Azadirakht	Aslag	Lablab	Nil, Nilang
B.	निम्ब	निर्गुण्डी	बोरबोटी	नील
Bi.				
Bu.	Kamaka, Tamaka	Kiyubaubin	Pai	Mainai
C.	वेबु, वेमु	लक्कि, विळिनेक्कि	अवरे	नीली, अजुर, ईण्णुनीलि
Cu.				
E.	Neem, Margosa		Hyacinth bean	Indigo
F.	Azedarach, Lilas des indes		Dolic lablab	Indigotier, Anil
Guj.	लिंबडो	नगोड	वाल	गळी, नील
Ge.	Indian iseher lilak, Margosa, Zederach		Gemeine lablab	Indigopflanze, Anilpflanze
H.	नीम	निर्गुंडी, संभालु	लोबिया	नील
I	Albero dei paternostri, Azadarac, Lauro greco		Dolico Egiziano, Fagiolo d' Egitto	Indaco franco, Endaco,
L.	Melia azadirachta L.	Vitex negundo L.	Dolichos lablab L.	Indigofera tinctoria L.
M.	लिंब	निर्गुडी	वाल	नीळ
Ma.	राजवेप्पु, निम्बम	नोच्चि, इंद्राणी	वेळ्ळवर	अमरि, नीलम, राजनि
P.	Nub-Nib	Banjangangasht	Lobiya	Nil, Nilah
Pu.	नीम	विंसा, वेनफाड्ड	कालालोबिया	नील
Sinh.	कोहुम्ब	निक्का. निलनिक्का	इरिबिज	नीलवारी
Si.	निमुरी	निलनीका	वल	नीली
T.	कडुप्पागै, मालूगम्	वेळ्ळैनिक्की, चिन्दुवारम्	अवरै	अचिडै, करुंदोळै
Te.	वेमु, निम्बमु	सिंधुवारमु, वाविलि	अलसन्दा	अवरि, श्याम, नीली
Tu.	Tesbih ag, Zehri zemin		Lablab	Civid fidam, Civid otu
U.	Neem			Nila
Ur..	लिम्बो, निमो	सिंधुवार, इंद्राणी,		नीली, नीळो

S.	नीवार	पटोल	पत्तूर	पत्र
A.			Baratanaki	Dadarasani
B.	धुरीधन	पोटोल	श्वेतमुर्गा	
Bi.				
Bu.				Lenkyan
C.	ज्यारहुमेढे	पडवळ	गोरगि	दालचिनी
Cu.				
E.		Wild snake gourd		Cinnamon
F.		Trischosanthes contourne		
Guj.	वंटी, नमारचोरवा	पटोल	लांपडी	
Ge.		Schlangen fruchliga haarblume		zimmt
H.	तीनी, तीली	परवर	सफेदमुर्गा, सुर्वाली	दारचिनी
I.				
L.	Hygrory za aristata (ness)	Trichosanthes diocea Roxb	Celosia argentea L.	Cinnamomum iners (reinew)
M.	देवभात	परवर	कुरडु	रानदालचिनी
Ma.	नीरवल्लिपुलु	पटोलम्		कारकरवा
P.		Palol		Sailu myah
Pu.	वस्ताल	पालवल	सल्गार	सल्गार
Sinh.	गोजाम्बा			कुरुण्डो
Si.			सर्वेलि	
T.		कंवुप्पुदलै		कट्ठकरुवप्पट्टै
Te.		काम्बुपोटका	गुरुगु	पाचकु
Tu.				
U.		Parawal	Sarwali	
Ur.		पाटल		

S.	पद्मक	पनस	पयस्या	परूषक
A.				Phalasah
B.		कनथल, काथल	बिलायकन्द	फालसा, शुकरी
Bi.				
Bu	Panni	Peingnai, Pienne		pintayaw
C.		हलसु, तागे, पनस,	भूमिचक्रगेड्डे, नेलगुम्बळ	बुड्डियूडिप्पे, तडचलि
Cu.				फोटीयाल, फ़ालसा
E.	Himalayan cherry	Jack tree	Giant potato	Asiatic grewia
F.		Jaq		
Guj.	पद्मक	फणस,	विदारीकन्द	फालसा
Ge.		Indeschir brotbaum		
H.	पद्म	चक्कि	बिलाईकन्द	फालसा
I.				
L.	Prunus puddum (Roxb)	Artocarpus integrifolia L.	Ipomoea Digitata L	Grewia asiatica L
M.	पद्मकाष्ट	फणस	भूईकोहळा	फालसा
Ma.		कोट्टचक्क, वरिक्क	मुतालक्कण्ट, पाल्मुटक्कु	प्पाढीच्चा
P.				Falseh, Palasah
Pu.	पद्म			फालसा
Sinh.		कोस	किरिबादु	दोवनीय
Si.				फालसा
T.		मुरसपलम्, वासुक्कै	निलप्पूचणि, पालमुडक्कि	पलिच, उन्नु
Te.		पनस, वेरुपनस	भूचक्रगड्ड, गुम्मुडु	नल्लजान, जान
Tu.				
U.		Katahal	Balai kand	Phalasah
Ur.		कोण्ट्रोकाळो, पोनोसो	[illegible]कोकारु	फारोसाकोळि

S.	पर्पटक	पर्पटकीफल	पलाण्डु	पलाश
A.			Bassal	Batiyah
B.		बाटेनपारीया, तेकारी	पलाण्डु, पियाज	पालाश, पोलाशी
Bi.				फारस, पारस
Bu.			Kesunni	Pauk, Piu, Pouk
C.		गोंडुळ	नीरुळी	मुत्तुग, मुत्ताल
Cu.			कान्दा	पेतुडे, जोझाड
E.		Winter cherry	Onion	Bastard teak
F.			Ognon, Oignon	Butee, Arbrea lagre
Guj.	खडसलियो	परपोटी	डुंगळी	खाखरो
Ge.			Zwiebel	Kinobaum, Lackbaum`
H.	खरमोर	चिरपोटी	प्याज	ढाक
I.			Cipolla	Butea
L.	Rangía repens (Nees)	Physalis minima L.	Allium cepa L.	Batea frondosa (Roxb.)
M.	धाटी पित्तपापडा	चिरबोटी	कान्दा	पळस
Ma.		निद्दांपिडुय	वाग्रंग	शामट, किंशुकम्
P.			Piyas	Darakhtepalah
Pu.		हब्बीकाकनाज	प्याज	
Sinh.	सडुनाई	मोट्टु	लुनु	कालिय
Si.			डुंगरी	
T.	कोडागसलै		इरुळी	मुरुक्कु, किंगम्
Te.		कुपन्टी	नीरुळी	मोदुग, पलाशमु
Tu.			Sogan	Salan Sacag
U.			Piyaz	Palash
Ur.				किञ्जुको, पोलाशो

S.	पाटला	पाठा	पारावत	पालङ्क्या
A.			Guwafah, Safra	Isfanakh, Isbanekh
B.	धारमार, पारुली		गौअछी, पियार	पालंग
Bi.				
Bu.	Thakhwo-tthpo		Malaka	
C.	हादरि, पादरि, कलदुंर	पाडावरी	पेरल, गोव, जामफल	बसरे
Cn.				
E.	Trumpet flower		Guava	Garden spinach
F.			Goyavier, Gouyavier	Epinard
Guj.	पाडला	काळीपाट	जमरुख, पेरु	पालख
Ge.			Grosse gelbe guayava	Echter spinat, Garten spinat
H.	पाडल		अमरुद	पालक
I.			Gaajave, Psidio, Pero dell indie	Spinace Spinacci
L.	Stereospermum chelonoides D. C.	Cyelea peltata H. K.	Psidium guyava L.	Spinacia oleracea L.
M.	पाडळ	पारावळ	पेरू	पालक
Ma.	काचस्थलि, पातिरि	पाटक्किलु	मलाक्कापेर, कोय्या	
P.			Amreed	Isfinaj, Ispanak
Pu.			आमरुद	बीजपालक, पालक
Sinh.	लुनुमाडाल		पेरा	
Si.			जैतून	पालक
T.	कणविरक्कम्, पाडलम्		वेलैक्कोग, उम्यकोण्डन	बसैयीलैकिरै
Te.	कलिगोट्टु, ममवेप	वीसवोधी, पाडा	तेल्लजाम, गोय्य	दुम्पावच्चालि
Tu.			Hind armudu ag sari guafa	Ispenak, Ispannak
U.			Amreed	Palak
Ur.	पाटोलि	ओकानोविम्बि	बेडोजामो, जामो	

S.	पाषाणभेद	पिण्डालु	पिप्पली	पीलु
A.	Burbit, Siyaf		Erq edh dhahab Dar fulful	Arak, Shagar es suwak
B.		चुवड़ि आलु	पिपलामूल, पिपली	छोटापीलु, जाल, पीलु
Bi.				
Bu			Peikchin	
C.	हिङ्गुरक		हिप्पली, तिप्पली	गोंणि
Cu.				
E.	Indian rock foil	Yam	Long pepper	Tooth brush tree
F.	Flambedeau		Poivrier long	Arac; Mesuak
Guj.	पाषाणभेद		पीपर	खारिजाल
Ge.	Wasserschwertelilie		Langer pfeffer	Senfkorn
H.	पाखानभेद	शकरकन्द	पीपल	जाल
I	Acorofalso, Gladi- ologiallo		Albero del pepe, Pepe longo	
L.	Saxifraga Lingulata wall	Dioscorea globosa R	Piper longum. L	Salvadora persica L.
M.	पाषाणभेद	गोराडु	पिंपळी	पिलु
Ma.			चपला, कट्टुतिप्पलि	
P.			Pilpil, Pipal	Misvak
Pu.			पिप्लामूल, पिप्पल	छोटावान्, कौरीजाल, पी
Sinh.			टिप्पिली	
Si.			टिप्पिली	पीलु
T.		कायवल्लि	सांचलै, आरगडि	कारगोळ, पेरुंगोलि
Te.		गूनपेण्डलमु	पिप्पळु, मोडि	गोनिया, कारगोगु
Tu.	Sari Susan Kilic otu		Bafer ag, Dar fulful	Arak
U.			Pipul	Pilu
Ur.		ओड़आलु	भाईहेहि, क्रिकेला, मोगध, पिप्पोली	कोठुंगो, टोवेटो

S.	पुनर्नवा	पुष्कर	पूग	पृथ्वीका
A.	Sabaka	Zanbaq azraq	Fufal Tanbul, kawthal	Halzakar
B.	पुनर्नवा, श्वेतपुनर्नवा	पुष्करमूल	सुपारि	बरा-इलाची
Bi.				
Bu.			kun, kunsi	Ben, Pala
C.	कोम्मेगिड		अडिके, बेट्टे	दोड्डएलक्कि
Cu.	पुनर्नवा			
E.	Pigweed	Orris root	Supari palm	Greater cardamom
F.	Patagon	Lis sauvage, Flambe	Noisetted'inde, Aerc	
Guj.	साटोडी	पोकरमूल	सोपारी	मोटी एलची
Ge		Blaaweiris, Deutsche lisch	Pinang palme Areka palme	
H.	साट, ठिकि	पोहुकरमूल	सुपारी	बड़ी इलाची
I.		Azurro, Iride salvatica	Palmaarec, Arce	
L.	Boerhaavia repens L.	Iris germanica L.	Areca catechu L.	Amomum subulatum (Roxb)
M.	पुनर्नवा	बाळवेखण्ड	सुपारी	मोठेवेलदोडे
Ma.	भासुथमा		अटेका, चेम्पलुक्का, कामुक	चन्द्रवाल, पेरेलम्
P.	Devasapat	Susari	Girdchob, Popal, Pupal	Hailkallan
Pu.				
Sinh.	जनतोपस्		पुवाक्	
Si.	नकवेल	पोहकरमूल		
T.	शुकरेट्ट		कमुगु, पक्कुप्पाकै	अरुगचनि, चिन्दिरिगै
Te.	पुनर्नवा		गौटुपोक, ओप्पुवकुल	पेद्दएलक्कि
Tu.		Mavi zambak Mavi susau	Fufal ag, Arek hurma ag	
U.	Bashkhira		Supari	Ilayachikallan
Ur.			पूगो, सुपारि, त्रिनोडुमो	स्थूलैला

S.	पृश्निपर्णी	प्रसारणी	प्राचीनामलक	प्रियङ्गु
A.		Bazraulkaras	Nabq hindi	
B.	चंकरवटा	गन्धा, भाधुली	पानीयाला	प्रियङ्गु
Bi.				
Bu.			Naywed, Naywe	
C.	ओन्देलेहोने	हेसरिणे, कळञ्चोरि	किरिनेल्लि, गोरजि	तोट्टिलकार्यी
Cu.				
E.				
F.			Prunior malgache	
Guj.	पिठवण	प्रसारणवेल		
Ge.			Flalourtie	
H.	पिटवन	गन्धालि	पनियाला	प्रियङ्गु
I.			Pruno d' India	
L.	Uraria picta (Desv.)	Paederia foetida L	Flacourtia cataphracta Roxb	Aglaia Roxburg hiana (miq)
M.	पिठवण	प्रसारणी	ताम्बट, पान आवळा	गवला
Ma.	ओरिला	तालानिली	कन्नि वायुकट्टन्	चेम्पुळि, पुण्याव
P.			Talispatar	
Pu.	डेटरदाने			
Sinh.			रतंगवरसा	
Si.				
T	चित्तारण्पालडै		सरळु	कण्णिक्कोम्बु
Te.		साविग्ला	कूरगार्ची	एररन्दुग
Tu.			Acab ag	
U.		Gandhana	Tulispatar	
Ur.	ईश्वोरोजोटा	गन्धाली	पानियोण्ल	प्रियोङ्गो

S.	प्रियाल	प्लक्ष	फञ्जी	फल्गु
A.	Habulsamnah			Tin
B.	प्रियाल			अञ्जीर, डुमुर
Bl.				
Bu.	Lambo, Lamboben			Tiethie
C.	केलेगेरु, मुरुके	पिळिवसरि, देट्टवसरि		अञ्जूर
Cu.	चारोळी		फंगवळ	
E.			Goodnight flower creeper	Fig tree
F.				Figuier Carique
Guj.	चरोळी	पीपर	फगियो, फांग	अंजीर
Ge.				Echter feigen-baum
H.	चार	पीपर	फांग, कलमीलता	अंजीर
I.				Ficaja, Fico
L.	Buchannania latifolia (Roxb)	Ficus tsiela (Roxb)	Rivea ornata (chois)	Ficus carica L.
M.	चारोळी	पिपर	फांद	अंजीर
Ma.	काकमावु	पेल		शीमयत्ति
P.	Nakulekwajah			Anjir
Pu.	चिरोंली, चिरौंजी			फेगरी, फाग
Sinh.		एलानुग		
Si.				अंजीर
T.	चारै	इच्चिचि	मुसुट्टै	चीमैयाहि
Te.	चाडमामिडि	पेद्दजुव्वि	बोद्दितीगे	अंजूरु, मजिमेदि
Tu.				Incir ag
U.	Chironji			Anjer
Ur.	चारो, प्रियालो	जोरि	ओन्द्रोनोइ	पुष्पेशुन्यो

S.	फेनिला	वकुल	बदरी	बला
A.	Ritah	Qishdah hindi	Unnab	
B.	बारारीठा	बकुल	बोगरी	बला
Bi.				
Bu.	Meavmesne-khati	Kaya, Khaya	Zi, Ziben	
Cu.	अंटवाट	पगडे	बेरो	हेतुल्लि
Cu.		मुरसल	बोर	बलवुवरो
E.	Soap nut	Indian medlar	Jujube	
F.	Savonnier, Rita	Cavequi, Clengi	Jujubier, Giugeolier	
Guj.	अरीठा	बोलसरी	बोर	खरेटी, बलदाणा
Ge.	Seifenbaum	Elengibaum	Jugabebaum	
H	रिठा	मुलसरी	बेर	कंघी, बरीला, बलदानों
I.	Sapotiglia	Elengi	Giuggiolo, Melo d india	
L.	Sapindus trifoliatus L	Mimusops elengi L.	Zizyphus jujuba (Lamk)	Sida cordifolia L.
M.	रीठा	बकुळ	बोर	चिकणा
Ma.	पवक्काय, पुळिचि	इरञ्ञि	बदरम, बोलम्	काट्टरम्
P.	Bindake hindi		Kanar, Kunar	
Pu.		मौलसरी	बेर, बरो	सारेन्ट
Sinh.	ताळै मरठा	मुनेमल	महादेवरा	हिनदोना
Si.			बेरजंगरी	बरियारा
T.	पूवुचिक्कोट्टै, पुणलै	?	अडिरारम्, चिवगम्	नीलतुत्ती
Te.	फेनिलमु	साविंग्ला	गंगरेणु	चिरुवेंडा
Tu.	Sabon ag	Kokı	Unnab ag	
U.	Ritha	Molsari	Ber	
Ur.	मुगोजि	खीरि, बोकुलो	बोडोकोळि, बोडोरी	बिश्वोकोपारि

S.	बिभीतक	बिम्बी	बिल्व	बीजक
A.	Balilag, Balilah	Kabar hindi	Bull, Qiththa el hind	Damulakhvain
B.	बहेरा	बीम्बु	बेल; बिल्व	पीतसाल
Bi.				
Bu.	Baukha	Kenbung	Okshit, oreshit	
C.	तारे	तोंडेय'ह्र	बिल्वपत्रे, मालूर	नेत्तहोन्ने
Cu.	बेहरा	घीलेडो	बीलीजो झाड	बीआ
E.	Beleric myrobalan	Scarlet fruited gourd	Bael tree	Indian kino tree
F.	Beleric myrobalan	Coccinie	Bel indien,	Kinodesindes
Guj.	बेहडां	टिंडोरां	बिली	बियो
Ge.	Myrobalanenbaum	Scharlachranke,	Bhelbaum	
H.	बहेडा	कंदुरी	बेल, सिरफल	बीया, विजयसार
I.	Mirobalano	Coccolaba Uvifera	Bella indiana	
L.	Terminalia belerica Roxb	Cephalandra Indica (naud)	Aegle marmelos (Correa)	Pterocarpus marsupium (Roxb)
M.	बेहडा	तोंडले	बेल	बिवला
Ma.	तान्नि, तुपम्	कोव	कूवळम्, माविलावु	कण्टिकर, वग
P.	Balela, Balilah,	Kabaret hindi	Safarjalehindi	Khunesiah-washam
Pu.	बहेरा, बहीरा	घोल कन्दुरी	बील	
Sinh.	बुलु	कोवाक	बेली	गम्मलु
Si	बेरा	कंदुरी	बील	
T.	अक्कन, अम्बरुट्टि	कोवै	अलुवीगम्, माविलङ्गै	कुरिंजु, तम्पगम
Te	ताडि, तान्द्र	बिम्बिका	बिल्वमु, मालूरमु	पेद्दगि, वेगिस
Tu.	Balilac	Kirmizi hind keberi	Hind ayva ag	
U.	Behera	Kundaru	Bel	Damulakhvain
Ur.	बहडा		बेल, भीलवो	पियाशाक

S.	बीजपूरक	बृहती	ब्राह्मी	भद्रमुस्ता
A.	Tuffahh mahi			Suad
B.	बरानीम्बु, बिजौरा	ब्याकुर, गुरकामाई	ब्रह्मी	मोथा, भद्रमुथा
Bi.				
Bu.	Shaukta kera			
C.	महाफल, रुचक	केम्पुगुळ्ळु, हेब्बगुळ्ळु	नीरब्राम्ही	तुंगेगड्डे
Cu.	बिजोरा	वाड्रीगणी	नेवरी	भद्रमोथ
E.	Adam's apple	Indian night-shade	Thyme leaved gratiola	Indian cyperus
F.	Cedratier, Cedrat			
Guj.	बिजोरु	म्होटीरिंगणी	ब्राह्मी	भद्रमोथ, नागरमोथ
Ge.	Echte zitrone			
H.	बिजौरा	बरहण्टा, भटकटैया	ब्राह्मी	नागरमोथा
I.	Cedro			
L.	Citrus medica L.	Solanum indicum L.	Herpestis monniera (Benth)	Cyperus Tuberosus (Roth)
M.	महाळुंग	डोरले	ब्राह्मी	मोथा, भद्रमोथें
Ma.	गोंलंगम, मातल	चेरुचुण्ट, निलवलुतिन	ब्राह्मी, नीरब्राह्मी	करिमुत्तन
P.	Ruranj	Badengawe-jangali		
Pu	बिजौरी, बिम्बु	कंडयारि		
Sinh.	सिट्रन्	तिब्बट्ट	लुनुविला	कालंदुरु
Si.				
T.	चीड्रै, कोम्मट्टिमाडलै	चिरुवळुदलै, कण्डाल्	ब्रामी	कोरा
Te	लुङ्गमु	चट्टमुलुग	सांबाणि, चेट्टु	तुंगमुस्ते
Tu.	Agackavunu ag			
U.		Jangli bingan		
Ur.		ब्रिहोति, बोनो ब्रिहोति		

S.	भल्लातक	भव्य	भरद्वाजी	भार्गी
A.	Baladur		Abruma aghusta	
B.	भिला	चालता	उलटकंबल, ओलटकंबोल	बामनहाटी
Bi.				
Bu.	Chyaibeng, Khisi	Thibuta		Baikyo, Bebya
C.	गेरु, केरबीज	बेट्टकणिगले	मेलुपुणीगिडा	गण्टुभारंगि, थिरितेगिः
Cu.	भिलामा	करमल	उलटकमल	भार्गीआरणी
E.	Marking nut		Devil's colton	
F.	Noix de marais	Selit, Dillenia elegante.	Abrome	
Guj.	भिलामु	करम्बल		भारंगी
Ge.	Tintinbaum	Rosenapfel	Abrome	
H.	भिलावा	चालता	उलटकम्बल, कुमल	भारंगी
I.	Semecarpo d'oriente	Dillenia	Abroma	
L.	Semecarpus anacardium L.	Dillenia indica L	Abroma augusta L.	Clerodendron serratum (sprong)
M	बिब्बा	मोठे करमळ	ओलक्तंमोल	भारंग
Ma.	चेर्कुर, चेरकोट्ट	चलिंट, वाळप्पुन्न		चेरुटेक्कु
P.	Biladur			
Pu	भिलावा, भेला			
Sinh.	किरिबदुल	बोपारा		केनहोण्डा
Si.				
T.	शेंगोट्टै, कालगम्	उवाट्टेकु, उगफाय	सिवप्पुत्तुत्ति	अडारवल्ली, चाद्मडक्कि
Te	नलजीडि, तुम्मदममिडि	पेद्दलिंग, वलिंग		गंटुभारगि, पांज
Tu.	Baladur ag	Dillenia	Abroma	
U	Bhilanvana			Bharanji
Ur	भोलातोली, भोलिआ	चालोटा	पिशाचो गोर्डो	चिण्ड, पनजर

S	भूर्ज	भृङ्गराज	मकुष्ठ	मञ्जिष्ठा
A.		Suweyd		Fovvah
B	भूर्जिपत्र	केशुटी, केशुरिया	वनमुद्गेरी	मंजिष्ठा, मजिठ
Bi.				
Bu.				
C.		गङ्गा	मडकी	मञ्जिष्ठ
Cu.	भोजपत्र		मठ	मञ्जिष्ठ
E.		Trailing Eclipta	Tapery beans, moth bean	Indian madler
F.		Eclipte droite		
Guj	भोजपत्र	भांगरो	मठ	मजीठ
Ge.		Aufrechte mehlblume		Farberwazel
H.	भूर्जपत्र	भङरा	मोठ	मञ्जिष्ठ, मजीठ
I		Eclipta		
L.	Betulu Bhoj-patra (wall)	Ecrlipta alba (Han)	Phaseolus aconitifolius (Jach)	Rubia cordifolia L.
M.	भोजपत्र	माका	मठ	मञ्जिष्ठ
Ma.				मञ्जेट्टी
P.			Adas, Mashe hindi	Runas
Pu.	भुज		मोठ	खुरि, मजिठ
Sinh.		किकिरिन्दि		मञ्जिष्ठा
Si		टिक	मोहर	
T.		कैकेशी	तुळकपिरै	माञ्जिट्टी
Te.	भूर्जपत्री	गलगर	वनमुद्ग, मिनुमुलु	ताम्रवल्ली
Tu.		Kiazib paskalya-clc		
U.	Bhurj a pattra	Bhangra		Majitha
Ur.		· Ja., [illegible]		मञ्जिष्ठ

S.	मण्डूकपर्णी	मत्स्याक्षक	मदन	मदयन्तिका
A.	Zharniba	Kawar el abid Luqmat el ehamal	Qurs el ghurab	Hhenna, cal qatab
B	थोलकुरी		मदन, मैनफल	मेन्दी, मेहेदी
Bi.				
Bu.	Min Kuabin		Hsay thanpaya	Dan
C.	ओन्देलग	होनगोने	मंगरे, अरेमायळ	गोरण्टि
Cu.	ब्राह्मी	जरभाजी	मींढळ	मेंदी
E.	Indian pennywort		Emetic nut	Camphire
F	Bevilaque	Herb'd emballage	Randie, Jasmin fleuri	Henne, Henneh
Guj.	खडब्राह्मी	पाणीनी भाजी	मींढळ	मेंदी
Ge.	Wassernabel	Garnelenkraut	Randie	Agyptischer hennastrauch
H.	ब्रह्मामण्डूकी	मत्स्येछी	मैनफल	मेहन्दी
I.			Randia	Alcanne, Cnue, Cipro
L..	Hydrocotyle asiatica L.	Alternanthera sessilis R. Br.	Randia dumetorum Lam.	Lawsonia alba Lam.
M.	ब्राह्मी	कांचरी	गेळफल	मेंदी
Ma.	कोडागम्		करलिक्काय, कार	मयिलांजी
P.	Sardetur-kastan		Juzulkuch	Hina
Pu.			मिंडल, मिंधल	मेहन्दी
Sinh	हिंगोटुकोला	मोकुनुवणा	कुकुरमन	मरीतोन्दो
Si.			जुजुलमेन्डल	मेन्दी
T.	वल्लरी, वल्लरा		मौर, कडुदम्	मरुदोन्दी
Te.	बोक्कुडु		मांगार, मदनमु	गोरंटा, मेदा
Tu.		Gazel lokmasi	Randia	Kenaag, Hina.
U.	Barhmi		Mainphal	Mehendi
Ur.			पोडुआ	मेहेन्दी

S.	मधूक	मरिच	मरुवक	मसूर
A.		Fulful aswad	Mardaqush	Adas
B.	महुआ	गोल मोरिच	मुरु	बुरोमुसुर
Bl.				
Bu.	Kansan	Nayukon		
C.	दोट्टिप्पे, हिप्पे	मेणसु, मेणसिन काळु		मस्सूर
Cu.	महुडा	मिरी	मुर्वो	मसूर
E.	Mahua tree	Black pepper	Sweet margoram	Lentil
F.		Poivrier Noir	Marjolaine a coquille	Lintille
Guj.	महुडो	काळां मरी	मरवो	मसूर
Ge.		Gemeiner pfeffer pepenero, Pevere	Echter marjoran	Echte linse
H.	महुवा	काली मिर्च	मरवा	मसूर
I.			Majorana	Lenticchia
L.	Bassia latifolia (Roxb)	Piper nigrum L.	Origanum majorana L.	Lens esculenta (moench)
M.	मोहडा	मिरी	मरवा	मसूर
Ma.	इरिप्प, पुवुन	वेळ्ळजम, ोळकम्		
P.	Gulechakan	Pilpel		Adas
Pu.		गोलमिरिचपन		मसूर, मौरी, मोही
Sinh		मिरिस्		
Si.		गुरुमिरी	मुर्वो	
T.	कट्टिउप्पे, मदुगम्	उनिरम, ळिदम्	मरु	मिसूरपुरुपु
Te	उडविप्पिप्प	मिरियाउ	मरुवमु	मिसूरपप्पु
Tu		Sinh ber	Mercankosk	Mercimer
U.	Mahuva	Ka triach	Marvakhusha	Masur
Ur	मोहुल, मोहुक	म चा		

S.	महाश्रावणी	मांसी	मातुलुङ्ग	मारिष
A.	Hhabaqbaq	Sunbul hindi	Laymun hindi	Bustau abuiz
B.	गोरक्षमुन्डी	जटामांसी	महानिम्बु	बनस्पतनाटिआ
Bi.				
Bu.			Shanktones	
C.	करण्ड	जटामांसी	चकोत	हरिवेसोप्पु
Cu.	मुण्डेरी, गोरखवल	वालछड	चकोत्रा	भाजी
E.	Indiau globe thistle	Spikenard		Love-lies-bleeding
F.	Boulette	Nard indien	Pamplemousse	Amaraute tricolore
Guj.	मुण्डी	जटामांसी	चकोत्रुं	अढबाउ डांभो
Ge.	Duftende, Ballablume	Indische narde	Pompelmusorange	Fuchsschwanz
H.	गोरखमुण्डी	जटामांसी	सदाफल, चकोत्र	मर्षा, मरखा
I.	Sfaeranto	Spignardi	Pompelmusa	Amaranto a trecolori
L.	Sphaeranthus indicus L.	Nardostachys Jatamansi (D. C.)	Citrus decumana (Murr)	Amaranthus gangeticus L.
M.	मुण्डी	जटामांसी	पपनस	माठ
Ma.	मिरंगणी	जटामांसी	पंपरमासम्	
P.	Kamaduriyus	Sunbucuttib	Chakutrah	Kishtah
Pu.	मुण्डी, गुरकमुण्डी		चकोत्रा	
Sinh.		जटामांसी	जम्बुल, महमारम	सुदुतम्पाला
Si.		जटामांसी		
T.	कोट्टकरण्डै	जटामांसी	पाम्बळिमासु	
Te.	बोडासोरमु	जटामांसी	पाम्पलमासम	तोटकूर
Tu.		Sunbuli hindi	Hind limon ag	Sultan borgi
U.	Kamdaryus	Balachada	Chakutrah	Lalsatg
Ur.			पम्पोळोमाशो	

S.	मालती	माष	माषपर्णी	मुकूलक
A.		Mash		Habulsavera kabar
B	मालती	माष	मापनी	
Bi.				
Bu.				
C.	मालतिलता	उद्दु	काडुद्दु	चिलगोझा
Cu.	मालती	उडद	घींगणीयार	चिलगोझा
E.		Black gram		
F.		Haricot mungo		
Guj.	मालती	अडद	वालियो वेलो	चिलगोझा
Ge.		Mungobohne.		
H.	मालती	उडद, उरद, उडिद	माषपर्णी	.गुनोवेर
I.		Fagiolo a zigzag		
L.	Aganosma caryophyllata G. Don	Phaseolus mungo L.	Teramnus labialis (sprang)	Pinus gerardiana (wall)
M.	मालती	उडीद	रान उडीद	चिलगोझे
Ma.	कयेर्ट्टवळ्ळी	चेरुपोयारा		
P.		Benumash		Chilgozah, sus
Pu.		माष		गालवोजा
Sluh.		उलुन्दुमाई		
Si.		माह, उरद		
T.		पोनिप्पयारे	काट्टुअलंदु	
Te.	मालतीपालमल्ले	मिनुमुलु		
Tu.		Angola fasulyasi		
U.		Mash		Chilgozah
Ur.	मालोति			

S.	मुद्ग	मुद्गपर्णी	मुञ्जातक	मुष्कक
A.	Mashedamy		Khusy-uth-thalab	
B.	मुग	मुगनी	सालिवृमिश्री	घण्टापारुल
Bi.				
Bu.	Pai, Painouk			Thits-welwe
C.	हेसरु, वडु	काडुहेसरु		बुला, गण्ट, मरगण्टे
Cu.	मग	मगी	सालम	मकही
E.	Mung	Three lobed kidney bea	Salep	Mokha tree
F.	Haricot mungo			
Guj.	मग	जङ्गाउ मगी	सालम	मखो
Ge.	Rauhhaarige bohone			
H.	मुंग	मुगनी	सालिबमिश्रि	मोखा
I.				
L.	Phaseolus radiatus. L.	Phaseolus trilobus (Ait)	Eulophia campestris (wall)	Schrebera swietenoides (Roxb)
M.	मूग	रान मूग	सालम	मोरवा
Ma.				
P.	Mung		Sungmisri	
Pu.	मुंग		सालिबमिश्री	
Sinh.	मुनसे	विन्मे		
Si.	मुंग			
T.	पचै, पिरु	नारीपायर		मगलिङ्गम्
Te.	पेचा, पेसरु	पिल्लिपेसरा		मोडमुगाडि
Tu.				
U.	Mung		Salabmisri	
Ur.	पालमुग			घोण्टिया, नेर्गाटुली

S.	मुस्ता	मूलक	मूर्वा	मृगलिण्डिका
A.	Zibl el maiz, suqqayt	Fioyl fugel		
B	मोथा, मुथा	मूला		
Bi.				
Bu.		Moula		Chinyok
C.	तुंगेगड्डे	मूलंगी	केरटिगे	नेल्लिगड्डे, मुघेकले
Cu.	मूथा		मूर्वा	केकड
E.	Indian cyperus	Garden radish		
F	Souchet rond	Navet rave		
Guj.	मोथ	मूळा	मोरवेल	केकड
Ge.	Runde zyperwurzel	Rettich		
H.	मोथा	मूली	चुरहार	खर्पट
I.	Cipero orientale, Padulina	Rafano		
L.	Cyperus rotundus L.	Raphanus sativus L.	Clematis triloba (Heyne)	Garuga pinn (Roxb)
M.	मोथा	मुळा	मोरवेल	काकड, कुकड
Ma.	करिमुत्तन	कनकपल, मुळंगी		करुवेम्पु, करेयम्
P.	Muske zamin	Turkhmeturub		
Pu.		मूली, तारमीरा		कारूपड्, सरोटा
Sinh.	कालोन्दुरु	राबु		
Si.		मूरी	मरुवा	
T.	कोरा, कीरल	मुलंगी		एर्भेकारै, मलैय्
Te.	गण्डाला, मुस्तकसु	मुलंगी		कोण्डवेप, गद
Tu.	Topalak	Turp		किकोडु, मोहि
U.		Mulekebija		
Ur				

S.	मृष्टक	मेषशृङ्गी	यमानी	यव
A.	Khardal aswad	Suwar el hind, Barkasht	Kammun hhabashi	Shair
B.	गाइसरिश	अंतमोरा	जोवान्	जव्, जौ
Bi.				जोवारवर
Bu.		Khungiehe		Muyan
C.	ऐड्मुरि	काडुकलनार	ओमा	जवेगोधी
Cu.	राई	आंटेड	चोहारा	जो
E.	Mustard	Indian screw tree	Bishop's weed	Barley
F.	Moutarde noire, Senve noir	Helictere, Isore	Ammi, Sison	Orge commune
Guj.	राई	मरडाशींगी	अजमो	जव
Ge.	Senfsmk hl, Senf	Isora helictere	Herrenkummel	Saatgerste, Gerste
H.	कालीराई, राई	मरोरफली	अजवाईन	जव, जौ
I.	Mostarda	Isora.	Ammi, Sisone	Orzo commune
L.	Brassica nigra L.	Helicteres isora L.	Carum copticum Benth&hk	Hordeum vulgare L.
M.	मोहरी	मुरुडशेंग	ओवा	जव
Ma.	कडुक	ईश्वरमुरि, कैयूना	ओमम्	
P.	Sarshaf	Kishtburkisht	Naukhah	Jao
Pu.	राई	मरोरफली		चुमा, जौ
Sinh.	गनय	लिमिआगाह	अस्समोदम्	
Si.		वरकटी		
T.	कडुगु	वलम्बुरि	ओमम्	वारलियारिसि
Te.	आवलु	कावञ्चि, उत्रासि	ओमामी	वारलिवीयमु
Tu.	Kara hardal	Barkast	Emmus, Misir anisonu	Arpa
U.	Rai	Marorphali	Ajwan	Jav
Ur.		मोडिमोडि, ओरोळ		

S.	यवासक	यष्टिमधु	यूथिका	रक्तचन्दन
A.	Aqul, Shawk el gimal	Shag		Sandalan Saudal ahhmar
B.	जवास	जष्टिमधु	जुई	लालचन्दन
Bi				
Bu.		Noekhiyn		Nasani, Sandakee
C.	वल्लिदुरुचे	अतिमधुर	मल्लिगे, हुरिनवल्लि	केम्पुगन्ध, पत्राङ्ग
Cu.	जवास		जुई	रक्तचन्दन
E.	Camel thorn	Liquorice		Red sanders
F.	Alhagi des maures	Reglisse glabre		Sandal rouge
Guj.	जवासो	जेठीमध	जुई	रतांजली
Ge.	Mannna strauch	Echtes sussholz		Roter sandel-baum
H.	जवासा	मुलहट्टि	जूही	रक्तचन्दन
I.	Manna di persia	Regolizia		Sandalo rosso
L.	Alhagi maurorum (Bak)	Glyeyrrhiza glabra L.	Jasminum auriculatum Vahe	Pterocarspus Santalinus
M.	जवासा	ज्योष्टिमध	जुई	रक्तचन्दन
Ma.	कप्पद्रुम्प	अतिमधुरम्	बोलिङ्ग	पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम्
P.	Kharebuz	Bikhemahak		Buckum
Pu.		मुलेंद, जटिमधू		चन्दनलाल
Sinh.		अतिमधुरम्		रुक्य हन्दन
Si.	उन्दुरखर			
T.		अतिमधुरम्	इडिमै, मुल्लैकोडि	चन्दनवेङ्गै
Te.	गिरिकर्णिका	अतिमधुरमु	मोल्लतीगे, अडविमोल्ल	एत्तचन्दनमु
Tu.	Mann ayran	Megan koku		Kirmizi sandal ag
U.	Javasa, Athariyun			
Ur.			बोनोमोल्लिका, जुई	इन्द्रोचोन्द्रोनो

S.	रक्तनाल	राजादन	रास्ना	रुहा
B.	लालमीस्ता, पटवा	खीरखेजुर		पुरामन्डा
Bi.				
Bu.	Chinbaung			Kbyeepaung
C.	पुण्ढीसोप्पु	बकुल	रास्मे	बदनिके
Cu.	भिंडी	रानजो झाड		
E.	Red sarrel Rosella		Indian groundsel	
F				
Guj.		राण	रास्ना	वांदो
Ge.				
H	पटवा, लाल अंबारी	खिर्नी	रासना	बान्दा
I.				
L.	Hibiscus sabdariffa L.	Mimusops hexandra (Roxb.)	Pluchea lanceolata Oliv.	Loranthus falcatus L.
M.	लालअंबाडी	रांजण	रास्ना	बांडगुळ
Ma.	पोलेची	पाल		इत्ति
P.				
Pu.			रासना	मसुट, वांदा
Sinh.	राता बिलिंचा	पाछ		
Si.	लालअंबारी		कुरासना	
T.	सिमैकासुरु	चुक्किलम्, पाले		कामरिन्नम्
Te.	एद्दागोमगुरा	मंचिपाल, नम्मि		जिड़, बादानिक
Tu.				
U.		Khirani		
Ur.		रिम्परी, राजोनो		मिरहोंगो

S.	रोहिणी	रोहितक	रोहिष	लक्ष्मणा
A.			Khilal, Mamuni	Tuffahh el maganin
B.	रोहन,	तिक्तराज	गन्धवेना	
Bi.				
Bu.				
C.	कल्गरिगे, सोमे	मुळुमुत्तुग	वसनचुळ	
Cu.	रोहणी		रोंव	
E.	Bastard cedar		Geranium grass	Mandrugora
F.			Citronnelle	Mandragore
Guj.	रोण	रगतरोहिडो	रोहिषघास	
Ge.			Cameleshov	Echter alraun
H.	रोहन	हरिनहर्र, रोहिणी	रुसाघास	
I.			Griunco odorato, Squinante	Mandragora
L.	Soymida febrifuga (Guss)	Amoora rohitaka (W. & A.)	Andropogon schoenanthus (Marind)	Atropa mandragora L.
M.	रोहण	रोहीतक	रोहिष	लक्ष्मणा
Ma.		चेमू		
P.				
Pu.			रानुष	
Sinh.				
Si.				
T.	चेमद्दनम्, चेमू	कुरैलचुवरम्, वन्गुल	शुकुनारिप्पुल	
Te	चेवनातु, सोमि	चेवमातु, रोहितक		
Tu.			Tibni, Mekke	Haciler otu
U.	Rohan			
Ur.	सेणरान्, कर्वी	प्लीहासत्र		

S.	लवङ्ग	लवलीफल	लशुन	लाङ्गलिकी
A.	Qurunfil		Thawn	Al bahir al hindyah
B.	लोंग	हरिफुल	रसुन	बीश
Bi.				
Bu.		Thimbawzibyu	Kesumpliu	Hseemutouk
C	लवङ्ग, देवकुसुम	किरिनेल्लि, अरनेल्लि	वेळ्ळुळ्ळी	कालिन्दुम
Cu.		खटीआमरी		
E.	Clove tree	The Country goosebery	Garlic	
F.	Girollier		Ail	Supurbe de Malabar
Guj.	लवींग	कांकणां, हरफारेवडी	लसण	दूधियोवछनाग
Go			Knoblauch	Malabarische methonika.
H	लौंग	हरफारेवडी	लहसन	कलिहारि
I.	Cariofilli, Garofano		Aglio	Narciso superbo
L.	Caryophyllus aromaticus L.	Phyllanthus distichus. (Muell)	Allium sativum L.	Gloriosa superba L.
M.	लवङ्ग	रायआंवळा	लसूण	कळलावी
Ma.	करयाम्पु, लवङ्गम्	नेल्लिपुळि, अरिनेल्लि	वेलुली	मलत्तामार, कण्टाल्
P.			Sir	
Pu.			पीयाज़	करीयारी, मुलीम
Sinh.	कराम्बु	रातानेली	सुदुलुनु	नियनगला
Si.			थुम	
T.	करुव, किराम्बु	चडागम्, अरुनेल्लि	वेलैपुण्डु	अक्किनिच्चिलम, कान्दाल्
Te.	लवङ्गमु	राचउसिरिक	वेल्लुलि, तेलगड्डा	कलपगडु, पोट्टिनाभि
Tu.	Babar karaufil		Sarmusak, Sarmisak	
U.		Harpharuri	Lehsun	Kanol
Ur.	देवोकुसुमो, लोवोङ्गो	नारोकोलि		पंचांगुलैया

S.	लामज्जक	लिकुच	लोट्टाक	लोणिका
A.			Bashmalah	Riglah, Hhurfah
B.	कागंकुस	देफल्, मादार		बरालोनीया
Bi.				
Bu.		Miauktot.		Mayabyit
C	कारीलावन्चा	वाटेहुलि, एसुलुहुलि	लक्कोटे	डुडागोराई
Cu.				लाखालुंणी, कुतबो
E.		Monkey gack	Loquat	Puaslane
F.			Bibassier du Japon	Pourpier, Pourcellaine
Guj.	पीलोवाळो	लकुच		लुणी
Ge.			Japanische mispel	Gartenportulak
H.	लामज्जक	बडहल	लोगाट्ट	लोणिआ
I.			Pruno del Giappone	Porcellana, peplo
L.	Andropogon iwaranacússa Roxb.	Artocarpus Lokoocha	Eriobotrya Japonica, Lind	Portulaca oleracea. L.
M.	पिंवळावाळा	लकूच		घोळ
Ma.		लकुचम्		कोरिच्चिरा
P.				Cholza
Pu.	वूर	डाहोचो		लोनक
Sinh.		कौनगोन		गेण्डागोला
Si.				लोंक
T.		इलगुसम्, इरप्पाळ	इलकोट	कारिक्किरै
Te.		नक्करेसु, कम्मरेगु		पप्पुकुरा
Tu.			Musmula, yeni dunya ag	iz otu
U.		Barhal	Lakhota	Khurfah
Ur.		ज्यूटो		पुरनीसाग

S.	लोध्र	वंश	वचा	वञ्जुल
A.	Lutr, Armak	Khayzaran, Qana	Qasab edh dharirah	Khilaf
B.	लोध	बांश	बच	पानीजाम
Bi.				
Bu.	Daukyat	Kyakatwa	Linhe	Momaka
C.	वाललोद्दुगिनामारा	बिदिर, बम्बु	बजे	निरुबजि, बद्के
Cu.	लोध्र	बंश	वेरवण्ड	
E	Lodh tree	Spiny bamboo	Sweet flag	Sallow
F.	Lotour, Lotur	Bambou, Bambousier	Calamus	
Guj.	लोध्र, लोधर	वांस	घोडावज	
Ge.	Lotbaum	Bambusrohr	Echter-Kalmus	
H.	लोध	बांस	बच	बेद, बेंत
I		Bambu	Acoro aromatico	
L	Symplocos racemosa (Roxb)	Bambusa arundinacea (Willd)	Acorus calamus L.	Saliz tetrasperma Roxb.
M.	लोध्र	बांबू	वेखण्ड	वाळुंज
Ma.		तेजनम्, वेणु	वशम्पा	अत्रपल, निरुञ्चि
P.		Nai	Agar Agreturki	
Pu.		नल	बच, वारीबोज	बधा
Sinh.		उना	वाडकाह	
Si.				सफोदा, बित्सा
T.		अम्बल, कुलैमुंगिल्	वाशम्बु	आरुप्पलै वञ्जि
Te.	लोड्डुग, सावरमु	वेदुरु, बोन्गु	वडज	एतिपाल, कोण्डगनेरु
Tu.	Kurfe ag. Amerika cayi	Hazuran,	Egir otu, Azake egiri	
U.	Lodapathani	Bansa	Bacha	Bedmushk
Ur.	लोधो	गोण्टाबांसो		बेंसि, पाणिगामो

S.	वट	वत्सनाभ	वरक	वरुण
A.	Athab	Bish, Halhal	Dukhn	
B.	वर, बोट्	बिस, वत्सनाविष	चीना	वरुण
Bi.				Kadat, Kadet
Bu.	Pyinyaung		चीना	
C.	आल, वट	वत्सनाभी	वरागु, सावे	नेरुमूवेले, मिलपत्रि
Cu.	वडजो झाड	वचनाग		
E.	Banyan tree	Aconite	Millet	Three leaved Caper
F.	Figuier des Benains	Aconit d' inde	Panic millet	Crate'vier
Guj	वडलो	वछनाग	चीणो	वायवरणो
Ge.	Banianen Feigenbaum	Indische akonit knollen	Echte hirse	Krateva, Tapiabaum
H.	बरगद्	वचनाग, धिंयाविष	चेना, चीन	बरना
I.	Fico dei Baniani	Aconito d' india	Panico miglio	
L.	Ficus bengalensis L.	Aconitum ferox (Wall)	Panicum miliacum. L.	Crataeva religiosa (Forst)
M.	वड	वचनाग	वरी	वायवरणा
Ma.	पेराल वटम्	वत्सनाभी		निरविल, वरुण
P.	Darakhteresha	Bishnag, Zher	Arzan	
Pu.	बरगद		सालन, सलर, चीना	बरन, बरनही
Sinh.	महानुग	वचनाभी	मैनेरी	लुनुवरना
Si.	बुर		चोनु	
T.	पडवम्	वशनावी	वरागु	इमैविलै, कुदिलम्
Te	विट'प, मेट्टमत्ती, वाटी	वसनाभी	वरगलु	विलवरम, मारेडु
Tu.	Ba. ag	Bildirein otu	Karacadari	
U'	] a			Barna
U r				रिवोगो

S.	वाताम	वार्तकि	वालक	वासा
A.	Lawz	Badhingau		Adhatudah
B	विलाति, वादाम	वारताकु, बेंगुन	वाला, गन्धवाला	वसाका
Bi				
Bu.	Badan	Khayan		
C.	बादामि	बदने	मुडिवाळा	आडुसोगे, आडुसले
Cu.	बदाम		काळो वाळो	अरड्सी, अरडूसी
E.	Almond tree	Brinjal	Fragrant slicky mallow	Malabar nut
F.	Amaudiər	Melongene	pavoniaodorante	Noyer de malabar
Guj.	बदाम	वेंतीक, रींगणां		अरडूसी
Ge.	Echte mandel	Eierfrucht		Malabaris chenuss
H.	बदाम	बैंगण, भण्टा	सुगन्धवाला	अडूसा
I.	Mandorlo	Melanzana		Justicia arbonescente
L.	Prunus amygdalus Stokes	Solanum melongena L.	Pavonia odorata (willd)	Adhatoda vasica (Nees)
M.	बदाम	वांगी	काळावाळा	अडुळसा
Ma.	बदाम	कट्टिरि, वड़ुतिन	कुरुन्टोट्टि	अट्टलोटकम्
P.	Badam	Badaujan.		Bansa
Pu.	बदम्	बेंगन		भेकर
Sinh	रत्तशोटम्बा	वाम्बातु		अगलदरा
Si		वांगन		
T.	वादुमै	मुकुरुटारि, वाडूगम्	आवियद्दम्, पेरामुदि	आडदोडी, व.चै
Te.	बादामु	वड़्काय, निडुपुवड़ूम्	चिट्टिवेण्ड, एत्तकुटि	अडुसरमु
Tu.	Bodem ag	Bedinean Patlican		Malabar cevig ag
U.	Badamshirm	Baingan		Arusa
Ur.	व.दामो	बैइगोना		वासोड्गो, रोट्टमुलि

S.	वास्तुक	विकङ्कत	विडङ्ग	विपाणिका
A.	Fisael kilab		Kabuli, Biring	
B.	वाथुसाग	वैचीगाछ	भाईचीरुगा, बीरंगा	छागलचान्ति
Bi				
Bu.				
C.	चक्रवर्ती	मलेगु, तग्ड्राज	वायुविळङ्ग, विडंग	वेलिहृत्ति
Cu.	चरल	वीगो	वावटंग	दुधरी आल
E.	White goose foot		Embelia	
F.	Anserine blanche		Ribelier	
Guj.	चील, वथवो	विकळो	वावडींग	नागलादुधेन्री
Ge.	Weisser gansefuss		Embelie	
H.	वचुआ	वैकल	वावरंग, ववेरंग	·चम्रण
I.	chenopodio bianco		Embelia	
L.	Chenopodium album L.	Gymnosporia montana (Benth)	Embelia ribes Burn	Dœmia ex ia (R. Br.)
M.	चाकवत	वेहेकळ	वावडिंग	चतरण
Ma.			विडालम्, वायविलङ्गम्	वेलिपरुत्ति
P.	Khurfa		Birangekabali	
Pu.	बथुआ	किंगरो	वावुग	श्रोतू
Sinh			वेलाम्बिला	
Si.	झील			सर्यल
T.	पारुपुकिरै	कद्याचि, वालुलुवै	कुट्टकोडि, वेल्लल्	उत्तमानि
Te.	पप्पुकूरा	गेघलिंग, पेद्दन्त	विडङ्गमु	गुरुति
Tu.	Ak pazi		Biring, Kabuli	
U.			Bavrang	
Ur.		गोमोंचोधा	बिटोंगो	युग्मफलिका

S.	वृक्षाम्ल	वृश्चिकाली	वेतस	शङ्खपुष्पी
A.			Qassab draku	
B.		बिचटि	बेत	
Bi.				
Bu.				
C.	मुर्गिनिहुळि, तित्तिडिक	दूलगोण्ड	हेब्बे, नागवेट्ट	विष्णुकान्ति
Cu.	कोकम	खाजवल	वेत	
E.	Wild mangosteen		Rattan cane	
F.			Rotang, Rotin	
Guj.	कोकम	खाजवणी	नेतर	शङ्खावळी
Ge.			Rotany,	
H.	कोकम	बरेंटा	बेंत	श्यामकान्ता
I.			Finocchio d' india	
L.	Garcinia indica (chois)	Tragia involucrata Lin	Calamus rotang L	Evolvulus alsinoides L.
M.	कोकम	खाजकोलती	वेत	शांखवेल
Ma.	पुनंपुळि	चेरुकोडितुवा	चूरल्, पुरम्पु	विष्णुक्रान्ति
P.				
Pu.				शङ्खपुष्पी
Sinh.		वेल्कहुम्बिळिय	वेवेल	विष्णुक्रान्ता
Si.				
T.	मुरगल	कञोरि	सुवेदम्, सडी	विष्णुक्रान्ति
Te.		दूलगोण्ड	वेट्टमु, प्रब्बिलि	विष्णुकान्ता
Tu.				
U.			Benekli hind kamisi	
Ur		बिछुआटि	बेटो	

S	शङ्खिनी	शण	शतकुसुमा	शतावरी
A.		Qinnib el krotolarya	Sadhab el barr	Shaqaqul
B.		शण, सन	शुलपा, शुल्फा	शतमूली
Bi.				
Bu.		paikpiven	Samyeit	Kanyomi
C.		सणबु	सब्बसिगे	आषाढि, हलवुमक्कळबळ्ळि
Cu.	कुतीभुमा			
E.		Indian hemp	Dill	Asparagus
F.		Chanvrier de Bengale	Aneth, Fenouil batard	
Guj.	आंखफूटामणी	सण	सुवा	शतावरी
Ge.		Bengalischer hanf	Gartendill, Dill	
H.		सन	सोया	शतावर
I.		Nacchera del Bengala	Anetsodoroso, Aneto	
L.	Ctenolepis cerasiformis H K. F. D.	Crotalaria juncea L.	Peucedanum graveolens (Benth)	Asparagus racemosus
M.		ताग	शेपु	शतावरी
Ma.		पुळिच्चि, सणम्	चतुकुप्पा	चटवालि, सटवालि
P.		San	shol	shaqaqul
Pu.			सोया	सतावर
Sinh.		हौना	सथकुप्पै	हसावरी
Si.		तागसन, शिनि	सायाकुप्पाई	हिलोरा
T.		कुट्टिरम्, वक्कुनार	शतकुपि	चाडावारि, सिगुंडवानम्
Te.		गिलिगिच्चु, जुनुमु	सोंप	चलगड्ड, पीचर
Tu.		Gunes Keneviri	Durang otu, Tere otu	
U.			Soya	Satavara
Ur.		शोणो, चोणि		छोतारु

S.	शमी	शल्लकी	शाक	शाल
A.	Ghaf	Luban	Addulb el hindi	Kaikahr
B.	शमी, गेमी	कुनडुर, सलै	सेगुन	सखेर, शाल
Bl.				
Bu.		Bringiloban	Kyum, Kywon	Enkhyen
C.	वन्नि	शांब्राणि, नायिंचल	तेग, शागुवानि	शाल
Cu.		सलियागुग्गुल	साग	शाल
E.			Teak	Sal tree
F.	Proscope		Teck, Tek	
Guj.	शमी, खीजडो	सलै	साग	शाल
Ge.	Ahrenschelfe, Prosopis		Teakbaum, Indische eiche	
H.	शमी	सालई	सागोन	साल, साखु
I.	Prosopis		Querce delle Indie orientale, Tek	
L.	Prosopis spicigera L.	Boswellia serrata (Roxb.)	Tectona grandis L.	Shorea robusta (Gaertn.)
M.	सौंदड	सालई	सागवान	शालवृक्ष
Ma.	परम्पु, वन्नि	पालङ्कम्	तेक्क	मरामारम्
P.		Kundur	Saj, sal	Lalemohari
Pu.	जन्ड, जण्डी	सालही	सागून, सागवान्	साल, सेरल
Sinh.		कुन्ड्रिकन	तेक्का	दम्मल
Si.	कन्दि		लोहेरु	
T.	कुलिसम्, तमळि	मुरैड्डम्	कालिन्दी, तेक्कु	शालम्
Te.	जिम्मदर्शिनि	धूपमु, अंडुग	तेकु	साल्व
Tu.			Sac ag, Tek ag	
U.		Kundur, Lobana	Sagum	Ral
Ur.	शोदिगे, सोमि	लोबान्	सागुनी	सालो

S.	शालिपर्णी	शालेय	शाल्मली	शिंशप
A.	Matan, Ārqis	Shamar, Shumarah	Bambaks	Sasam, Sissu
B.	शालपानी	मौरी, पानमुहोरी	रक्तो सीमुल, तुला	शिसू, सिसू
Bi.				
Bu.			Dsdu, Lepanbin	
C.	मुरेलेहोने	वडीसोपु	वरगं, बूदि, सौरी	अगरु, शिंसपे
Cu.	सालवण	वरियाळी		
E.	Tick trefoil	Fennel	Red silk cotton tree	Sissoo
F.	Desmodie	Fenonil aneth doux	Bombax, Fromager	Ebenier Jaune
Guj.	सालवण	वरियालि	शिमलो	सीसम
Ge.	Bundelhulse	Echter fenchel	Seindenbaum--wollbaum	Sissoobaum
H.	सालपान, सालवण	सौंफ	सेमल	शीशम, सिसु
I.	Desmodio	Finocchio	Bombace, Bambagia	Ebanogiallo, Sissu
L.	Desmodium gangeticun D.C.	Foeniculum vulgare Goertn	Bombax malabaricum (D.C.)	Dalbergia sissoo (Roxb)
M.	सालवण	वडीशेप	लालसांवर	शिसव
Ma.	पुळटि		उम्मुरिक्कु, पुरीण	इरुविल्
P.		Badiyan		
Pu.	शालपुर्ही			नेलकार्, शिशी
Sinh.			कट्टुइम्बुल	
Si.				सिस्सु
T.	पुळाडि	सोहीकिरै	मुळिलावु, पुळै	सिसु, यट्टे गेट्टे
Te.	गीतनारम्, कोलाकुपोर्न	पेद्दाजि, लङ्करासु	ेण्डबूरग, शाल्मलि	सिस्सु, सिंसप
Tu.	Gene yulafi	Rezene Raz yane	Bombaks	Dalbercia sisu ag
U.	Shalwan	Sonf		Shisham
Ur.	शालोपोर्नी		साल्मलि, सिमुळी, मोचोरोसो	सिसु

S.	शिग्रु	शिरीष	शुण्ठी	शूकरी
A.	Al ban, yasar	Labakh, Daqn elbasha	Zangabil	
B. Bi	साजिना, सुजुना	शिरीष, सिरिस	आदा	वराहिकन्द
Bu.	Dautha lone	kokko	Khyensing	Pankhade
C. Cu.	नुग्गे, मोचक, नुग्गल	बागे, होम्बागे	हसिशुण्ठि, अल्ल	
E.	Drum stick tree		Ginger	
F.	Moringe aptere	Bois noir, Lebbek	Gingembre	
Guj	सरगवो	सरसडो	सूंठ	
Ge.	Behenbaum	Siris acacia	Ingwer, Gingiber	
H	सैंजना, सोंजना	शिरीष	अद्रक	वाराहीकन्द
I.	Noce di behen	Lebbek	Zerzero, zenzevero	
L.	Moringa pterygospermu (Gaertn)	Albizzia lebbeck (Bem:h)	Zingiber officinale (Rose)	Tacca pinnatifida Forsh
M.	शेवगा	शिरस	सुंठ, आले	वेथकांदा, केन
Ma.	मुरिण्ण, शिग्रु	काट्टुवाक, नेन्मानि	तीक्ष्णोत्तम्, चिंचिवेर	चेन
P.		Darakhtej-akheria	Zangabil	
Pu.	साजना		आदा, अद्रक	
Sinh.	मुरुंगा	मारा	इगुरु	
Si.	सडोरा	सिरीष, सिरस		
T.	मुरिंगै, कायमुरिंगै	अडुक्कवागै, वागै	अल्लम्, शिंगिवेरम्	करुनै
Te.	मुलगे, शीतवृक्षमु	दिरिसनमु, कपीतनमु	सुण्ठी, अल्लमु	चण्डकन्द
Tu.	Ben ag. Surkun ag	Labak	Zencefil, Zencebil	
U.	Sahajna	Darash		
Ur.	मुनिका, सोजिना	सिरिसो, सिन्या	आर्द्रोको, ओडा	

S.	शृङ्गाटक	शैलेयक	शैवल	श्लेष्मातक
A.				Mukhatah, Dabo
B	पानिफल		शेओला	बहुवार, बोहरी
Bi.				
Bu.				Thanat
C.		कल्लुहू	अन्तरगंगे, नीराता	चाडुचळ्ळे, हाडिगे
Cu.				
E.	Shingara nut	Rockmoss	Eel grass	Sebesten's plum
F	Macre	Parmetia desmurs	Valisnerie spirale	Sebestier, Arbre aux-sebestes
Guj.	शिंगोडां	पत्थरफूल	शेवाल	गुंदो
Ge.	Gemeine wassernass	Wandschild-flechte	Sumpfsehraube	Sebestenbaum
H.	सिंघाडा	शिलापक, पत्थरकाफूल	जलील, सियाल् काई	भोकर, गोंदी
I.			Valisneria	Sebesto mixa
L.	Trapa bispinosa Roxb.	Permelia parlala Eshc	Vallisneria spiralis L.	Cordia myxa (Roxb)
M.	शिंगाडा	दगडफूल	शेवाळ	भोंकर
Ma.	वरिंपोलम्		चण्टि	विरियशम्, काटि
P.		Dowalah		Sapistan
Pu.	सिङ्घारा	चालूचालिरा		लस्वारा
Sinh.	इविलिया			लोल, लोट्ठ
Si.			शेवर	लेसुरी
T.	सिंघारा	कालापु		विरिशु, नरुविलि, सेलु
Te.	कुब्याकम्	रातपु	पंचदुम	चिनबोट्टुकु, नक्केर
Tu.			Valisneria	Sebestan ag
U.	Singhara	Habakkarmani		Lasora
Ur.				आमोमंटो, गोंदी

S.	सप्तपर्ण	समङ्गा	सरल	सर्षप
A.	Alistonyah	Mustah hiyah		
B.	चद्दान्, छतिअन्	लज्जावत, लाजाक	सरलकाष्ठ	कालिसरसान, शुर्षी
Bi.				
Bu.	Lettok	Htekayung		Amemuiyenzi
C.	एळेलेहाळे, जन्त्रहाळे	मुडुगुदावरे, लज्जा	वर्हि	चिळिसासिवे
Cu.				सुराइ
E.	Dita	Sensitive plant	Three leaved pine	
F.	Dita, Echite	Mimose		Chou Chompetre
Guj.	सातविण	रीसामणी	सरल	सरसव
Ge.	Schulholz baum	Sinnplanze		Feldkohl
H.	छातियान्, शातिवन्	लाजवन्ती	चील, चीर	सरसों
I.	Alstonia	Erba mimosa		Cavolo campestre, Colza
L.	Alstonia scholaris R.B.R.	Mimosa pudica L.	Pinus Longifolia, Roxb.	Brassica campestris L.
M.	सातविण	लाजाळू	देवधुप	शिरषी
Ma.	एलिलम्पाल, मुक्कपाळु	तिंटारमनि, तोट्टावाटि	चरळम्, श्रीवासम्	वेळ, काडुगु
P.				Sipanianesiyah
pu.		लाजवन्ती	चीर	
Sinh.	रुक्टाना			कडुआब्बे
Si.				
T.	एलिळैप्पालै, वडिरासि	समंगै, तोट्टाल्वाडि	सिमैदेवपारि	कडुप्पुकडुगु
Te.	एडाकुलरति, पालगरुड	पेद्दनिद्रकण्टि	सरळ	नलावलु
Tu.	Dala ag	Kusen fidane		Ova lahanasi
U.		Lajjalu		
Ur.			सोरोळोकाढो	गंगातोरिया

S.	सातला	सारिवा	सिंचितिकाफल	सुधा
A.		Ushbah hindi, Zayyan	Tuffahh	
B.	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible], [illegible]
Bi.		अनन्तमूल		
Bu.	Ken bwon. Suboke			Shasaung
C.	[illegible], [illegible]	[illegible], [illegible]	[illegible]	[illegible]
Cu.				[illegible]
E.		Indian sarsaparilla	Apple	
F.		Salseparcille del' inde	Pommier, Egrasseau	
Guj.	[illegible]	[illegible], [illegible]	[illegible]	[illegible]
Ge.		Halbfaden, Indische sarsaparilla	Echter appel baum	
H.	[illegible]	हिंदी सालसा	सेव	[illegible], [illegible]
I.		Salsapariglia d' india	Pomo, Melo	
L.	Acacia concinna D.C	Hemidesmus indicus Br	Pyrus malus. L.	Euphorbia nerifolia I
M.	शिकेकाई	उपळसरी	सफरचंद	निवडुंग
Ma.	[illegible], [illegible]	[illegible], [illegible]		[illegible]
P.		Aushbahehindi	Seb, Sef, Sir. Sib	
Pu.			[illegible], [illegible], [illegible]	[illegible]
Sinh.		[illegible]		
Si.			[illegible]	[illegible]
T.	[illegible]	[illegible], [illegible]		[illegible]
Te.	[illegible], [illegible]	[illegible]		[illegible]
Tu.		Hiud saparnasi	Elma ag	
U.		Aushba hemaghrabi		Zakum
Ur		[illegible], [illegible]		[illegible]

S.	सुनिषण्णक	सुरसा	सैरेय	सोमराजी
A.				
B.	शुशुनिशाक	तुळसी	कांटाजाती	बावची
Bi.				
Bu.		Lun	Leithaywe	
C.		श्रीतुळसी	मुळ्ळुगोरण्टे	बावन्तीगिड
Cu.		तुळसी	कांटा असेरीओ	बावंची
E.	Marsilia	Holy basil		
F.				
Guj.	लांपडी	तुलसी	कांटा शेळीओ	बावंची
Ge.				
H.	चौपतिया	तुलसी	कटसरैया, वज्रदन्ती	बावंची, बावची
I.				
L.	Marsilia quadrifolia (Figare)	Ocimum sanctum L.	Barleria prionitis L.	Psoralea corylifolia L.
M.	कुरडु	तुळस	कोरंटी	बावची
Ma.		तुरसम्, तुळसि	चेमुळ्ळि	
P.				Waghchi
Pu.		तुळसी, बनतुलसी		बाव्ची
Sinh.		मदुरुतल	कटुकुरण्डु	बोठी
Si.				
T.		तुलांगै, तुरसम्	कुरुञ्जि, कुडान्	कारपोकरीशी
Te.		नल्लतुलसि	कोण्डगोब्बि	करबोगि
Tu.				
U.				Babechi
Ur.			दासेकोराण्टि	बाकुची

S.	स्थौणेयक	स्पृक्का	हंसपादी	हपुषा
A.		Iklil el malek an nafal	Quasab	Arar, Sarru gabt
B.	घेण्ट्, भाण्ट्	वौपीरिङ	गोयलेत्थाटा, कालीझांट	हपुषा
Bi.				
Bu.	Bugiphyn			
C.	वसदनपाद, इब्बने		नवलाद	नीरहब्बे
Cu			कारायडो ·	
E.		Melilot	Maiden hair	Juniper
F.		Mililot, Couronneroyale		Genievre
Guj.			हंसराज	
Ge.		Echtersteinklee, Melillotenklee		Gemeiner, Wacholder
H.	थुनेर	अस्पुर्क	हंसपदी, कालीझांप	हाउवेर
I.		Meliloto, Vetturina		Jinopronano. G. nero
L.	Clerodendron-infortunatum L.	Melilotus officinalis Lam.	Adiantum lunulatum Burn	Juniperus Commumis L.
M.	भाण्डीर	अखिलामुलखा, नखला	घोडखुरी, हंसपदी	हाउबेर
Ma.	पेरुवेलम्, पेरुकु			
P.		Aklilulmalak, Zirir		
Pu.	कालीवसुटि			वेटारं धूप, गैयुक्
Sinh.	गास्पिना			
Si.				
T.	करक्कण्णि, पेरुगिलै			
Te.	चिरम्बुष्टि, गुरुज			
Tu.		Muflun, Iklil iil melik		Ardic ag, Ars ag
U.		Aspurk		Abahal, Saru
Ur.	बोगआरी			

S.	हरिद्रा	हरीतकी	हरेणु	हस्तिदन्ती
A.	Aqid hindi, Kurkum	Shagar, Shiir hindi	Bisillah, Bizillah	
B.	हलिद, पित्रास	हरीतकी	मटर	वरागाच्
Bl.				
Bu.	Hsan wen, Tanun	Paugah	Pai	Theyin
C.	अरिशिना	अक्ले, हरडे	वाटगडले	
Cu.				
E.	Turmeric	Chebulic myrobalan	Pea	
F.	Curcuma, Safrandes indes	Myrobalan Chebula	Petit pois, Pois Vert	
Guj.	हळदर	हरडे	वटाणा	
Ge	Gilburir zei	Rispiger, Myrobalan enbaum	Saaterbse, Erbsen	
	हल्दी	दर	मटर	
	Curcuma Lunga	Mirobalano nero	Pisollo Coltivato	
	Curcuma longa Roxb.	Trminalia chebula, Retz	Pisum Stivum L.	Croton oblongifolius Roxb.
M.	हळद	हरडा	वाटाणा	घणसर
Ma.	मषाल, मरिनाल	कडुक, कायस्थ	पट्टणि	
P.	Darzardi			
Pu.	हल्दार	हलेल, हरार	मट्टर	
Sinh	कहा	आलु, अरलु	रतगोरडिया	
Si.		हर	लारकण	
T.	मञ्जल	आमागोल, कडु	पट्टनि	
Te.	पम्पी, पासुपु	करक्काय, नलकरक	गुण्डुबानिचेलु	
Tu.	Kurkum,	Kabuli halile	Bizelya fidan	
U.	Halodi	Hae jarad		
Ur.		होरिड		

	हारिद्र	हिङ्गु	हिङ्गुपर्णी
A.		Angudar, Shag abu kabir	
B.	केलीकदम्ब		
Bi.			
Bu.	Hnaubeng		
C.	अरशिनद्गि, आणवु		डिक्कामल्लि, विक्कि
Cu.			
E.		Asafoetida	White emetic nut
F.		Assafoetida	
Guj.	हलदरवो	हिंग	डिक्कामारी
Ge.		Asandisteck en-kvaut	
H.	हलदू	हिंग, हिंग्रा	डिकामालि
I.		Assafetida	
L.	Adina cordifolia Benth & k	Ferula asafoetida L.	Gardenia lucida Roxb.
M.	हेद	हिंग	डिकेमाली
Ma.	कटम्पु, पीटम्पु		
P.		Angadana	
Pu.			
Sinh.	कोलोङ्ग		
Si.		वधायनी	
T.	कदम्बै	पेरुंगायम्	कंपिळ तिक्कामल्लि
Si.	दाडुग		एहविक्कि, तलमंग
T.	कदंब.		
Te.	चिरम्बु	Slytan boku,	
Tu.		MuHiltit melik	
U.		Aspung, Anjadan	
Ur.	बोगडारी		

चरकसंहितागतोद्भिज्जद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः *

Reference to the Section, Chapter and Verse of the Plant Substances in the Caraka Samhita

अंशुमती [सु. अ.]–चि. २८–९६; २९–८०.

अक्ष [सु अ.]–चि. १२–३२,

अक्षत–सू ८–२८; वि. ८–९,११; शा. ८–३५; चि. १४–५०.

अक्षि(क्ष)पीड (क.)–चि. २३–२१५,२१६; क. ११–३.

अक्षीव [सु.]–सू. ४–११ | १५; चि ३–२६७.

अक्षोड (ट) [अ.]–सू. १३–१०; २६–८४; २७–१५७ चि. ११–३७; २६–१७१; २९–६६,९९.

अगुरु [सु. अ.]–सू ३–२८; ४–१६ | ३७; १७ | ४२; ५–२१,२७,६३; ६–१६,१७,२५; २६–४९; वि. ८–१४३, १५१; इ २–१३; चि. १–१ | ४८, १ | ५८, १ | ६३, २ | १२; २–३ | २८; ३–२५३, २६७, २६९; ६–२८, ३९, ५०; १२–६५, ७०; १५–१४८; १७–१२३; २४–१३३; २५–९१; २६–१५९, १८२, १८८, २१०; २७–४२; २८–१५०, १६८, १७९; २९–९२, १०७; ३०–३२५; क. १–२३; सि. १२–१९ | ३.

अग्नि [सु. अ.] चि २६–२०; सि. ४–२१. ७–६३.

अग्निमन्थ [सु. अ.]–सू. २–११, ४–१२ | २६; १७ | ४२; २१–२४. चि. १–१ | ४३, १ | ६२; ३–२६७; ६–२८; १३–१७०; १४–४५; २७–५७; सि. १०–१९,३०

---

* ग्रन्थस्थानाध्यायसंक्षिप्तसंज्ञानां विवरणम् ।

Explanation of the Marks of Reference.

[सु.]	सुश्रुतसंहितायामस्ति ।	Refers to the Suśruta Saṃhitā
[अ.]	अष्टाङ्गहृदयेऽस्ति ।	,, ,, Aṣṭaṅgahṛdaya
;	अस्माच्चिह्नादनन्तरमध्यायस्याङ्कोऽस्ति ।	This mark is followed by the number of the chapter.
—	अस्माच्चिह्नादनन्तरं श्लोकस्याङ्कोऽस्ति ।	This mark is followed by the number of the Verse.
सू.	चरकसंहितायां सूत्रस्थानम् ।	Refers to Sūtrasthāna in the Caraka Saṃhitā
नि.	,, निदानस्थानम् ।	,, ,, Nidānasthāna
वि.	,, विमानस्थानम् ।	,, ,, Vimānasthāna
शा.	,, शारीरस्थानम् ।	,, ,, Śarīrasthāna
इ.	,, इन्द्रियस्थानम्	,, ,, Indriyasthāna
चि.	,, चिकित्सास्थानम् ।	,, ,, Cikitsasthāna
क.	,, कल्पस्थानम् ।	,, ,, Kalpasthāna
सि.	,, सिद्धिस्थानम् ।	,, ,, Siddhisthāna

अलक्तक-चि. १७-१३२; १८-७३; ३०-२२६.

अलर्क [सु. अ.]-चि. ७-१७; ८-१५१. सि. १०-२३.

अलाबु [सु.अ.]-सू. २७-११२; नि. ५-७ | ६; चि. ७-१९, ५२; २६-१४; २९-३६.

अववात-चि. ७-१२९.

अवघातक-क. ८-३.

अवल्गुज [सु. अ.]-सू. २७-३३, १०२. नि. ८-१४२. चि. ७-१६९, १७०, १७१; १४-१२३, १९-३९.

अवल्गुजक-सू. २७-९६.

अवाक्पुष्पी-चि. ७-११४; १४-२३४; २९-६२.

अश्मथा सू. ४-१८ | ४९. शा. ८-२०, ५८.

अशोक [सु. अ.]-सू. ४-१८ | ४७; वि. ८-१४४

अशोकरोहिणी-सू. ४-१८ | ४८; शा. ८-६१.

अश्मन्तक [सु. अ.]- सू. १-११४, ११५; ४-१५ | ३३; १४-३१ वि ८-१४०,१४४; चि ६-३८; १४-४५; २६-१८४.

अश्मभिद् [सु. अ.]- चि. २६-४६ ६६; सि. ८-१३.

अश्मभेद [सु.अ.]-चि. २६-६४,६९. सि. ३-६५.

अश्मभेदक [सु. अ.]-सू. २३-१५; चि. २९-७३; नि. ९ ८.

अश्वकर्ण [सु. अ.] सू. ४-१७ | ४३; २५-४९; वि. ८-१४४; चि. ३-२५८; ११-३२; २३-२२०; क. १-८.

अश्वकर्णक-चि. ११-२८.

...-चि. २३-२४५.

...-सि. ९-८७.

...अ.]-सू. ३-८; ४-९ | २, १३६, १३९; वि.२-१ | ३४; -१२. १७-११९; १८-७५; ४; २७-४३, ५०; २८-१६६, १७०; २९-७३; ३०-२६०. सि. ३-३९; ४-४; १२-१६ | २, १६ | ६, १९ २.

अश्वत्थ [सु. अ.]- सू. ४-१५ | ३३; ५ २१; २५-४९; २७-१०५, १६४; वि. ८-१४४; चि. ३-२५८; ४-१०४; ६-३२; ११-३१; १४-२२५, २२४; १५-१२६; १९-९९; २१-८५; २५-४६, ८७, ११३, ११७; २६-९८; क. १-८; सि. ६-६६; ८-३८; ११-२४.

अश्वबला [सु]-चि. १-४ | ७.

अश्वमार [अ.]-चि. ७-९८.

अश्वहन्-सू. ३-१७; चि. २९-१४२; सि. ९-५१.

अश्वावरोहिका-सि. १०-३७.

असन [सु. अ.]- सू. ४-१७ | ४३; ५-७३; २५-४९; वि. ८-१५१; चि. १-२ | १२, ३ | ३, ४ | १३; ३-२५८; ४-९४; ६-३२; ७-१०१, १५२, १६५; २६-२७२; २७-५६; क. १-८.

असनपर्णी-चि. ८-१३९; चि. २६-७०.

असिततुरुष्क-चि. १८-११७; २३-१८१.

असिता-चि. १२-१०७.

असितोत्पल-शा. ८-२४.

आक्षिकीफल-सू. २७-१६१.

आखुपर्णिका- सू. ८-१५; चि. ३०-१०७; सि. ४-१८; १०-३२.

आखुपर्णी-सि. ३-६१; ८-९.

आ(अ)टरूषक [सु. अ.]-चि. ३-२५८; ४-६६; ७-७७; १५-१२७.

आढकि- चि. २६-१५६.

आढकी [सु. अ.]-सू. २१-२६; २७-३३; वि. ७-१७; चि. ४-३७; १०-२०; २३-६७, २४३; २८-१३०; २९-५१; सि. १०-३४.

आत्मगुप्ता [सु. अ.]-सू. १८-४, २४-४७; २७-३४; वि. ८-१३९; चि. १-१ | ७६; २-१ | २६, १ | २८, १ | ३३, २ | ४, २ | १४, ४ | २३, ४ | २८; ३-२५८; ११-३६, ६६; १८-७६; २६-१६८;

Si.
T.
Te.
Tu.
U.
Ur.

उमा [ग. अ.]-सू. २७-३४; चि. १७-८४; २५-५३, ७४; २९-१४०.

उरुबुक सू. ४-९ | ४.

उरुबूक [शु. अ.]-सू. १४-४२; २५-४९; २७-१०८; वि. ८-१३९; चि. १२-२५, २८; १३-६९; २६-६२; क. ७-५०.

उरुमाण [शु. अ.]-सू. २७-१५७; चि. १९-६५.

उशीर [शु. अ.] सू. ४-१० | ८, १२ | २०, १४ | २८, १७ | ४३, १७ | ४४; ५-२१; २५-४०; वि. ८-१३५, १४३; चि. ३-१४५, १९९, २०५, २०६, २१९, २४१, २४५, २५८; ४-३१, ४५, ७३, ७८, ८०, १०२; ६-२९, ३०; ७-१४४; ८-८३; ११-४४; १४-१८६; १५-१२५, १३७; १६-१०८; १९-५०; २०-३१; २१-५४, ७६, ८७; २२-४१; २३-७७, २००; २६-१७७, २०८, २१६; २८-१५८; २९-१०६, १११, ११४, १३४; ३०-२७५; सि. ३-६१; ४-२०; ६-४९, ८३; ८-१७; ९-८; १०-२२, ३९; १२-१६ | १.

ऊषण [शु. अ.]-सू. २४-५०; चि. १५-११७.

ऋद्धि [शु. अ.] चि. १-१ | ६३, ४ | १७; २-१ | २६, १ | ३४, २ | ५; ४-१०३; ११-३६, ४६, ६२; १८-३९, १०१, १२६, १७८; २६-८७, १६७; २८-१५९; २९-५६, ९३, १५३; सि. ३-४८, ४९.

ऋषभक [शु. अ.]-सू. ३-२२; ४-९ | १, १२ | १९; वि. ८-१३९; शा. ८-१९, ६२; चि. १-१ | ४४, १ | ६३, १ | ७६; २-१ | २५, १ | ३४, २ | ५; ३-२५८; ४-८४; ११-२९, ३५, ४४, ४५, ६२; १५-१५६; २३-९५, १९६, २६-९३, १६१, १६६; २८-१२५, १५१, १६१; २९-५५, ७२, ७७, ९३, १११; ३०-५०; क. २-१२; ४-१३; ७-१८; सि. ४-३; ९-८; १२-१९ | १, १९ | २.

ऋषभी [शु.] सू. ४-१० | ७.

ऋष्यगन्धा-सू. ४-९ | २; वि. ८-१३९.

ऋष्यप्रोक्ता-सू. ४-१० | ७; वि. ८-१३९; चि. ३-२५८; २९-७२.

एकाष्ठीला-सि. १०-२३.

एकेषीका [शु. अ.]-चि. ३-२६७.

एडगज [अ.]-सू. ३-३, १३, १५; २७-१३; चि. ७-९३, १०३, ११३, १२६, १२७, १६०, १६१.

एरका-सू. ३-२४, २७; चि. २९-१३४.

एरण्ड [शु. अ.] सू. २-१२; ४-१३ | २२, १७ | ४४; १३-१०; २५-४०; २६-८४, ९३; चि. १-१ | ४३; ३-२३५, २६७; ५-९२, १४१, १५०; ७-१०८, ११२; १३-६५, १७३; १४-४४; १५-७९; १७-७७; १८-१७१; १९-४८; २६-२९, ४६, १८२, २३७, २४०; २८-८५, ११४, ११५, १६१; २९-६१, ८१, ८३, १०२, १४०, १४१; ३०-१९८; क. ११-११ सि. ३-२६, २८, ४१, ६५; ४-४, १८; ७-५०, ८-१३; ११-३२; १२-१६ | २, १६ | ६.

एर्वारु [शु. अ.]-चि. २६-५२, ५३, ६४; सि. ९-८.

एर्वारुक [शु. अ.]-सू. २७-११०, १११, ११२; चि. २६-५२, ५३, ६०.

एलवालुक [शु. अ.] ४-१२ | २०, ११ | ४७; २५-४९; वि. ८-१४४; चि. ९-३५; १४-१३९; १६-१०८; क. १-२३.

एलवालु [शु.]-चि. १५-१६५.

एलवालुक-चि. १४-१५९.

एला [शु. अ.]-सू. २-४, ७; ३-५, २४, २८; ४-१६ | ३७, १७ | ४४; ५-२१; २३-१५; वि. ८-१३५, १४२, १५१; शा. ८-३६, ३८; चि. १-१ | ६४, १ | ६९; २-१ | ३१; ३-२६७; ५-७०, १५७; ६-४१, ५०; ७-७४, ८४, ८५, १२५; ८-१३७, १४५; ११-२१, ४०; १२-३६, ६५; १४-१६४; १५-१४८; १६५; १६-१२२; १७-१२३; १८-७१, ७३, ९२, १७६; २१-७४; २३-५८;

कर्कन्धु [सु. अ.]– सू. ४–१३ | २४; २५–४९; २७–१३२; शा. ८–४७; चि. १३–१२५; १४–१०; क. ११–७; सि. ३–८; ११–२६.

कर्कश [अ.]–सू. २७–९७; वि. ८–१४३.

कर्कारुका [सु. अ.]–चि. १९–३२.

कर्कोटक [सु. अ.]–सू. २७–९६; वि. ८–१४३; चि. ३–१८९३.

कर्कोटकी–क. ४–३.

कर्चूर–सू. २७–१५५.

कर्णिकार–क. ८–३

कर्दम–सि. ७–५७; ८–३६.

कर्पूर [सु. अ.]–चि. २८–१५३.

कपोलवल्ली–वि. ८–१३९.

कर्बुदार [सु. अ.]–सू. ४–१३ | २३; २७–९९, १०४; वि. ८–१३५; चि. १४–२०२; क. १–१४; सि. ७–६१; १०–३४.

कलम–सू. २६–८, ११; चि. १४–९५.

कलम्ब [अ.] सू. २७–१०१.

कलशी [सु. अ.]–चि. ३–१८७.

कलसी [सु. अ.]–चि. ३–२२४.

कलाय [सु. अ.]–सू. २७–२९, ९२, ९६३; चि. १४–१०; २०–३७; २५–६२; ३०–२५८.

कलिङ्ग [सु. अ.]–चि. ३–२२८; ७–४६, ९१; १५–१०१; सि. ३–५९, ६३; ११–२३.

कलिङ्गक [सु. अ.]–चि. ३–२००, २११; ६–४२; ९–६८; १२–४४; १६–६०, ९४; २६–२०१; क. ५–४; सि. ४–२०; ११–३४.

कशेरु [अ.]–चि. १४–१०.

कशेरुक [अ.]–सू. ३–२१; २७–११६; वि. ८–१३९, १४४; शा. ८–२४; चि. ३–२५८; ८–८४; १४–९; २१–८३; २६–५०, ७३; २९–९९; सि. १०–२८.

कशेरुका–चि. २१–५८; सि. ३–४९.

कसेरुक [सु. अ.]–चि. २६–१६९.

काकणन्तिका–नि. ५–७ | ८; चि. ७–२०; १४–१०.

काकनासा [सु. अ.]–चि. ७–१२३; १८–४०; ३०–५१, ५३; सि. ४–५, ९; १०–३७.

काकनालिका–वि. ८–१३९; चि. १–१ | ६४.

काकमाची [सु. अ.]–सू. ३–१७; २६–८४; २७–८९; नि. ५–६; वि. ८–१४३; चि. ७–९६; १२–७३; १४–१२४; १६–७०३, ८४; २६–२६९; २९–५२.

काकाण्ड [सु.]–सू. २७–३४; चि. २३–४९, ५२, ५३.

काकाण्डोला [सु. अ.]–सू. २७–३४.

काकाह्वा [अ.]–चि. २१–९०.

काकोदुम्बरिका [अ.]–वि. ८–१४३; चि. ७–१७०.

काकोलि–चि. ४–९५; २६–९३; सि. ३–४९.

काकोली [सु. अ.]–सू. ४–९ | १, ९ | २, १२ | १९, १७ | ४४; वि. ८–१३९; शा. ८–२४; चि. १–१ | ६४, ७६; २–२ | ५; ११–३५; १८–९९, १०१; २६–१७०; २८–१५९; २९–५६, ९३; क. ४–१३; ८–१९; सि. १०–२८; १२–१९ | ३.

काकोलीद्वय [सु. अ.]–चि. २९–७२.

काकोल्यौ [अ.]–चि. २५–९२.

काञ्चनक्षीरी [सु. अ.]– चि. १३–१३३; क. १०–१२.

काण्डीर–चि. ३–२६७; क. १–२५.

काण्डेक्षु–सू. ४–१२ | २०; २५–४९; नि. ४–१४; वि. ८–१३५; चि. २–१ | २४; सि. १०–३३.

कान्ता [अ.]–चि २५–११६.

कायस्था [अ.]–चि. ९–५७; १७–१४०३.

कारवी [सु. अ.]– सू. २७–३०७; चि. १२–६०; १३–१२६; १४–७२, ८९; २४–१८२, १८३; २६–२१९.

सि. ३–५६; ११–८, १२; १२–१६ | १. १२–१८ | १, १८.

कुटजत्वक्–सू. २५–४०; चि. ३–१०९; १०–१८; १४–१८५, १८७, १८८.

कुटन्नट [सु. अ.]– चि. १५–१२५; १८–७३; २४–१५९; सि. १०–२३.

कुटिञ्जर [सु.]–सू. २७–९९.

कुठेरक– सू. २–४; २७–१०१; नि. २–४; वि. ७–१७, २१; ८–१४२, १५१; चि. ३–२६७; २७–५४; क. १–२५.

कुतुम्बरु [सु. अ.] सू. २७–९८.

कुन्दुरु [सु.] चि. २८–१५३.

कुमारजीव–सू. २७–१००.

कुमुद [सु. अ.] सू. ४–१५ | ३४; १५–१२; २५–४८, ४९; २७–११७; वि. ६–१७; शा. ८–२४; चि. ३–२५८; २४–१५६; २९–१२८.

कुम्भी [सु.] वि. ८–१४४.

कुरण्टक [अ.] चि. २१–८९.

कुरुविन्द [सु.] सू. २७–१४.

कुलक [सु. अ.] सू. २७–९७; वि. ८–१४३; चि. ३–१८९; १७–९७; २३–२२५; २६–१५६; २७–२७, ३४; ३०–८४, २५९.

कुलत्थ [सु. अ.]– सू. २–१२; ३–१८; ४–१३ | २२; १३–८४, ९४; १४–२५; १५–७; १७–९९; २१–२५; २४–६; २५–४०; २६–८४; २८–२६; नि. २–४; ५–६; शा. ८–३४, ४१–५६; चि. १–३ | ६२; ३–१८८; ५–१६४; ८–६७, ६८, ७१; १२–६२; १३–११७; १४–४०, ९३; १५–८३, १४४; १६–८०, ८४, १२८½; १७–९३, ९४; १८–४३, १०९, ११६, १२९, १५८; २१–१९, १२८; २४–१५०; २६–४६, १५६; २८–१११, १२०, १२५½, १४०, १७६; २९–६, १०४; ३०–८८, २५८, २६४; क. १–१३; सि. ३–५६; ६६; ४–५, २९, ३९; ७–११, ३८, ५१; १०–२०; ११–३४; १२–१६ | ६, १८ | १६.

कुलत्थक चि. ८–१४३.

कुलिङ्ग–सू. ४–१२ | १५.

कुलिङ्गाक्षी वि. ८–१३९.

कुलीरशृङ्गी [अ.] सू. ४–१४ | ३०.

कुवल–सू. ४–१० | १०, १३ | २४; २५–४९; नि. २–४; वि. ८–१३६, १४०.

कुश [सु.अ.]–सू. २–२६; ३–२७; ४–१२ | १७, १५ | ३५; ८–२८; १८–१४; वि. ८–९ ११, १३९; शा. ८–१०, २९, ५७; चि. ३–२५८; ४–१०३; ६–४६; १४–२१५, २२५; १९–६४; २२–४४; २५–८४; २६–५०; क. १–९; सि. ७–३०; ९–८.

कुशपुष्पक–चि. २३–१२.

कुक्कुण्ड शा. ६–११.

कुष्ठ [सु. अ.]–सू. ३–४, ८, १०, १२, १३, १५, १८, २०, २३, २४, २८; ४–९ | ३, १२ | २०, १३ | २५; १४–३६, ५२; २३–१५; २५–४०; वि. ७–१७; ८–१४२, १५१; शा. ८–३४, ३८, ४१; इ. २–१३; चि. १–१ | ३१; ३–२६८, ३०७; ६–२८, ४२; ७–८४, ९३, १०२, १०६, ११३, ११७, १२६, १६०; १६९; ८–७७, १७६; ९–३७, ६५; १०–२५; १२–६५, ७३; १३–१०९, १२७, १५९; १४–५३, ९३, १३१, १६०; १५–१८२, १८८; १६–६०, ९४, १०९; १७–१४१; १८–५२; १९–१०५, ११८; २१–१२२; २३–५८, ६२, ७०, ७८, ९९, १११, ११४, ११५, २०१, २०२, २१२, २४५; २५–५१; २६–२०, २१, २२, १०१, १५३, १८२, १९१, २१६, २२३, २२६; २७–२५, ३७, ४३, ५४; २८–११३, १५३, १५८, १६८; २९–१०७, १४२, १४९, १५०; ३०–५८, ७२, १०६, १०९; क. १–२३; सि. ३–१४, ५७, ६७; ४–१३, २०; ७–२३; ८–१९; १०–१५, ३०; ११–१२, २३; १२–१६ | २, १६ | ६.

कुष्माण्डक–सू. २७–१०२.

नीलोत्पल [सु. अ.]–सू. ४-१७ | ४१; चि. ४–८६, ९९; ७–१६९; ८–११२; १४-१९३, १९७; १९–७५; २१–७६; २५–४७, ८८; मि. १२–१९ | १, १९ | २.

नीवार [सु. अ.]–सू. २७–१७; चि. ४–३६; २९–५०.

नैषध–नि. ४–५.

नैषधक [अ.]–सू. २७–१२.

न्यग्रोध [सु. अ.]–सू. ५–२२; २५–४९; २७–१०५, १६४; शा. ८–१९, २४; चि. ३–२५८; ४–५०, ७५; ११–३१; २१–७३, ८२३, ८५; २५–४६, ६३, ८४, ८७, ११०; ३०–११८; सि. १०–३८.

न्यग्रोधी–क. १२–३.

पञ्चाङ्गुल [अ.]–सू. २७–१०९.

पटोल [सु. अ.]– सू. ३–८; ४–११ | ११, १४–२९; २१–२६; २५–४९; २७–४, ९६; वि. ८–१३५, १४३; चि. ३–१८९, २००, २०१, २०४, २१३, २४१, २५२, २५३, २५८; ४–३८, ७५, ९०; ५–११५, ६–३०, ३८; ७–४३, ४६, ४७, ६२, ६८, ९७, १००, १२८, १३१, १३५, १३६, १४०, १४४; १२–५३, ६३; १३–११९, १५–१२६, १३५, १३८, १८१; १६–४७, ८७; १८–१११; १९–८७; २०–३५; २१–५२, ५४, ५९, ६०, ६१, ९७, १११; २४–१३९, १४५, १७१; २५–९०; २६–२४३; ३०–२५३, २७९; क. १–२२; सि. ३–३६, ५८, ६१; ४–१८; ८–८; १२–१९ | २.

पतङ्ग (तण्डुलविशेष) [सु. अ.]–सू. २७–९.

पतङ्ग (रक्तचन्दन)-चि. २६–२१०.

पत्तूर [सु. अ.]–सू. २७–१००; चि. ३–२६७, २६–४६.

पत्र [सु. अ.]–सू. ३–२९; ५–२१, २७, ६३; चि. १–१ | ६९; ३–२६७; ५–१५७; ६–४२; ७–७४, १३०; ११–२१, ४०; १२–३६; १४–१६४; १७–७७; क. ७–२५, ३२, ४६.

पत्रक–चि. १५–१६५.

पथ्या [सु. अ.]–चि. ५–१०५, १२२; ८–१००; १४–१५३; १५–९८, १०२, १२०; १६–५०. ९८; १८–११८, १२०, १२६; २१–१२५; २६–८६, ९७, १८९, २१७, २८७; ३०–८४; क. ७–१६, ५०; सि. ३–५४, ५८; ७–१९.

पद्म [सु. अ.]–३–२६; ४–१५ | ३१, १५ | ३४; १४–११; २५–४०, ४९; २७–१०५; वि. ६–१७; शा. ८–२४; इ. ५–१५; चि. १–१ | ५८; ३–२५८; ४–४४, ८०, ९४, १०७, १०८; ६–३१; १४–२३७; १८–८७; २१–५६, ५७, ७२, ७६; २५–८८; २९–६४, ९९, ११०, १२८, १२९; ३०–२२६; सि. ७–१३.

पद्मक [सु. अ.]-सू. ३–२४, २७; ४–१० | ८, १८–४७; ५–२१; वि. ८–१४४; चि. ३–२५८; ४–७३; ६–३०, ३८; ७–६८, १३१, १४५; ८–८३; ९–३७; ११–३१; १२–६५, ६८, ६९; १५–१२५, १३७; १७–८०, १४५; १८–८८, १७२, १७४, १७६; २१–७४, ७७, ८७; २३–२००, २४४; २६-१६८, २०८, २१६, २३४; २७–३०; २८–१५१; २९–६५, ९२, ११०, ११२, ११४, १३४, १४६; सि. ३–४८; १०–२२.

पद्मकेशर [सु. अ.]–सू. ४–१५ | ३१; ५–६५; वि. ८–१४४. चि. ४–७१; ८–८४; ११–१८; १९–७५, १०९; २३–५५; २६–२०८; २९–११२.

पद्मचारटि–चि. २३–५५.

पद्मरेणु [अ.]-सि. ३–५०.

पद्मा [अ.]–सू. ४–१५ | ३१; वि. ८–१४४; चि. १–४ | ७; ३–२५८.

पद्मोत्तरिका–सू. २६–८४.

पनस [सु. अ.]–सू. २५–४९; २६–८४; २७–१४३, क. ११–७.

मधुयष्टिका [सु. अ.]- चि. ३-२४६; १६-१००; २९-१०७; सि. १०-२१.

मधुयष्टी-चि. २३-१९६.

मधुयष्ट्याह्वा-सि. १०-२८.

मधुरसा [सु. अ.]- चि. ३-२५८; १६-६१.

मधुवल्ली-वि. ८-१३९.

मधुशिग्रु [सु. अ.]-नि. २-८; वि. ७-१७; चि. १३-१५५; १५-१३९; २६-२३७; २९-१५१.

मधुशिग्रुक [सु. अ.]-वि. ८-१४२: चि. १५-१३५.

मधूक [सु. अ.]- सू. ३-२१; ४-१५ | ३२, १७ | ४१; १३-१०; २५-४९; वि. ८-१३५; शा. ८-१०: चि. १-४ | १४; २-१ | २८, २ | १८; ३-२०६, २५८; ४-३३, ८१, ९४, १०४; ५-१२३; ११-२०, २७, ७१: १५-१४६, १५०; १९-८८; २३-१८८, २०२; २६-८७, १६१, १७९; २९-९६; क. ५-१०३: सि. ३-५३; ६-५३; ७-१३; १०-४२; ११-२४: १२-१६ | ११, १९ | ३.

मधूकपुष्प चि. १-१ | ५८.

मधूकपुष्पी वि. ८-१३९.

मधूलक-वि. १-४.

मधूलिका [सु. अ.]-वि. ८-१३९: चि. १७-१११: क. ४-१३; सि. १२-१९ | १, १९ | २, १९ | ३.

मधूली [अ.]-सू. २७-२२.

मयूरक [सु. अ.]-चि. १२-२३; २३-५७.

मरिच [सु. अ.]- सू. २-३, २३; ३-१२; ४-९, ६, ११ | १५, १३ | २७, १७ | ४५; २८-२९८; वि. ८-१४२, १५१; चि. २-१ | ३०, २ | २४, ४ | ११, ४ | २१; ७-४८, ७४, ८७, ११७; ८-१४२, १४५; ९-६७, ६८; ११-४०, ६७, ७४, ८६; १२-३२, ३६; १४-९२, १३९, १५८, २०६; १५-१०२, १२०, १६४, १६८; १६-१२९; १७-९८, ११०; १८-७१, ७२, ९०, १०४, १८०; १९-१०७, १११; २०-३९; २३-५०, १८३; २४-२३, १२७, १२८, १७७, १८१, १८३; २६-१३८, १९२, २१६, २१९, २४७, २६१; ३०-७२, ९२; क. ७-१५, २५, ४०; १२-२३; सि. ८-४२; ९-१७.

मरुबक-क. १-२३.

मर्कट-चि. २३-१३.

मर्कटी [सु. अ.]-चि. ९-४५.

मलपू [सु. अ.]-चि. ७-१६२; १६५.

मसूर [सु. अ.]-सू. २७-२८, २९; चि. ३-१८८; ४-३७, ४६; ५-११६; १४-१०; १६-४२; १९-५०; २०-३७; २१-६०, ८०, १११; २२-३१; २५-६२; २९-५१, १३४; ३०-२५८; सि. ८-३८; ९-४०.

मसूरविदला-वि. ८-१३६; चि. ७-१३७; क. ११-१४.

महाजालिनि-क. ३-१७; ४-३.

महापद्म-चि. १४-१२४.

महापुरुषदन्ता [अ.]-वि. ९-४६.

महामेदा [सु. अ.]-सू. ४-९ | १; वि. ८-१३९; चि. १-४ | ६; ३-२५८: २६-१६८; २८-१६०; २९-६१; क. ४-१३; सि. १२-१९ | १, १९ | ३.

महाव्रीहि [अ.]-वि. ४-५.

महावृक्ष [सु. अ.]- सू. ४-४; वि. ८-१३६; क. १-६; १०-६, २२.

महाशालि [सु.]-सू. २७-८, ११; चि.-१४-९५; २१-११३.

महाश्रावणी [सु.]-वि. ८-१३९; चि. १-४ | ६; ३-२५८; २८-१६०.

महाश्वेता [सु. अ.]-सू. ४-१३ | २७; सि. ९-८७.

महासहा [सु. अ.]-वि. ८-१३५, १३९; क. ४-१६; सि. १२-१९ | २.

शाद्वल [अ.]–चि. १६–१२१; २१–७५; २९–१३१.

शारद (पथिक) [अ.]–सू. २७–१४.

शार्ङ्गेष्टा [सु. अ.]–सू. २७–९६; वि. ८–१३५; चि. १८–७१; ३०–२६०, २६६, २७७, २८०; सि. ३–५६.

शाल [सु. अ.]–सू. ४–१८ | ४७; २५–४९; वि. ८–१४४; चि. ३–२५८; ६–२७; ११–३१; सि. ११–२४.

शालकल्याणी–सू. २७–१०२.

शालपर्णी [सु. अ.]– सू. २–११, २०; ४–१६ | ३८; वि. ८–१३९; चि. ३–२६७; १९–२६, ५०; सि. १०–१९.

शालि [सु. अ.]–सू. ४–१२ | १७; ५–५, १२; ६–२८, ३८, ४३; ७–११; १५–७, १६; २१–३१, ५२; २७–४, ९, १२; वि. ८–१३९; शा. ३–४ | ५; ८–९, १९, २४, २९, ५६, ५७; चि. १–१ | ४४, १ | ७६, १ | ७७, २ | ४, २ | ११, २ | १३; २–२ | ७, ३ | ८, ३ | १६, ४ | २३; ४–३६, ८७, १०३; ५–११०, १३३; ६–२०; ७–६३; ८–६९; ११–३२; १४–१९१, १९३, २०५, २११; १६–४१; १७–१००, ११३; १८–७६, ९७; १९–३५, ३६, ३९; २०–२७, ३३, ३५; २१–११०, ११४; २२–२८; २३–२२४; २४–१३२, १३८; २५–११२; २६–५०, १४८; २७–४०; २८–१८५; २९–५०; ३०–१५२, २५७; क. १–२४; सि. ३–५१; ८–४१; १२–१६.

शालिपर्णी [सु. अ.]–सि. १२–१६ | २, १६ | ५, १६ | ११.

शालूक [अ.]–सू. ५–१०; २७–११६; शा. ८–२४; चि. ३–२५८; १४–९; २१–७९; २६–७६, १६८; ३०–८९.

शालेय–चि. ४–७५.

शाल्मलि–सू. २७–९९, १०४; वि. ८–१३५; चि. ४ | ३९, ७०; १४–२२७; १९–६४.

शाल्मलिक–वि. ८–१३५.

शाल्मली [सु. अ.]–सू. ४–१५ | ३२; चि. ३–२५८; १४–२०२, २२५, २३६; १५–११३; २५–६३; २७–२९; ३०–७५, ९१.

शावरक [सु.]–चि. १५–१५८; २६–२३३.

शिंशपा–सू. २५–४९; वि. ८–१४४; शा. ८–३८; चि. १–२ | १२, ३ | ३; क. १–८.

शिग्रु [सु. अ.]–सू. २–३, २३; ३–८; ४–१३ | २७; १४–३१; २३–१९; २७–१७०; नि. २–४; वि. ७–१७; ८–१३५; चि. ३–२६७; ७–१०६, १०९, ११३; १२–६७, ७२; १३–१५८; १४–४५; १७–९८; २६–२२६; २४०; २७–५२; २८–१७९; सि. ८–९; ११–२४.

शिग्रुक [सु. अ.]–सू. १३–१०; वि. ८–१४२; चि. १३–१०८; २३–१८३; २६–६६; १८६; २७–५५; २८–१६८.

शितिवारक [अ.]–चि. २६–५६, ६०.

शिशिर–सू. २७–१८.

शिरीष [सु. अ.]–सू. २–५; ३–४, २८, ३१; ४–११ | १६, १८ | ४७; २५–४०, ४९; वि. ८–१४४, १५१; शा. ८–३२; चि. ६–३१; ७–९६; १४–५३; १७–११४; २१–८५, ९०, ९१; २३–४९, ५२, ५३, ५५, ७१, ७८, ९९, १९३, २००, २०२, २०४, २०८, २०९, २१२, २१८, २४२; २६–१८४; २८–१५२.

शिवा [अ.]–सू. ४–१८ | ४९; शा. ८–२०, ५८.

शीतक–वि. ८–१४०.

शीतकुम्भिका–चि. ३–२५८.

शीतपाकी [अ.]–वि. ८–१३९; चि. ३–२५८.

शीतपाक्य–चि. ३–५३.

शीतवल्ली–चि. ३–२६७.

शुकबर्ह–सू. ५–७३.

स्थिरादिपञ्चमूल-चि. ३-४८; १२-१६ | १.

स्थिरादिपञ्चमूली [सु. अ.]- सि. ९-८.

स्थौणेय-चि. २३-५४; २८-१५४.

स्थौणेयक [सु. अ.]-चि. ३-२६७; क. १-२२.

स्नुह् [सु. अ.]-सू. २५-४०; चि. १३-१४०, १४१, १६७; २३-२४१; २६-२४; क. १०-१६, १८.

स्नुग्गुडा-क. १०-८.

स्नुही [सु. अ.]-सू. १-११४, ११५; चि. २३-२०९.

स्पृक्का [सु. अ.]-चि. १२-६६; २३-५४, ७७; २८-१६२.

स्फूर्जक [सु.]-चि. ८-१४४.

स्यन्दन [सु.]-सू. २५-४९; वि. ८-१४४; चि. ३-२५८.

स्योनाक [अ.]-चि. ३-२६७; १३-१७०; १५-१३४; १७-८०; २८-१७३.

स्वगुप्ता [अ.]-चि. ११-४५; १८-३९; २६-८७; सि. ४-१०.

स्वयङ्गुप्ता [सु. अ.]-चि. १-१ | ५८; २-३ | १५; ९-४३; १८-५७.

स्वर्णक्षीरिणी-सू. ४-९ | ४; क. ७-१६, ५८, ६०.

स्वर्णक्षीरी [अ.]-चि. १३-१२६, १६४; १६-६६; २३-२०३; २७-३६.

स्वर्णयूथिका-सि. १०-३१.

स्वादुकण्टक [सु. अ.]-चि. ८-१३५; क. १-२२.

हंसपदी [अ.]-चि. २३-२२०, २९-९२.

हंसपादी [सु. अ.]-सू. ४-१० | ९; वि. ८-१३९.

हपुषा [सु. अ.]-सू. २३-२०; चि. ५-७१, ७९; १३-१०५, १२५, १३३; १४-४३, ६३, ६९, ७१, ७२; १९-२७; २४-१२१; २६-६१; सि. ३-४०; १२-१६ | २, १८ | ९, १८ | १२.

हयगन्धा [अ.]-चि. २८-१७३.

हयमारक [सु.]-सू. ३-१४.

हरिचन्दन [सु. अ.]-शा. ८-९.

हरिद्रा [सु. अ.]-सू. ४-९ | ३, ११ | १३, ११ | १६; नि. ४-३४; वि. ८-१३५, १४३, १५१; शा. ८-३२, ४४; चि. १-१ | ४९, १ | ७७; ६-२६, ३८; १४-५२, ५४; १६-५३, ९८; १७-७७; २३-६९; २६-१८४; २९-८६, १४२; क. १-१९; सि. १०-२३.

हरिद्रे [सु. अ.]-सू. २-५; ३-३, ८, १४, २५; २३-१२, १९; चि. ६-२७; ७-१०८, १४५, १५३; १३-१५९; १५-१८२; १६-४७, ९९, ११९; २३-१९१, १९८, २१६, २३१; २५-८५; २७-३१.

हरीतकी [सु. अ.]- २ १४ १३-९२; २५-४०; वि. ८-१३६; चि. १-१ | २, १ | २९, १ | ३४, १ | ३६, १ | ३७, १ | ४ | ४६, १ | ७५, १ | ७६, १ | ७७; ३-३० ९-३-१५८; १६-२७; १२-२१, २२; १३-१५२; १४-६७, ११९, १३८, १४८; १५-१४२; १६-६८; १८-५८, ११५; २६-२२, ८३, २३३; २७-२८, ३०, ३२; क. १-१६; ११-११; १२-१५, २७.

हरेणु [सु. अ.]- सू. ३-५, ६५; २७-२८; नि. ४-५; वि. ८-१३५; चि. १५-१६५; २१-७७, ८०; २३-१०२, २२६; २५-६२; २८-१५१, १६०; सि. ४-१४.

हरेणुक [सु.]-शा. ८-५६; चि. २३-७७.

हरेणुका [सु. अ.]- सू. ५-२०; वि. ८-१५१; चि. ३-२६७; ४-४७; २३-७७, १९७; २९-१५०; क. १-२३.

हस्तिदन्ती-[सु.]-सू. १-७७.

हस्तिपर्णिनी-सू. १-८४.

हस्तिपर्णी-सू. १-८२.



चरकसंहितागतजङ्गमद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः

Reference to the Section, Chapter and Verse of the Animal Substances in the Caraka Saṃhita

चरकसंहितागतपार्थिवद्रव्याणां स्थानाध्यायश्लोकोल्लेखः।

Reference to the Section, Chapter and Verse of the Mineral Substances in the Caraka Samhita

वृद्धलघुत्रयीगतरोगाणां स्थानखण्डाध्याय-श्लोकोल्लेखयुतानि नामानि* ।

Names and references to the Section, Chapter and verse of the diseases, mentioned in the Vṛddhatrayī and the Laghutrayī (the big triad and the small triad of Medical works).

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	स्त. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अजीर्ण—	चि. १५-४२.	सू. ४६-४९९.		६-५,६.	पू. ७-९.	म. ६-१३.
वातज			सू. ८-२५.			,, ६-१६.
पित्तज			,, ८-२६.			,, ६-१६.
कफज			,, ८-२५.			,, ६-१६.
आमजन्य		सू. ४६-५०२.	,, ८-२५.	६-१०.	पू. ७-१०.	,, ६-१८.
विदग्धजन्य		उ. ४६-१०, सू. ४६-५०२.	,, ८-२६.	६-११.	,, ७-१०.	,, ६-१९.
विष्टब्धजन्य		सू. ४६-५०२.	,, ८-२६.	६-१२.	,, ७-९.	,, ६-२०.
रसशेषजन्य	-	सू. ४६-५०३.	,, ८-२९.	६-१३.	,, ७-१०.	,, ६-२१.

*वृद्धत्रयी—

चरकसंहिता-मुम्बय्यां निर्णयसागरमुद्रणालये मुद्रिता तृतीयावृत्तिः १८६३ शकाब्दः

सुश्रुतसंहिता- ,, ,, १८६० ,,

अष्टाङ्गहृदयम्- ,, मुद्रितम् षष्ठं संस्करणम् ,, ,,

लघुत्रयी—

माधवनिदानम्- ,, ,, चतुर्थं संस्करणम् १८६१ शकाब्दः

शार्ङ्गधरसंहिता- ,, मुद्रिता द्वितीयं संस्करणम् १८५३ शकाब्दः

भावप्रकाशः-वाराणस्यां हरिदास संस्कृत सिरीज ३९ चौखम्बा प्रथमावृत्तिः १९३५ विक्रमाब्दः

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता स. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
दिनपाकि						म. ६–१७.
प्रतिवासर						,, ६–१७.
विसूचिका	वि. २–१०.	उ. ५६–६.	सू. ८–७.	६–१६.	पू. ७–११.	,, ६–२४.
विलम्बिका		,, ५६–९.	,, ८–२८.	६–११.	,, ७–११.	,, ६–३२.
अलसक	वि. २–१०.	,, ५६–८.	,, ८–११.	६–२०.	,, ७–११.	,, ६–२८,२९.
अतत्त्वाभिनिवेश–	चि. १०–५५.					
अतिसार–	,, १९–४.	,, ४०–३.	नि. ८–१, ३.	३–४.	,, ७–७.	,, २–६.
वातज (अनुग्रथित)	,, १९–५.	,, ४०–१०,११.	,, ८–५.	३–६.	,, ७–७.	,, २–४३.
पित्तज	,, १९–६.	,, ४०–१०,११.	नि. ८–८,९.	३–७.	,, ७–७.	,, २–४५.
कफज	,, १९–७.	,, ४०–११,१२.	नि. ८–९, १०.	३–७.	,, ७–७.	,, २–६५.
सन्निपातज	,, १९–८.	,, ४०–१२,१३.	नि. ९–१०.	३–९.	,, ७–७.	,, २–८४.
भयज	,, १९–११,१२.		नि. ८–१२,१३.		,, ७–७.	,, २–१०१,१०२.
शोकज	,, १९–११,१२.	,, ४०–१३,१४.	नि. ८–१३.	३–९,१०.	,, ७–७.	,, २–९९,१००.
आमातिसार	,, १९–५.	,, ४०–१५,१६.	नि. ८–१४.	३–११.	,, ७–७.	म. २–१०४.
ज्वरातिसार				३.		,, ३–१.
रक्तातिसार	,, १९–७०.	,, ४०–११५,११६.		३–२०.		,, ३–४९.
अपची–		नि. ११–११. चि. १८–१७.	उ. २९–२५.	३८–९,१०.		,, ४३–९.
अपतर्पणज रोग–	सू. २३–२६.		सू. १४–२९,३१.			
अपस्मार–	नि. ८–५. चि. १०–३.	उ. ६१–३.	उ. ७–१.	२१–१.	,, ७–४०.	,, २२–३.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
वातज	नि. ८-८|१ चि. १०-९.	उ. ६१-११, १२.	उ. ७-९- १२.	२१-३.	पू. ७-४०.	म. २२-५.
पित्तज	नि. ८-८|२. चि. १०-१०.	,, ६१-१२, १३.	,, ७-१२, १३.	२१-४.	,, ७-४०.	,, २२-६.
कफज	नि. ८-८|३. चि. १०-११.	,, ६१-१४, १५.	,, ७-१४, १५.	२१-५.	,, ७-४०.	,, २२-७.
सन्निपातज	नि. ८-८|४. चि. १०-१२.	,, ६१-१७.	,, ७-१५.	२१-६, ७.	,, ७-४०.	,, २२-८.
आगन्तुज	नि. ८-९. चि. १०-५३.					
अभिघातजरोग-						
शिरोभिघातज	सि. ९-६.					
हृदयाभिघातज	सि. ९-६.	उ. ४३-३.				
बस्त्यभिघातज	सि. ९-६.					
अतभिहत		सू. १२-३८.				
उष्णवातहत		,, १२-३८.				
धूमाभिहत		,, १२-२९.				
शल्याभिहत		,, २६-१०.				
शीताभिहत		,, १२-३८.				
क्षाराभिहत		,, ११-२६.				
अमानुषोपसर्ग		उ. ६०-१.				
अम्लपित्त—	चि. १५-४७.			५१-१.	पू. ७-१०३.	म. १०-२.
अधोगत				५१-२.		,, १०-४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ऊर्ध्वगत				५१-४-६.		म. १०-३.
अरुचि—	चि. ८-६०, ६१.					
अरोचक—	चि. २६-१२४.	उ. ५७-१.	नि. ५-२८.	१४-१.	पू. ७-२७.	म. १५-१.
वातज	,, २६-१२४. ८-६१.	,, ५७-६.	,, ५-२८. चि. ५-५०.	१४-२,४.	,, ७-२७.	,, १५-११.
पित्तज	,, २६-१२५. ,, ८-६१.	,, ५७-४.	नि. ५-२८. चि. ५-५१.	१४-२,४.	,, ७-२७.	,, १५-३.
कफज	,, २६-१२५. ,, ८ ६१	उ. ५७-५.	नि. ५-२८. चि. ५-६१	१४-२,४.	,, ७-२७.	,, १५-२.
सन्निपातज	,, २६-१२६ ८-५१.	उ. ५७-५.	नि. ५-२८.	१४-३,४.	,, ७-२८.	,, १५-३.
द्वेषज	,, २६-१२६. ,, ८-६.	,. ५७-६.				
चित्तविपर्ययज	,, ८-६०.	,, ५७-६.	नि. ५-२८.		,, ७-२८.	,, १५-३.
अर्बुद—	,, १२-८७,	नि. ११-१३. चि. १८-३०	उ. २९-१४, १५	३८-१८,१९.	,, ७-६९.	,, ४४-१८, १९.
वातज		नि. ११-१४.	,, २९-१४,१५.	३८-१८,१९.	,, ७-६९.	,, ४४-१८,१९.
पित्तज		,, ११-१४.	,, २९-१४,१५.		,, ७-६९.	,, ४४-१९.
कफज		,, ११-१४.	,, २९-१४,१५.		,, ७-६९.	,, ४४-१९.
रक्तज		,, ११-१५,१६	,, २९-१६,१७.	३८-२०,२१.	,, ७-६९.	,, ४४-२०,२१.
मांसज		,, ११-१७,१८.	,, २९-१४,१५.	३८-२२,२३.	,, ७-६९.	,, ४४-२२.
मेदोज		,, ११-१४. चि. १८-४१.	,, २९-१२,१५.		,, ७-६९.	,, ४४-१९.
शर्करार्बुद		नि. १३-२५,२८.	,, २९-१७,१८.	५५-२४.	,, ८-९१.	म. ४४-६१ ९८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः रा. अ. श्लो.
अध्यर्बुद		नि. ११-२०.		३८-२५.		म. ४३-२४.
द्विरर्बुद		,, ११-२०.		३८-२५.		,, ४३-२४.
अर्शस्-	चि. १४-७.	नि. २-४. चि. ६	चि. ८. नि. ७-२.	५-१,२.	पू. ७-१२.	,, ५.
शुष्क			,, ७-९.		,, ७-१३.	
आर्द्र			,, ७-९.		,, ७-१३.	
वातज	,, १४-११-१३.	नि. २-१०.	,, ७-२८-३४.	५-३,४.	,, ७-१२.	,, ५-१२-१७.
पित्तज	,, १४-१४-१६.	,, २-११.	,, ७-३४-३७.	५-५,६.	,, ७-१२.	,, ५-१८-२०.
कफज	,, १४-१७,१८.	,, २-१२.	,, ७-३७-४१.	५-७,८.	,, ७-१२.	,, ५-२८-३२.
रक्तज		,, २-१३.	,, ७-४३-४५.	५-२४-२६.	,, ७-१२.	,, ५-२१-२७.
सन्निपातज	,, १४-२०.	,, २-१४.	,, ७-४२.	५-९.	,, ७-१२.	,, ५-३४.
सहज	,, १४-८.	,, २-१५.	,, ७-३.		,, ७-१३.	,, ५-३५.
उत्तरकालज	,, १४-९.		,, ७-३.		,, ७-१३.	
द्वन्द्वज	,, १४-३०.		,, ७-४२.	५-९.	,, ७-१२.	,, ५-३३.
अलसक-	वि. २-१२.	उ. ५६-७,८.		६-१९,२०.	,, ७-१०.	,, ६-२८,२९.
अर्म-		,, ४-३.	सू. ८-६-१०.	५९-६५,६६.		
अलर्क- (जलत्रास)		क. ७-४३.		६१-५७-६३.		
अश्मरी-	चि. २६-३६-३८.	नि. ३-३४. चि. ७	नि. ९-६,७.	३२-१,२.	,, ७-५९.	,, ३६.
वातज	,, २६.	नि. ३-१०.	,, ९-११,१२.	३२-६-८.	,, ७-५९.	,, ३६-६,७.
पित्तज		,, ३-९.	,, ९-१३.	३२-८,९.	,, ७-५९.	,, ३६-२३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाश: ख. अ. श्लो.
कफज		नि. ३–८.	नि. ९–१४.	३२–९,१०.	पू. १७–५.	म. ३६–२९.
शुक्राश्मरी		,, ३–११,१२.	,, ३–१६–१८.	३२–११–१४.	,, ८–४९.	,, ३६–३८.
शर्करा	नि. २६–३९.	,, ३–१३,१४.	,, ९–१८,१९.	३२–१४,१५.	,, ७–४९.	,, ३६–४०.
असृग्दर– (रक्तप्रदर)	,, ३०–२०४–२२३.	शा. २–१८–२०.	उ. ३३–४३.	६१–१,२.	,, ७–१७६.	,, ६८–३.
वातिक				६१–४.	,, ७–१७६.	
पैत्तिक				६१–३.	,, ७–१७६.	
कफज				६१–३.	,, ७–१७६.	
सान्निपातिक				६१–४.	,, ७–१७६.	
आमदोष–	चि. २–१०.	सू. ४६–५०२.	सू. ८–८–९.	६–२२.	,, ७–१०.	
आमकफ						,, १–५४.
आमपित्त	,, २२–१५.					,, १–५२.
आमवात					,, ७–४१.	,, २५–२–९. ४९,५०.
आढ्यवात	,, २८–६६. ,, २९–११.		,, १५–४.	२४–		,, २८.
आर्तवदोष—	चि. ३०–२०४–२१०.	शा. २–५.			,, ७–१७५.	,, ६८–३.
वातज	,, ३०–२१२, २१३.	,, २–५.	शा. १–१०.		,, ७–१७५.	,, ६८–३.
पित्तज	,, ३०–२१४–२१६.	,, २–	,, १–१०.		,, ७–१७५.	,, ६८–५.
कफज	,, ३०–२१६–२१८.	,, २–५.	,, १–१०.		,, ७–१७५.	,, ६८–४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पित्तकफज		,, २-५.			,, ७-१७५.	
रक्तज		,, २-५.	,, १-११.		,, ७-१७५.	
कफवातज		,, २-५.	,, १-११.		,, ७-१७५.	
वातपित्तज		,, २-५.	,, १-११.		,, ७-१७५.	
सन्निपातज		शा. २-५.	शा. १-१२.		पू. ७-१७५.	
आनाह (आध्मान)-	चि. २८-२९.	उ. ५६-२०,२१.	नि. ११-६०.	२७-१७.	,, ७-४९.	म. ३०-१९.
प्रत्यानाह—					,, ७-४९.	
उदररोग-	,, १३-९-१५.	नि. ७-१-६ चि. १४-१.	,, १२-१.	३५-१,२.	,, ७-५१.	,, ४०-१-३.
वातज	,, १३-२३-२५.	नि. ७-८,९. चि. १४-५.	,, १२-१४, १५.	३५-५-८.	,, ७-५१.	,, ४०-५-८.
पित्तज	,, १३-२६-२८.	नि. ७-९,१०. चि. १४-६.	,, १२-१६, १७.	३५-९,१०.	,, ७-५१.	,, ४०-९,१०.
कफज	,, १३-२९-३१.	नि. ७-१०. चि. १४-७.	,, १२-१८, १९.	३५-११,१२.	,, ७-५१.	,, ४०-९,१०.
सन्निपातज	,, १३-३२-३४.	नि. ७-११,१४. चि. १४-८.	,, १२-२०, २१.	३५-१३-१५.	,, ७-५१.	,, ४०-१२-१५.
प्लीहोदर यकृद्दाल्युदर	,, १३-३५-३८.	नि. ७-१४,१६. चि. १४-१३.	,, १२-२३-२७.	३५-१९,२०.	,, ७-५२.	,, ४१-१७,१८.
बद्धगुदोदर	,, १३-३९-४१.	नि. ७-१७,१८. चि. १४-१७.	,, १२-२८-३२.	३५-१९,२०.	,, ७-५२.	,, ४१-१९,२०.
छिद्रोदर	,, १३-४२-४४.	नि. ७-१९-२१. चि. १४-१७.	,, १२-३३-३६.	३५-२१,२२.	,, ७-५२.	,, ४१-२१,२२.
जलोदर	,, १३-४५-४८.	नि. ७-२१-२३. चि. १४-१८.	,, १२-३६-४०.	३५-२२-२४.	,, ७-५२.	,, ४१-२३,२४.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता खं. अ. श्लो.	भावप्रकाशः खं. अ. श्लो.
उदकोदर	चि. १३–४५–४८.		नि. १२-४१,४४.	३५-२५.	पू. ७-४३.	म. ४१-२५.
उदावर्त–	,, २६–६-१०.	उ. ५५–१.	सू. ४.	२७–१.	,, ७-४५.	,, ३०.
वातनिग्रहज	,, २६–७.	,, ५५–७.	,, ४–२.	२७-२.	,, ७-४८.	,, ३०–३.
मूत्रनिग्रहज		,, ५५–९,१०.	,, ४–४,५.	२७-४.	,, ७-४८.	,, ३०–५.
पुरीषनिग्रहज		,, ५५–८,९.	,, ४–३,४.	२७-३.	,, ७-४८.	,, ३०–४.
शुक्रनिग्रहज		,, ५५–१५.	,, ४–१९,२०.	२७-१०.	,, ७-४७	,, ३०–११.
वमिनिग्रहज		,, ५५–१४	,, ४–१७.	२७-९.	,, ७-४६.	,, ३०–१०.
क्षवथुनिग्रहज		,, ५५–११.	,, ४–५.	२७-७	,, ७-४६.	,, ३०–८.
जृम्भानिग्रहज		,, ५५–११.	,, ४–१०.	२७–५.	,, ७-४७.	,, ३०–६.
अश्रुनिग्रहज		,, ५५–१२	,, ४–१२	२७–६.	,, ७-४७.	,, ३०–६.
उद्गारनिग्रहज		,, ५५–१४.	,, ४–७,८.	२७–८.	,, ७–४७.	,, ३०–९
क्षुन्निरोधज		,, ५५–१६.	,, ४–११,१२.	२७–११.	,, ७–४५.	,, ३०–१२.
तृष्णानिरोधज		,, ५५–१६.	,, ४–१०,११.	२७–११.	,, ७–४५.	,, ३०–११.
श्वासनिरोधज		,, ५५–१७	,, ४–१८	२७–१२.	,, ७-४६.	,, ३०–१४.
निद्रारोधज		,, ५५–१७.	,, ४–१७,	२७-१२.	,, ७-४६.	,, ३०–१५.
कासरोधज			,, ४-१३,१४.			
उन्माद–	नि. ७-४. चि. ९–३,४.	,, ६२–३.	उ. ६–१.	२०–१.	,, ७–३७.	,, २१–६.
वातज	नि. ७–७ | १ चि ९–१०.	,, ६२–८.	,, ६–९–१०.	२०–७, ८.	,, ७–३७.	,, २१–८.
पित्तज	नि. ७–७ | २ चि. ९–११,१२.	,, ६२–९.	,, ६–१०,११.	२०–९, १०.	,, ७–३७.	,, २१–१०.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता स. अ. श्लो.	भावप्रकाशः रा. अ. श्लो.
कफज	नि. ७-७ | चि. ९-१३,१४.	उ. ६२-१०.	उ. ६-१२, १३.	२०-११, १२.	पू. ७-३७.	म. २१-१२.
सन्निपातज	नि. ७-७. चि. ९-१५.	,, ६२-११.	,, ६-१४.	२०-१३.	,, ७-३७.	,, २१-१३.
आगन्तुज	नि. ७-१०. चि. ९-१६.	,, ६०-७.	,, ६-१५- १७.	२०-१४, १५.	,, ७-३७.	,, २१-१५, १६.
शोकादिज,विषज			,, ६-१५-१७.	२०-१५.	,, ७-३७.	
देवोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-८.		२०-१८.	,, ७-३८.	,, २१-१९.
देवग्रहोन्माद		,, ६०-९.		२०-१९.	,, ७-३८.	,, २१-२०.
गन्धर्वोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१०.		२०-२०.	,, ७-३८.	,, २१-२१.
यक्षोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-११.		२०-२१.	,, ७-३८.	,, २१-२२.
पितृउन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१२.		२०-२२.	,, ७-३८.	,, २१-२३.
भुजगोन्माद		,, ६०-१३.		२०-२३.	,, ७-३९.	,, २१-२४.
राक्षसोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१४.		२०-२४.	,, ७-३९,४०.	,, २१-२५.
पिशाचोन्माद	,, ९-२०.	,, ६०-१५.		२०-२५.	,, ७-३९.	,, २१-२७.
वार्धकोन्माद		,, ६०-१६.			,, ७-३८.	
किन्नरोन्माद					,, ७-३८.	
गुरुशापोन्माद	,, ९-२०.				,, ७-३९.	
प्रेतोन्माद					,, ७-३९.	
सिद्धोन्माद	,, ९-२०.				,, ७-३९.	
अद्भुतोन्माद					,, ७-३९.	
जलाधिदेवतोन्माद					,, ७-३९.	

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
ब्रह्मराक्षसोन्माद	चि. ९–२०.				पू. ७–३९.	म. २१–२६.
कूष्माण्डोन्माद					,, ७–४०,	
कृत्योन्माद					,, ७–४०.	
वेतालोन्माद					,, ७–४०.	
गुह्यकोन्माद					,, ७–४०.	
भूतोन्माद	चि. ९–१७.			२०-१७.	,, ७–३८.	
उपदंश—		नि. १२–७.	उ. ३३–५.	४७.	,, ७–८२.	,, ५०.
वातज		,, १२–९.	,, ३३–५,६.	४७–२.	,, ७–८२	,, ५०–२.
पित्तज		,, १२–९.	,, ३३–६.	४७–२.	,, ७–८२.	,, ५०–२.
कफज		,, १२–९.	,, ३३–७.	४७–३.	,, ७–८२.	,, ५०–३.
सन्निपातज		,, १२–९.	,, ३३–८.	४७–४.	,, ७–८३.	,, ५०–३.
रक्तज		,, १२–९.	,, ३३–७.		,, ७–८३.	,, ५०–३.
उपजिह्विका–	सू. १८–१९, चि. १२–७७.	,, १६–३९.	,, २१–३५.	५६–३२.	,, ७–१३५.	,, ६५–९१.
ऊरुस्तम्भ–	,, २७.	चि. ५–३१,३२.		२५–१.	,, ७–१०५.	,, २४.
कफरोग–	सू. २०–१७.				,, ७–१२२–१२५.	,, २७–२–५.
कर्णरोग–	चि. २६–१२७, १२८.	उ. २०.	,, १७–१.	५७.	,, ७–१४२–१४४.	,, ६३.
वातज	,, २६–१२७, १२८.		,, १७–१–३.	५७–१४.	,, ७–१४२.	,, ६३–२०.
पित्तज	,, २६-१२७,१२८.		,, १७–४,५.	५७–१४.	,, ७–१४२.	,, ६३–२१.
कफज	,, २६–१२७, १२८.		,, १७–५,६.	५७–१५.	,, ७–१४२.	,, ६३–२२.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सन्निपातज	चि. २६–१२७, १२८.		उ. १७–७,८.	५७–१५.	पू. ७–१४२.	म. ६३–२३.
रक्तज			,, १७–६,७.			
कर्णकण्डू	,, २६–१२८.	उ. २०–११.	,, १७–१२.	५७–६.		,, ६३–११.
कर्णक्ष्वेड	,, २६–१२८.	,, २०–९.	,, १७–१२.	५७–४.	,, ७–१४३.	,, ६३–९.
कर्णगूथक		,, २०–११.		५७–६.		,, ६३–११.
कर्णनाद	,, २६–१२८.	,, २०–७.	,, १७–९.	५७–२.	,, ७–१४४.	,, ६३–६.
कर्णपाक		,, २०–२५.		५७–१२.		
कर्णप्रतिनाह		,, २०–१२.	,, १७–११.	५७–७.	,, ७–१४४.	,, ६३–१३.
कर्णविद्रधि		,, २०–१४.	,, १७–१४,१५.	५७–११.	,, ७–१४३.	,, ६३–१६.
कर्णशोथ	,, २६–१२७, १२८.	,, २०–१६.	,, १७–१२.	५७–१३.	,, ७–१४३.	,, ६३–१९.
कर्णस्राव	,, २६–१२७.	,, २०–१०.		५७–५.	,, ७–१४३.	,, ६३–१०.
कर्णार्बुद		,, २०–१७.	,, १७–१५.	५७–१२.	,, ७–१४३.	,, ६३–१५.
कर्णार्श		,, २०–१६.	,, १७–३५.	५७–१३.	,, ७–१४३.	,, ६३–१५.
[illegible]		,, २०–१[illegible]	,, [illegible]–१३,[illegible]	[illegible]	,, [illegible]१४३.	,, ६३–१४.
कृमिकर्ण	,, २६–१२७.	,, २०–१५	,, १७–१३.	५७–१२.	,, ७–१४२.	,, ६३–१८.
बाधिर्य	,, २६–१२७.	,, २०–८.	,, १७–१०.	५७–३.	,, ७–१४२.	,, ६३–८.
कर्णशूल—	चि. २६–१२७.	,, २०–६.	,, १७–१२,१३.		,, ७–१४३.	,, ६३–१८.
कर्णपालिरोग–		चि. २५.			,, ७–१४३.	,, ६३–२४.
उत्पात		,, २५–६,७.	उ. १७–२१, २२.	५७–१७, १८.	,, ७–१४[illegible]	,, ६३–२१.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
कच्छपिका		नि. २५–८.	उ. १७–२२, २३.	५७–१८–२०.	पू. ७–१४५.	म. ६३–२६.
पिप्पली			,, १७-१६,१७.		,, ७–१४५.	,, ६३–१६.
दुःखवर्धन		,, २५–९.	,, १७-२३,२४.	५७–२०.	,, ७–१४५.	,, ६३–२७.
परिपोटक		,, २५–५.	,, १७–२०,२१.	५७–२०.	,, ७–१४५.	,, ६३–२४.
परिलेही		,, २५–१०, ११.	,, १७–२४, २५.	५७–२१,२२.	,, ७–१४५.	,, ६३–२८.
पालिशोष			,, १७–१९.		,, ७–१४५.	,, ६३–५०.
विदारी					,, ७–१४५.	
कास—	चि. १८.	उ. ५२.	नि. ३–२२.	११.	,, ७–२१.	,, ११.
वातज	,, १८–१०–१३.	,, ५२–८.	,, ३–२२-२४.	११–५.	,, ७–२१.	,, ११–५.
पित्तज	,, १८–१४-१६.	,, ५२–९.	,, ३–२४,२५.	११–६.	,, ७–२१.	,, ११–६.
कफज	,, १८–१७–१९.	,, ५२–१०.	,, ३–२६,२७.	११–७.	,, ७–२१.	,, ११–७.
क्षतज	,, १८–२०–२३.	,, ५२–११.	,, ३–२७-३२.	११–८–११.	,, ७–२२.	,, ११–८–११.
क्षयज	,, १८–२४–३०.	,, ५२–१२.	,, ३–३२-३५.	११–१२,१३.	,, ७–२२.	,, ११-१२-१४.
कामला—	चि. १६–३४-३६. सू. १९–४ | ७.	,, ४४–१०.	नि. १३–१५.	८–१६–१८.	,, ७–१९.	,, ८–२०.
कोष्ठाश्रित	,, १९–४ | ७. चि १६–३६		नि. १३–१६.	९–१८.		,, ८–२०.
कुम्भकामला	,, १६–३७.	,, ४४–११.	नि. १३–१८.	८–१९.	,, ७–२०.	,, ८–२१.
शाखाश्रित	चि. १६–३४, ३६. सू. १९–४ | ७.		,, १३–१६.	८–१८.		,, ८–२१.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
अलस		उ. ४४-१२.	चि. १३-१९.			
पानकी		,, ४४-६.		८-२३.		
लाघरक		,, ४४-१२.				
लोदर			नि. १३-१९.			
किलास-	चि. ७-१७३.	नि. ५-१७.	नि. १४-३७.	४९-२६.		म. ५३-४५.
फिक्किस-	शा. ८-३२.		शा. १-५८.			
कुष्ठ-	नि. ५-६. चि. ७-१३.	नि. ५.	नि. १४.	४९-१-६.		,, ५३.
कपाल	नि. ५-८. चि. ७-१४.	,, ५-८.	,, १४-१३, १४.	४९-१०, ११.	पू. ७-८७.	,, ५३-१८.
उदुम्बर	नि. ५-८. चि. ७-१५.	,, ५-८.	,, १५-१६.	४९-११, १२.	,, ७-८७.	,, ५३-१९.
मण्डल	नि. ५-८. चि. ७-१६.	,, ५-८	,, १५-१६, १७.	४९-१२, १३.	,, ७-८७.	,, ५३-२०.
ऋष्यजिह्वक	नि. ५-८. नि. ७-१८.	,, ५-८.	,, १५-१८, १९.	४९-१३, १४.	,, ७-८८.	,, ५३-२४.
पुण्डरीक	नि. ५-८. चि. ७-१८.	,, ५-८.	,, १५-२६, २७.	४९-१४, १५.	,, ७-८९.	,, ५३-२३.
सिध्म	नि. ५-८. नि. ७-१९.	,, ५-१२.	,, १५-२१, २२.	४९-१५, १६.	,, ७-८८.	,, ५३-२१.
काकणक	नि. ५-८. चि. ७-२०.	,, ५-८.	,, १५-२९, ३०.	४९-१६, १७.	,, ७-९०.	,, ५३-२२.
एककुष्ठ	,, ७-२१.	,, ५-१०.	,, १५-२०.	४९-१७,१८.	,, ७-८८.	,, ५३-२५.
चर्म	,, ७-२१.	,, ५-१०.	,, १५-२०.	४९-१८.	,, ७-८९.	,, ५३-२५.
किटिभ	,, ७-२२.	,, ५-१४.	,, १५-२०.	४९-१८.	,, ७-८८.	,, ५३-३३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
विपादिका	चि. ७–२३.	नि. ५–२३.	नि. १५–२३.	४९–१९.	पू. ७–८८.	म. ५३–२८.
अलसक	,, ७–२३.	,, ५.	,, १५–२२, २३.	४९–१९.	,, ७–८८.	,, ५३–३४.
दद्रु	,, ७–२३.	,, ५–८.	,, १५–२४.	४९–२०.	,, ७–८९.	,, ५३–३१.
चर्मदल	,, ७–२४.	,, ५–१०.	,, १५–२९.	४९–२०.	,, ७–८९.	,, ५३–२६.
पामा (कच्छू)	,, ७–२५.	,, ५–१४.	,, १५–२८.	४९–२१.	,, ७–८९.	,, ५३–२९, ३०.
विस्फोटक	,, ७–२५.		,, १५–१७.	४९–२२.	,, ७–८९.	,, ५३–३२.
शतारु	,, ७–२६.		,, १५–२५.	४९–२२.	,, ७–८९.	,, ५३–३५.
विचर्चिका	,, ७–२६.	,, ५–१३.	,, १४–१८.	४९–२३.	,, ७–८७.	,, ५३–२७.
स्थूलारुष्क	,, ७–२७.	,, ५–९.	,, १४–१९.			
महाकुष्ठ	,, ७–२७.	,, ५–९.				
श्वित्र	,, ७–१७३.		,, १४–३७.	४९–३६.	,, ७–९०.	,, ५३.
रकसा		,, ५–१५.	,, १४–३८.			
क्लैब्य—	,, ३०.					,, ७१–२.
बीजोपघातज	,, ३०–१५८–१६२.					,, ७१–७.
ध्वजभङ्गज	,, ३०–१६३–१७५.					,, ७१–३.
जराजन्य	,, ३०–१७६–१८०.					
शुक्रक्षयज	,, ३०–१८२–१८५.					,, ७१–५.
पैत्रिक						,, ७१–४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	म. प्र. श्लो.
शिरोच्छेदजन्य						म. ७१-६.
सहज						,, ७१-८.
क्लीब- ईर्ष्यक	शा. २-२०.	शा. २-४०.	शा. १-७२.		पू. ७-१७१.	
आसेक्य		,, २-३८.	,, १-७२.		,, ७-१७१.	
कुम्भीक		,, २-४०.			,, ७-१७१.	
सुगन्धिन्		,, २-३९.			,, ७-१७१.	
षण्ढ		,, २-४०.			,, ७-१७१.	
तृणपुत्रिक	शा. ४-३१. चि. २-१८९.					
वार्ता	शा. ४-३०.					
कृमि—	सू. १९-९.					,, ७.
बाह्यज- यूका	,, १९-९.		नि. १४-४४.	७-३.	,, ७-१४.	,, ७-३.
लिक्षा	,, १९-९.		,, १४-४४.	७-३.	,, ७-१५.	,, ७-३.
पिपीलिका	सू. १९-९. वि. ७-१०.	उ. ५४-१२.				
रक्तज- केशाद	सू. १९-९. वि. ७-११.	,, ५४-१५.	,, १४-५२.	७-१७.	,, ७-१७.	,, ७-१४.
लोमाद	सू. १९-९. वि. ७-११.	,, ५४-१५.	,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.
लोमविध्वंस	सू. १९-९.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.
लोमद्वीप	वि. ७-११.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	
सौरस	सू. १९-१९. वि. ७-११.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, ७-१४.
औदुम्बर	सू. १९-९. वि. ७-११.		,, १४-५२.	७-१२.	,, ७-१६.	,, [illegible]

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
जन्तुमातृ	सू. १९-९. वि. ७-१२.		नि. १४-५२.	७-१२.	पू. ७-१६.	म. ७-१४.
कफज-अन्त्राद	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
उदराद-(उदरावेष्ट)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
हृदयाद-(हृदयोदक)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
चुरु (कुरु)	सू. १९-९. वि. ७-१२	उ. ५४-६.	,, १४-४९.	७-१०.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
दर्भपुष्प	सू. १९-९. वि. ७-१२.	,, ५४-१२.	,, १४-४९	७-१०.	,, ७-१६.	,, ७-१०.
सौगन्धिक	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-४९.	,, ७-१६.	,, ७-१०.
महागुद-(महाकुह)	सू. १९-९. वि. ७-१२.		,, १४-४९.	७-९.	,, ७-१५.	,, ७-१०.
पुरीषज-ककेरुक	सू. १९-९. वि. ७-१३.	,, ५४-८.	,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.
मकेरुक	सू. १९-९. वि. ७-१३.		,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०
लेलिह	सू. १९-९. वि. ७-१३.		,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.
सशूलक-(सुलूनाख्य)	सू. १९-९. वि. ७-१३.	,, ५४-१२.	,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.
सौसुराद-(सौसूलक)	सू. १९-९. वि. ७-१३.		,, १४-५५.	७-१५.	,, ७-१७.	,, ७-१०.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ग. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. प्र. श्लो.
आजव		उ. ५४–८.				
विजव		,, ५४–८.				
किप्य		,, ५४–८.				
चिप्य		,, ५४–८.				
गण्डूपद		,, ५४–८.				
चूरु		,, ५४–८.				
द्विमुख		,, ५४–८.				
महापुष्प		,, ५४–१२.				
प्रलून		,, ५४–१२.				
चिपिट		,, ५४–१२.				
पिपीलिका		,, ५४–१२				
दारुण		,, ५४–८.				
शोणितज–						
केशाद		,, ५४–१५.	नि. १४–५२.	७–१२.	पू. ७–१७.	
रोमाद		,, ५४–१५.				
नखाद		,, ५४–१५.				
दन्ताद		,, ५४–१५.				
किक्किश		,, ५४–१५.				
कुष्ठज		,, ५४–१५.				
परीसर्प		,, ५४–१५.			,, ७–१८.	
स्नायुक	चि. २९–११.					
खुड–			नि. १६–४.			

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
गण्डमाला—	नि. १२-७९.	नि. ११-१०, १२.	उ. २९-२५.	३८-८,९.	पू. ७-६७.	म. ४४-८.
गर्भिणीरोग—						
उपविष्टक	शा. ८-२६.		शा. २-१५.		„ ७-१८१.	
नागोदर	„ ८-२६.	शा. १०-५७	शा. २-१६,		„ ७-१८१.	
लीनगर्भ		„ १०-५७.	„ २-१८.		„ ७-१८१.	
मृतगर्भ	„ ८-३०.	नि. ८-१२, १३.	„ २-२३.			म. ७०-११७.
मूढगर्भ		„ ८-४,५.	„ २-२९, ३०.	६४-४-६.	„ ७-१८१.	„ ७०-११३.
विष्कम्भ			„ २-२९,३०.		„ ७-१८१.	
विक्रिस	शा. ८-३२.		„ १-५८.			
गलगण्ड—	मू. १८-२१. चि. १२-७९.	नि. ११-२२.	उ. २१-५३.	३८-१,२.	„ ७-१३९.	„ ४४-१.
गुल्म—	नि. ३-७. चि. ५-४८.	उ. ४२-४.	नि. ११-३३-३८.	२८-१-३.	„ ७-५२.	„ ३२-१.
वातज	नि. ३-७. चि. ५-८-११.	„ ४२-१०.	„ ११-४१-४८.	२८-१-८.	„ ७-५२.	„ ३२-१०.
पित्तज	नि. ३-९. चि. ५-१२,१३	„ ४२-११.	„ ११-४४, ४५.	२८-९,१०.	„ ७-५२.	„ ३२-१२.
कफज	नि. ३-११. चि. ५-१५	„ ४२-१२.	„ ११-४६, ४७.	२८-११,१२	„ ७-५२.	„ ४-१४.
रक्तज	नि. ३-१३. चि. ५-१८.	„ ४२-१३-१५.	„ ११-४९-५५.	२८-१५,१६.	„ ७-५३.	„ ४-१७,१८.
सन्निपातज	नि. ३-१२. चि. ५-१७.	„ ४२-१३.	„ ११-४८.	२८-१४.	„ ७-५३.	„ ४-१४.
द्वन्द्वज	„ ५-६.		„ ११-४८,	२८-१३.	„ ७-५३.	„ ४-१५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
ग्रहणीदोष-	चि. १५-५१-५७.	उ. ४०-१६६-१७२.	नि. ८-१५.	४-१-३.	पू. ७-८.	म. ४-१.
वातज	,, १५-५९-६४.	,, ४०-१७५.	,, ८-२२,२४.	४-५-१०.	,, ७-८.	,, ४-७-१२.
पित्तज	,, १५-६५,६६.	,, ४०-१७६.	,, ८-२५,२६.	४-११,१२.	,, ७-८.	,, ४-१३,१४.
कफज	,, १५-६७-७०.	,, ४०-१७६.	,, ८-२६-२९.	४-१३-१६.	,, ७-८.	,, ४-१५-१८.
आमज					,, ७-८.	
सन्निपातज	,, १५-७१,७२.	,, ४०-१७६.	,, ८-२९.	४-१७.	,, ७-८.	,, ४-१९.
संग्रहग्रहणी				४-१७ | ३.		,, ४-२०-२२.
घटीयन्त्र				४-१७ | ४.		,, ४-२४.
ग्रन्थि-	,, १२-८१,८२.	नि. ११-३.	,, २९-१.	३८-११.	,, ७-६८.	,, ४४-११.
वातज		,, ११-४.	,, २९-२,३.	३९-१२.	,, ७-६८.	,, ४४-१२.
पित्तज		,, ११-५.	,, २९-४.	३८-१३.	,, ७-६८.	,, ४४-१३.
कफज		,, ११-६.	,, २९-४,५.	३८-१४.	,, ७-६८.	,, ४४-१४.
मेदोज		,, ११-७.	,, २९-८-९.	३८-१५.	,, ७-६८.	,, ४४-१५.
सिराज		,, ११-८.	,, २९-१०,११.	३८-१६,१७.	,, ७-६८.	,, ४४-१६.
रक्तज		,, ११-८,९.	,, २९-५,६.		,, ७-६८.	
अस्थिज			,, २९-८.		,, ७-६९.	
मांसज			,, २९-६,७.		,, ७-६९.	
व्रणज		,, २९-१३.	,, २९-१२,१३.		,, ७-६८.	
जनपदोद्ध्वंस-तीयविकार-	नि. ३-४.	सू. ६-१५-१७.				
जाठराग्निविकार-	नि. ६-१२.	सू. ३५-२४.		६.		,, ६
मन्दाग्नि	,, ६-१२.	,, ३५-२४.	सू. १-८.	६-३.	,, ७-१७.	,, २-६.

रोगाणां नामानि–	चरक- संहिता	सुश्रुत- संहिता	अ. हृदयम्	माधव- निदानम्	शार्ङ्गधर- संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
विषमाग्नि	वि. ६–१२.	सू. ३५–२४.	सू. १–८.	६–३,४.	पू. ७–२७.	म. ६–२.
तीक्ष्णाग्नि	,, ६–१२.	,, ३५–२४.	,, १–८.	६–४.	,, ७–२६.	,, ६–३.
अत्यग्नि (भस्मक)	,, १५–२२१.				,, ७–२७.	,, ६–९.
ज्वर—	नि. १–२०. चि. ३.	उ. ३९–१३.	नि. २–१, २.	२–३.	,, ७–२.	,, १–९.
वातज	नि. १–२१.	,, ३९–२९, ३०.	,, २–१०–१८.	२–८, ९.	,, ७–२	,, १–२९२ २९५.
पित्तज	,, १–२४.	,, ३९–३१, ३२.	,, २–१८–२०.	२–१०, ११.	,, ७–२.	,, १–३३८– ,, ३४०.
कफज	,, १–२७.	,, ३९–३३, ३४.	,, २–२१, २२.	२–१२, १३.	,, ७–२.	,, १–३७१, ३७२.
वातकफज	,, १–२९. चि. ३–८७.	,, ३९–४७–४९.	,, २–२५.	२–१५, १६.	,, ७–२.	,, १–४०१.
वातपित्तज	नि. १–२९. चि. ३–८६.	,, ३९–४७,४८.	,, २–२४.	२–१४, १५.	,, ७–२.	,, १–३९१.
पित्तकफज	नि. १–२९. चि. ३–८८.	,, ३९–५०.	,, २–२६.	२–१७.	,, ७–२.	,, १–४२७.
सन्निपातज	नि. १–२९. चि. ३–८९–१०२.	,, ३९–३५–३८.	,, २–२७–३३.	२–१८–२३.	,, ७–३.	,, १–४४०–४४४.
आगन्तुज	नि. १–३०. चि. ३–१११.	,, ३९–७६– ,, ८०.	,, २–३८–४५.	२–२६–३१.	,, ७–५.	,, १–६९५.
विषमज्वर—	,, ३–५३–७३.	,, ३९–२९–७०.	,, २–६४–६१.	२–३१, ३२.	,, ७–३.	,, १–७१९.
सन्तत	,, ३–५३–६०.	,, ३९–६७.	,, २–५८, ५९.	२–३४.	,, ७–४.	,, १–.२४.
सतत	,, ३–६१.	,, ३९–७०.	,, २–६९.	२–३५.	,, ७–४.	,, १–७२५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अन्येद्युष्क	चि. ३-६२.	सू. ३९-७०.	सू. २-७०.	२-३५.	पू. ७-४.	म. १-७२६.
तृतीयक	,, ३-६४.	,, ३९-७१.	,, २-७०, ७१.	२-३६.	,, ७-४.	,, १-७२७.
चतुर्थक	,, ३-६०-६७.	,, ३९-७१.	,, २-७२, ७३.	२-३६.	,, ७-४.	,, १-७२९.
चतुर्थकविपर्यय	,, ३-७३.		,, २-७३, ७४.	२-३९.		,, १-७३६-७३९.
सन्निपातज-						
कुम्भीपाक						,, १-५१०.
पौर्णुनाव						,, १-५११.
प्रलापी						,, १-५१२.
अन्तर्दाह						,, १-५१३.
दण्डपात						,, १-५१४.
अन्तक						,, १-५१५.
एणीदाह						,, १-५१६.
हारिद्र						,, १-५१७.
अजघोष						,, १-५१८.
भूतहास						,, १-५१९.
यन्त्रपीड						,, १-५२०.
संन्यास						,, १-५२१.
संशोषी						,, १-५२२.
शीताङ्ग						,, १-४९३.
तन्द्रिक						,, १-८९४.

रोगाणां नामानि–	चरक–संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत–संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव–निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर–संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ श्लो.
प्रलापक						म. १–४९५.
रक्तजीवी						,, १–४९६.
अभिन्यास						,, १–४९८.
जिह्वक						,, १–४९९.
सन्धिग						,, १–५००
अन्तक						,, १–५०१.
रुग्दाह						,, १–५०२.
चित्तविभ्रम						,, १–५०३.
कर्णिक						,, १–५०४.
कण्ठकुब्ज						,, १–५०५.
भुग्ननेत्र						,, १–५०७.
सप्तधातुगत ज्वर—						
रसजन्य	चि. ३–७६.	उ. ३९–८३.	नि. २–५८,५९.	२–४८.		,, १–८०१
रक्तजन्य	, ३–७७.	,, ३९–८४.	,, २–६९.	२–४९.		,, १–८०३.
मांसजन्य	,, ३–७८.	,, ३९–८५.	,, २–७०.	२–५०.		,, १–८०५.
मेदोजन्य	,, ३–७९,	,, ३९–८६.	,, २–७०,७१.	२–५१.		,, १–८०७.
अस्थिजन्य	,, ३–८०.	,, ३९–८७.	,, २–७२,७३.	२–५२.		,, १–८०९.
मज्जाजन्य	,, ३–८१.	,, ३९–८८.	,, २–७२,७३.	२–५३.		,, १–८११.,
शुक्रजन्य	,, ३–८२.	,, ३९–८८,८९.		२–५४.		,, १–८१२.
आगन्तु—		,, ३९–१४.		२–२६.	पू. ७–५.	,, १–६९५.
अभिघातज	,, ३–११२,११३.	,, ३९–२०.	,, २–३८.	२–२६.	,, ७–६.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
श्रमजन्य			नि. २-३८,३९.		पू. ७-६.	
छेदजन्य			,, २-३८,३९.		,, ७-६.	म. १-६९६.
क्षतजन्य			,, २-३८,३९.		,, ७-६.	,, १-६९६.
दाहजन्य			,, २-३८,३९.		,, ७-६.	,, १-६९६.
अभिचारज—	चि. ३-११८.	उ. ३९-२१. ,, ३९-७९	,, २-४३,४४.	२-२६.	,, ७-५.	,, १-७०५.
अभिशापजन्य			,, २-४३.	२-२६.	,, ७-५.	
अभिषङ्गजन्य	,, ३-११४.	,, ३९-८०.	,, २-४०.	२-२६.	,, ७-७.	,, १-७०४.
ग्रहावेशजन्य		,, ३९-२१.	,, २-४०.		,, ७-५.	
कामज	,, ३-१२२.	उ. ३९-२१-७८.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-६९९.
भयज	,, ३-११५.	,, ३९-७९.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-७०३.
शोकज	, ३-१२३.	,, ३९-२१-७९.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-७०३.
क्रोधज	,, ३-१२३.	,, ३९-७९.	,, २-४२.		,, ७-६.	,, १-७०३.
विषज	,, ३-१२४.	,, ३९-२०-७६.	,, २-४१.		,, ७-६.	,, १-६९८.
औषधिगन्धज	,, ३-१२७..	,, ३९-२१-७७.	,, २-४१.		,, ७-६.	,, १-६९९.
जलत्रास-(जलसंत्रास)		क. ७-४८.	उ. ३८-१६.	६९-५७-६३.		
छर्दि—	सि. २०-४, ५.	उ. ४९-३-६.	नि. ५-३०.	१५-१-४.	,, ७-२८.	,, १७-६.
वातजा	,, २०-७-९.	,, ४९-९.	,, ५-३१-३३.	१५-६.	,, ७-२८.	,, १७-६, ७.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ग. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ग. अ. श्लो.
पित्तजा	चि. २०-१०, ११.	उ. ४९-१०,	नि. ५-३३, ३४.	१५-७.	पू. ७-२८.	म. १५-८.
कफजा	,, २०-१२, १३.	,, ४९-११.	,, ५-३४, ३५.	१५-८.	,, ७-२८.	, १७-९.
सन्निपातजा	,, २०-१४, १५.	,, ४९-१२.	,, ५-३६.	१५-९.	,, ७-२८.	,, १७-१०.
द्विशार्धजा संयोगजा			,, ५-३६, ३७.		,, ७-२९.	,, १७-११.
बीभत्सजा	,, २०-१८.	,, ४९-१२.	,, ५-३६,	१५-१२.		,, १७-११.
दौहृदजा		,, ४९-१२.	,, ५-३७.	१५-१२.	,, ७-२९.	,, १७-११.
आमजा		,, ४९-१२.	,, ५-३७.	१५-१२.		,, १७-११.
असात्म्यजा		,, ४९-१२.		१५-१२.		,, १७-११.
कृमिजा		,, ४९-१२.	,, ५-३७.	१५-१२, १३.	,, ७-२८.	,, १७-१२.
तृष्णा—	चि. २२-५-७.	,, ४८-३-५.	,, ५-४५-५७.	१६-१२.	,, ७-३०.	,, १८.
वातजा	,, २२-११, १२.	,, ४८-८.	,, ५-५०, ५१.	१६-३.	,, ७-३०.	,, १८-४.
पित्तजा	,, २२-१३, १४.	,, ४८-८.	,, ५-५१.	१६-४.	,, ७-३०.	,, १८-५.
आमजा	,, २२-१५.	,, ४८-१४.	,, ५-५४.	१६-८.		,, १८-९.
क्षयजा	,, २२-१६.	,, ४८-१३, १४.	,, ५-५७.	१६-६, ७.	,, ७-३१.	,, १८-८.
औपसर्गिकी	,, २२-१८.		,, ५-५७.	१६-९.	,, ७-३१.	,, १८-११.
क्षतजा		,, ४८-१२.		१६-६.		,, १८-७.

रोगाणां नामानि	चरक-संहिता	सुश्रुत संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाश
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
कफजा।		उ. ४८–११.	नि. ५–५२,	१६–५.	पू. ७–३०.	म. १८–६.
भक्तजा।		,, ४८–१५.	,, ५–५४.	१६–८.		,, १८–१०.
त्रिदोषजा।		,, ४८–१५.			,, ७–३१.	
दग्ध—		सू. १२–१६.			,, ७–७९.	
प्लुष्ट (तुच्छ. मा.)		,, १२–१६.	सू. ३०–४७.		,, ७–७९.	
अतिदग्ध		,, १२–१६.	,, ३०–४८.		,, ७–७९.	
दुर्दग्ध		,, १२–१६.	,, ३०–४८.		,, ७–७९.	
सम्यग्दग्ध		,, १२–१६.	,, ३०–४५.		,, ७–७९.	
स्नेहदग्ध			,, ३०–५२.			
दाह—	सू. २०–१४.			१९–१.	,, ७–३५.	
नाडीव्रण—	चि. २५–५६.	नि. १०–९, १०.	उ. २९–२६–२८.	४५–१,२.	,, ७–७९.	म. ४८–१.
वातजन्य		,, १०–११.	,, २९–२९.	४५–३.	,, ७–७९.	,, ४८–३.
पित्तजन्य		,, १०–११.	,, २९–२९, ३०.	४५–३.	,, ७–७९.	,, ४८–४.
कफजन्य		,, १०–१२.	,, २९–३०,३१.	४५–४.	,, ७–७९.	,, ४८–५.
द्वन्द्वज		,, १०–१२.				
सन्निपातजन्य		,, १०–१३	,, २९–३१.	४५–४,५.	,, ७–७९.	,, ४८–६.
शल्यनिमित्तज		,, १०–१४.	,, २९–३१.	४५–५,६.	,, ७–७९.	,, ४८–७.
नाडीकल्पन- व्यापत्	शा. ८–४५.					

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
व्यायाम-उत्तुण्डिता	[illegible]. ८-४५.					
व्यायाम-उत्तुण्डिता	„ ८-४५.					
पिण्डलिका	„ ८-४५.					
विनामिका	„ ८-४६.					
[illegible]	„ ८-४५.					
पुं-स्त्री		शा. १०-४३.				
नासारोग—	चि. २६-१०५.	उ. २२.	उ. १९	५८-१.	पू. ७-१४६.	म. ६४-[illegible]
प्रतिश्याय-(पीनस)	„ २६-१०५.	„ २४-१-४.	„ १९-१-५.	५८-१३.	„ ७-१४७.	„ ६४-८.
दुष्टप्रतिश्याय	„ २६-११०.	„ २४-१४-१६	„ १९-[illegible]-१२.	५८-२४,२६	„ ७-१४७.	„ ६४-२४, २५.
वातज	„ २६-१०५.	„ २४-६,७.	„ १९-३-५.	५८-१६,१७.	„ ७-१४९.	„ ६४-१९.
पित्तज	„ २६-१०६.	„ २४-७,८.	„ १९-५,६.	५८-१८,१९.	„ ७-१४९.	„ ६४-२०.
कफज	„ २६-१०६.	„ २४-[illegible],१०.	„ १९-६,८	५८-१९,२०.	„ ७-१४९.	„ ६४-२१, २२.
सन्निपातज	„ २६-१०[illegible].	„ २४-१० ११.	„ १९-[illegible].	५८-[illegible],२१.	„ [illegible]-१४९	„ ६४-[illegible].
रक्तज		„ २४-१२-१८.	„ १९-८,९.	५८-२३,२४.	„ ७-१४९.	„ ६४-२६, २७.
क्षवथु-	चि. २६-१११.	„ २२-११, १२.	„ १९-१४, १५.	५८-५,६.	„ ७-१४८.	„ ६४-२, ३.
नासापरिस्राव-	„ २६-११२.	„ २२-१७, १८.	„ १९-१६, १७.	५८-१०.	„ ७-१४९.	„ ६४-१५.
प्रतीनाह-	„ २६-११२.	„ २२-१५, १६.	„ १९-१७, १८.	५८-[illegible].	„ ७-१४८.	„ ६४-१३.

रोगाणां नामानि	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. प्र. श्लो.
[illegible]—	चि. २६-११२.	उ. २२-१६,१७.	उ. १९-१९.	५८-९.	पू. ७-१४९.	म. ६४-१४.
अपीनस—	,, २६-११४.	,, २२-६.	,, १९ २०,२१.	५८-१.	,, ७-१४८.	
घ्राणपाक—	,, २६-११५	,, २२-८,९	,, १९-१८,१९.	५८-२.	,, ७-१४८.	,, ६४-८.
[illegible]—	,, २६-११५.	,, २२-१९, २०.	,, १९-२०.	५८-२८		,, ६४-६१.
नासार्बुद—	,, २६-११६.	,, २२-२०.	,, १९-२६.	५८-२८.	,, ७-१४८.	,, ६४-३१.
पूयरक्त—	,, २६-११६.	,, २२-१०.	,, १९-२४.	५८-४.	,, ७-१४९.	,, ६४-८.
पूतिनस्य—	,, २६-११३.	,, २२ ७,८.	,, १९-२३.	५८-२.	,, ७-१४८.	,, ६४-६.
[illegible]—	,, २६ ११७.	,, २२-८,९.		५८-३.		
दीप्त—	,, २६-११७.	,, २२-१४, १५.		५८-[illegible]	,, ७-१४९.	,, ६४-१२.
भ्रंशथु—		,, २२-१३,१४.		५८-७.	,, ७-१४८.	,, ६४-३१.
[illegible]—	चि. ४-९७, ९८.	,, २२-९.		५८-२८.		,, ६४-३१.
[illegible]—	,, १४-[illegible]	,, २२-२१.	,, १९-[illegible]	५८-२८.	,, [illegible] १४८.	,, ६४-३१.
[illegible] —			,, १९-२५.			
पीनस(आमपक्व)—			,, १९-१३.			
[illegible]— ([illegible])	सू. २१-[illegible]	[illegible]	,, १४-२०.	६४-१-८.	,, ५-६५.	,, ३८.
[illegible]—	,, २१-१०-१२.	,, [illegible]-३३.				,, ३४.
[illegible]—						,, २-१०८.
[illegible]—						,, २-१०९.
नेत्ररोग—	चि. २६.	उ. १-२८.	उ. ८-१०.	५९. १-२.		,, ६२.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
वातज	चि. २६–१२९.	उ. १–२९–३१.	उ. ८–१६.			
पित्तज	,, २६–१२९.	,, १–३१–३३.				
कफज	,, २६–१३०.	,, १–३३–३५.				
सन्निपातज	,, २६–१३०.	,, १–३९–४२.				
रक्तज		,, १–३७,३८.				
सन्धिगतरोग–						
पूयालस		,, २–४.	,, १०–७.	५९–७०.	पू. ७–१५९.	म. ६२–१०४.
उपनाह		,, २–४.	,, १०–३,४	५९–७०.	,, ७–१५८.	,, ६२–१०५.
पूयास्राव–(सन्निपातज)		,, २–६.	,, १० १.	५९–७२.	,, ७–१५८.	,, ६२–१०५.
श्लेष्मस्राव		,, २–६.	,, १०–२.	५९–७२.	,, ७–१५८.	,, ६२–१०८.
रक्तास्राव		,, २–७.	,, १०–४.	५९–७३.	,, ७–१५८.	,, ६२–११०.
पित्तास्राव		,, २–७.	,, १०–४.	५९–७३.	,, ७–१५८.	,, ६२–१०७.
जलस्राव			,, १०–१,२.		,, ७–१५८.	
पर्वणिका		,, २–८.	,, १०–५.	५९–७४.	,, ७–१५८.	,, ६२–१११.
अलजी		,, २–८.	,, १०–८.	५९–७४.	,, ७–१५८.	,, ६२–१११.
क्रिमिग्रन्थि		,, २–९.	,, १०–,९.	५९–७५.	,, ७–१५८.	,, ६२–११२.
वर्त्मरोग—						
उत्सङ्गिनी		,, ३–९,१०.	,, ८–१२.	९–७६.	,, ७–१५५.	,, ६३–७७.
कुम्भीका		,, ३–१०,११.	,, ८–६.	५९–७७.	,, ७–१५६.	,, ६३–७८.
पोथकी		,, ३–११.	,, ८–९,१०.	५९–७८.	,, ७–१५५.	,, ६३–७९.
वर्त्मशर्करा		,, ३–१२.	,, ८–१८	५९–७९.	,, ७–१५६.	,, ६३–८०.
अर्शोवर्त्म		,, ३–१३.	,, ८–१३.	५९–८०.	,, ७–१५५.	,, ६३–८२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
शुष्कार्शस्–(लोहित)		उ. ३–१४.		५९–८१.	पू. ७–१५४.	म. ६२–८२.
अञ्जननामिका		,, ३–१५.	उ. ८–१४.	५९–८२.	,, ७–१५६.	,, ६२–८३.
बहलवर्त्म		,, ३–१६.		५९–८३.	,, ७–१५५.	,, ६२–८४.
विबन्धकवर्त्म		,, ३–१७.		५९–८४.	,, ७–१५५.	,, ६२–८५.
वर्त्मकर्दम		,, ३–१९.	,, ८–१८.	५९–८६.	,, ७–१५६.	,, ६२–८७.
क्लिष्टवर्त्म		,, ३–१८.	,, ८–१२.	५९–८५.	,, ७–१५५.	,, ६२–८६.
श्याववर्त्म		,, ३–२०.	,, ८–१७.	५९–८७.	,, ७–१५६.	,, ६२–८८.
प्रक्लिन्नवर्त्म–(कफोत्क्लिष्ट)		,, ३–२१.	,, ८–१०.	५९–८८.	,, ७–१५४.	,, ६२–८९.
अपरिक्लिन्न–(क्लिन्नवर्त्म)		,, ३–२२.	,, ८–१६.	५९–८९.	,, ७–१५५.	,, ६२–९०.
वातहत–(उत्क्लिष्टवर्त्म)		,, ३–२३.	,, ८–६.	५९–९०.	,, ७–१५७.	,, ६२–९१.
अर्बुद		,, ३–२४.	,, ८–२४.	५९–९१.	,, ७–१५५.	,, ६२–९२.
निमिष		,, ३–२५.	,, ८–५.	५९–९२.	,, ७–१५४.	,, ६२–९३.
शोणितार्शस्–(रक्तोत्क्लिष्ट)		,, ३–२६.		५९–९३.	,, ७–१५४.	,, ६२–९४.
लगण		,, ३–२७.	,, ८–११.	५९–९४.	,, ७–१५६.	,, ६२–९५.
बिसवर्त्म		,, ३–२८.	,, ८–१५.	५९–९५.	,, ७–१५६.	,, ६२–९६.
कुंचन				५९–९६.	,, ७–१५४.	,, ६२–९७.
पक्ष्मरोगाः–						
पक्ष्मकोप		,, ३–२९,३०.	,, ८–२१,२२.	५९–९७,९८.	,, ७–१५५.	,, ६२–९९, १००.
पक्ष्मशात			,, ८–८,९.	५९–९९.	,, ७–१५४.	,, ६२–१०१.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
शुक्रगतरोग—						
प्रस्तार्यर्म		उ. ४–४.	उ. १०–१७, १८.	५९–६५.	पू. ७–१६०.	म. ६२–६५.
शुक्लार्म		,, ४–५.	,, १०–१२.	५९–६५.	,, ७–१६०.	,, ६२–६६.
लोहितार्म		,, ४–५.	,, १०–१६.	५९–६६.	,, ७–१६१.	,, ६२–६७.
अधिमांसजार्म		,, ४–६.	,, १०–१८,१९.	५९–६६.	,, ७–१६०.	,, ६२–६८.
स्नाय्वर्म		,, ४–६.	,, १०–१८.	५९–६६.	,, ७–१६१.	,, ६२–६९.
शुक्ति		,, ४–७.	,, १०–१०,११.	५९–६७.	,, ७–१६०.	,, ६२–७०.
अर्जुन		,, ४–७.	,, १०–१७.	५९–६७.	,, ७–१६१.	,, ६२–७१.
पिष्टक		,, ४–८.	,, १०–१३.	५९–६८.	,, ७–१६०.	,, ६२–७२.
सिराजाल		,, ४–८.	,, १०–१६.	५९–६९.	,, ७–१६०.	,, ६२–७३.
सिराजपिडका		,, ४–९.	,, १०–१६.	५९–६९.	,, ७–१६१.	,, ६२–७४.
बलासक		,, ४–९.	,, १०–१२,१३.	५९–६९.	,, ७–१६१.	,, ६२–७५.
कृष्णगतरोग—						
सव्रणशुक्र		,, ५–४.	,, १०–२३.	५९–२२.	,, ७–१६२.	,, ६२–५६.
अव्रणशुक्र		,, ५–८.	,, १०–२५.	५९–२४.	,, ७–१६२.	,, ६२–५८.
पाकात्यय-(शिरासङ्ग)		,, ५–९,१०.	,, १०–२८.	५९–२७.	,, ७–१६२–१७०.	,, ६२–६२.
अजका		,, ५–१०.	,, १०–२६.	५९–२८.	,, ७–१६२.	,, ६२–६३.
सर्वाश्रयरोग—						
वाताभिष्यन्द		,, ६–६.	,, १५–१–३.	५९–५.	,, ७–१६९.	,, ६२–११६.
पित्ताभिष्यन्द		,, ६–७.	,, १५–८,९.	५९–६.	,, ७–१६९.	,, ६२–११८.
कफाभिष्यन्द		,, ६–८.	,, १५–१०,११.	५९–७.	,, ७–१६९.	,, ६२–११९.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
रक्ताभिष्यन्द		उ. ६–८.	उ. १५–१२,१३.	५९–८.	पू. ७–१६९	म. ६२–१२०.
वातज अधिमन्थ		,, ६–१२,१३.	,, १५–३,४.	५९–९,१०.	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२, १२३.
पित्तज ,,		,, ६–१४,१५.	,, १५–९,१०.	५९–९,१०.	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२, १२३.
कफज ,,		,, ६–१६,१७.	,, १५–११,१२.	५९–९,१०.	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२.
रक्तज		,, ६–१८,१९.	,, १५–१३,१४.	५९–९,१०	,, ७–१६८.	,, ६२–१२२. १२३.
शोफपाक		,, ६–२१, २२.	,, १५–१७–१९.	५९–१४.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२४.
अशोफपाक		,, ६–२३.	,, १५–१९.	५९–१४.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२४.
हताधिमन्थ		,, ६–२३.	,, १५–५.	५९–१५.	,, ७–१७१.	,, ६२–१२५.
वातपर्याय		,, ६–२५.	,, १५–७.	५९–१६.	,, ७–१७१.	,, ६२–१२६.
शुष्काक्षिपाक		,, ६–२६	,, १५–१६, १७.	५९–१७.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२७.
अन्यतोवात		,, ६–२७.	,, १५–६, ७.	५९–१८.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२८.
अम्लाध्युषित		,, ६–२८.	,, १५–२१–२२.	५९–१९.	,, ७–१७०.	,, ६२–१२९.
सिरोत्पात		,, ६–२९.	,, १०–१४.	५९–२०.	,, ७–१६०.	,, ६२–१३०.
सिराप्रहर्ष		,, ६–३०.	,, १०–१५.	५९–२१.	,, ७–१६०.	,, ६२–१३१.

दृष्टिगतरोग—

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
वातिक–लिङ्गनाश		,, ७–१८, १९.	,, १२–८–१२.	५९–४१, ४२.	,, ७–१६५.	,, ६२–२९.
पैत्तिक ,,		,, ७–१९, २०.	,, १२–१३, १४.	५९–४२, ४३.	,, ७–१६५.	,, ६२–३०.

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
श्लैष्मिक-लिङ्गनाश		उ. ७-२०-२२.	उ. १२-१६-२०.	५९-४३, ४४.	पू. ७-१६५.	म. ६२-३१, ३२.
रक्तज ,,		,, ७-२२, २३.	,, १२-२०, २१.	५९-४४, ४५.	,, ७-१६६.	,, ६२-३४.
सान्निपातिक ,,		,, ७-२३, २४.	,, १२-२२.	५९-४५, ४६.	,, ७-१६६.	,, ६२-३३.
परिम्लायि ,,		,, ७-२५, २६.	,, १२-१५, १६.	५९-४७, ४८.	,, ७-१६६.	,, ६२-३५.
दिवान्ध्य		,, ७-३५, ३६.	,, १२-२५-२८.	५९-५५, ५६.	,, ७-१६७.	,, ६२-४५.
रात्र्यान्ध्य		,, ७-३७, ३८.	,, १२-२४, २५.	५९-५७, ५८.	,, ७-१६७.	,, ६२-४७.
धूमदर्शी		,, ७-३९.	,, १२-२९,३०.	५९-५९.	,, ७-१६७.	,, ६२-४८.
ह्रस्वजाड्य		,, ७-४०.	,, १२-१५.	५९-६०.	,, ७-१६७.	,, ६२-४९.
नकुलान्ध्य		,, ७-४०, ४१.	,, १२-२३, २४.	५९-६०, ६१.	,, ७-१६७.	,, ६२-५०.
गम्भीरिका		,, ७-४१, ४२.	,, १२-१२.	५९-६१, ६२.	,, ७-१६८.	,, ६२-५१.
निमित्तजन्य		,, ७-४२.	,, १२-३०,३१.	५९-६३.		,, ६२-५२.
अनिमित्तजन्य		,, ७-४३, ४४.		५९-६३, ६ .		,, ६२-५३.
पाण्डुरोग—	चि. १६-७-११.	,, ४४-३.	,, १३-१-४.	८-१, २.	,, ७-१९.	,, ८.
वातज	,, १६-१७, १८.	,, ४४-७.	,, १३-९, १०.	८-४.	,, ७-१९.	,, ८-४.
पित्तज	,, १६-१९-२२.	,, ४४-८.	,, १३-१०, ११.	८-५.	,, ७-१९.	,, ८-५.
कफज	,, १६-३-५.	,, ४४-९.	,, १३-११-१२.	८-८.	,, ७-१९.	,, ८-६.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सन्निपातज	चि. १६-२६	उ. ४४-१०.	नि. १३-१२.	८-७.	पू. ७-१९.	म. ८-७.
मृद्भक्षणजन्य	,, १६-२७-३०.		,, १३-१३-१५.	८-८-१०.	,, ७-१९.	,, ८-११, १२.
अपानकी		,, ४४-६.				
नानात्मज-						
पित्तविकार				६-११-१७.	,, ७-११५-१२१.	,, २६-२९.
अक्षिपाक	सू. २०-१४.					
अङ्गगन्ध	,, २०-१४.					
अङ्गावदारण	,, २०-१४.				,, ७-११८.	
अतिस्वेद	,, २०-१४.				,, ७-११७.	
अतृप्ति	,, २०-१४.				,, ७-११७.	
अन्तर्दाह	,, २०-१४.					
अम्लक	,, २०-१४.					
अंसदाह	,, २०-१४.					
आस्यविपाक	,, २०-१४.					
ऊष्माधिक्य	,, २०-१४.					
ओष	,, २०-१४.					
कक्षा	,, २०-१४. चि. १२-९१.	चि. २०-७.				
कामला	सू. २०-१४. चि. १६-३२.	उ. ४४-१०, ११.	नि. १३-१५-१७.	८-१६-१८.	,, ७-१२.	
गलपाक	सू. २०-१४.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
गुदपाक	सू. २०-१४.					
चर्मदलन	,, २०-१४.					
जीवादान	,, २०-१४.					
तमःप्रवेश	,, २०-१४.					
तिक्तास्यता	,, २०-१४.					
तृष्णाधिक्य	,, २०-१४.		सू. ११-७.			
त्वगवदरण	,, २०-१४.					
त्वग्दाह	,, २०-१४.					म. २६-६.
दवथु	,, २०-१४.					
दाह	,, २०-१४.		सू. ११-७.	१९-२.	पू. ७-१२९.	,, २६-६.
धूमक(धूमोद्गार)	,, २०-१४.				,, ७-११६.	,, २६-५.
अकालपलित						,, २६-२.
पूतिमुखता	,, २०-१४.					
प्लोष	,, २०-१४.					
मांसक्लेद	,, २०-१४,					
मांसदाह	,, २०-१४,					
मेढ्रपाक	,, २०-१४.					
रक्तकोठ	,, २०-१४.					
रक्तविस्फोट	,, २०-१४.					
रक्तपित्त	,, २०-१४.	उ. ४५-१-१०.				,, ९-१-७.
रक्तमण्डल	,, २०-१४.					

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
लोहितगन्धास्यता	सू. २०–१४.				पू. ७–११८.	
विदाह	,, २०–१४.				,, ७–११६.	म. ६–७.
शोणितक्लेद	,, २०–१४.					
हरित–हारित–नेत्रमूत्रवर्चस्त्व	,, २०–१४.					
हरितत्व	,, २०–१४.					
हारिद्रत्व	,, २०–१४.					
पिडका–	,, १७–८२.	नि. ६–१४.	नि. १०–२५,२६.	३३–२७,२८.	,, ७–६३.	,, ३७.
शराविका	,, १७–८४.	,, ६–१५.	,, १०–२७.	३३–२९.	,, ७–६४.	,, ३७–३१.
कच्छपिका	,, १७–८५.	,, ६–१६.	,, १०–२८.	३३–३०.	,, ७–६४.	,, ३८–३२.
जालिनी	,, १७–८६.	,, ६–१६.	,, १०–२९.	३३–३०.	,, ७–६४.	,, ३८–३२.
विनता	,, १७–८९.	,, ६–१७.	,, १०–३०.	३३–३१.	,, ७–६४.	,, ३८–३३.
अलजी	,, १७–८८.	,, ६–१८.	,, १०–३१.	३३–३३.	,, ७–६४.	,, ३८–३५.
सर्षपिका	,, १७–८७.	,, ६–१५.	,, १०–३३.	३३–२९.	,, ७–६४.	,, ३८–३१.
विद्रधिका (विद्रधि)	,, १७–९०.	,, ६–१९.	,, १०–३४–३२.	३३–३४.	,, ७–६५.	,, ३८–३६.
पुत्रिणी		,, ६–१७.	,, १०–३३.	३३–३२.	,, ७–६४.	,, ३८–३४.
मसूरिका		,, ६–१८.	,, १०–३२.	३३–३२.	,, ७–६४.	,, ३८–३४.
विदारिका		,, ६–१९.	,, १०–३४.	३३–३४.	,, ७–६४.	,, ३८–३५.
प्रदर—	चि. ३०–२०४.	शा. २–१८–२०.		६१–१.		,, ६७–३.
वातज	,, ३०–२१३.			६१–२.		,, ६७–३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
पित्तज	चि. ३०–२१४-२१६.			६१–३.		म. ६७-५.
कफज	,, ३०–२१७, २१८.			६१–३.		,, ६७–४.
सान्निपातिक	,, ३०–२२०.			६१–४.		,, ६७–७.
प्रमेह—	नि. ४–८.	नि. ६–४.	,, १०.	३३–६.	पू. ७–६०.	,, ३७.
उदकमेह	,, ४–१३.	,, ६–१०.	,, १०–८.	३३–७,८.	,, ७–६०.	,, ३७–८.
इक्षुवालिका	,, ४–१४.	,, ६–१०.	,, १०–९.	३३–८.	,, ७–६०.	,, ३७–९
सान्द्रमेह	,, ४–१५.	,, ६–१०.	,, १०–१०.	३३–९.	,, ७–६०.	,, ३७–९.
सान्द्रप्रसादमेह	,, ४–१६.					
शुक्लमेह	,, ४–१७.					
शुक्रमेह	,, ४–१८.	,, ६–१०.	,, १०–११.	३३–१०.	,, ७–६०.	, ३७–११.
शीतमेह	,, ४–२१.		,, १०–१२.	३३–११.	,, ७–६१.	,, ३७–१२.
शनैर्मेह	,, ४–२१.	,, ६–१०.	,, १०–१३.	३३–१२.	,, ७–६१.	,, ३७–१२.
सिकतामेह	,, ४–२०.	,, ६–१०.	,, १०–१२.	३३–११.	,, ७–६१.	,, ३७–११.
लालामेह	,, ४–२२.		,, १०–१३.	३३–१२.	,, ७–६०.	,, ३७–१२.
क्षारमेह	,, ४–२९.	,, ६–११.	,, १०–१४.	३३–१३.	,, ७–६२.	,, ३७–१३.
कालमेह(कृष्णमेह)	,, ४–३०.		,, १०–१४.	३३–१३.	,, ७–६२.	,, ३७–१४.
नीलमेह	, ४–३१.	,, ६–११.	,, १०–१४.	३३–१३.	,, ७–६१.	,, ३७–१४.
लोहितमेह	,, ४–३२.	,, ६–११.	,, १०–१६.	३३–१५.	,, ७–६१.	,, ३७–१५.
माञ्जिष्ठमेह	,, ४–३३.	,, ६–११.	,, १०–१५.	३३–१४.	,, ७–६१.	,, ३७–१५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
हारिद्रमेह	नि. ४-३४.	नि. ६-११.	नि. १०-१५.	३३-१४.	पू. ७-६१.	म. ३७-१४.
वसामेह	,, ४-४१.	,, ६-१२.	,, १०-१६.	३३-१५.	,, ७-६२.	,, ३७-१६.
मज्जमेह	,, ४-४२.		,, १०-१७.	३३-१६.	,, ७-६२.	,, ३७-१६.
हस्तिमेह	,, ४-४३.	,, ६-१२.	,, १०-१७, १८.	३३-१७.	,, ७-६२.	,, ३७-१७.
मधुमेह (क्षौद्रमेह)	,, ४-४४.	,, ६-१२.	,, १०-१८.	३३-१६.	,, ७-६२.	,, ३७-१७.
सुरामेह		,, ६-१०.	,, १०-१०.	३३-९.	,, ७-६०.	,, ३७-१०.
लवणमेह		,, ६-१०.				
पिष्टमेह		,, ६-१०.	,, १०-१०.	३३-१०.	,, ७-६०.	,, ३७-१०.
फेनमेह		,, ६-१०.				
अम्लमेह		,, ६-११.				
सर्पिर्मेह		,, ६-१२.				
श्लीपदरोग—	सू. १९-४. ,, १८-२८.					,, ३३.
वातज	,, १९-४ | ४.					,, ३३-४.
पित्तज	,, १९-४ | ४.					,, ३३-५.
कफज	,, १९-४ | ४.					,, ३३-६.
सन्निपातज	,, १९-४ | ४.					,, ३३-८.
रक्तज	,, १९-४ | ४.					,, ३३-४.
फिरङ्गरोग—				२-१-९. (परि०)		,, -१.
बालरोगाः—				६८.		
कुकूणक		उ. १९,९.	उ. ८-१९,२०.	६८-८,९.	,, ७-१८८.	,, ७-१२७.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पारिगर्भिक				६८–१०,११.	पू. ७–१८७.	म. ७०–१३३, १३४.
तालुकण्टक			उ. २–६३,६५.	६८–१२,१३.	,, ७–१८७.	,, ७०–१२४, १२५.
महापद्म				६८–१४,१५.	,, ७–१८७.	,, ७०–१२६.
उपशीर्षक			,, २३–२१.			
गुदपाक					,, ७–१८७.	,, ७०–१२९.
शय्यामूत्र					,, ७–१८८.	
स्कन्दग्रह		उ. २८.	,, ३–६,९.	६८–२०,२२.	,, ७–१८९.	,, ७०–२५.
स्कन्दापस्मार		,, २९.	,, ३–९,११.	६८–२२.	,, ७–१८९.	,, ७०–२६.
शकुनीग्रह		,, ३०.	,, ३–१८,२०.	६८–२३.	,, ७–१९०.	,, ७०–२७.
रेवतीग्रह		,, ३१.	,, ३–२७,२८.	६८–२४.	,, ७–१९१.	,, ७०–२८.
पूतनाग्रह		,, ३२.	,, ३–२०,२१.	६८–२५.	,, ७–१९०.	,, ७०–२९.
अन्धपूतनाग्रह		,, ३३.	,, ३–२३,२५.	६८–२६.	,, ७–१९०.	,, ७०–३०.
शीतपूतनाग्रह		,, ३४.	,, ३–२२,२३.	६८–२७.	,, ७–१९०.	,, ७०–३१.
मुखमण्डिकाग्रह		,, ३५.	,, ३–२६,२७.	६८–२८.	,, ७–१९०.	,, ७०–३२.
नैगमेय(ष)		,, ३६.	,, ३–१२,१४.	६८–२९.	,, ७–१९०.	,, ७०–३३.
दन्तोद्गम			,, २–२६,२७.		,, ७–१८६.	,, ७०–१३५.
भगन्दर–	चि. १२–९६,९७.	नि. ४.	,, २८.	४६–१.	,, ७–८०.	,, ४९–३.
शतपोनक		,, ४–५.	,, २८–११–१३.	४६–२,३.	,, ७–८०.	,, ४९–४.
उष्ट्रग्रीव		,, ४–६.	,, २८–१३.	४६–३,४.	,, ७–८०.	,, ४९–५.
परिस्रावी		,, ४–७.	,, २८–६३.	४६–५.	,, ७–८१.	,, ४९–६.
शम्बूकावर्त		,, ४–८.	,, २८–१७,१८.	४६–६.	,, ७–८२.	,, ४९–७.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
उन्मार्गगामी		नि. ४-९.	उ. २८-१८,२०.	४६-७.	पू. ७-८२.	म. ४९-८.
शल्यजन्य(क्षतज)			,, २८-२०.			,, ४९-८.
भग्न-	चि. २५-६८,७१.	,, १५-३.	,, २७.	४४-१.	,, ७-७८.	,, ४७.
उत्पिष्ट		,, १५-५,७.		४४-२,३.	,, ७-७७.	,, ४७-२.
विश्लिष्ट		,, १५-५,७.		४४-३.	,, ७-७८.	,, ४७-२.
विवर्तित		,, १५-५,७.		४४-३.	,, ७-७८.	,, ४७-२.
तिर्यक्क्षिप्त		,, १५-५,७.		४४-३.	,, ७-७८.	,, ४७-३.
अतिक्षिप्त(क्षिप्त)		,, १५-५,७.		४४-४,५.		,, ४७-३.
अवक्षिप्त		,, १५-५,७.		४४-४.		,, ४७-३.
कर्कटक		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
अश्वकर्ण		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
चूर्णित		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
पिच्चित		,, १५-१०.		४४-४.		,, ४७-५.
अस्थिच्छल्लित		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
अतिपातित		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
मज्जानुगत		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
स्फुटित		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
वक्र		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
छिन्नस्य द्वौ भेदौ						
अणुविदीर्ण		,, १५-१०.		४४-५.		,, ४७-५.
बहुविदीर्ण		,, १५-१०.		४४-५		,, ४७-५.
पाटित		,, १५-१०.				

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
काण्डभग्न		नि. १५-१०.		४४-६.		म. ४७-१.
मद—	सू. २४-२७.		नि. ६-२६.		पू. ७-३३.	
वातज	,, २४-३०.		,, ६-२६,२७.		,, ७-३३.	
पित्तज	,, २४-३१.		,, ६-२७.		,, ७-३३.	
कफज	,, २४-३२.		,, ६-२८.		,, ७-३३.	
सन्निपातज	,, २४-३३.		,, ६-२८.		,, ७-३३.	
रक्तज	,, २४-३४.		,, ६-२८,२९		,, ७-३३.	
मद्यज	,, २४-३३.		,, ६-२९.		,, ७-३३.	,, १९-२२-२६.
विषज	,, २४-३४.		,, ६-२९.		,, ७-३३.	
मधुमेह	नि. ४-४४.	,, ६-२४.	,, १०-१८.	३३-२३-२६.	,, ७-६२.	
मदात्यय-(पानात्यय)	चि. २४.	उ. ४७.	,, ६-१४.	१८-१.	,, ७-३४.	,, १९-३७-४२.
वातज	,, २४-९०, ९१.	,, ४७-१८.	,, ६-१८.	१८-१६.	,, ७-३४.	,, १९-४५.
पित्तज	,, २४-९२-९४.	,, ४७-१८.	,, ६-१९.	१८-१७.	,, ७-३४.	,, १९-४७.
कफज	,, २४-९५-९७.	,, ४७-१९.	,, ६-२०.	१८-१८.	,, ७-३४.	,, १९-५०.
सन्निपातज	,, २४-१००.	,, ४७-१९.	,, ६-२०.	१८-१८.		१९-५१
ध्वंसक	,, २४-१९९-२०१.		,, ६-२२.			
विक्षेपक						
विक्षय	,, २४-२०२.		,, ४७-२२			

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
परमद		उ. ४७–१९, २०.		१८–१९.	पू. ७–३४.	म. १९–५२.
पानाजीर्ण		„ ४७–२०, २१.		१८–२०.	„ ७–३५.	„ १९–५३.
पानविभ्रम		„ ४७–२१, २२.		१८–२०,२१.	„ ७–३५.	„ १९–५४.
पानहत		„ ४७–२३.				
मसूरिका	चि. १२–९३.	नि. १३–३८.	उ. ३१–८.	५४–१,४.	„ ७–९७.	„ ५९.
वातज				५४–४,६.	„ ७–९८.	„ ५९–४.
पित्तज				५४–६,८.	„ ७–९८.	„ ५९–५,६.
कफज				५४–९,१०.	„ ७–९८.	„ ५९–९,१०.
त्रिदोषज				५४–११.	„ ७–९८.	„ ५९–११.
रक्तज				५४–८.		„ ५९–७.
सप्तधातुगत						„ ५९–१२.
मरक–		सू. ६–१७.				
महागद–	„ १०–५६.					
मुखरोग–	„ २६.	नि. १६.	„ २१.			„ ६५.
वातज	„ २६–११९.					
पित्तज	„ २६–१२०.					
कफज	„ २६–१२१.					
सन्निपातज	„ २६–१२२.					
ओष्ठप्रकोप(वातज)		नि. १६–५.	„ २१–४.	५६–२.	„ ७–१२८.	„ ६५–६.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ओष्ठप्रकोप (पित्तज)		नि. १६-६.	उ. २१-५.	५६-३.	पू. ७-१२८.	म. ६५-७.
,, (कफज)		,, १६-७.	,, २१-५,६.	५६-४.	,, ७-१२८.	,, ६५-८.
,, (सन्निपातज)		,, १६-८.	,, २१-६,७.	५६-५.	,, ७-१२८.	,, ६५-९.
,, (रक्तज)		,, १६-९.	,, २१-७,८.	५६-६.	,, ७-१२८.	,, ६५-१०.
,, (मांसज)		,, १६-१०.	,, २१-८.	५५-७.	,, ७-१२९.	,, ६५-११.
,, (मेदोज)		,, १६-११.	,, २१-९.	५६-८.	,, ७-१२९.	,, ६५-१२.
,, (अभिघातज)		,, १६-१२.	,, २१-१०.	५६-९.	,, ७-१२९.	,, ६५-१३.
खण्डौष्ठ			,, २१-३.	५६.	,, ७-१२९.	
दन्तमूलगतरोगाः-						
शीताद		,, १६-१४, १५.	,, २१-२०, २१.	५६-१०, ११.	,, ७-१३२.	,, ६५-२४.
दन्तपुप्पुटक		,, १६-१६.	,, २१-२३, २४.	५३-१२.	,, ७-१३२.	,, ६५-२६.
दन्तवेष्टक		,, १६-१७.		५६-१३.	,, ७-१३२.	,, ६५-२७.
शौषिर		,, १६-१८.	,, २१-२५, २६.	५६-१४.	,, ७-१३२.	,, ६५-२८.
महाशौषिर		,, १६-१९, २०.	,, २१-२६, २७.	५६-१५.	,, ७-१३२.	,, ६५-२९.
परिदर		,, १६-२१.		५६-१६.		,, ६५-३०.
उपकुश	चि. १२-७८.	,, १६-२३.	,, २१-२१.	५६-१७.	,, ७-१३२.	,, ६५-३१.
दन्तवैदर्भ		,, १६-२४.	,, २१-२८,२९.	५६-१८.		,, ६५-३३.
वर्धन (खलि)		,, १६-२५.	,, २१-१५.	५६-१९.		,, ६५-३४.
अधिमांस		,, १६-२६.	,, २१-२७.	५६-२१.	,, ७-१३२.	,, ६५-३५.
कराल			,, २१-१४.	५६-२०.	,, ७-१३०.	,, ६५-७२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
दन्तनाडी—						
वातज		नि. १६–२६.	उ. २१–२९,३१.	५६–२१.	पू. ७–१३३.	म. ६५–३६.
पित्तज		,, १६–२६.	,, २१–२९,३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
कफज		,, १६–२६.	,, २१–२९,३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
सान्निपातिक		,, १६–२६.	,, २१–२९,३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
शल्यनिमित्तज–(रक्तनाडी–आगन्तुनिमित्ता)		,, १६–२६.	,, २१–२९, ३१.	५६–२१.	,, ७–१३३.	,, ६५–३६.
दन्तगतरोगाः—						
दालन (कराल)		,, १६–२८.	,, २१–११,१२.	५६–२२.	,, ७–१३०.	,, ६५–६५.
कृमिदन्तक		,, १६–२९.	,, २१–१९, २०.	५६–२३.	,, ७–१३०.	,, ६५–६६.
दन्तहर्ष		,, १६–३०.	,, २१–१२,१३.	५६–२५.	,, ७–१३१.	,, ६५–६८.
भञ्जनक(दन्तभेद)		,, १६–३१.	,, २१–१३.	५६–२४.	,, ७–१३१.	,, ६५–६७.
अधिदन्त			, २१–१५.		,, ७–१३१.	
दन्तशर्करा		,, १६–३२.	,, २१–१६.	५६–२६.	,, ७–१३०.	,, ६५–६९.
कपालिका		,, १६–३३.	,, २१–१६,१७.	५६–२७.	,, ७–१३१.	,, ६५–७०.
श्यावदन्तक		,, १६–३४.	,, २१–१७.	५६–२८.	,, ७–१३१.	,, ६५–७१.
हनुमोक्ष–(दन्तचाल)		,, १६–३५.	,, २१–१४.		,, ७–१३०.	
दन्तविद्रधि	चि. १२–७८.		,, २१–२४,२५.	५६–२९.	,, ७–१३२.	,, ६५–३७.
जिह्वागतरोगाः–						
वातज		,, १६–३७.	,, २१–३१.	५६–३०.	,, ७–१३४.	,, ६५–८७.
पित्तज		,, १६–३७.	,, २१–३२.	५६–३०.	,, ७–१३४.	,, ६५–८८.
कफज		,, १६–३७.	,, २१–३२.	५६–३०.	,, ७–१३४.	,, ६५–८९.

रोगाणां नामानि–	चरक–संहिता	सुश्रुत–संहिता	अ. हृदयम्	माधव–निदानम्	शार्ङ्गधर–संहिता	भावप्रकाशः
	स्था अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अलास		नि. १६–३८.	उ. २१–३३.	५६–३१.	पू. ७–१३४.	म. ६५–९०.
उपजिह्विका	चि. १२–७७. सू. १८–१९.	,, १६–३९.	,, २१–३५.	५६–३२.	,, ७–१३५.	,, ६५–९१.
अधिजिह्वा	चि. १२–७७.	,, १६–५२.	,, २१–३४,३५.		,, ७–१३५.	,, ६५–१२३.
तालुगतरोगाः–						
गलशुण्डिका– (कण्ठशुण्डी)	सू. १८–२०.	,, १६–४१.	,, २१–३७,३८.	५६–३३.	,, ७–१२६.	,, ६५–९९.
गलग्रह	,, १८–२२.					
तुण्डिकेरी		,, १६–४२.	,, २१–४७.	५६–३४.	,, ७–१३८.	,, ६५–१००.
अध्रुष		,, १६–४२.	,, २१–४७.	५६–३४.	,, ७–१३५.	,, ६५–१०१.
कच्छप(पी)		,, १६–४३.	,, २१–३९.	५६–३५.	,, ७–१३५.	,, ६५–१०२.
अर्बुद		,, १६–४३.	,, २१–३९.	५६–३५.	,, ७–१३५.	,, ६५–१०३.
मांससंघात– (तालुसंहति)		,, १६–४४.	,, २१–३८.	५६–३६.	,, ७–१३५.	,, ६५–१०४.
तालुपुप्पुट		,, १६–४४.	,, २१–४०.	५६–३६.		,, ६५–१०५.
तालुशोष		,, १६–४५.	,, २१–४१.	५६–३७.	,, ७–१३५.	,, ६५–१०६.
तालुपाक (तालुशोथ)		,, १६–४५.	,, २१–४०.	५६–३७.	,, ७–१३५.	,, ६५–१०६.
तालुपिडका			,, २१–३६.			,, ६५–११५.
कण्ठगतरोगाः–						
रोहिणी	,, १८–३४– ३६.	,, १६–४६.	,, २१–४२.	५६–३८.	,, ७–१३७.	,, ६५–११६.
वातज ,,		,, १६–४८.	,, २१–४२.	५६–३९.	,, ७–१३७.	
पित्तज ,,		,, १६–४९.	,, २१–४३.	५६–४०.	,, ७–१३७.	,, ६५–११७.
कफज ,,		,, १६–४९.	,, २१–४४.	५६–४०.	,, ७–१३७.	,, ६५–११८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सन्निपातज-रोहिणी		नि. १६–५०.	उ. २१–४५.	५६–४१.	पू. ७–१३७.	म. ६५–११९.
रक्तज ,,		,, १६–५०.	,, २१–४४.	५६–४१.	,, ७–१३७.	,, ६५–१२०.
मेदोज ,,					,, ७–१३८.	
कण्ठशालूक-(तुण्डिकेरी)		,, १६–५१.	,, २१–४५, ४६.	५६–४२.	,, ७–१३८.	,, ६५–१२२.
अधिजिह्वा		,, १६–५२.	,, २१–५२.	५६–४३.		,, ६५–१२३.
वलय		,, १६–५३.	,, २१–४९.	५६–४४.	,, ७–१३९.	,, ६५–१२४.
बलास		,, १६–५४.		५६–४५.		,, ६५–१२५.
एकवृन्द		,, १६–५५.	,, २१–४६.	५६–४६.		,, ६५–१२६.
वृन्द		,, १६–५६.	,, २१–४६.	५६–४७.	,, ७–१३८.	,, ६५–१२७.
शतघ्नी		,, १६–५७.	,, २१–५०, ५१.	५६–४८.	,, ७–१३८.	,, ६५–१२८.
गिलायु		,, १६–५८.	,, २१–४९, ५०.	५६–४९.	,, ७–१३९.	,, ६५–१२९.
गलविद्रधि		,, १६–५९.	,, २१–५१, ५२.	५६–५०.	,, ७–१३८.	,, ६५–१३०.
गलौघ		,, १६–६०.	,, २१–४८.	५६–५१.	,, ७–१३८.	,, ६५–१३१.
स्वरघ्न		,, १६–६१.	,, २१–५७.	५६–५२.	,, ७–१३८.	,, ६५–१३२.
मांसतान-(अर्बुद)		,, १६–६२.	,, २१–५२, ५३.	५६–५३.	,, ७–१३८.	,, ६५–१३३.
विदारी		,, १६–६३.		५६–५४.		,, ६५–१३४.
सर्वसरमुखरोग-						
वातज		,, १६–६५.	,, २१–५८,५९.	५६–५५.	,, ७–१४०.	,, ६५–१४८.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पित्तज		नि. १६–६५.	उ. २१–६१.	५६–५५.	पू. ७–१४०.	म. ६५–१४९.
कफज		,, १६–६६.	,, २१–६२.	५६–५५.	,, ७–१४०.	,, ६५–१५०
रक्तज (मुखपाक)		,, १६–६६.	,, २१–६१.		,, ७–१४१.	
सन्निपातज			,, २१–६२.		,, ७–१४१.	
पूत्यास्य					,, ७–१४१.	
ऊर्ध्वगु(ग)द					,, ७–१४१.	
अर्बुद			,, २१–६२, ६३.		,, ७–१४१.	
कृच्छ्रश्वास			,, २१–६९.			
मूत्ररोग—						
मूत्रकृच्छ्र—	चि. २६–३२.	उ. ५९–४.	नि. ९.	३०–१.	,, ७–५७.	,, ३४–३.
वातज	,, २६–३४.		,, ९–४.	३०–३.	,, ७–५७.	
पित्तज	,, २६–३४.	,, ५९–५.	,, ९–४.	३०–३.	,, ७–५७.	,, ३४–४.
कफज	,, २६–३५.	,, ५९–६.	,, ९–५.	३०–४.	,, ७–५७.	,, ३४–५.
सन्निपातज	,, २६–३५.	,, ५९–७.	,, ९–५.	३०–४.	,, ७–५८.	,, ३४–६.
अश्मरीज	,, २६–४०.	,, ५९–११–१४.	,, ९–६.			,, ३४–१०.
पुरीषरोधज		,, ५९–९.		३०–६.	,, ७–५८.	,, ३४–८.
शर्कराज	,, २६–३९.	,, ५९–११–१५.	,, ९–१९.	३०–९.		,, ३४–११.
शोणितज	,, २६–४३.			३०–५.		
शल्यज		,, ५९–९.			,, ७–५८.	,, ३४–७.
शुक्रजन्य	,, २६–४१.		,, ९–१७.	३०–८.		,, ३४–९.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मूत्रघात—						
मूत्रौकसाद	सि. ९–२८.	उ. ५८–२४, २६.	नि. ९–३९.	३१–१७,१९.	पू. ७–५६.	म. ३५–१७, १८.
मूत्रजठर	,, ९–३०.	,, ५८–१३, १४.	,, ९–२७,२८	३१–८,९.	,, ७–५५.	,, ३५–८,९.
मूत्रोत्सङ्ग	,, ९–३४.	,, ५८–१५, १६.	,, ९–२९,३०	३१–१०,११.	,, ७–५५.	,, ३५–१०, ११.
मूत्रक्षय	,, ९–३४.	,, ५८–१७.	,, ९–३७.	३१–१२.	,, ७–५५.	,, ३५–१२.
मूत्रातीत	,, ९–३५.	,, ५८–११, १२.	,, ९–२६,२७	३१–७.	,, ७–५४.	,, ३५–७.
वाताष्ठीला	,, ९–३६.	,, ५८–७,८.	,, ९–२३.२४	३१–४.	,, ७–५४.	,, ३५–४.
वातवस्ति	सि. ९–३७.	,, ५८–९,१०.	नि.९–२०–२३.	३१–५,६.	,, ७–५४.	,, ३५–५.
उष्णवात	,, ९–३८.	,, ५८–२२, २३.	,, ९–३५, ३६.	३१–१५,१६.	,, ७–५६.	,, ३५–१५, १६.
वातकुण्डलिका	,, ९–४०.	,, ५८–५,६.	,, ९–२५, २६.	३१–२,३.	,, ७–५६.	,, ३५–२,३.
मूत्रग्रन्थि	,, ९–४१.	,, ५८–१८, १९.	,, ९–३१.	३१–१३.	,, ७–५५.	,, ३५–१३.
मूत्रशुक्र		,, ५८–२०, २१.	,, ९–३२,३३.	३१–१४.	,, ७–५६.	,, ३५–१४.
विड्विघात	,, ९–४३.		,, ९–३३,३४.	३१–१९,२०.	,, ७–५६.	,, ३५–१९, २०.
वस्तिकुण्डल	४६.			३१–२१,२४.	,, ७–५६.	,, ३५–२१, २४.
मूढगर्भ—		नि. ८–३.		६४–३.	,, ७–१८१.	,, ६९–११४.
कील		,, ८–४.		६४–६.		
प्रतिखुर		,, ८–४.		६४–६.		,, ६९–११४.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
परिघ		नि. ८–४.		६४–६.		म. ६९–११४.
बीजक		,, ८–४.		६४–६.		,, ६९–११४.
मूर्च्छा—		उ. ४६–१.	नि. ६–३०.	१७–१,५.	पू. ७–३१.	,, १८.
वातज	सू. २४–३५,३६.	,, ४६–८.	,, ६–३०,३१.	१७–७,८.	,, ७–३१.	,, १८–८.
पित्तज	,, २४–३७,३८.	,, ४६–८.	,, ६–३२,३३.	१७–९,१०	,, ७–३१.	,, १८–९,१०.
कफज	,, २४–३९,४०.	,, ४६–८.	,, ६–३३,३४.	१७–११,१२.	,, ७–३१.	,, १०–११,१२.
सन्निपातज	,, २४–४१.		,, ६–३५.	१७–१३.	,, ७–३२.	,, १८–१३.
रक्तज		,, ४६–८.		१७–१४,१५.		,, १८–१५.
मद्यज		,, ४६–८.		१७–१६,१७.		,, १८–१७.
विषज	,, २४–३४.	,, ४६–१८.		१७–१८.		,, १८–१८.
ग्लानिज					,, ७–३२.	
योनिरोग—	चि. ३०–१.	,, ३८.	उ. ३३.	६२–१.	,, ७–१७७.	,, ६९.
वातज	,, ३०–९–११.	,, ३८–६,७.	,, ३३–२८,–३१.	६२–४.	,, ७–१७७.	,, ६९–२–७.
पित्तज	,, ३०–११,१२.	,, ३८–७.	,, ३३–४२,४३.	६२–७.	,, ७–१७७.	,, ६९–३–१०.
कफज	,, ३०–१३,१४.	,, ३८–८.	,, ३३–४४,४५.	६२–१०.	,, ७–१७७.	,, ६९–४–१३.
सन्निपातज	,, ३०–१४.	,, ३८–९.	,, ३३–५१.	६२–१२.	,, ७–१७७.	,, ६९–५-१६.
अचरणा	,, ३०–१८.	,, ३८–१६.		६२–९.	,, ७–१७९.	,, ६९–१२.
अत्यानन्दा		,, ३८–१५.		६२–८.	,, ७–१७९.	,, ६९–११.
अतिचरणा	,, ३०–१९.	,, ३८–१६.	,, ३३–३१.	६२–९.	,, ७–१७९.	,, ६९–१२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
अन्तर्मुखी	चि. ३०-२९-३१.	उ. ३८-१६.	उ. ३३-३५, ३६.		पू. ७-१७८.	
अरजस्का	,, ३०-१७.			६२-११.	,, ७-१७८.	
असृग्दर	,, ३०-२०८.	शा. २-१८.		६२-१-५.	,, ७-१७६.	
उदावर्तिनी	,, ३०-२५, २६.	उ. ३८-९.	,, ३३-३३.	६२-२.	,, ७-१७९.	म. ६९-६.
उपप्लुता (अप्लुता)	,, ३०-२१, २२.	,, ३८-१०.	,, ३३-४८, ४९.	६२-३.	,, ७-१७९.	
जातघ्नी			,, ३३-३४.			,, ६९-९.
लोहितक्षया			,, ३३-४५.		,, ७-१७७.	,, ६९-८.
विप्लुता		,, ३८-६.	,, ३३-४९.		,, ७-१७८.	,, ७०-९.
आनन्दचरणा						,, ७०-१२.
कर्णिनी	,, ३०-२७, २८.	,, ३८-१५.	,, ३३-५०, ५१.	६२-८.	,, ७-१७९.	,, ७०-११.
परिप्लुता	,, ३०-२३, २४.	,, ३८-६.	,, ३३-४६-४८.	६२-३.	,, ७-१७८.	,, ७०-७.
पुत्रघ्नी	,, ३०-२८, २९.	,, ३८-१२.		६२-६.	,, ७-१७८.	,, ७०-९.
प्रदर	,, ३०-२०४.	,, ३८-१३.				,, ६६.
प्रस्रंसिनी(रक्तजा)		,, ३८-१३.		६२-६.	,, ७-१७७.	,, ६९-८.
प्राक्चरणा	,, ३०-२०.	,, ३८-१९.	,, ३३-३२.		,, ७-१७९.	
फलिनी		,, ३८-१८.		६२-११.	,, ७-१७८.	,, ६९-१४.
महायोनि(विवृता)	,, ३०-३५-३७.	,, ३८-१९.	,, ३३-४०, ४१.	६२-१२.	,, ७-१७९.	,, ६९-१५.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
योनिकन्द				६२–१,४.		म. ६९–१९.
खण्डिता					पू. ७–१७८.	
अण्डली				६२–११.		
रक्तयोनि–(लोहितक्षया)	चि. ३०–१६.	उ. ३८–१२.	उ. ३३–४३	६२–५.	,, ७–१७७.	,, ६९–८.
वामिनी.	,, ३०–३२, ३४.	,, ३८–१२.	,, ३३–३८, ३९.	६२–५.	,, ७–१७८.	,, ६९–९.
शुष्का	,, ३०–३३.		,, ३३–३७,३८.		,, ७–१७८.	
वन्ध्या		,, ३८–६.		६२–२.		,, ६९–६.
षण्ढयोनि	,, ३०–३४, ३५.	,, ३८–१८.	,, ३३–३९, ४०.	६२–११.		,, ६९–१४.
सूचीमुखी	,, ३०–३१, ३२.	,, ३८–१९.	,, ३३–३६, ३७.	६२–१२.	,, ७–१७८.	,, ६९–१५.
सोमरोग				३–१,६. परि०	,, ७–६३.	,, ६९.
रक्तपित्त—	चि. ४. नि. २.	,, ४५–१.	नि. ३.	९–१,२.	,, ७–२०.	,, ९.
ऊर्ध्वभागज	नि. २–८. चि. ४–१५.	,, ४५–५.	,, ३–७.	९–३.	,, ७–२०.	,, ९–३.
अधोभागज	नि. २–८. चि. ४–१६.	,, ४५–५.	,, ३–७.	९–३.	,, ७–२०.	,, ९–३.
उभयभागज	नि. २–८.	,, ४५–६.	,, ३–१३.	९–७.	,, ७–२०.	,, ९–७.
वातज	चि. ४–११.		,, ३–११.	९–५.	,, ७–२०.	,, ९–५.
पित्तज	,, ४–११.			९–६.		,, ९–६.
कफज	,, ४–११.		,, ३–८.	९–५.	,, ७–२०.	,, ९–५.

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सान्निपातिक	,, ४-१३.			९-७.		
राजयक्ष्मा—	नि. ६. चि. ८.	उ. ४१-१.	नि. ५.	१०.	पू. ७-२२.	म. ११.
साहसज	,, ८-१४-१९. नि. ६-३.	,, ४१-८.	,, ५-४.	१०-१		,, ११-१.
वेगरोधज	चि.८-२०-२३. नि. ६-३.	,, ४१-८.	,, ५-४.	१०-१.		,, ११-१.
विषमाशनज	चि. ८-२८-३२. नि. ६-३.	,, ४१-८.	,, ५-४.	१०-१.		,, ११-१.
क्षयज	चि.८-२४-२७. नि. ६-३.	,, ४१-१०.	,, ५-४.	१०-१.	,, ७-२३.	,, ११-१,
व्यवायजन्य		,, ४१-१७.		१०-१.	,, ७-२३.	,, ११-२०.
शोषजन्य						,, ११-२०,२१.
शोकजन्य		,, ४१-१८.		१०-१५.	,, ७-२३.	,, ११-२१.
वार्धक्यजन्य		,, ४१-१९, २०.		१०-१६-१८.	,, ७-२४.	,, ११-२२, २३.
व्यायामजन्य	चि. ११-४-८.	,, ४१-२२.		१०-१९.	,, ७-२४.	,, ११-२५.
अध्वजन्य		,, ४१-२१.		१०-१८, १९.	,, ७-२४.	,, ११-२४.
व्रणजन्य		,, ४१-२३.		१०-२०.	,, ७-२३.	२६.
उरःक्षतजन्य	चि. ११-९-११.	,, ४१-२४-२६.		१०-२१-२९.	,, ७-२३.	,, ११-३१-३३.
रेतोदोष—	,, ३०.				,, ७-१७२.	

रोगाणां नामानि–	चरक– संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत– संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव– निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर– संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
तनु–रेतस्	चि. ३०–१३९, १४०.					
शुष्क ,,	,, ३०–१३९, १४०.					
फेनिल ,,	,, ३०–१३९, १४०.					
अश्वेत ,,	,, ३०–१३९, १४०.					
पूति ,,	,, ३०–१३९, १४०.					
अतिपिच्छिल ,,	,, ३०–१३९, १४०.					
अन्यधातूपहित ,,	,, ३०–१३९, १४०.					
अवसादि– (ग्रथित) ,,	,, ३०–१३९, १४०.		शा. १–११.			
वातदुष्ट ,,	,, ३०–१४०.	शा. २–४.	,, १–१०.		पू. ७–१७२.	
पित्तदुष्ट ,,	,, ३०–१४२.	,, २–४.	,, १–१०.		,, ७–१७२.	
कफदुष्ट ,,	,, ३०–१४२.	,, २–४.	,, १–१०.		,, ७–१७२.	
रक्तान्वित ,,	,, ३०–१४३.	,, २–४.	,, १–११.		,, ७–१७२.	
वातपित्तदुष्ट ,,		,, २–४.	,, १–११.		,, ७–१७३.	
वातकफदुष्ट ,,		,, २–४.	,, १–११.		,, ७–१७३	
पित्तकफदुष्ट ,,		,, २–४.			,, ७–१७३.	
रक्तपित्तदुष्ट ,,			शा. १–११.		,, ७–१७३.	
सन्निपातदुष्ट ,,		,, २–४.			,, ७–१७४	

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मूत्रप्रभ – रेतस्			नि. १–१२.			
विट्प्रभ „			„ १–१२.			
रोमान्तिका—	चि. १२–९२.			५४–१३.		म. ५९–२२.
वातबलास–	„ २९–११.		„ १६–४.			
वातविकार– (नानात्मज)	सू. २०–१०.					„ २३–४–१६.
अतिप्रलाप	„ २०–११.			२२–६.	पू. ७–११२.	
अनवस्थितचित्तत्व	„ २०–११.				„ ७–११३.	
अङ्गमर्द						„ २३–२१८.
अङ्गशुष्कता						„ २३–२१८.
अङ्गविभ्रंश						„ २३–२१८.
अर्दित	सू. २०–११.	नि. १–६८–७२.		२२–४५, ४७.	„ ७–१०६.	„ २३–६०–६३.
अरसज्ञता	„ २०–११.					„ २३–५३.
अशब्दश्रवण	„ २०–११.				„ ७–११५.	
अस्वप्न	„ २०–११.				„ ७–११२.	
अक्षिभेद	„ २०–११.					
अक्षिव्युदास	„ २०–११.			२२–८.	„ ७–११५.	
अक्षिशूल	„ २०–११.					
आटोप	चि. २८–२८.			२२–६८.		„ २३–२१६.
आमवात				२५–५.	„ ७–४१.	„ २३–६,७.
आक्षेपक	सू. २०–११.	नि. १–५०, ५१.	नि. १५–१७.	२२–२७, २८.	„ ७–१०५.	

रोगाणां नामानि-	चरक- संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत- संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव- निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर- संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
उच्चैःश्रुति	सू. २०-११.					
उदरावेष्ट	,, २०-११.					
उदावर्त	,, २०-११.					
ऊरुस्तम्भ	,, २०-११.			२४-१,१०.	पू. ७-१०५.	म. २४-१०४.
ऊरुसाद	,, २०-११.					
एकाङ्गरोग	,, २०-११.			२२-४०,४१.		
ओष्ठभेद	,, २०-११.					
कण्ठोद्ध्वंस	,, २०-११.					
कर्णशूल	,, २०-११.	नि. १-८४.				
कम्प	,, २४-१५.		सू. ११-६.	२२-७४.	,, ७-११२.	,, २३-२१७.
कषायास्यता	,, २०-११.				,, ७-११४.	
क्लम	,, २४-१४.					
कार्ष्ण्य			सू. ११-६.			,, २३-२१७.
कुब्जत्व	,, २०-११.		नि. १५-१४.			,, २३-१८८.
कार्श्य						,, २३-२१७.
केशभूमिस्फुटन	,, २०-११.					
खञ्जत्व	,, २०-११.			२२-५९, ६०.		,, २४-१५१.
गर्भनाश	चि. २८-२२.			२२-७.		,, २४-२१९.
ग्रीवास्तम्भ- (ग्रीवाहुण्डन)	सू. २०-११.			२२-८.		
गुदभ्रंश	,, २०-११.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
गुदार्ति	सू. २०-११.					
गुल्फग्रह	,, २०-११.					
गृध्रसी	,, २०-११.			२२-५४,५६.	पू. ७-१०८.	म. २३-१२९, १३०.
घ्राणनाश-(नासाहुण्डन)	,, २०-११.		नि. १५-९.	२२-८.	,, ७-११५.	
जानुभेद	,, २०-११.					
जानुविश्लेष	,, २०-११.					
जृम्भा	,, २०-११.				,, ७-१११.	,, २३-२०.
तमस्	,, २०-११.					
तिमिर	,, २०-११.					
त्वक्शून्यता						,, २३-५८.
तोद						,, २३-२१८.
दण्डक	,, २०-११.					
दन्तभेद	,, २०-११.					
दन्तशैथिल्य	,, २०-११.					
नखभेद	,, २०-११.					
निद्रानाश	चि. २८-२१.				,, ७-११२.	,, २३-२१९.
निरामवात			नि. १६-३०.			
पक्षवध(पक्षघात)	सू. २०-११.	नि. १-६०-६२.		२२-४०, ४१.		

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
नाकुल्य	सू. २०-११.	नि. १-७७.		२२-५१,६०.	पू. ७-१०७.	म. २३-११२.
पादभ्रंश	,, २०-११.					
पादशूल	,, २०-११.					
पादसुप्तता	,, २०-११.					
पादरुग्	,, २०-११					
पार्श्वविमर्दः	,, २०-११.					,, २३-२१६.
पिण्डिकोद्वेष्टनम्	,, २०-११.					
पुरीषातिगाढत्व					,, ७-११०.	,, २३-२१६.
प्रमेह	,, २०-११.		नि. १५-७.			
प्रलापक			सू. ११-६.		,, ७-११२.	,, २३-५१.
बाधिर्य	,, २०-११.	३ नि. १-८३.				
बाहुशोष	,, २०-११					,, २३-७९.
बलहानि						,, २३-२१५.
भेद						,, २३-२१८.
नीरवता					७-११४.	,, २३-२१९.
मलावृति						,, २३-२१७.
मूकत्व	,, २०-११.	,, १-८५.		२२-६५,६६.	,, ७-१११.	,, २३-८५.
मेद						,, २३-२१८.
भ्रम	,, २०-११.		सू. ११-६.			
मृत्युदाह	,, २०-११.					
मन्यास्तम्भ	,, २०-११.	,, १-६७.		२२-५१.	,, ७-१०७.	,, २३-५१.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मुखशोष	सू. २०-११.					
मूत्रनिग्रह						म. २३-१२२.
रजोनाश	चि. २८-२२.			२२-७.		,, २३-२१८.
रौक्ष्य	सू. २०-११.					,, २३-२१७.
लोमहर्ष						,, २३-२१७.
ललाटभेद	,, २०-११.					
त्रिकग्रह	,, २०-११.				पू. ७-१०६.	,, २३-११५.
वर्त्मस्तम्भ	,, २०-२१.					
वर्त्मसंकोच	,, २०-११.					
वक्षउद्घर्ष	,, २०-११.					
वक्षउपरोध	,, २०-११.					
वक्षस्तोद	,, २०-११.					
वाक्सङ्ग	,, २०-११.				,, ७-१०६.	
वाचालता						,, २३-२१६.
वातखुड्डता-(वातकण्टक)	,, २०-११.	नि. १-७९. ,, १-७९.	नि. १६-४.	२२-६१,६२.		,, २३-१६०.
वामनत्व	,, २०-११.				,, ७-१०९.	
विड्भेद	,, २०-११.		सू. ११-६.			
विपादिका	,, २०-११.			४९-१९.		
विषाद (दीनता)	,, २०-११.		,, ११-६.			
वृषणाक्षेप	,, २०-११.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
वेपथु	सू. २०-११.					
वङ्क्षणानाह	,, २०-११.					
व्यथा						म. २३-२१७.
शिरास्फूर्ति						,, २३-२१८.
शिरोरुक्	,, २०-११.					
शुक्रक्षय	चि. २८-३४.		नि. ५-१३.		पू. ७-११३.	,, २३-२१९.
शङ्खभेद	सू. २०-११.					
शेफस्तम्भ	,, २०-११.					
शैत्य						,, २३-२१७.
श्यावारुणास्यता	,, २०-११.					
श्रोणिभेद	,, २०-११.		,, १५-७.			
सङ्कोच						,, २३-२१८.
स्वेदनाश						,, २३-२१९.
श्रम						,, २३-२१९.
सर्वाङ्गरोग	सू. २०-११.					
	चि. २८-२९.					
स्तम्भ	चि. २८-३०.					,, २३-२१७.
हनुभेद	सू. २०-११.		,, १५-२९, ३०.			
हिक्का	,, २०-११.	उ. ५०-१,२.		१२-१,२		
हृद्द्रव	,, २०-११.					
हृन्मोह	,, २०-११.					

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ह्रस्वकेश						म. २३-२१६.
वातव्याधि— (सामान्यज)	चि. २८.					
अन्तरायाम	,, २८-४३, ४४.	नि. १-५५, ५६.	नि. १५-२२-२४.	२२-३६.	पू. ७-१०६.	,, २३-१८१.
अपतन्त्रक	सि. ९-१२, १४.	,, १-६४-६६.	,, १५-१७-१९.	२२-३०.	,, ७-१०८.	,, २३-१९१, १९२.
अपतानक	,, ९-१५.	,, १-५२	,, १५-२०.	२२-३१,३२.	,, ७-१०८.	,, २३-१९८.
अर्दित	चि. २८-४१, ४२.	,, १-६९-७२.	,, १५-३२-३७.	२२-४४-४६.	,, ७-१०६.	,, २३-६०-६३.
अस्थिप्रभेद	,, २८-२०.			२२-१८.		
अस्थिशोष						
वाताष्ठीला	सि. ९-७,८.	,, १-९०.	,, ९-२३,२४	२२-७०,७१.	,, ७-१०९.	,, २३-१०८.
अववाहुक		,, १-८२.	,, १५-४३.	२२-६४.	,, ७-१०८.	,, २३-८१.
आढ्यवात			,, १५-४७-५९.			
ऊरुस्तम्भ			,, १५-४७-५९.			
अंसशोष		,, १-८२.		२२-६४.		
आक्षेपक	चि. २८-५०.	,, १-५०-५८.	,, १५-१७.	२२-३७.	,, ७-१०५.	,, २३-१६७.
आध्मान		,, १-८८.	,, ११-६०.	२२-६९.	,, ७-११४.	,, २३-९३.
वहिरायाम- (बाह्यायाम)	,, २८-४३, ४४.	,, १-५५, ५६.		२२-३६.	,, ७-१०३.	
ऊर्ध्ववात		उ. ३९-१३१.				२३-९०.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
एकाङ्गवात	चि. २८-५३-५५.		नि. १५-३७-४०.	२२-४१.		
कलापखञ्ज		नि. १-७८.	,, १५-४६.	२२-६०,६१.	पू. ७-१०७.	म. २३-१५३.
क्रोष्टुकशीर्ष		,, १-७६.	,, १५-५२.	२२-५८,५९.	,, ७-१०७.	,, २३-१५५.
खञ्ज		,, १-७७.	,, १५-४५.	२२-५९,६०.	,, ७-१०७.	,, २३-१५१.
खल्ली	,, २८-५७.	,, १-७५.	,, १५-५५.	२२-७४.	,, ७-१०६.	,, २३-१५८.
गृध्रसी	,, २८-५६.	,, १-७४.	,, १५-५४.	२२-५४-५६.	,, ७-१०८.	,, २३-१२९, १३०.
जिह्वास्तम्भ			,, १५-३१.	२२-५२.	,, ७-१०६.	,, २३-४३.
तूनी		,, १-८६.	,, ११-६२.	२२-६६,६७.	,, ७-१०६.	,, २३-११२.
दण्डक	चि. २८-५१, ५२.		,, १५-४२.			
दण्डापतानक		,, १-५३.	,, १५-४२.	२२-३२,३३.	,, ७-१०६.	,, २३-१७०.
धनुःस्तम्भ	,, २८-४५, ४८.	,, १-५४.	,, १५-२४, २६.	२२-३३.	,, ७-१०६.	,, २३-१८७.
पक्षाघात		,, १-६०,६१.	,, १५-३८, ४०.	२२-४०,४१.	,, ७-१०७.	,, २३-२०४.
पाददाह		,, १-८०	,, १५-५६, ५६½.	२२-६२,६३.		,, २३-१६२.
पादहर्ष		,, १-८१.	,, १५-५५, ५६.	२२-६३,६४.	,, ७-१०८.	,, २३-१६५.
प्रतितूनी		,, १-८७.	,, ११-६२.	२२-६७,६८.	,, ७-१०७.	,, २३-११३.
प्रत्यष्ठीला		,, १-९१.	,, ११-६१.	२२-७२.	,, ७-१०९.	,, २३-१०९.
प्रत्याध्मान		,, १-८९.		२२-६९,७०.	,, ७-११४.	,, २३-१०५.
व्रणायाम			,, १५-२७,२८.			

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता स. अ. श्लो.	भावप्रकाशः स. अ. श्लो.
पङ्गु			नि. १५–४५.			
बहिरायाम	चि. २८–४५–४८.	नि. १–५७.	,, १५–२४–२६.	२२–३६.	पू. ७–१०६.	म. २३–१८४, १८५.
मिन्मिन		,, १–८५.		२२–६५,६६.	,, ७–१०९.	,, २३–४५.
मन्यास्तम्भ	,, २८–४५.	,, १–६७.		२२–५१.	,, ७–१०७.	,, २३–७५.
मूक		,, १–८५.		२२–६५,६६.	,, ७–१११.	,, २३–४५,
वातकण्टक		,, १–७९.	,, १५–५३.	२२–६१,६२.	,, ७–१०८.	,, २३–१६०.
विश्वाची		,, १–७५.	,, १५–४४.	२२–५७,५८.	,, ७–१०८.	,, २३–८६.
वेपथु	सू. २०–११.			२२–७४.	,, ७–११२.	
शिरोग्रह						,, २३–१८.
सर्वाङ्गवात	,, २०–११. चि. २८–५५.		,, १५–४०.	२२–४१.		,, २३–२१३.
सिराग्रह			,, १५–३७, ३८.	२२–५३.		
हनुग्रह	,, २८–५०.	,, १–५३.	,, १५–२९, ३०.	२२–४९,५०.	,, ७–१०५.	,, २३–२४, २५.
वातरक्त—	,, २९.	,, १–४२, ४४.	,, १६.	२३.	,, ७–१०४.	,, २८–९, १०.
उत्तान	,, २९–१९, २०.		,, १६–९.			
गम्भीर	,, २९–२१–२३.		,, १६–१०,११.			
दोषज	,, २९–२४–२९.	,, १–४५, ४६.	,, १६–१२–१६.	२३–९–१२.	,, ७–१०४.	,, २८–९–१३.
विसूचिका-		उ. ५६.	सू. ८–७,८.	६–१६,१७.	,, ७–११.	,, ६–२४–२६.
विसर्प-	चि. २१.	नि. १०–३.		५२.	,, ७–१००.	,, ५५.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
वातज	चि. २१-२९, ३०.	नि. १०-४.	नि. १३-४७, ४८.	५२-५.	पू. ७-१००.	म. ५५-५.
पित्तज	,, २१-३१, ३२.	,, १०-५.	,, १३-४८.	५२-६.	,, ७-१००.	,, ५५-६.
कफज	,, २१-३३, ३४.	,, १०-६.	,, १३-४९.	५२-७.	,, ७-१००.	,, ५५-७.
सन्निपातज	,, २१-४१, ४२.	,, १०-६.	,, १३-६५.	५२-७.	,, ७-१०१.	,, ५५-२२.
अग्निदाहज-(विसर्प)					,, ७-१०१.	
बाह्याश्रय			,, १३-४५,४६.			
अन्तराश्रय			,, १३-४६.			
उभयाश्रय			,, १३-४३.			
क्षतज		,, १०-७.	,, १३-६५,६६.	५२-२३-२४.	,, ७-१०१.	,, ५५-२३.
कर्दम-(पित्तकफज)	,, २१-३७, ३८.		,, १३-६०- ,, ६४.	५२-१७-२२.	,, ७-१०१.	,, ५५-१७-२१.
अग्नि-(वातपित्तज)	,, २१-३५, ३६.		,, १३-५०-५५.	५२-८-१३.	,, ७-१०१.	,, ५५-९-१३.
ग्रन्थि-(वातकफज)	,, २१-३९.		,, १३-५६-५९.	५२-१४-१७.	,, ७-१०१.	,, ५५-१४, १५.
विस्फोट—	,, १२-९०.	नि. १३-१८.	उ. ३१-९.	५३-१-३.	,, ७-९६.	,, ५७-३.
वातज				५३-४.	,, ७-९७.	,, ५८-४.
पित्तज				५३-५.	,, ७-९७.	,, ५७-५.
कफज				५३-६.	,, ७-९७.	,, ५७-६.
रक्तज				५३-१०.	,, ७-९७.	,, ५७-११.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
द्वन्द्वज				५३-७,८.	पू. ७-९७.	म. ५७-७-९.
सन्निपातज				५३-८,९.	,, ७-९७.	,, ५७-१०.
विद्रधि-	सू. १७-९०-१०३.	नि. ९.	नि. ११-१,२१.	४०-८,९.	,, ७-७०.	,, ४५.
बाह्यविद्रधि	,, १७-९०.			४०-१,३.	,, ७-७०.	,, ४५.
अन्तर्विद्रधि				४०-११-१६.		,, ४५-१४.
वातज	,, १७-९६.	,, ९-७.	,, ११-६,७.	४०-४.	,, ७-७०.	,, ४५-४.
पित्तज	,, १७-९६.	,, ९-८.	,, ११-७,८.	४०-५.	,, ७-७०.	,, ४५-५.
कफज	,, १७-९७.	,, ९-९.	,, ११-८,९.	४०-६.	,, ७-७०.	,, ४५-६.
सन्निपातज	,, १७-९७.	,, ९-१०.	,, ११-९.	४०-७,८.	,, ७-७१.	, ४५-७.
रक्तज		,, ९-१३.	,, ११-१०.	४०-१०,११.	,, ७-७१.	,, ४५-१०.
क्षतज(आगन्तु)			,, ११-११,१३.	४०-८,१०.	,, ७-७१.	,, ४५-८.
गुदज				४०-१४.		,, ४५-१३.
बस्तिज				४०-१४.		,, ४५-१३.
नाभिज				४०-१५.		,, ४५-१३.
कुक्षिज				४०-१५.		,, ४५-१३.
वङ्क्षणज				४०-१५.		,, ४५-१४.
वृक्कज				४०-१६.		,, ४५-१४.
प्लीहज				४०-१६.		,, ४५-१४.
हृज्ज				४०-१६.		,, ४५-१४.
यकृज्ज				४०-१६.		,, ४५-१४.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
क्लोमज				४०-१६.		म. ४५-१४.
विष—						
जङ्गम	चि. २३-९, १०.	क. ३-५.	उ. ३५-५.	६९-२.	पू. ७-१९६.	„ ६६-१, ३,२३.
स्थावर	„ २३-११-१३.	„ २-५.	„ ३५-४.	६९-३.	„ ७-१९६.	„ ६६-२.
गरविष	„ २३-१४.		„ ३५-६.	६९-३५,३७.	„ ७-२००.	„ ६६-४८.
कृत्रिमविष		„ २-२४.	„ ३५-६.		„ ७-१९९, २००.	„ ६६-४७.
दूषीविष	„ २३-३१.	„ २-२५,२६.	„ ३५-३३.	६९-२५,२६.	„ ७-२००.	„ ६६-३७.
पत्र-विष.						„ ६६-५.
फल „						„ ६६-६.
पुष्प „						„ ६६-७.
त्वक् „						„ ६६-८.
सार „						„ ६६-८.
निर्यास „						„ ६६-८.
क्षीर „						„ ६६-९.
धातु „						„ ६६-१०.
कन्द „						„ ६६-११.
व्रण—	चि. २५.	सू. २१-२८.		४२-१.	„ ७-७१.	
वातजन्य		„ २१-२८.	उ. २५-५-७.	४२-२.	„ ७-७२.	
पित्तजन्य		„ २१-२८.	„ २५-७,८.	४२-३.	„ ७-७२.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
श्लेष्मजन्य		सू. २१-२८.	उ. २५-९.	४२-४.	पू. ७-७२.	
रक्तजन्य		,, २१-२८.	,, २५-१०.		,, ७-७२.	
वातपित्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.		,, ७-७३.	
वातकफज		,, २१-२८.	,, २५-११.		,, ७-७३.	
पित्तकफज		,, २१-२८.	,, २५-११.		,, ७-७३.	
वातरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.		,, ७-७४.	
पित्तरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.	४२-५.	,, ७-७४.	
कफरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.	४२-५.	,, ७-७४.	
वातपित्तरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.	४२-५.	,, ७-७४.	
वातकफरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.	४२-५.	,, ७-७५.	
पित्तकफरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.	४२-५.	,, ७-७५.	
वातपित्तकफज		,, २१-२८.	,, २५-११.	४२-५.	,, ७-७३.	
वातपित्तकफरक्तज		,, २१-२८.	,, २५-११.		,, ७-७५.	
व्रणायाम			नि. १५-२७, २८.			
दुष्टव्रण	चि. २५-२०.	,, २२-७.	उ. २५-२-४.	४२-७,८.	,, ७-७२.	
सद्योव्रण		चि. २-९,१०.	,, २६-२.	४३-१,२.	,, ७-७६.	
नाडीव्रण	,, २५-५६.	नि. १०-९,१०.		४५-१,२.	,, ७-७९.	
शुद्धव्रण	,, २५-८६.	सू. २३-१८. चि. १-७.	,, २५-११, १२.	४५-८,९.	,, ७-७२.	
रुह्यमाणव्रण		सू. २३-१९.	,, २५-२२, २३.	४५-९,१०.		
सशल्यव्रण		,, २६-१३.		४३-१५.		

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
सम्यग्रूढव्रण		सू. २३-२०.		४२-१०,११.		
निज	चि. २५-९, १०.	चि. १-३.	उ. २५-१.	४२-१.	पू. ७-७१.	
आगन्तुज	,, २५-७.	,, १-३.	,, २५-१.	४२-१.	,, ७-७१.	
वृद्धि (व्रध्न)	,, १२-९४.	नि. १२-३.	नि. ११-२१, २२.	३७.	,, ७-६६.	म. ४२.
वातज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२४.	३७-३.	,, ७-६६.	,, ४२-३.
पित्तज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२४.	३७-४.	,, ७-६६.	,, ४२-४.
कफज	,, १२-९५.	,, १२-६.	,, ११-२५.	३७-४.	,, ७-६६.	,, ४२-५.
रक्तज		,, १२-६.	,, ११-२५.	३७-५.	,, ७-६७.	,, ४२-६.
मेदोज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२६, २७.	३७-५.	,, ७-६७.	,, ४२-७.
मूत्रज	,, १२-९४.	,, १२-६.	,, ११-२६.	३७-६.	,, ७-६७.	,, ४२-८.
अन्त्रवृद्धि	,, १२-९४, ९५.	,, १२-६.	,, ११-२९-३१.	३७-७-११.	,, ७-६७.	,, ४२-९.
अण्डवृद्धि					,, ७-६७.	
शीतपित्त—				५०-१-४.	,, ७-१०२.	,, ५४.
उदर्द	सू. २०-१७.			५०-१५.	,, ७-१०२.	,, ५४-४.
कोठ	,, २४-१६.		उ. ३१-३२.	५०-६.	,, ७-९४.	,, ५४-६.
शीतला—				१-१०. परि०		,, ५९-५५.
शूल—		,, ४२.		२६-१.	,, ७-४२.	,, २९.
वातज		,, ४२-८२, ८३.		२६-२-५.	,, ७-४२.	,, २९-२-५.

रोगाणां नामानि–	चरक–संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत–संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव–निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर–संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
पित्तज		उ. ४२–८४, ८५.		२६–६–८.	पू. ७–४२.	म. २९–६–८.
कफज		,, ४२–८५, ८६.		२६–९–१०.	,, ७–४२.	,, २९–९–१०.
सान्निपातिक		,, ४२–८७.		२६–११.	,, ७–४३.	,, २९–१२.
आमशूल		,, ४२–१२३–१२५.		२६–१२.	,, ७–४३.	,, २९–१३.
कुक्षिशूल						,, २९–१४.
द्वन्द्वजशूल				२६–१३, १४.	,, ७–४२.	,, २९–११–१५.
अम्लपित्तजशूल					,, ७–४४.	
परिणामशूल				२६–१५–१७.	,, ७–४३.	,, २९–२३.
अन्नद्रवशूल				२६–२१, २२.	,, ७–४४.	,, २९–२९.
बस्तिशूल		,, ४२–१३३, १३४.				,, २९–१४,
नाभिशूल						,, २९–१४.
हृदयशूल		,, ४२–१३१–१३२.				,, २९–१८,
पार्श्वशूल		,, ४२–११७–११९.			,, ७–१०६.	,, २९–१४.
त्रिकशूल					,, ७–१०६.	
मूत्रशूल		,, ४२–१३५.				
पुरीषशूल		,, ४२–१३६–१३९.				
अन्नदोषजशूल		,, ४२–१४२–१४४.				

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शोष—	नि. ६.					
(राजयक्ष्मन्)	,, ६.	उ. ४१.	नि. ५–१६–२२.	१०–१४.	पू. ७–२३.	म. ११.
शोथ—	,, १२–१.	सू. १७–३.	,, १३–२१.	३६–१.	,, ७–६५.	,, ४१–४.
शोणितजन्यरोग–	सू. २४–१.	,, १४–३४.				
अक्षिरोग	,, २४–११.			५९.	,, ७–१५३.	,, ६३.
अग्निसाद	,, २४–१३.					
अतिदौर्बल्य	,, २४–१३.					
अन्नपानविदाह	,, २४–१४.					
अरुचि	,, २४–१३.			१४.		
उपकुश	,, २४–१२.	नि. १६–२१–२३.	उ. २१–२१–२३.	५६–१७.	,, ७–१३२.	,, ६५–३१.
कण्डू	,, २४–१६.					
कम्प	,, २४–१५.		सू. ११–६.		,, ७–११२.	,, २३–२१७.
कुष्ठ	,, २४–१६.	,, ५.	नि. १४.	४९–१–६.	,, ७–८७.	,, ५३.
कोठ	,, २४–१६.		उ. ३१–३३.	५०–६.	,, ७–९४.	,, ५४–६.
क्रोधप्रचुरता	,, २४–१४.				,, ७–१२०.	
क्लम	,, २४–१४.					,, १८–२१.
गुरुगात्रता	,, २४–१३.				,, ७–१२२.	
गुल्म	,, २४–१२.	उ. ४२–४.	नि. ११–३३–३८.	२८–१,२.	,, ७–५२.	,, ३१.
चर्मदल	,, २४–१६.	नि. ५–१०.	नि. १४–२९.	४९–१८.	,, ७–८९.	,, ५३–२६.
तन्द्रातियोग	,, २४–१५.				,, ७–१२२.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
तमोऽतिदर्शन	सू. २४–१५.				पू. ७–१२१.	
तिक्ताम्लोद्गिरण	„ २४–१४.					
निद्रा	„ २४–१५.					म. १८–२२.
पिडका	„ २४–१६.	नि. ६–१४.		३३–२७,२८.	„ ७–१२६.	„ ३७.
पिपासा	„ २४–१३.					„ १७.
पूत्यास्यता	„ २४–११.				„ ७–१४१.	
पूतिगन्धता	„ २४–११.				„ ७–१२७.	
पूतिघ्राणता	„ २४–११.	उ. २२–८.			„ ७–१४८.	
प्रदर	„ २४–१२.			६१–१.	„ ७–१७६.	„ ६७.
प्रमीलक	„ २४–१२.		उ. २३–१४.			
बुद्धिसंमोह	„ २४–१४.					
मद	„ २४–१५.		नि. ६–२६, २७.	१८–७–११.	„ ७–२०३.	„ १९.
मुखपाक	„ २४–११.	नि. १६–६५, ६६.	उ. २१–५८, ५९.	५६–५५.	„ ७–१४०.	„ ६५–१४८.
रक्तपित्त	„ २४–१२.	उ. ४५–३,४.	नि. ३–१.	९.	„ ७–२०.	„ ९–१४८.
रक्तमेह	„ २४–१२.	नि. ६–११.	„ १०–१६.	३३–१५.	„ ७–६१.	„ ३७–१५.
लवणास्यता	„ २४–१४.					
वातरक्त	„ २४–१२.	„ १–४२–४४.	„ १६.	२३–१–१८.	„ ७–१०३.	„ २८.
विद्रधि	„ २४–१२.	„ ९–७.	„ ११.	४०–१–२०.	„ ७–७०.	„ ४५.
विवर्णता	„ २४–१३.					
विसर्प	„ २४–१२.	„ १०–३.	„ १३.	५२–१–२५.	„ ७–१००.	„ ५५.
स्वरक्षय	„ २४–१५.	„ १६–६१.	उ. २१–५७.	५६–५२.	„ ७–२९.	„ ६५–१३२.

रोगाणां नामानि—	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शरीरदौर्गन्ध्य	सू. २४–१५.				पू. ७–११८.	म. २६–८.
स्वेदाधिक्य	,, २४–१५.				,, ७–११७.	
शिरोरुक्	,, २४–१३.	उ. २५–३.				
सन्ताप	,, २५–१३.				,, ७–१२७.	
शूकरोग—		नि. १४.	उ. ३३.	४८.	,, ७–८३.	,, ५२.
अवमन्थ		,, १४–८,९.	,, ३३–१२,१३.	४८–६.	,, ७–८४.	,, ५२–९.
अलजी		,, १४–७.	,, ३३–१४.	४८–४.	,, ७–८५.	,, ५२–६.
अष्ठीलिका		,, १४–५.	,, ३३–१६.	४८–३.	,, ७–८४.	,, ५२–३.
अवपाटिका			,, ३३–१९.		,, ७–८४.	
उत्तमा		,, १४–११.	,, ३३–१४.	४८–८,९.	,, ७–८५.	,, ५२–१२.
कुम्भिका		,, १४–६.	,, ३३–१३.	४८–३.	,, ७–८६.	,, ५२–५.
ग्रथित		,, १४–६.	,, ३३–२१.	४८–३.	,, ७–८३.	,, ५२–४.
निरुद्धमणि			,, ३३–१९, २०.		,, ७–८५.	
तिलकालक		,, १४–१६,१७.	,, ३३–२५, २६.	४८–१४,१५.	,, ७–८६.	,, ५२–१९.
त्वक्पाक		,, १४–१२.	,, ३३–२३.	४८–१०.	,, ७–८४.	,, ५२–१४.
पुष्करिका		,, १४–९,१०.	,, ३३–१४, १५.	४८–७.	,, ७–८५.	,, ५२–१०.
मांसपाक		,, १४–१५,	,, ३३–२३.	४८–१२,१३.	,, ७–८५.	,, ५२–१७.
मांसार्बुद		,, १४–१३.	,, ३३–२५.	४८–१२.	,, ७–८५.	,, ५२–१६.
मृदित		,, १४–७.	,, ३३–१६.	४८–५.	,, ७–८४.	,, ५२–७.
विद्रधि		,, १४–१५.	,, ३३–२५.	४८–१३.	,, ७–८६.	,, ५२–१८.
शतपोनक		,, १४–१२.	,, ३३–२२.	४८–९,१०.	,, ७–८४.	,, ५२–१३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
शोणितार्बुद		नि. १४–१३.	उ. ३३–२४.	४८–११.	पू. ७–८६.	म. ५२–१५.
सर्षपिका		,, १४–४.	,, ३३–११,१२.	४८–२.	,, ७–८४.	,, ५२–२.
संमूढपिडका		,, १४–८.	,, ३३–१५.	४८–५.	,, ७–८५.	,, ५२–८.
स्पर्शहानि		,, १४–१०.	,, ३३–२१.	४८–८.	,, ७–८५.	,, ५२–११.
निवृत्त			,, ३३–१७,१८.			
शिरोरोग—	,, १७.			६०.	,, ७–१४९.	
वातजन्य	,, १७–१६–२१.	उ. २५–५.	,, २३–३–७.	६०–२.	,, ७–१४९.	,, ६१–३.
पित्तजन्य	,, १७–२२, २३.	,, २५–६.	,, २३–९.	६०–३.	,, ७–१५०.	,, ६१–४.
कफजन्य	,, १७–२४, २५.	,, २५–७.	,, २३–१०, ११.	६०–४.	,, ७–१५०.	,, ६१–५.
सन्निपातजन्य	,, १७–२६.	,, २५–८.	,, २३–११.	६०–५.	,, ७–१५०.	,, ६१–६.
रक्तज	-	,, २५–८.	,, २३–११.	६०–५.	,, ७–१५०.	,, ६१–७.
कृमिजन्य	,, १७–२७–२९.	,, २५–१०, ११.	,, २३–१२–१५.	६०–७.	,, ७–१५१.	,, ६१–१०.
अनन्तवात	सि. ९–८४, ८५.	,, २५–१३–१५.		६०–९,१०.		,, ६१–१३, १४.
अर्धावभेदक	,, ९–७४–७८.	,, २५–१५, १६.	,, २३–७,८.	६०–११–१३.	,, ७–१४९.	,, ६१–१७–१९.
सूर्यावर्त	,, ९–७९–८३.	,, २५–११–१३.	,, २३–१८–२०.	६०–८.	,, ७–१५१.	,, ६१–११, १२.
शङ्खक	,, ९–७०–७३.	,, २५–१६–१८.	,, २३–१६, १७.	६०–१४,१५.	,, ७–१५१.	,, ६१–१५, १६.
शिरःकम्प			,, २३–१५.		,, ७–१५१.	

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
क्षयजशिरोरोग				६०–६.		म. ६१–९.
उपशीर्षक			उ. २३–२१.		पू. ७–१५१.	
श्वयथु—		चि. २३.		३६.	,, ७–६५.	म. ४२.
वातज	चि. १२–१२.	,, २३–५.	नि. १३–३०–३२.	३६–७.	,, ७–६५.	,, ४२–५.
पित्तज	,, १२–१३.	,, २३–५.	,, १३–३३–३७.	३६–८.	,, ७–६५.	,, ४२–६.
कफज	,, १२–१४.	,, २३–५.	,, १३–३५–३७.	३६–९.	,, ७–६५.	,, ४२–७.
अभिघातज		सू. १७–४.	,, १३–३८,३९.	३६–११,१२.	,, ७–६६.	
विषज		चि. २३–५.	,, १३–४०–४२.	३६–१३–१५.	,, ७–६६.	
द्वन्द्वज			,, १३–३७.	३६–१०.	,, ७–६६.	
सन्निपातज		,, २३–५.	,, १३–३७.		,, ७–६६.	
उपजिह्विका	सू. १८–१९.	नि. १६–३९. चि. २२–४८.	उ. २१–३५.	५६–३२.	,, ७–१३५.	,, ६६–९१.
गलशुण्डी	,, १८–२०.	नि. १६–४१.	,, २१–३७,३८.	५६–३३.	,, ७–१३६.	,, ६६–९९.
गलगण्ड	,, १८–२१.	,, ११–२२.	,, २१–५३.	३८–१,२.	,, ७–१३९.	,, ४४.
गलग्रह	,, १८–२२.					
विसर्प	,, १८–२३.	,, १०–३.	सू. ८.	५२–१–४.	,, ७–१००.	,, ५६.
पिडका	,, १८–२४.	,, ६–१४.	नि. १०.	३३–२७,२८.	,, ७–६३.	,, ३८.
तिलक	,, १८–२५.	नि. १४–१६,१७.	उ. ३३–२५,२६.	५५–३७.	,, ७–९२.	,, ५३–१९.
शङ्खक	,, १८–२६.	उ. २५–१६–१८.	,, २३–१६,१७.	६०–१४,१५.	,, ७–१५१.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
कर्णमूलशोथ	सू. १८-२७; चि. ३-२८७.			२-२५.	पू. ७-१४६.	म. १-५०४.
प्लीहवृद्धि	,, १८-२८.	नि. ७-१५.		१-१७.		,, ३३.
उदररोग	,, १८-३१.	,, ७.	नि. १२.	३५-१,२.	,, ७-५१.	,, ४१.
आनाह	,, १८-३२.	उ. ५६-२०, २१.	,, ११-६०.	२७-१७-१९.	,, ७-४९.	,, ३१-१९.
अग्निमांद्य	,, १८-३३.	नि. १६-२५, २६.	उ. २१-२७.	५६-२१.		,, ६६-३५.
चर्मकील	चि. १४-१.	,, २-१८-२०.	सू. ७-५७.	५-४३.	,, ७-१३.	,, ५-४५.
रोहिणी	सू. १८-३४-३६.	,, १६-४१-४९.	उ. २१-४२.	५६-३९-४१.	,, ७-१३७.	,, ६६.
शालूक	चि. १२-७५.	,, १६-५१.	,, २१-४५, ४६.	५६-४२.	,, ७-१३८.	,, ६६-१२२.
शिरःशोथ			,, २३-३-१५.			
सर्वसर				३६-१६.		
विदालिका	,, १२-७६.					
तालुविद्रधि	,, १२-७७.				,, ७-१३८.	
तालुपाक	,, १२-७७	,, १६-४५.	,, २१-४०.	५६-३७.	,, ७-१३६.	,, ६६-१०७.
अधिजिह्विका	चि. १२-७७.	,, १६-५२.	,, २१-३४, ३५.	५६-४३.	,, ७-१३४.	,, ६६-१२३.
उपकुश	,, १२-७८.	,, १६-२१-२३.	,, २१-२१-२३.	५६-१७.	,, ७-१३२.	,, ६६-३१.
दन्तविद्रधि	,, १२-७८.		,, २१-२४, २५.	५६-२९.	,, ७-१३२.	,, ६६-३७.
गण्डमाला	,, १२-७९.	,, १९-१०-१२.	,, २९-२५.	३८-८,९.	,, ७-६७.	,, ४४-८.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
ग्रन्थि	चि. १२-८७.	नि. ११-३.	उ. २९-१.	३८-११.	पू. ७-६८.	म. ४४-११.
अर्बुद	,, १२-८७. सू. १८-३३.	,, ११-१४, १५.	,, २९-१४, १५.	३८-१८, १९.	,, ७-६९.	,, ४४-१८, १९.
अलजी	चि. १२-८८.	,, १४-७.	,, ३३-१४.	३३-२७. ५९-७४. ४८-४.	,, ७-६४.	,, ५३-६.
अक्षत			,, ३१-२२-२४.			
विदारिका	,, १२-८९.	,, १३-२४, २५.	,, ३१-१६.	५५-२१.	,, ७-६४.	,, ६६-१३४.
विस्फोट	,, १२-९०.	,, १३-१८.	,, ३१-९.	५३-१-३.	,, ७-९६.	,, ५८.
स्फोट	,, १२-९०.					
कक्षा	,, १२-९१.	,, १३-१६.	,, ३१-११.	५५-१४.	,, ७-९५.	,, ६१-६३.
रोमान्तिका	,, १२-९२.			५४-१३.		,, ६०-२२.
मसूरिका	,, १२-९३.	,, १३-३८.	,, ३१-८.	५४-१-४.		,, ६०-४६.
व्रध्न	,, १२-९४.					
भगन्दर	,, १२-९६.	,, ४-३. चि. ८.	,, २८.	४६-१.	,, ७-८०.	,, ५०-३.
जालकगर्दभ	,, १२-९९.	नि. १३-१४.	,, ३१-१३, १४.		,, ७-९३.	,, ६१-१५१.
अभिघातजशोथ	,, १२-७.	सू. १७-४.	नि. १३-३८.	३६-११,१२.	,, ७-६६.	,, ४२-१०.
व्रणजशोथ	,, १२-७.	,, १७-३.		३६-१३,१४.		,, ४७-२.
विषजन्यशोथ	,, १२-७.	सू. १७-४. चि. २३-५.	नि. १३-४०-४२.	३६-१३, १४.	,, ७-६६.	,, ४२-१२.
अपची		नि. ११-१०-१२.	उ. २९-२५.	३८-९,१०.	,, ७-६८.	,, ४४-९.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	खं. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
वृद्धि	सू. १८-३०.	नि. १२-४.	नि. ११-२१,२२.	३७-१२.	पू. ७-६६.	म. ४३.
श्लीपद—	चि. १२-९८.	,, १२-१०.	उ. २९.	३९-१.	,, ७-७०.	,, ४५.
वातज		,, १२-११.	,, २९-२०.	३९-२.	,, ७-७०.	,, ४५-३.
पित्तज		,, १२-११.	,, २९-२०.	३९-३.	,, ७-७०.	,, ४५-४.
कफज		,, १२-११.	,, २९-२०.	३९-३.	,, ७-७०.	,, ४५-४.
श्वास—		उ. ५३.	नि. ४.	१२.	,, ७-२४.	
महाश्वास	चि. १७-४६-४८	,, ५१-१२.	,, ४-१३-१५.	१२-१८-२०.	,, ७-२५.	,, १४-५,७.
ऊर्ध्वश्वास	,, १७-४९-५१.	,, ५१-१३.	,, ४-१६, १७.	१२-२१-२३.	,, ७-२५.	,, १४-८,१०.
छिन्नश्वास	,, १७-५२-५४.	,, ५३-११.	,, १४-११-१३.	१२-२४-२९.	,, ७-२५.	,, १४-११. १३.
तमकश्वास-(प्रतमकश्वास)	,, १७-५५-६४.	,, ५१-८-१०.	,, ८-६-१०.	१२-२७-३४.	,, ७-२४.	,, १४-१४-२२.
क्षुद्रश्वास	,, १७-६५.	,, ५१-७.	,, ४-५.	१२-३७-४०.	,, ७-२४.	,, १४-२४-२६.
श्लेष्मविकार— (नानात्मज)				७-१८-२०३.	परि० ,,७-११२.	
अतिस्थौल्य	सू. २०-१७.	सू. १५-३२.	सू. ११-८.			
अपक्ति	,, २०-१७.					
आलस्य	,, २०-१७.		,, ११-७.	७-२०.	,, ७-१२४.	,, २८-३.
उदर्द	,, २०-१७.			५०-३,४.	,, ७-१,२.	
कटुकांक्ष						,, २८-३.
उष्णकामिता						,, २८-३.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो
बुद्धिमान्द्य						म. २८–३.
अचैतन्य						,, २८–३.
मूत्राधिक्य						,, २८–३.
शुक्राधिक्य						,, २८–३.
शैत्य						,, २८–४.
कण्ठोपलेप (मुखलेप)	सू. २०–१७.			५०–१८.	पू. ७–१२२.	,, २८–२.
गलगण्ड	,, २०–१७.	नि. ११–२२.	उ. २१–५३.	३८–१.	,, ७–१३९.	
गुरुगात्रता	,, २०–१७.		सू. ११–७.	३८–१८.	,, ७–१२२.	,, २८–४.
तन्द्रा	,, २०–१७.			३८–१८.	,, ७–१२२.	
तृप्ति	,, २०–१७.			३८–२०.	,, ७–१२४,	,, २८–३.
धमनीप्रतिचय	,, २०–१७.					
निद्राधिक्य	,, २०–१७.		,, ११–८.	३८–१८.	,, ७–१२२.	,, २८–२.
वलासक	,, २०–१७.	नि. १६–५४.				
मलाधिक्य	,, २०–१७.			३८–२०.	,, ७–१२४.	,, २८–३.
मुखमाधुर्य	,, २०–१७.			३८–१८.	,, ७–१२२.	,, २८–२.
मुखस्राव (प्रसेक)	,, २०–१७.		,, ११–७.	१२–१८.	,, ७–१२२.	,, २८–२.
शीताग्निता (अग्निमान्द्य)	,, २०–१७.					,, २८–३.
श्लेष्मोद्गिरण	,, २०–१७.					
श्वेतमूत्रनेत्रवर्चस्त्व	,, २०–१७.			१२–१९.	,, ७–१२३.	,, २८–३.
श्वेतावभासता	[illegible]–१७.		,, ११–७.	१२–१९.	,, ७–१२३.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
आमकफ						म. १-५४.
स्तैमित्य	सू. २०-१७.					,, २८-४.
हृदयोपलेप	,, २०-१७.					
· घर्घरवाक्यता				७-२०. परि०	पू. ७-१२४.	,, २८-१.
सद्योव्रण—				४३-१,२.	,, ७-५६.	
अविकृत			उ. २६-३.		,, ७-५६.	
विलम्बी			,, २६-४.		,, ७-५६.	
छिन्न		चि. २-१०, ११.	,, २६-३.	४३-३.	,, ७-५६.	
विद्ध		,, २-१९, २०.	,, २६-४.	४३-११.	,, ७-५६.	
पिच्चित (प्रचलित, विदलित)		,, २-२१, २२.	,, २६-५.	४३-१३.	,, ७-५६.	
घृष्ट		, २-२२, २३.	,, २६-२,३.	४३-१४.	,, ७-५६.	
भिन्न		,, २-११, १२.	,, २६-५.	४३-४.	,, ७-५६.	
क्षत (निपातित)		,, २-२०, २१.	,, २६-४.	४३-१२.	,, ७-५६.	
संन्यास-		उ. ४३-२०, २१.	नि. ३६-६-३९.	१७-२२, २३.	,, ७-३२.	,, १९-२३.
स्त्रीरोग—					,, ७-१५४.	
अपरापात		शा. १०-११.	शा. २-३९.		,, ७-१८२.	,, ७०-१३६, १३७.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
असृग्दर	चि. ३०–२०४. २०८.	शा. २–१८– २०.		६१.	पू. ७–१७६.	म. ६८.
आर्तवदोष		शा. २–५.		६१.	,, ७–१७५.	,, ७०.
गर्भस्राव		,, २–५. नि. ८–१०.		६४–२.	,, ७–१८२.	,, ७०–७२.
गर्भपात		,, ८–९,१०.		६४–२.	,, ७–१८२.	,, ७०–७२.
प्रदर	चि. ३०–२०४– २०९.	शा. २–१८– २०.		६१.	,, ७–१७६.	,, ६८.
योनिरोग	,, ३०–१.	उ. ३२.	उ. ३३.	६२.	,, ७–१७७.	,, ६०.
सोमरोग				३–१–१०. परि०	,, ७–६३.	,, ६९.
मूढगर्भ		नि. ८–४,५.	शा. २–२९, ३०.	६४–१०.	,, ७–१८१.	,, ७०–११३.
मक्कल्ल		शा. १०–२२.	शा. १–९२.	६४–१०. (१)	,, ७–१८१.	,, ७०–१४८.
सूतिकारोग		शा. १०–१९.		६५–१०.	,, ७–१८४.	,, ७०–१४५.
योनिकन्द				६३–१०.	,, ७–१८०.	,, ६६–१९.
मृतगर्भ	शा. ८–३०.	,, ८–१२,१३.	शा. २–२२– २४.	६४–८.		,, ७०–११७.
स्रोतोरोग—	वि. ५.	शा. ९–१२.				
प्राणवाहि-स्रोतोदुष्टि	,, ५–८.	,, ९–१२.				
अम्बुवाहि– ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				
अन्नवाहि– ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				
रसवाहि– ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				
रक्तवाहि– ,,	,, ५–८.	,, ९–१२.				

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाश. ख. अ. ...
मांसवाहि-स्रोतोदुष्टि	वि. ५-८.	शा. ९-१२.				
मेदोवाहि- ,,	,, ५-८.					
अस्थिवाहि- ,,	,, ५-८.					
मज्जवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
शुक्रवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
आर्तववाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
मूत्रवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
वर्चोवाहि- ,,	,, ५-८.	,, ९-१२.				
स्वेदवाहि- ,,	,, ५-८.					
स्नायुक—				१-१-५. परि०	पू. ७-१८.	म. ५७-१.
स्वरभेद—	चि. ८.			१३-१.	,, ७-२९.	,, १५.
वातज	,, ८-५३.	उ. ५३-४.	नि ५-२४,२५.	१३-२.	,, ७-२९.	,, १५-२.
पित्तज	,, ८-५४.	,, ५३-४.	,, ५-२५.	१३-२.	,, ७-२९.	,, १५-३.
कफज	चि. ८-५४.	उ. ५३-५.	,, ५-२६.	१३-३.	,, ७-२९.	,, १५-४.
सन्निपातज		,, ५३-५.	,, ५-२६.	१३-३.	,, ७-३०.	,, १५-५.
क्षयज	,, ८-५६.	,, ५३-६.	,, ५-२६.	१३-४.	,, ७-३०.	,, १५-६.
मेदोज		,, ५३-६,७.	,, ५-२७.	१३-४.	,, ७-३०.	,, १५-७.
रक्तजन्य	,, ८-५७.					
वातजन्य	,, ८-५५.					
पीनसजन्य	,, ८-५५.					
हिक्का—			,, ४-१८.	१२-३.	,, ७-२५.	

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अं. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
महती	चि. १७–२१–२६.	उ. ५०–१४.	नि. ४–२५–२७.	१२–१०.	पू. ८–२६.	म. १२–१०.
गम्भीरा	,, १७–२७–३०.	,, ५०–१२, १३.	,, ४–२८, २९.	१२–९.	,, ७–२६.	,, १२–९.
व्यपेता (यमला)	,, १७–३१–३३.	,, ५०–१०, ११.	,, ४–२३, २४.	१२–७.	,, ७–२६.	,, १२–७.
क्षुद्रा	,, १७–३४.	,, ५०–११, १२.	,, ४–२१, २२.	१२–८.	,, ७–२५.	,, १२–८.
अन्नजा	,, १७–३८–४१.	,, ५०–९,१०.	,, ४–१९, २०.	१२–६.	,, ७–२५.	,, १२–६.
हृद्रोग—	सू. १७.	,, ४३.	,, ५–३८.	२९–१.	,, ७–५०.	,, ३४–१.
वातज	,, १७–३०, ३१.	,, ४३–६.	,, ५–३९–४१.	२९–३.	,, ७–५०.	,, ३४–३.
पित्तज	,, १७–३२, ३३.	,, ४३–७.	,, ५–४१, ४२.	२९–४.	,, ७–५०.	,, ३४–४.
कफज	,, १७–३४, ३५.	,, ४३–८.	,, ५–४२, ४३.	२९–५.	,, ७–५०.	,, ३४–५.
सन्निपातज	,, १७–३५, ३६.	,, ४३–९.	,, ५–४३.	२९–६.	,, ७–५०.	,, ३४–६.
कृमिजन्य	,, १७–३७–४०.	,, ४३–९,१०.	,, ५–४३, ४४.	२९–६.	,, ७–५१.	,, ३४–९.
हलीमक—	चि. १६–१३२, १३३.	,, ४४–१२.	,, १३–१८, १९.	८–२२, २३.	,, ७–२०.	,, ८–२५, २६.
क्षय—			सू. ११.			
धातुक्षय		सू. १५–९.	,, ११–२४, २५.			

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
मलक्षय		,, १५-११.	,, ११-२४, २५.			
दोषक्षय		,, १५-७.	,, ११-२४, २५.			
ओजःक्षय		,, १५-२४.	,, ११-३९-४१.			
ओजोदोष—						
व्यापत्		,, १५-२७.				
विस्रंस		,, १५-२५, २६.				
क्षय		,, १५-२७, २८.				
क्षारदग्ध—		,, ११-२०.			,, ८-१९६.	
हीनदग्ध		,, ११-२५.	सू. ३०-३४, ३५.			
अतिदग्ध		,, ११-२६.	,, ३०-३५.			
क्षीरदोष-				६७.		म. ७१.
वैवर्ण्य	चि. ३०-२३७.					
वैगन्ध्य	,, ३०-२३७.					
वैरस्य	,, ३०-२३७.					
पैच्छिल्य	,, ३०-२३७.					
फेनसंघात	,, ३०-२३७.					
रौक्ष्य	चि. ३०-२३७.					
गौरव	,, ३०-२३७.					

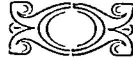
रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
स्नेह	चि. ३०-२३७.					
वातज	,, ३०-२४०-२४२.	नि. १०-२३.	उ. २-२,३.	६७-२.		म. ७१-११८.
पित्तज	,, ३०-२४३-२४५.	,, १०-२४.	,, २-३.	६७-२.		,, ७१-११९.
कफज	,, ३०-२४६-२५०.	,, १०-२४.	,, २-४.	६७-३.		,, ७१-१२०.
सन्निपातज		,, १०-२४.	,, २-४.	६७-३.	पू. ७-१८२.	,, ७१-१२१.
स्तनदोष-		,, १०-१७.		६६-१,२.		,, ७०-१७१.
क्षुद्ररोग—					,, ७-९१.	,, ६१.
अग्निरोहिणी		,, १३-१९, २०.	,, ३१-१४, १५.	५५-१६,१७.	,, ७-९३.	,, ६१-६६.
अजगल्लिका		,, १३-८.	,, ३१-१.	५५-१.		,, ६१-१८३.
अनुशयी		,, १३-२३.			,, ७-१४.	,, ६१-११६.
अन्धालजी		,, २३-६.		५५-३.	,, ७-९१.	,, ६१-१४६.
अहिपूतनक		,, १३-५७,५८.		५५-५०,५१.		,, ६१-१०३.
अवपाटिका		,, १३-५०, ५२.	,, ३१-१९.	५५-४५.	,, ७-८४.	,, ६१-८५, ८६.
अलस		,, १३-३२.	,, ३१-२५.	५५-२७.	,, ७-९४.	,, ६१-११८.
अरुंषिका		,, १३-३६.	,, ३१-२२.	५५-३१.	,, ७-१५२.	,, ६१-१९.
इन्द्रवृद्धा		,, १३-११.		५५-८.	,, ७-९१.	,, ६१-१४१.
इन्द्रलुप्त		,, १३-३३, ३४.	,, ३१-२४, २५.	५५-२८,२९.	,, ७-१५२.	,, ६१-६.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः [illegible]
उत्कोठ			उ. ३१-३२.			
कोठ			,, ३१-३३.			
इरिवेल्लिका		नि. १३-१५.	,, ३१-१६.	५५-१३.	पू. ७-६३.	[illegible]
कक्षा	चि. १२-९०, ९१.	,, १३-१६.	,, ३१-११.	५५-१८.	,, ७-६५.	,, ६१-६३.
कच्छपिका	सू. १७-८४.	,, १३-८.	,, ३१-३.	५५-५.	,, ७-६२.	,, ६१-१०८.
कदर		,, १३-३०, ३१.	,, ३१-२१.	५५-२६.	,, ७-६३.	,, ६१-१०२.
कुनख		,, १३-२२, २३.	,, ३१-२४.	५५-१९.	,, ७-६४.	,, ६१-७०.
[illegible]		,, १३-२४.	,, ३१-२६.	५५-२८, २९.	,, ७-१५६.	
गन्धनामा		,, १३-१७.	,, ३१-१२.	५५-१५.	,, ७-१०२.	,, ६१-६२.
गर्दभिका		,, १३-११.	,, ३१-१०.	५५-९.	,, ७-६६.	,, ६१-१५०.
गुदभ्रंश		,, १३-६१.		५५-५४.	,, ७-७२.	,, ६१-१०५.
चर्मकील		,, १३-४५.	नि. ७-५७. उ. ३१-२६.		,, ७-७३.	,, ६१-४५.
चिप्प		,, १३-२१.	,, ३१-२३.	५५-१८, १९.	,, ७-६४.	,, ६१-७१.
जतुमणि		,, १३-४१.	,, ३१-२७.	५५-३५.	,, ७-७२.	,, ६१-११५.
जालगर्दभ		,, १३-१४.	,, ३१-१३, १४.	५५-१२.	,, ७-७३.	,, ६१-१५५.
तिलक	चि. १८-२५.	,, १३-४३.	,, ३१-२५.	५५-३७.	,, ७-७२.	,, ६१-१२०.
दारुण	,, १८-२६.	,, १३-३५.	,, ३१-२८.	५५-३०.	,, ७-१५६.	,, ६१-१५.
न्यच्छ		,, १३-४८.	,, ३१-२५.	५५-३८.		,, ६१-१००.

रोगाणां नामानि–	चरक-संहिता स्था. अ. श्लो.	सुश्रुत-संहिता स्था. अ. श्लो.	अ. हृदयम् स्था. अ. श्लो.	माधव-निदानम् अ. श्लो.	शार्ङ्गधर-संहिता ख. अ. श्लो.	भावप्रकाशः ख. अ. श्लो.
निरुद्धप्रकश		नि. १३–५२–५४.	उ. ३१–१९, २०.	५५–४५–४७.	पू. ७–८६.	म. ६१–८९, ९०.
नीलिका		„ १३–४६.	„ ३१–२८.	५५–४०.	„ ७–९३.	„ ६१–३८.
पनसिका		„ १३–१२.	„ ३१–३.	५५–११.	„ ७–९१.	„ ६१–२४.
प्रसुप्ति			„ ३१–३०,३१.			
पद्मनीकण्टक		„ १३–४०.	„ ३१–६.	५५–३४.	„ ७–९४.	„ ६१–१३८.
पलित		„ १३–३७.	„ ३१–२९.	५५–३२.	„ ७–१५२.	„ ६१–१.
परिवर्तिका		„ १३–४७, ४८.	„ ३१–१७, १८.	५५–४१–४३.	„ ७–८६.	„ ६१–७९,८०.
पामा		„ १३–२८.		४९–२१.	„ ७–८९.	
पाददारी		„ १३–२९.		४९–२५.		„ ६१–१२२.
पाषाणगर्दभ		„ १३–१३.	„ ३१–४.	४९–१०.	„ ७–९९.	„ ६१–२७.
मषक		„ १३–४२.	„ ३१–२६.	५५–३६.	„ ७–९३.	
यवप्रख्या		„ १३–५.	„ ३१–२.	५५–२.	„ ७–९२.	„ ६१–१४५.
युवानपिडका (मुखदूषिका)		„ १३–३९.	„ ३१–५.	५५–३३.	„ ७–९४.	„ ६१–३१.
राजिका			„ ३१–१२,१३.			
लाञ्छन			उ. ३१–२७.			
रकसा		नि. १३–२८.	„ ३१–५.		पू. ७–९२.	
रुह्या (इन्द्रलुप्त)		„ १३–३४.	„ ३१–२४, २५.	५५–२९.	„ ७–१५२.	
वराहदंष्ट्र				५५–५१.	„ ७–९२.	

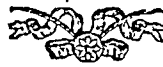
रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
वल्मीक		नि. १३-९, १०.	उ. ३१-१९, २०.		पू. ७-[illegible].	म. ६१-[illegible], [illegible].
व्यङ्ग		,, १३-४६.	,, ३१-२८.	५५-३९,४०.	,, ७-९५.	,, ६१-३[illegible].
निर्विद्धा		,, १३-२८.		४६-२३.	,, ७-८[illegible].	
विदारिका		,, १३-२४, २५.	,, ३१-१६.	५५-२१.	,, ७-[illegible].	,, ६१-६०.
विवृता		,, १३-७.	,, ३१-७.	५५-४.	,, ७-९१.	,, ६१-१४८.
विद्धा			,, ३१-१०.			
विस्फोटक—		,, १३-१८.	,, ३१-९.	५३-३.	,, ७-९६.	
वातज				५३-४.	,, ७-९७.	
पित्तज				५३-५.	,, ७-९७.	
कफज				५३-६.	,, ७-९७.	
सन्निपातज				५३-८,९.	,, ७-९७.	
रक्तज				५३-१०.	,, ७-९७.	
द्वन्द्वज				६३-७,८.	,, ७-९७.	
वृषणकच्छू-		,, १३-५९, ६०.		५५-५१,५२.	,, ७-९५.	,, ६१-९८.
शर्करा		,, ३-१३,१४.		५५-२२,२३.		
शर्करार्बुद		,, १३-२५-२८.	,, ३१-१७-१९.	५५-२४.	,, ७-९३.	,, ६१-१५७.
[illegible] ([illegible])				५५-५५.	,, ७-९२.	,, ६१-११२.

रोगाणां नामानि-	चरक-संहिता	सुश्रुत-संहिता	अ. हृदयम्	माधव-निदानम्	शार्ङ्गधर-संहिता	भावप्रकाशः
	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	स्था. अ. श्लो.	अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.	ख. अ. श्लो.
सन्निरुद्धगुद		,, १३–५५, ५६.	,, ३१–२२, २३.	५५–४८,४९..	पू. ७–९४.	म. ६१–९५.
श्यावपिण्डिका						,, ६१–१३१.
आलस्य						,, ६१–१६०.
उत्क्लेश						,, ६१–१६१.
ग्लानि						,, ६१–१६२.



चरकसंहितागतयोगानां स्थानाध्याय-श्लोकोल्लेखयुतानि नामानि ।

Names of the Recipes in the Caraka Samhita along with reference to the Section, Chapter and Verse.



चरकसंहितागतपारिभाषिकशब्दानां स्थानाध्याय-श्लोकोल्लेखयुता व्याख्या* ।

Explanation of the Technical Terms in the Caraka Samhita, along with reference to the Section, Chapter and Verse.

अङ्गमर्दप्रशमनः-सू. ४-८. अङ्गमर्दं प्रशमयति इति ।

अचेतनम्-सू. १-४८. निरिन्द्रियम् ।

अञ्जनम्-चि. २६-२३६. अञ्जनं क्रियते येन तद्द्रव्यं चाञ्जनं स्मृतम् (अ. हृ. को.) । तेन द्रव्येण म्रक्षणम् ।

अतिकृशः-सू. २१-१५. अतितनुः ।

अतियोगः-चि. ६-३१. संशोध्यातिरिक्तप्रवर्तनम् ।

अतिस्थूलः-सू. २१-३. अतिपीनः ।

अध्यवसानम्-वि. ४-५. " अयमेवं रोगः " इत्येवंभूतो निश्चयः ।

अध्यशनम्-चि. १५-२३६. भुक्तं पूर्वान्नशेषे तु पुनरध्यशनं मतम्; अजीर्णे भुज्यते यत्तु तदध्यशनमुच्यते । (सु. सू. ४६-५०९.)

अध्युषितम्-चि. २७-५३. पर्युषितम् ।

अनभिष्यन्दि-सू. २१-५०. अस्निग्धम् ।

अनशनम्-सू. २५-४०. उपवासः (श. क.)

अनागतावेक्षणम्-सि. १२-४४. अनागतं विधिं प्रमाणीकृत्यार्थसाधनम् ।

अनात्मकः-चि. ९-११. अविधेयमनाः ।

अनाप्लुतः-इ. २-१२. अस्नातः ।

अनिर्वेदः-सू. २५-४०. अखिन्नता ।

अनुपानम्-सू. २७-३२३. औषधाङ्गपेयविशेषः । (श. क.). तच्च औषधपानानन्तरं विलम्ब्य प्रयोज्यम् (वै.श.)

अनुबन्धः-वि. ६-११. अस्वहेतुप्रकुपितोऽव्यक्तलिङ्गः परचिकित्साप्रशमनीयश्च ।

अनुबन्ध्यः-वि. ६-११. स्वतन्त्रो व्यक्तलिङ्गो यथोक्तसमुत्थानप्रशमश्च ।

अनुमानम्-सू. ११-२१. युक्त्यपेक्षस्तर्कः ।

अनुरसः-सू. २६-२८. शुष्कस्य वाऽऽर्द्रस्य वा प्रथमजिह्वासंबन्धे वाऽऽस्वादान्ते वा यो मधुरोऽयमम्लोऽयमित्यादिना विकल्पेन न गृह्यते किं तर्ह्यव्यपदेश्यतया छायामात्रेण कार्यदर्शनेन वा गीयते सोऽनुरसः ।

अनुलोमनम्-सू. २७-२८४. कृत्वा पाकं मलानां यद्भित्त्वा बन्धमधो नयेत् । तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी । (शा. सं. प्र. ख. ४-३ $\frac{१}{२}$.)

अनुलोमसंभाषा-वि. ८-१७. सन्धाय संभाषा ।

---

* अत्र प्रमाणत्वेन गृहीतानां ग्रन्थटीकाकाराणां संक्षिप्तसंज्ञानां विवरणम् ।

अ. हृ.-अष्टाङ्गहृदयम् ।
अ. हृ. को.-अष्टाङ्गहृदयकोषः ।
च.-चरकसंहिता ।
चक्र:-चक्रपाणिदत्तः ।
डल्हणः-डल्हणाचार्यः ।
द्र. सं.-द्रव्यगुणसंग्रहः ।
मा. नि.-माधवनिदानम् ।
रा. नि.-राजनिघण्टुः ।
व. द.-वनौषधिदर्पणः ।
वै. श.-वैद्यकशब्दसिन्धुः ।
श. क.-शब्दकल्पद्रुमः ।
शा. सं.-शार्ङ्गधरसंहिता ।
सु.-सुश्रुतसंहिता ।

अनुवर्तमानाः–वि. ६–८. चिरकालमवतिष्ठमाना बलमभिवर्धयन्तो वा ।

अनुवासनम्–सू. २–१४. स्नेहबस्तिः ।

अनुवासनस्कन्धौ–सि. ९–७. स्थावरात्मको जङ्गमात्मकश्च स्नेहः ।

अनुवासनोपगः–सू. ४–८. षड्विंशो महाकषायः । अस्य द्रव्याणि अनुवासनद्रव्याणां सहायत्वेनोपगच्छन्तीति ।

अनुशस्त्राणि–सू. २५–४०. त्वक्सारस्फटिककाचकुरुविन्दजलौकोऽग्निक्षारनखगोजीशेफालिकाशाकपत्रकरीरवालाङ्गुल्य इति । (सु. सू. ८–१५.) हीनशस्त्राणि, शस्त्रसदृशानि वा (डल्हणः)

अनुशीलनम्–वि. ४–८. संततशीलनम् ।

अनुषङ्गी–सू. २५–४०. पुनर्भावी ।

अनुषङ्गी–चि. २१–३४. चिरकालस्थायी ।

अनूकम्–शा. २–२७. प्राक्तनाऽव्यवहिता देहजातिः ।

अनूपः–सू. २५–४०. जलप्रायः । (श. क.)

अनैकान्तः (नैकान्तः)–वि. १२–४३. अन्यतरपक्षानवधारणम् ।

अन्तःपरिमार्जनम्–सू. ११–५५. यदन्तःशरीरमनुप्रविश्यौषधमाहारजातव्याधीन् प्रमार्ष्टि ।

अन्तरग्निः–सू. २७–३. जठराग्निः ।

अन्तर्वेगो ज्वरः–चि. ३–३३. गम्भीराख्यो ज्वरः । (सु. उ. ३९–९२३.)

अन्तराधिः–शा. ७–५. मध्यम् ।

अन्नद्वेषः–नि. १–२४. अन्नारुचिः ।

अन्नरसखेदः–नि. १–२१. अन्नरसे खेदोऽन्नसादोऽन्नरसखेदः सर्वरसेष्वनिच्छेत्यर्थः ।

अन्नवहस्रोतः–वि. ५–८. यया भुक्तमन्नमुदरं नीयते सा गलनाडी ।

अन्नविदाहः–चि. ४–६. अन्नस्य पक्वापक्वता ।

अन्नानुपानम्–सू. २७–३१९. यदाहारगुणैः पानं विपरीतं तदिष्यते । अन्नानुपानं धातूनां दृष्टं यन्न विरोधि च ॥

अन्येद्युष्कः ज्वरः–चि. ३–३४,६७. यः ज्वरः प्रतिदिनं प्रत्येति सोऽन्येद्युष्कः; अन्येद्युष्कस्त्वहोरात्रादेककालं प्रवर्तते । (मा. नि.)

अपचयः–सू. ७–३७. क्षयः । (श. क.)

अपचारः–सू. २८–७. अहिताहारोपयोगः ।

अपचितः–वि. ८–९८. क्षीणः । (श. क.)

अपतर्पणम्–सू. २३–२६. लङ्घनम् । (श. क.)

अपत्यमार्गः–सि. ९–६६. योनिः ।

अपथ्यम्–चि. १५–२३५. अहितम् । (श. क.)

अपदेशः–वि. १२–४२. प्रतिज्ञातार्थसाधनाय हेतुवचनम् ।

अपरा–शा. ६–२३. गर्भस्य नाभिनाडीप्रतिबद्धा 'अमरा' इति लोके ख्याता ।

अपस्मारः–नि. ८–६. चि. १०–३. स्मृतेरपगमं प्राहुरपस्मारं भिषग्विदः । तमःप्रवेशं बीभत्सचेष्टं धीसत्त्वसंप्लवात् ॥

अभिघातः–चि. ३०–१६६. अभिहननं (श. क.)

अभिषङ्गः–सू. २०–४. भूताद्यावेशः (श. क.)

अभिष्यन्दी–सू. २२–२४. दोषधातुमलस्रोतःक्लेदवान् ।

अभेषजम्–चि. १–१ | ५, अभेषजं च द्विविधं बाधनं सानुबाधनम् ।

अभ्यङ्गः–चि. २–३ | २४. तैलमर्दनम् (श. क.)

अभ्यञ्जनम्–सू. १३–२४. अभ्यङ्गः (श. क.)

अभ्यासः–सू. २५–४०, २६–३४. भावाभ्यसनमभ्यासः शीलनं सततक्रिया ।

अमर्षः–चि. ९–१२. अक्षान्तिः ।

अम्लः–सू. २६–७५. भूम्यग्निगुणबाहुल्यात् अम्लः ।

अम्लकाञ्जिकम्–चि. ५–७७. काञ्जी (वै. श.)

अयोगः–सि. ६–३१–३४. अयोगः प्रातिलोम्येन न चाल्पं वा प्रवर्तनम् ।

अरिष्टः–सू. २७–१८२. औषधक्वाथमध्वादिसंपादितो दन्त्यभयारिष्टादिः। पक्वौषधाम्बुसिद्धं यत् मद्यं तत् स्यादरिष्टकम्। (व. द.)

अरिष्टम्–इ. ११–२९. क्रियापथमतिक्रान्ताः केवलं देहमाप्लुताः। चिह्नं कुर्वन्ति यद्दोषास्तदरिष्टं निरुच्यते॥

अरिष्टा–चि. २३–३५. मन्त्रेण रज्ज्वादिभिर्वा विषोपरि बन्धः।

अरुचिः–सू. २८–९. अरुचौ मुखप्रविष्टं नाभ्यवहरति।

अर्थः–सू. १–१५. सुवर्णादिः।

अर्थः–सू. ३०–३. हृदयम्।

अर्थः–सू. ३०–२५. अर्थाः शब्दादयो ज्ञेया गोचरा विषया गुणाः (च. शा. १–३१)

अर्थापत्तिः–सि. १२–४२. यदकीर्तितमर्थादापद्यते साऽर्थापत्तिः।

अर्थाभासः–वि. ८–५६. अर्थवदिव आभासते।

अर्धावयवशः–सू. ३०–१९. अर्धभागशः।

अर्दितम्–सू. ५–५९. शिरानासौष्ठचिबुकललाटेक्षणसन्धिगः। अर्दयत्यनिलो वक्त्रमर्दितं जनयत्यतः। वक्रीभवति वक्त्रार्धं ग्रीवा चाप्यपवर्तते॥ शिरश्चलति वाक्सङ्गो नेत्रादीनां च वैकृतम्। ग्रीवाचिबुकदन्तानां तस्मिन्पार्श्वे च वेदना॥ (सु. नि. अ. १–६९, ७०½.)

अर्शः–चि. १४–६. दोषास्त्वङ्मांसमेदांसि संदूष्य विविधाकृतीन्। मांसाङ्कुरानपानादौ कुर्वन्त्यर्शांसि तान्जगुः॥ (मा. नि. ५–२.)

अर्शोघ्नः–सू. ४–८. अर्शोहा।

अलजी–सू. १७–८८. दहति त्वचमुत्थाने तृष्णामोहज्वरप्रदाः। विसर्पत्यनिशं दुःखाद्दहत्यग्निरिवालजी॥

अलसकः–वि. २–१२. प्रयाति नोर्ध्वं नाधस्तादाहारो न च पच्यते। आमाशयेऽलसीभूतस्तेन सोऽलसकः स्मृतः॥ (अ. हृ. ८–६½)

अवगाहः–सू. ७–७. स्नानम्।

अवचूर्णनम्–चि. २५–४३. व्रणावचूर्णनं वर्ण्यं रोपणं लोमरोहणम्।

अवपीडः–सि. ९–८९. अवपीड्य यत्र कल्कादीनि दीयन्ते।

अवपीडः–चि. ४–९७. द्रव्यमापोथितं कृत्वा पीडयित्वा रसो दीयते यः सः।

अवपीडकसर्पिः–चि. १४–२२३. भोजनस्योर्ध्वं यत् पीयते क्रिया भूरिमात्रं सर्पिरवपीडकमुच्यते।

अवपीडकसर्पिः–सू. ७–७. मूत्रजेषु तु पाने च प्राग्भक्तं शस्यते घृतम्॥ जीर्णान्तिकं चोत्तमया मात्रया योजनाद्वयम्। अवपीडकमेतच्च संज्ञितं (अ. हृ. सू. ४–६½.)

अवपीडनम्–चि. २५–४०. कल्कादिना आलेपनं पूयनिर्गमार्थम्।

अवसादि–चि. १९–५. भूमौ पतितं लीनं भवति।

अवसादि–चि. ३०–१४०. दुष्टशुक्रस्य भेदः।

अविधेयपरिस्पन्दम्–चि. २७–११. अस्वाधीनेन्द्रियम्।

अविपाकः–सू. १६–१३. अपरिपाकः। (वै. श.)

अविभ्रमः–वि. ४–८. अभ्रान्तिः।

अविभ्रमः–वि. ८–९४. पाककालेऽप्यवैकारिकः।

अविस्रम्–चि. २–४ | ५०. पूतिगन्धरहितम् (वै.श.)

अवृष्यम्–सू. २९–४. शुक्रघ्नम्।

अशौण्डः–वि. ८–१३. शुण्डा मद्यशाला तत्प्रचारी शौण्डः अशौण्डस्तु तदप्रचारी।

अश्मस्वेदः–सू. १४–४७, ४९½. पाषाणस्वेदः।

अश्रद्धा–सू. २८–९. अश्रद्धायां मुखप्रविष्टस्याहारस्याभ्यवहरणं भवत्येव। परं त्वनिच्छा।

असात्म्यम्–चि. ३०–२९३; शा. १–१२७. यत् सात्म्यविपरीतम्; असात्म्यमिति तद् विद्यात् यन्न याति सहात्मताम्।

असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगः–सू. ११–३८. दुःखजनक इन्द्रियविषयसम्बन्धः।

असाध्यः–सू. १०–८. साधयितुमशक्यः (श. क.)

असुखानुबन्धम्–चि. १–४ | ४. रोगरूपमसुखमनुबध्नातीति असुखानुबन्धम् ।

असुखोदर्कम्–वि. १–२३. असुखं दुःखरूपं उदर्कं उत्तरकालीनं फलं यस्य स तथा ।

असुनिभृतः–सू. ८–१९. असमाहितः ।

असृक्–चि. २९–१२०. आर्तवम् । (श. क.)

असृक्पित्तम्–सि. १०–१३. रक्तपित्तम् । (श. क.)

असृक्करः–सू. २७–२३८. शोणितकरः । (श. क.)

असृग्धरा–शा. ७–४. शोणितधरा । (श. क.)

अस्थि–इ. ७–३१. कुल्यम् । (श. क.)

अस्थिवाहीनि–वि. ५–८. द्रवरूपास्थिवाहीनि ।

अस्थिसारः–नि. ८–१०७. मज्जा । (श. क.)

अस्रम्–चि. १४–२११. रक्तम् ।

अस्वेदनम्–चि. ७–२१. स्वेदरहितम् ।

अहङ्कारः–शा. १–६३. बुद्धिविकारः ।

अहितम्–सू. २५–३२. अपथ्यम् ।

अहितम्–सू. ३०–२३. परदुःखजनकम् ।

अहिताहारजानम्–सू. २५–३३. समांश्चैव शरीरधातून् प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीकरोतीत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति.

अहिताहारजातम्–सू. २६–८५. यत् किञ्चिद्दोषमास्राव्य न निर्हरति कायतः । आहारजातं तत् सर्वमहितायोपपद्यते ॥

अंसः–इ. ३–५. स्कन्धः ।

आकाशम्–इ. ४–७. खम् ।

आकुञ्चनम्–शा. ७–१६. सङ्कोचः । (श. क.)

आकृतिः–सू. २४–३३. रूपम् (श. क.)

आकृतिः–इ. ७–८. संस्थानमाकृतिर्ज्ञेया ।

आगन्तुः–सू. ११–४५. भूतविषवाय्वग्निसंप्रहारादिसमुत्थः ।

आढ्यवातः–चि. २९–११. आढ्यानां प्रायः भवतीति आढ्यरोगः, वातशोणितम् ।

आनाहः–चि. २६–२६. विण्मूत्ररोधकव्याधिः (वै. श.) आमं शकृद्वा निचितं क्रमेण भूयो विबद्धं विगुणानिलेन । प्रवर्तमानं न यथास्वमेनं विकारमानाहमुदाहरन्ति (मा. नि.)

आप्ताः–सू. ११–१८, १९. रजस्तमोभ्यां निर्मुक्तास्तपोज्ञानबलेन ये । येषां त्रिकालममलं ज्ञानमव्याहतं सदा ॥ आप्ताः शिष्टा विबुद्धास्ते तेषां वाक्यमसंशयम् । सत्यं, वक्ष्यन्ति ते कस्मादसत्यं नीरजस्तमाः ॥

आमः–सि. ८–१९. ऊष्मणोऽल्पबलत्वेन धातुमाद्यमपाचितम् । दुष्टमामाशयगतं रसमामं प्रचक्षते ॥ (मा. नि.) आमाशयस्थः कायाग्नेर्दौर्बल्यादविपाचितः । आद्य आहारधातुर्यः स आम इति संज्ञितः ॥ आहारस्य रसः शेषो यो न पक्वोऽग्निलाघवात् । स हेतुः सर्वरोगाणामाम इत्यभिधीयते (मा. नि.)

आयुः–सू. १–४२. शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगो धारि जीवितम् । नित्यगश्चानुबन्धश्च पर्यायैरायुरुच्यते ॥ (च. सू. १–४२.) तत्रायुश्चेतनानुवृत्तिर्जीवितमनुबन्धो धारि चेत्येकोऽर्थः । (च. सू. ३०–२२.)

आयुर्वेदः–सू. १–४१. हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हिताहितम् । मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्यते ॥ आयुर्वेदयतीत्यायुर्वेदः । (च. सू. ३०–२३) 'आयुरस्मिन् विद्यते, अनेन वाऽऽयुर्विन्दन्ति' इत्यायुर्वेदः (सु. सू. १–१५)

आयुर्वेदतन्त्रम्–सू. ३०–३१. आयुर्वेदशास्त्रम् ।

आरनालम्–चि. १५–११६३. तुलामितं षष्टिकतण्डुलस्य प्रगृह्य चाम्रं विधिवद् विधाय । द्रोणेऽम्भसि क्षिप्तमथ म्रियमाणम् तत् सप्त रक्षेत् पिहितं प्रयत्नात् । ततैव कल्कं सकलं निरस्येत् तत् काञ्जिकं कथ्यते आरनालम् ॥ (व. द.)

आरोग्यम्–सू. ९–४. सुखसंज्ञकमारोग्यम् (च. सू. ९–४); रोगनिर्मुक्तिः (वै. श.)

आशुकारि–सि. ११–१४. आशुरोगनिर्हरणकारि ।

आसवः-सू. २५-४९. यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ॥ (व. द.)

आसुतम्-चि. १५-१२१ कन्दमूलफलादिस्तु लवणोदकसंयुतम् । सन्धानाच्चिरकालाम्लमासुतं परिकीर्तितम् ॥ (व. द.)

आश्च्योतनम्-सू. ५-१९. उन्मीलिते दृग्मध्ये क्वाथक्षौद्रासवस्नेहबिन्दूनां पातनम् । (व. द.)

आस्थापनोपगः-सू. ४-८. पञ्चविंशो महाकषायः । (व. द.)

उदर्दप्रशमनः-सू. ४-८. उदर्दो वरटीदष्टाकारः शोथः तत्प्रशमन उदर्दप्रशमनः ।

उद्वर्तनम्-सू. ६-२४. कल्कचूर्णाभ्यां गात्रमर्दनम् । (व. द.)

उन्मादः-नि. ७-५. मनोबुद्धिसंज्ञाज्ञानस्मृतिभक्तिशीलचेष्टाचारविभ्रमः । समुद्भ्रमं बुद्धिमनःस्मृतीनामुन्मादमागन्तुनिजोत्थमाहुः ।

उपद्रवः-चि. २१-४. रोगस्योत्तरकालजो रोगः ।

उपयोक्ता-वि. १२-२ यस्तमाहारमुपयुङ्क्ते यदायत्तमोकसात्म्यम् ।

उपयोगसंस्था-वि. १-२१ | ७. उपयोगनियमः स जीर्णलक्षणापेक्षः ।

उर्ध्ववातः-चि. २२-४०. उद्गारः (वै. श.) श्वासः (चक्रः)

उष्णः-चि. ३०-४२. शीतविपरीतः । उष्ण स्तद्विपरीतः स्यात् पाचनश्च विशेषतः (व. द.)

ओकःसात्म्यम्-सू. ६-४९. उपशेते यदौचित्यादोकःसात्म्यं तदुच्यते ॥

ओजः-सू. ३०-९-११. रसादिशुक्रान्तधातुसारभागधातुविशेषः (वै. श.)

कच्छपी-सू. १७-८५. अवगाढार्तिनिस्तोदा महावास्तुपरिग्रहा । श्लक्ष्णा कच्छपपृष्ठाभा पिडका कच्छपी मता ॥

कटुः-सू. २६-४०,७७. वाय्वग्निगुणबाहुल्यात् कटुकः ।

कण्ठ्यम्-सू. ४-८. कण्ठाय हितम्, स्वरकरम् ।

कण्डूघ्नः-सू. ४-८. यः कण्डूं हन्ति सः (श. क.)

कपोतान्धः-इ. ३-६. यः रूपाणि दिवा कृष्णानि पश्यति सः ।

करणम्-वि. १-२२ | २. स्वभाविकानां द्रव्याणामभिसंस्कारः ।

करणम्-वि. ८-७०. तद् यदुपकरणायोपकल्पते कर्तुः कार्याभिनिर्वृत्तौ प्रयतमानस्य ।

करणम्-वि. ८-८७. भेषजम् ।

कर्कशा-नि. ५-८ | ४. अमसृणा ।

कर्म-सू. १-४९. प्रयत्नादि कर्म चेष्टितमुच्यते ।

कर्म-सू. १-५२. कर्तव्यस्य क्रिया कर्म ।

कर्मजरोगः-शा. १-११६. निर्दिष्टं दैवशब्देन कर्म यत् पौर्वदेहिकम् । हेतुस्तदपि कालेन रोगाणामुपलभ्यते ॥

कल्कः-सू. ४-७. यः पिण्डो रसपिष्टानां सः कल्कः परिकीर्तितः ।

कवलः-चि. ८-१४०. गण्डूषः ।

क्वाथ-चि.४-६५. दशरक्तिकमानेन गृहीत्वा तोलकद्वयम् । दत्त्वाम्भः षोडशगुणं ग्राह्यं पादावशेषितम् ॥ (व. द.)

कषायः-सू. ४-६-२४. रसा लवणवर्ज्याश्च कषाय इति संज्ञिताः ।

कषाय-सू. ४-७. स्वरसः, कल्कः, शृतः, शीतः, फाण्टः, कषाय इति ।

कषायः-सू. २६-४०-९९. पवनपृथिवीव्यतिरेकात् कषाय इति । वैशद्यस्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः । बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि ॥

काञ्जिकम् (अम्लम्)-सू. अ. २७-१९२. आशुधान्यं क्षोदितञ्च वालमूलन्तु खण्डशः । कृतं प्रस्थमितं पात्रं जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥ तावत् सन्धाय संरक्षेद् यावदम्लत्वमागतम् । काञ्जिकं तत्तु विज्ञेयमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥ (व. द.)

काम्बलिकः-सू. १३-२३. दधिमस्त्वम्लसिद्धस्तु यूषः काम्बलिकः स्मृतः । (सु. सू. ४६-३८०)

कायचिकित्सा-सू. ३०-२८. कायस्यान्तरग्नेश्चिकित्सा; सर्वाङ्गसंश्रितानां व्याधीनां ज्वररक्तपित्तशोषोन्मादापस्मारकुष्ठमेहातिसारादीनामुपशान्त्यर्थम् (सु. सू. अ. १)

कालः-सू. ११-४२, वि. १-२१ | ६, वि. ८-१२५-१२८. कालः पुनः परिणाम उच्यते; कालो हि नित्यगश्चावस्थिकश्च । तत्रावस्थिको विकारमपेक्षते, नित्यगस्तु ऋतुसात्म्यापेक्षः; कालः पुनः संवत्सरश्चातुरावस्था च, आतुरावस्थास्वपि कार्याकार्यं प्रतिकालाकालसंज्ञा; कालो हि नाम (भगवान्) स्वयम्भूरनादिमध्यनिधनः । सूक्ष्मामपि कलां न लीयते इति कालः, संकलयति कालयति वा भूतानीति कालः ॥ (सु. सू. ६-३.)

कालजरोगः-शा. १-११२. पूर्वमध्यापराह्णाश्च रात्र्या यामास्त्रयश्च ये । एषु कालेषु नियता ये रोगास्ते च कालजाः ॥

कासहरः-सू. ४-८. कासघ्नः ।

किट्टम्-सू. २८-४. मलाख्यम् (असारभागः) ।

कुल्माषाः-शा. ६-११; क. २०-३३. अर्धस्विन्ना यवादयः, वरिस्त्वन्नयवविट्छृता भक्ष्याः, मुद्गान् मसूरान् उरिस्वन्नमृद्दितान् कुल्माषानाहुः (चक्रः).

कुष्ठघ्नः-सू. ४-८. कुष्ठनाशनः ।

कोष्ठः-सू. ११-४८. कोष्ठः पुनरुच्यते महास्रोतः शरीरमध्यं महानिम्नमामपक्वाशयश्चेति पर्यायशब्दैः । स्थानान्यामाग्निपक्वानां मूत्रस्य रुधिरस्य च । हृदुण्डुकः फुप्फुसश्च कोष्ठ इत्यभिधीयते ॥ (चक्रः).

कौमारभृत्यम्-सू. ३०-२८. कौमारभृत्यं नाम कुमारभरणधात्रीक्षीरदोषसंशोधनार्थं दुष्टस्तन्यग्रहसमुत्थानां च व्याधीनामुपशान्त्यर्थम् । (सु. सू. अ. १-८ | ५.)

क्रिमिघ्नः-सू. ४-८. क्रिमिहरः ।

खडः-सू. १३-२३; चि. ८-१२८. १३०, १३१. तक्रे कपित्थचाङ्गेरीमरिचाजाजिचित्रकैः । सुपक्वः खडयूषोऽयमयं काम्बलिको मतः ॥ दध्यम्लोलवणस्नेहतिलमाषान्वितः शृतः । विहितेन रसस्तत्र, यूषो धान्यैः, खडः फलैः । मूलैश्च विलदल्धाम्लप्रायः काम्बलिकः स्मृतः ॥ (चक्रः)

खरः-सू. १-५९. अमसृणः ।

खरस्नेहपाकः-क. १२-१०२, १०३. शीर्यमाणे तु निर्यासे वर्तमाने खरस्तथा ।

खर्जूरमांसानि-चि. २०-२८. खर्जूरफलसारयानि ।

खादीनि-शा. १-६३. सूक्ष्मभूतखादीनि तन्मात्रशब्दाभिधेयानि ।.

खानि-चि. २३-३२. स्रोतांसि ।

खुडः-चि. २९-११. आढ्यवातरोगः ।

खेटः-शा. ४-९. श्लेष्मा ।

गण्डः-इ. ७-२८. कपोलः ।

गण्डूषः-चि. २२-३४. मुखपूरको द्रवः ।

गतिः-सू. २०-१२. गमनम् ।

गदः-सू. २३-२६, नि. १-५, रोगः

गदापहः-सि. १-२७. व्याधिनाशनः ।

गद्गदः-इ. १-१४. लुप्तपदव्यञ्जनाभिधायी, अत्यस्पष्टवक्ता ।

गन्धः-इ. १-३. स तु घ्राणग्राह्यः पृथिवीगुणः ।

गम्भीरः-चि. ३-५२. अन्तर्वेगः । किं वा गम्भीरधातुस्थः ।

गरः-सू. ३०-२८. कालान्तरप्रकोपि विषम् ।

गरः-चि. १२-५. संयोगजं विषम् ।

गरसंयोगजम्-चि. २३-१४. गरार्थः संयोगो रे ते गरसंयोगा द्रव्यभेदाः तेभ्यो जातं गरसंयोगजम् ।

गर्भः-शा. ३-३, ४-५. चि. ३०-२८. शुक्रशोणितसंसर्गमन्तर्गर्भाशयगतं जीवोऽवक्रामति सत्त्वसंप्रयोगात्तदा गर्भोऽभिनिर्वर्तते शुक्रशोणितजीवसंयोगे तु खलु कुक्षिगते गर्भसंज्ञा भवति ।

गर्भकराः भावाः-शा. ३-१६. गर्भस्योत्पादने हेतुभूताः शुक्रादयः ।

गर्भकालव्यतिक्रमः–चि. ५–१७७. दशमासरूपस्य गर्भकालस्य व्यतिक्रमः ।

गर्भगृहम्–सू. ६–१४. गृहकोष्ठकम् ।

गर्भधारिणी–शा. ८–३२. अपरा ।

गर्भपरिस्रावः–चि. ३०–१००. गर्भभ्रंशः ।

गर्भव्यापत्–सि. २–९. गर्भदुष्टिः ।

गर्भशल्यम्–सू. २५–४०. मूढगर्भो मृतगर्भो वा ।

गर्भस्थापनम्–शा. ८–२४. गर्भरक्षणम् । (वै. श.)

गर्भात्मा–शा. ३–८. गर्भकारणभूत आत्मा ।

गर्भाशयः–चि. ३०–३३. गर्भशय्या । (वै. श.)

गर्भासना–सि. ९–६२. गर्भशय्या, गर्भाशय इत्यर्थः अन्ये तु योनिमाहुः ।

गर्भिणी–सू. १०–१५. गर्भवती । (श. क.)

गर्भोपघातकरम्–शा. ८–२५. गर्भनाशजनकम् ।

गलः–इ. ११–१५; चि. २२–१६. कण्ठः । (श. क.)

गलग्रहः–चि. ४–२६. कण्ठग्रहः ।

गलपीडा–सि. ५–१८. कण्ठपीडा ।

गात्रम्–इ. २–११. शरीरावयवः । (वै. श.)

गुटिका चि. २३–५२. वटिका । (श. क.)

गुडिका–चि. ५–१८३ गुटिका । (श. क.)

गुणः–सू. १–५१. वैशेषिकानुमतो गुणाख्यः पदार्थः ।

गुणाः–सू. १–२८, १०५. गुर्वादयः चतुर्विंशतिः ।

गुणाः इ. १–३. गुणाः शरीरदेशानां शीतोष्णमृदुदारुणाः । (चक्रः)

गुदम्–इ. ३–५. मलत्यागद्वारम् । (श. क.)

गुदनिष्क्रमणम्–चि. ७–१३. गुदभ्रंशः ।

गुदवलयः–चि. १४–६. गुदस्य मांसवलयः ।

गुरुः–सू. ६–२३. सादोपलेपबलकृद्गुरुस्तर्पणो बृंहणः । (व. द.)

गुल्फः–इ. ३–५. पादग्रन्थिः । (श. क.)

गुल्मः–नि. ३–७; चि. ५–७. कुपितानिलमूलत्वाद् गूढमूलोदयादपि ॥ गुल्मवद्वा विशालत्वाद् गुल्म इत्यभिधीयते । (सु. उ. ४२–५.)

गृष्टः–नि. २०–२८. समण्डो गवीदनः ।

गृष्टिः–चि. २–३ । ३. एकवारप्रसूता गौः ।

गोष्ठः–शा. ८–१९. गवां विश्रामस्थानम् ।

ग्रहः–शा. ५–१४. राहुः ।

ग्रहाः–चि. १–४ । ४६. सोमपानपात्राणि ।

ग्रहणम्–चि. ४–८. अन्धादिधारणम् ।

ग्रहणी–इ. ७–२०. चि. १५. कोष्ठावयवविशेषः, ग्रहणीरोगः ।

ग्राम्यम्–चि. १२–२०. ग्रामे भवम् ।

ग्राम्यधर्मः–सू. ७–३४. मैथुनम् ।

ग्राहि–सू. २७–९१, दीपनं पाचनं यत्स्याद्उष्णत्वाद् द्रवशोषकम् । ग्राहि तच्च यथा शुण्ठी जीरकं गजपिप्पली ॥ (व. द.)

ग्रीवा–सू. १७–६९. कन्धरा ।

ग्लानिः–चि. ३–३६. हर्षक्षयः ।

ग्लास्नु–इ. ८–२१. क्षीयमाणः ।

घनः–चि. ६–९ सान्द्रः ।

घस्मरः–सू. १३–५० बहुभक्षकः ।

घाटा–सि. ९–८४. ग्रीवायाः पश्चाद्भागः ।

घुर्घुरकम्–इ. १०–१८. घुर्घुरक इत्याकारः शब्दः ।

घ्राणम्–इ. १–३. घ्राणेन्द्रियम् ।

चक्षुः–इ. १–३. दर्शनेन्द्रियम् । (श. क.)

चक्षुष्यम्–सू. ५–१००. चक्षुषे लोचनाय हितम् । (श. क.)

चतुर्थकः–चि. ३–६७. दिनद्वयं यो विश्रम्य प्रत्येति स चतुर्थकः ।

चतुर्थिका–चि. ११–७२. पलम्

चतुष्पादम्-सू. २९-७. सू. ९-१. वैद्यादिपाद-चतुष्टयम्।

चतुःस्नेहः-चि. १०-२०. सर्पिस्तैलवसामज्जात्मकः।

चयः-सू. १७-११४. वृद्धिः।

चर्या-शा. १-१४३. ईर्यापथस्थितिः। (श. क.)

चलः-सू. १-५९. गतिमान्।

चिकित्सकः-वि. ८-५७. वैद्यः।

चिकित्सा-सू. ९-५, १६-३४; चि. १-१ | ३. याभिः क्रियाभि जायन्ते शरीरे धातवः समाः। सा चिकित्सा विकाराणां कर्म तद् भिषजां मतम्॥ (वै. श)

चिकित्सितम्-चि. १-१ | ३. चिकित्सा।

चिन्त्यम्-शा. १-२०. कर्तव्यतया अकर्तव्यतया वा यन्मनसा चिन्त्यते इति.।

चिह्नम्-नि. १-९. लक्षणं चिह्नमाकृतिः (मा. नि.)

चूर्णम्-क. ८-६५. चूर्ण्यते पिष्यते यत्। (श. क.)

चूर्णकः-इ. १-२१. सक्तुः। (श. क.)

चूषणम्-चि. २३-३५. पानम्। (वै. श.)

चेतः-चि. २४-२९. चित्तम् (श. क.)

चेतनम्-सू. १-४८. २५-२३. सेन्द्रियं द्रव्यम्।

चेतना-शि. ९-३. बुद्धिवृत्तिभेदः।

चेतनाधातुः-सू. २५-९. आत्मा।

चेष्टा-सू. १७-११८. वाङ्मनःशरीरप्रवृत्तिः। (श.क.)

चैतन्यसंग्रहः-सू. ३०-७. तत्र हृदि आत्मा चैतन्यस्य स्वस्थिये प्रवृत्तस्य संग्रहणं करोति।

च्यवनम्-इ. ३-४. च्युतिः।

च्यवमानं पित्तम्-चि. १५-१०. अधोभागं वायुना नीयमानं पित्तम्।

च्युतिः-नि. ५-७. हस्ताद् भ्रंशः।

छर्दनम्-चि १२-१५ | ३. वमनम्।

छर्दिनिग्रहणः-सू. ४-१४,२८. अष्टाविंशो महाकषायः।

छादनम्-चि. २५-४१. छादनं तु द्विविधं बाह्यान्तरभेदेन।

छाया-इ. १-३, इ. ७-१६. भौतिकी पञ्चरूपा; वर्णमाक्रामतिच्छाया, भासया लक्ष्यते छाया।

छेदनम्-चि. ११-५५. द्विधाकरणम्। (वै. श.)

छेदनम्-चि. २५-५५. श्लिष्टान् कफादिकान् दोषानुन्मूलयति यद् बलात् छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु। (शा. सं; व. द.)

छेर्दी-सू. २७-१८७. विश्लेषकः। (वै. श.)

जगलः-सू. २७-१८१. भक्तकिण्वकृता सुरा।

जघनम्-वि. ५-८. कट्यधःस्थानम् (वै. श.)

जघन्यम्-चि. ३०-१७७. पूर्वं वयः।

जङ्गमम्-सू. १-६८. गच्छतीति जङ्गमम्; गमनशीलम्।

जड्या-इ. ३-५. मन्दता।

जरणः-वि. ६-२१. जठराग्निः, जरणः आहारस्य। (व. द.)

जरणशक्तिः-वि. ४-८. पाचनशक्तिः।

जरायुः-शा. ३-६. जरायुः अपरा, येन वेष्टिता मनुष्यादयः प्रजायन्ते, जरायुणा वेष्टिता जायन्ते इति जरायुजाः मनुष्यादयः।

जलकोष्ठः-सू. १४-३४. अवगाहार्थं कृतं महज्जलपात्रम्।

जलजाः-सू. २७-५४. जले निवासाज्जलजाः; मत्स्याः (श. क.)

जल्पः-वि. ८-२८. पक्षाश्रितयोर्वचनं जल्पः।

जलमृतः-चि. १०-४७. जलमज्जनेन मृतः इव इति जलमृतः, नियम्यपायुमूर्धाङ्गमाघ्रातोदरमेहनम्। विद्याजलमृतं जन्तुं शीतपादकराननम्॥

जलयन्त्रम्–चि. २४–१५८. जलसेचनयन्त्रम् ।

जवोपरोधः–सू. २१–४. वेगोपरोधः ।

जाङ्गलाः–सू. २७–५५. स्थलजा जाङ्गलाः प्रोक्ता मृगा जाङ्गलचारिणः; जङ्गले भवाः ।

जातिप्रसक्ता प्रकृतिः–इं. १–५.ब्राह्मणजातौ शौचम् इत्यादिप्रकृतिः ।

जालिनी–सू. १७–८६. स्तब्धा सिराजालवती स्निग्धास्रावा महाशया । रुजानिस्तोदबहुला सूक्ष्मच्छिद्रा च जालिनी ॥

जानुः–इं. ३–५. ऊरुजङ्घयोर्मध्यभागः । (श. क.)

जिह्मा–सि. ५–५. कुटिला ।

जिह्वा–चि. २२–६. रसज्ञानेन्द्रियम् । (श. क.)

जिह्वानिर्लेखनम्–सू. ५–७५. जिह्वामलहरदशाङ्गुलशलाका । (श. क.)

जीर्णः–चि. ३–७. पुराणः ।

जीवः–शा. ३–८. गर्भात्मा ह्यन्तरात्मा यः ।

जीवनम्–सू. १–८७. प्राणधारणम् । (श. क.)

जीवनीयः–सू. ४–८; २५–४०. जीवनीयशब्देनेह आयुष्यत्वमभिप्रेतम्; मूर्च्छितस्य संज्ञाजनकत्वेन जीवनीयत्वं व्याख्येयम् ।

जीवनीयवर्गः–चि. २–३ | १५. जीवनीयानामिति षट्कषायवर्गोक्तानां जीवकर्षभादीनां दशानां वर्गः ।

जीविताभिसरः–सू. ११–५३. जीवनरक्षाकर्ता । (वै. श.)

ज्वरः–नि. १–३२. चि. ३–३१. स्वेदावरोधः संतापः सर्वाङ्गग्रहणं तथा । युगपद्यत्र रोगे च स ज्वरो व्यपदिश्यते ॥ (मा. नि.)

ज्वरघ्नः–सू. ४–८. ज्वरनाशनः ।

तण्डुलाम्बु–चि. ८–१२५. तण्डुलोदकम् । (श. क.)

तत्त्वावबोधः–सू. ३०–१५. यथार्थज्ञानम् ।

ततम्–सू. ८–६. ततः ।

तदर्थकारि–वि. २–१३. हेतुव्याधिसमत्वेऽपि हेतुव्याधिप्रशमकारि; हेतुविपरीतार्थकारि, व्याधिविपरीतार्थकारि, हेतुव्याधिविपरीतार्थकारि च ।

तदात्वे–सू. ११–२०. तत्क्षणम् ।

तद्विद्यसंभाषा–वि. ८–६. तच्छास्त्राध्यायिना सह संभाषणम् ।

तनुः–सि. ७–४३. अघनः ।

तनु–सि. ५–४. कृशम् ।

तनु–चि. २२–२६. स्वच्छम् ।

तन्त्रप्रयोगः–वि. ७–४. तन्त्रं शरीरं तस्य परिपालनार्थं सद्वृत्तोक्तः प्रयोगः ।

तन्त्रम्–इं. १२–४४. शरीरम् ।

तन्त्रयन्त्रधरः–सू. १२–८. तन्त्रं शरीरं यदुक्तं 'तन्त्रयन्त्रेषु भिन्नेषु तमोऽन्त्यं प्रविविक्षताम्' (इं. अ. १२) इति, तदेव यन्त्रं तस्य धरः यद्वा तन्त्रस्य यन्त्रे स्नायवः तेषां धरः ।

तन्त्रयुक्तयः–सि. १२–८. तन्त्राधिगमार्था युक्तयः ।

तन्द्रा–चि. १–२ | ३. इन्द्रियार्थेष्वसंवित्तिर्गौरवं जृम्भणं क्लमः । निद्रार्तस्येव यस्येहे तस्य तन्द्रां विनिर्दिशेत् ॥

तमः–सू. २५–२८. तमोगुणः प्रकृत्या गुणविशेषः ।

तमः–चि. ३–१३. मोहकर्तृत्वात्तमः ।

तमः–चि. २३–२०. अन्धकारः ।

तमःप्रवेशः–चि. १०–३. अन्धकारप्रवेश इव ।

तमःस्कन्धः–सू. २५–२८. तमसः स्कन्धः समूहः । पक्षरागश्चेह तत्त्वज्ञानप्रतिबन्धकत्वेन तमःस्कन्ध उच्यते ।

तर्कः–वि. ४–८. अप्रत्यक्षज्ञानम् ।

तर्पणम्–चि. ४–३०. बृंहणम् ।

तर्पणम्–चि. ३–१५. तोयपरिप्लुताः सक्तवः ।

तर्पणादिक्रमः–सि. ६–२५. संशोधनानन्तरं कर्तव्यः कर्मविशेषः ।

तर्षः–चि. २–४ | ४८. वनिताभिलाषः ।

तलम्–सि, ३–२९. हस्तपादतलम् ।

तलस्वेदः–सि. १–५०. अग्न्यादितप्तेन हस्ततलेन स्वेदः ।

तामसाऽस्वम्–शा. ४–३६. पशुशरीरेऽस्ति, तच्च सदोषत्वाख्यातं मोहांशत्वात् ।

तालु–इ. ३–५. जिह्वेन्द्रियाधिष्ठानम् (श. क.)

तिक्तः–सू. २६–८, ७८. वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात् तिक्तः; प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च । स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः ॥

तिक्तकम्–सू. २७–१९९. तिक्तरसात्मकं द्रव्यम् ।

तिक्तस्कन्धः–वि. ८–१४३. तिक्तवर्गपरिसंख्यातानामौषधद्रव्याणां समूहः ।

तीक्ष्णः चि. ३–७२. दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्रावणः; तीक्ष्ण पित्तकरं प्रायो लेखनं कफवातहृत् । (व. द.)

तीक्ष्णाग्निः–वि. ६–१२. तीक्ष्णोऽग्निः सर्वापचारसहः

तुवरः–चि. २२–२६. कषायरसः । (श. क.)

तुला–क. ७–६९, १२–९७. तुलां शतपलं विद्यात् परिमाणविशारदः ॥

तुषोदकम्–चि. ३–२६७. सतुषयवकाञ्जिकम्, मृष्टान् माषतुषान् भिन्नान् सर्वांस्तु चूर्णसंयुतान् । आरतानम्भसा तद्वज्जातं तच्च तुषोदकम् ॥ तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः । (व. द.)

तृणपुलिकः–शा. ४–३१. पुरुषाकृतिभूयिष्ठः असमस्तपुरुषलक्षणयुक्तः ।

तृणपूली–चि. २–१ | १८. पूली नपुंसकधर्मित्वात् । तृणपूली पुरुषाकृतिरिति भाषया पुरुषार्थक्रियाविरहित्वं दर्शयति ।

तृतीयकः–चि. ३–६७. दिनं हित्वा तृतीयकः ।

तृप्तिः–सू. २५–४०. सन्तोषः ।

तृप्तिघ्नः–सू. ४–८. एकादशो महाकषायः । तृप्तिः श्लेष्मविकारो येन तृप्तमिव आत्मानं मन्यते तद्घ्नः तृप्तिघ्नः ॥

तृष्णा–चि. ३–२६. पिपासा । (श. क.)

तृष्णानिग्रहणः–सू. ४–१४,२९. ऊनत्रिंशो महाकषायः ।

तृष्णोदशमनी चिकित्सा–वि. ५–२६. उदकवहानां दुष्टानां स्रोतसां चिकित्सा ।

तेजः–चि. १५–३. देहोष्मा शुक्रं वा ।

तोदनम्–सू. २४–४६. व्यथा । (श. क.)

तोदः–सू. १७–५५. सूचीवेधनवद्वेदनाविशेषः ।

तोषः–वि. ४–८. मुखनयनप्रसादादिः ।

त्रिकम्–सि. ३–४१. त्रिकस्तु कक्षयोः पृष्ठवंशास्थ्नोर्यः सन्निस्तत्त्रिकं स्मृतम् । (वै. श.)

त्रिकोपाफलितम्–सू. ५–५०. त्रिभिः पर्वभिर्भिन्नः समन्वितः ।

त्रिगर्भा–चि. १–१ | १९. प्रथममेकं गृहं, तदन्तरे द्वितीयम्, एवं त्रिगर्भा त्रयो गर्भा अन्तराणि यस्य अन्तस्त्रिप्रकोष्ठा ।

त्रिपर्ययः–सू. ५–४८. त्रयः पर्यायाः आपानाः यस्मिन्।

त्रिप्रकोपणाः–वि. १७–४. असात्म्येन्द्रियार्थसंयोगपरिणामप्रज्ञापराधकारणकाः ।

त्रिलिङ्गः–चि. ४–१३. सान्निपातिकः ।

त्रिसूत्रम्–सू. १–२४. त्रीणि हेत्वादीनि सूच्यन्ते यस्मिन् येन वा इति ।

त्रिस्कन्धम्–सू. १–२५. त्रयः हेत्वादयः स्कन्धरूपायस्य सः–स्कन्धश्च स्थूलावयवः प्रविभागो वा ।

त्रिस्नेहः–सि. ३–२६. सर्पिस्तैलवसात्मकः ।

त्वक्–इ. ७–३१. स्पर्शग्राहि इन्द्रियम् ।

त्वक्सारः–वि. ८–१०३. विशुद्धतरा त्वक् ।

त्वच्यः–सू. ५–८७. त्वचे हितः ।

दधिमण्डः–क. ८–१०. दध्न उपर्यच्छो भागः।

दधिमस्तु–सि. ११–३२. उक्तं दधि द्विगुणवारियुतं तु मस्तु। (वै. श.)

दधिसरः–चि. ५–६८. दधिसन्तानिका; दध्यग्रभागः। (वै. श.)

दध्यम्लम्–चि. २४–१६१. दध्ना अम्लीकृतम्।

दध्युत्तरम्–चि. १७–७४. दधिसरः।

दन्तपवनम्–सू. ५–७२. दन्तधावनार्थं काष्ठम्।

दन्तहर्षः–नि. १–२१. शीतरूक्षप्रवाताम्लस्पर्शानामसहा द्विजाः। पित्तमारुतकोपेन दन्तहर्षः स नामतः॥ (वै. श.)

दरः–सू. १७–३१. दारदरिका।

दशनच्छदौ–इ. ११–२०. ओष्ठौ।

दर्शनम्–इ. ४–८. चक्षुर्गोचरता।

दहनम्–सि. ९–७८. अग्निना दाहः।

दारुणः–सू. १२–४. शोषणत्वात् काठिन्यकरः।

दारणम्–सू. ११–५५. व्रणविदारणद्रव्यम्। (वै. श.)

दाहः–वि. ८–३६. दह्यत इव वेदनाविशेषः।

दाहः–चि. ५–६३. दाहकर्म।

दाहप्रशमनः–सू. ४–८. एकचत्वारिंशो महाकषायः।

दिवास्वप्नः–सू. ६–२३. दिवास्वापः।

दिव्यमुदकम्–सू. २७–१९८. आन्तरिक्षं जलम्।

दीपनः–सि. ३–३८. जठराग्निदीपनः। पचेन्नामं वह्निकृद् यद् दीपनं तद् यथा मिसिः। (व. द.)

दीपनीयम्–चि. २८–८७. अग्निदीपनम्।

दुश्छायः–इ. ११–३. विकृतच्छायः।

दुर्गन्धम्–सू. २७–२१५. पूतिगन्धयुक्तम्।

दुर्जरम्–सू. २७–१३८. दुष्पचम्।

दुर्दिनम्–सि. २–२०. मेघाच्छन्नदिनम्।

दुर्बलः–इ. ९–१५. निर्बलः।

दुर्मनाः–सू. १७–७३; इ. ११–३. मनोबलविहीनः

दुर्विपाकः–सू. २५–४०. दोषवान् विपाकः।

दूतः–इ. १–३. वैद्याह्वानार्थमागतो मनुष्यः।

दूयनम्–सू. १७–५८. मुखकण्ठादिषु वेदनायुक्तो दाहः।

दूषीविषम्–सू. २१–४५; चि. २३–३१, जीर्णं विषघ्नौषधिभिर्हतं वा दावाग्निवातातपशोषितं वा। स्वभावतो वा गुणविप्रहीनं विषं हि दूषीविषतामुपैति (सु. क. २–२५३.)

दूष्याः–सू. १९–४–९; नि. ४–४. रसादयो धातवः।

दृढाग्निः–चि. ३–१७२. दीप्ताग्निः।

दृष्टिः–इ. ४–२५. उपलब्धिः, तया दृष्ट्या दृष्टिशक्तिरुपचारादुच्यते।

देशः–सू. २६–९. भूमिः।

देशः–वि. १–३. आतुरः।

देशः–सू. १–६२. भूमिरातुरश्च।

देशानुपातिनी प्रकृतिः–इ. १–५. यथा अन्तर्वेदिवासिनः शुचयो भवन्ति।

देहः–सू. २५–३२ शरीरम्।

देहप्रकृतिः–सू. ७–४०. दोषानुशयिता ह्येषां देहप्रकृतिरुच्यते। एतेनैतेषां वातलादीनां मुख्यं स्वास्थ्यं नास्ति, किंतर्हि उपचारस्वस्था एते इति दर्शयति।

देहव्यायामः–सू. ७–३१. शरीरचेष्टा या चेष्टा स्थैर्यार्था बलवर्धनी। देहव्यायामसंख्याता मात्रया तां समाचरेत्॥

दैन्यम्–वि. ४–८. दीनभावः।

दैवम्–शा. १–११६, २–४४; वि. ३–३०; चि. २–१।१०. निर्दिष्टं दैवशब्देन कर्म यत् पौर्वदेहिकम्; दैवं पुरा यत्कृतमुच्यते तत्; दैवमात्मकृतं विद्यात्कर्म यत्पौर्वदेहिकम्; प्राक्तनकर्म।

दैवव्यपाश्रयम्–सू. १–५८, ११–५४. दैवमदृष्टं तदाश्रित्य यद् व्याधिप्रतीकारं करोति तद्दैवव्यपाश्रयं बलिमङ्गलादि; मन्त्रौषधिमणिमङ्गलबल्युपहारहोमनियमप्रायश्चित्तोपवासस्वस्त्ययनप्रणिपातगमनादि।

दोषाः–सू. २७–६८; चि. ४–२२. वातपित्तकफाः।

दोषावसेचनम्–चि. ३–४३. दोषाणामवसेचनं निर्हरणम्।

दौर्ग्राह्यम्–चि. ५–७. दुर्ग्रहता।

दौर्बल्यम्–चि. ८–३३. अल्पबलत्वम्। (श. क.)

द्रवः–चि. ३–२४. क्वाथः।

द्रव्यम्–सू. १–२८, ५१, ६४. २६–१०. यत्र कर्मगुणा आश्रिताः यच्च तेषां समवायि कारणं तद्द्रव्यम्; खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसंग्रहः; आधारकारणम्; यत् आहारौषधोपयुक्तम्।

द्रव्याणाम् अधिकरणम्–सू. २६–१३. द्रव्याणि यत्र कुर्वन्ति तत् तेषामधिकरणम्।

द्रव्याणाम् उपायः–सू. २६–१३. द्रव्याणि यथा कुर्वन्ति स तेषामुपायः।

द्रव्याणाम् कर्म–सू. २६–१३. द्रव्याणि यत् कुर्वन्ति तत्तेषां कर्म।

द्रव्याणाम् कालः–सू. २६–१३. द्रव्याणि यदा कुर्वन्ति स तेषां कालः।

द्रव्याणाम् फलम्–सू. २६–१३. द्रव्याणि यत् साधयन्ति तत्तेषां फलम्।

द्रव्याणाम् वीर्यम्–सू. २६–१३, ६५. द्रव्याणि येन कुर्वन्ति तत्तेषां वीर्यम्।

द्रोणः–क. १२–९६. चतुर्गुणो द्रोणश्चार्मणं नल्वणं च तत्। स एव कलशः ख्यातो घटमुन्मानमेव च॥

द्वन्द्वम्–सू. १४–६६. परस्परं विरुद्धं युग्मम्।

द्विजः–इ. ८–१३. दन्तः।

द्वियोनिः–सू. २५–३६. द्विप्रभवः।

द्विरेताः–शा. २–१७. स्त्रीपुंचिह्नः पुमान्। (वै. श.)

द्वैहृदय्यम्–शा. ४–१५. तस्य यत्कालमेवेन्द्रियाणि संतिष्ठन्ते, तत्कालमेव चेतसि वेदनानिर्बन्धं प्राप्नोति; तस्मात्तदाप्रभृति गर्भः स्पन्दते, प्रार्थयते च, जन्मान्तरानुभूतं यत् किंचित्, तद्द्वैहृदय्यमाचक्षते वृद्धाः।

धनैषणा–सू. ११–५. द्वितीयैषणा (वै. श.)।

धन्वः–चि. १–३१. मरुदेशः।

धमन्यः–सू. ३०–१२. ध्मानात् पूरणाद् वायुना रसादिना धमन्यः; ध्मानात् धमन्यः।

धर्मः–सू. १–१५. धारणाद्धर्मः, स चात्मसमवेतः कार्यदर्शनानुमेयः।

धातवः–चि. १५–१५. देहधारणाद् धातवः।

धातवः–सू. २२–४१. दोषाः "दोषा अपि धातुशब्दं लभन्ते" इति वचनात्।

धातुपाकः–सू. १८–३. धातुषु धात्वग्निकृतो रसपाकः।

धातुवैषम्यम्–चि. ८–८४. विषमतां गता धातवः।

धातुव्यूहनम्–शा. ४–१२. धातुरचना; धातुवहनं च।

धातुसाम्यम्–सू. २१–४२. विकारोपशमरूपकार्यम्। (वै. श.)

धातुस्नेहपरम्परा–चि. १५–२०. धातूनां रसादिसप्तानां तत्स्नेहानां धातुप्रसादरूपाणां परम्पराक्रमः।

धानाः–चि. २–२–१२. धानाकारा भक्ष्याः।

धानाः–चि. ६–२३. भृष्टयवाः।

धान्वन्तरीयाः–चि. ५–४४. धन्वन्तरितन्त्राध्यायिनः शल्यविदः।

धान्याम्लम्–सू. १५–७; क. १–१२. काञ्जिकम्।

धारणम्–चि. २३–५८. धारणशब्देन शरीरे धारणं मते, धारणं चौषधशब्देनोपक्रमेषु प्रविशति।

धारा–सि. ३–२०. जलादिद्रवद्रव्याणां पतनम्।

धारि–सू. १–४२ धारयति शरीरं पूतितां गन्तुं न ददातीति धारि।

धारि–सू. ३०–६ शरीरेन्द्रियसत्त्वात्मसंयोगः शरीरधारणाद्धारीत्युच्यते।

धारिलोहितम्–वि. ४–७. जीवशोणितम्।

धारोष्णम्–चि. २९–८२. दोहकालधारापतित-ममियोगाद्विना उष्णीभूतम्।

धीः–सू. २५–४० बुद्धिः

धीविभ्रमः–चि. ९–६. बुद्धरयथार्थदर्शित्वम्।

धुक्षणम्–वि. ६–२१. प्रबोधकम्; प्रोद्दीपकम्।

धूपः–चि. २५–१०८. धूपयति स्वगन्धेन प्रीणयित्वा दीप्यतीति। (श. क.)

धूपनम्–सू. १७–५८. धूमनिर्गमनमिव ज्ञानम्।

धूमः–सू. ५–३९, ४०. पानार्थः। (वै. श.)

धूमनेत्रम्–सू. ५–२४. धूमपानार्थं नेत्रम्, नालीविशेषः यं द्वारीकृत्य धूमः पीयते।

धूमपानम्–सू. ५–३१. धूमसेवा। (वै. श.)

धूमवर्तिः–सू. ५–१०६. धूमपानार्थं यवाकृति-निर्मिता औषधवर्तिः।

धृतिः–सू. २५–४०. धैर्यम्; अलौल्यम्; धृतिर्हि नियमात्मिका अहितेभ्यो मनोनियमनमिति यावत्

धैर्यम्–चि. ४–८. धैर्यं विपद्यपि मनसोऽदैन्यम्।

ध्मापनम्–सि. ९–८९ प्रधमनम्, 'चूर्णस्याध्मापनं तद्धि देहस्रोतोविशोधनम्' इति वचनाद् ध्मापनं शिरोविरेचनप्रयोजनकमेवेति दर्शयति।

ध्यानम् इ. ५–१८. चिन्तनम्।

नकुलान्धः–इ. ३–६. नकुलान्धस्तु रूपाणि दिवा शुक्लानि पश्यति।

नखः–इ. १–१२. नखरः।

नयनम्–इ. १–१२. चक्षुः।

नरनारिषण्डौ–शा. २–१७. नरषण्डो नारिषण्ड-श्चेति नरनारिषण्डौ एतावबीजौ ज्ञेयौ यदुक्तं सुश्रुते 'अशुक्र-स्त्वेव षण्डकः'

नस्तः–सू. १३–२५. नासिकातः।

नस्तः कर्म–सि. ९–८. नासिकारन्ध्रेणौषधदानम्; प्रतिमर्शावपीडनस्य प्रधमनशिरोविरेचनानि नावनश्चाव पीडश्च्यवनं धूम एव च। प्रतिमर्शश्च विज्ञेयं नस्तःकर्म च पञ्चधा॥

नस्तः प्रच्छर्दनम्–सू. १–८५. शिरोविरेचनम्।

नस्यम्–सि. ९–८७. नस्यं तत् कथ्यते धीरैर्नासा-ग्राह्यं यदौषधम्। प्रतिमर्शोऽवपीडश्च नस्यं प्रधमनं तथा। शिरोविरेचनं चेति नस्तःकर्म च पञ्चधा॥

नाडीस्वेदः– चि. ३०–४८. प्रकारविशेषनिर्मि-तया नाड्या दीयमानो बाष्पः (व. द.)

नाभिः–इ. ३–५. उदरावर्तः (श. क.)

नाल्यः–चि. २२–६. नलिकाः; स्रोतांसि।

नावनम्–सू. ५–३५. नस्यम्।

नासापुटम्–सि. ९–१००. अन्यतरं नासारन्ध्रम्।

नासिका–इ. ३–५. नासा।

नासिकावंशः–इ. ८–१०. नासिकापृष्ठे उन्नतमस्थि।

नास्तिकः–सू. ११–१०,१५. नास्ति परलोक इत्यादि यो मनुते सः।

निगदम्–चि. १२–१४५. पुरातनम्।

निगदम्-चि. २४-१७६. निर्दोषम्।

निगदम्-चि. २६-९८. निर्मलम्

निगमनम्-वि. ८-२७. तस्मात्तथेतिरूपं निर्णयात्मकं वचनम्।

निग्रहः-चि. ५-१९. शुक्रवेगरोधनम्।

निचयात्मकः- चि. ५-१४. सान्निपातिकः।

निजः-सू. ११-४५. चि. २५-५. शारीरदोषसमुत्थः।

निदर्शनम्-वि. १२-४४. मूर्खविदुषां बुद्धिसाम्यविषयो दृष्टान्तः।

निदानम्-सू. ३०-३३. निदानस्थानम्।

निदानम्-नि. १-१,३. निदानं कारणमिहोच्यते, तच्चेह व्याधिजनकं व्याधिबोधकं च सामान्येनोच्यते। तत्र व्याधिजनकं निदानं हेतुः, व्याधिबोधकं च कारणं निदानपूर्वरूपरूपोपशयसंप्राप्तिरूपम्। तत्र हेतुरूपं निदानं जनकं च भवति, व्याधिबोधकं च भवति। किंवा निदानशब्दो जनककारणवचन एव। इह खलु हेतुर्निमित्तमायतनं कर्ता कारणं प्रत्ययः समुत्थानं निदानमित्यनर्थान्तरम्॥

निद्रा-सू. २१-५८, ५९. स्वापः।

निमित्तम्-सू. १०-१४. हेतुः।

निमित्तविपरीतम्-वि. २-१३. हेतुप्रत्यनीकम्।

निमित्तानुरूपा-इ. १-६. निमित्तार्थानुकारिणी, निमित्तस्य योऽर्थः कार्यजननरूपः, कार्यबोधनरूपो वा तमनुकरोतीति निमित्तार्थानुकारिणी।

निमिषः-इ. ३-६. चक्षुर्निमीलनम्।

निमेषः-चि. २८-९. निमेषणीः शिरा वायुः प्रविष्टो वर्त्मसंश्रयाः। चलयेदति वर्त्मानि निमेषः स गदो मतः॥ (सु. उ. ३.)

नियतात्मा-चि. १-४ | १०. जितेन्द्रियः।

नियोगः-सि. १२-४४. अवश्यानुष्ठेयतया विधानम्।

निरत्ययत्वम्-सि. १०-५. दोष (उपद्रव) रहितत्वम्।

निरन्नता-चि. ५-९. उपवासः। (वै. श.)

निरामः-चि. ३-१६८. पक्वः।

निरूहः-क. १२-५३. आस्थापनम्।

निरोधः-सू. ३०-२५. मरणम्।

निर्णयः-सि. १२-४२. विचारितस्यार्थस्य व्यवस्थापनम्।

निर्देशः-सि. १२-४२. संक्षेपोक्तस्य विवरणम्।

निर्यासः-सू. २५-४० वृक्षात्स्रुतो रसः।

निर्यूहः-चि. २१-१२३. क्वाथः; रसः। (श. क.)

निर्वचनम्- सि. १२-४४. पण्डितबुद्धिगम्यो दृष्टान्तः।

निर्वलीकम्-वि. ३-१६. वलीरहितम्।

निर्वापणम्-सू. १८-५. दाहप्रशमनम्, पाकाभिमुखिनो मन्दशोथस्य दाहतोदप्रशमनम्। (व. द.)

निर्वृताः-चि. २९-१३९. निर्वापिताः।

निर्वृत्तिः-सू. १-६४. अभिव्यक्तिः।

निष्कुलम्-चि. ११-६६. निरस्थि।

निष्क्वाथः-चि. २६-१४०. क्वाथः।

निष्ठीविता सू. ८-२१. निष्ठीवनम्।

निष्पीडनम्-चि. २३-३५. पीडयित्वा रसस्य रक्तस्य वा निर्हरणम्।

निष्प्रत्यनीकः-चि. ३-५६. विरोधितारहितः; तुल्य इत्यभिधानादपि यत् 'निष्प्रत्यनीकः' इति करोति, तेन कालार्थगुणतायोगेन मात्रादितुल्यतां स्फोटयति, कालादीनां चासमानानामपि बलवता दोषेण परिगृहीतानां प्रतीपार्थकरणाज्ञानस्यैवानुगुणत्वं भवति।

निःश्वासः-सू. ७-२४. मुखनासाभ्यां निर्गतः श्वासः।

निःसंज्ञः-इ ९-४. संज्ञारहितः।

निस्तोदः–चि. २१–३०. अतिव्यथा। (वै. श.)

नीलः–चि. ४–२०. नीलवर्णः।

नेत्रनाड्यः–सि. २–२१. नेत्रगताः रक्तरक्तादिवाहिन्यः।

नेत्रम् (बस्तिनेत्रम्)–सि. १–५५. वस्तिद्रव्यप्रवेशार्थं प्रयुज्यमानो नलिकाविशेषः।

नेत्राञ्जनम्–चि. ३–३०७. चक्षुर्म्रक्षणम्।

न्युब्जा–शा. ८–६. अधोमुखी।

पक्ता–सू. ६–९. जठराग्निः।

पक्तिः–सू. १२–११. पचनम्, पाचकस्याग्नेरविकृतं कर्म।

पक्तिः–चि. ३–१३०. पक्तिहेतुतया जाठराग्नि ब्रूते।

पक्तिस्थानम्–चि. ३–२७५. अग्न्यधिष्ठानम्, ग्रहणी।

पक्वरसः–चि. ७–४४. क्वाथः, क्वथितेनेक्षुरसेन कृतः शीधुः वा।

पक्वाशयः–शा. ३–६. नाभेरधोभागः। (वै. श.)

पक्ष्म–इ. ३–६. अक्षिलोम। (श. क.)

पक्षः–इ. १२–५५. दन्तपक्षः।

पक्षः–सि. १–३२ सन्धिपदृयघातोपलक्षितः वातव्याधिविशेषः।

पचनम्–वि. १–१७. पाकः।

पञ्चकर्म–सू. २–१५. पञ्चकर्म वमनविरेचनास्थापनानुवासनशिरोविरेचनरूपम्।

पञ्चात्मा–चि. १४–२४. प्राणापानव्यानोदानसमानरूपः।

पथ्यम्–सू. २५–४५. पथ्यं पथोऽनपेतं यद्यच्चोक्तं मनसः प्रियम्। पथः शरीरमार्गास्स्रोतोरूपादनपेतम्; अपेतम् अपकारकम्, अनपेतम् अनपकारकम् इत्यर्थः। पथोग्रहणेन पथोवाह्या दोषा धातवश्च तथा पथोनिर्वर्तका धातवो गृह्यन्ते तेन कृत्स्नमेव शरीरं गृहीतं भवति ततश्च शरीरानुपघाति पथ्यमिति भवति। किंवा स्वस्थस्वास्थ्य रक्षणमातुरव्याधिपरिमोक्षश्चेति पन्थाः तस्मादनपेतं पथ्यम्। एवमपि मनोऽनुपघातित्वं न लभ्यते इत्याह–यच्चोक्तं मनसः प्रियमिति। तेन मनसोऽतिप्रीत्याभिलषितं तेन मनसो हितमिति प्रियार्थः तेन प्रशमज्ञानातीक्ष्णत्वादयो गृह्यन्ते। एतेन "मनःशरीरानुपघाति पथ्यम्" इति पथ्यलक्षणमनपवादमुक्तं भवति।

पथ्यम्–सि. १–६०. हितम्

पदार्थः– सि. १२–४१. पदस्य पदयोः पदानां वार्थः।

परः–शा. ४–७. सारः, किंवा परकालोत्पन्नः परः; शुक्रं हि सर्वधातुभ्यः परमुत्पद्यते।

परमाणुः-शा. ७–१७. रजसस्त्रिंशत्तमो भागः। (वै. श.)

परापरत्वम्–सू. २६–२९. देशकालवयोमानपाकवीर्यरसादिषु परापरत्वे। परत्वमपरत्वं च तत्र परत्वं प्रधानत्वम् अपरत्वम् अप्रधानत्वं किंवा वैशेषिकोक्ते देशकालाद्यपेक्षया विप्रकृष्टसन्निकृष्टवर्तित्वे परापरत्वे ज्ञेये।

परासुः–इ. ३–५. गतप्राणः।

परिकर्तिका–चि. १४–८. कर्तनवत् पीडा।

परिकीर्णाः–इ. ३–६. मललिप्ताः।

परिग्रह –वि. १–२१ | ४. पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकश्येनाहारद्रव्य णाम्। सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते।

परिचारकः–सू. १०–४. उपस्थाता।

परिणतम्–चि. २४–९०. चिरकालस्थितम्।

परिणामः–सू. २५–४०. परिपाकः। (वै. श.)

परिणामः–सू. ११–४२. कालः।

परिणाहस्रोताः–सू. १४–४३ परिणाहेन वेष्टनेन स्रोतः रन्ध्रम् यस्याः सा परिणाहस्रोताः।

परितर्पणम्–चि. ६–१७. सन्तर्पणम्।

परिदग्धा–चि. ३–१०५. दग्धवत् कृष्णवर्णा।

परिपिण्डितत्वम्-चि. ५-७. लतासमूहादिवत् संघातेनावस्थितत्वम् ।

परिग्रहः-शा. ८-१२. शयनासनपुष्पादिपरिच्छदः ।

परिबृंहणम्-चि. ३-२७. पुष्टिः, अभिवृद्धिः ।

परिमर्दनम्-चि. २१-१३५. मर्दनम् ।

परिमाणम्-सू. २६-३४. मानम् ।

परिमार्जनम्-सू. २९-७. शोधनम्, शुद्धिकरणम् ।

परिम्लानम्-चि. ५-३८. क्षीणकायम् ।

परिसर्पः-चि. २१-११. विसर्पस्य नामान्तरम्, परिसर्पोऽथवा नाम्ना सर्वतः परिसर्पणात् ।

परिस्रावाः-चि. २५-१८. व्रणास्रावाः ।

परिषेकः-सू. २०-१३. परिषेचनम् ।

परिषेचनम्-चि. १२-१५५. व्रणवेदनोपशान्त्यर्थं सुखोष्णक्वाथसेचनम् । (व. द.)

परिहारः-सू. १३-४०. परिहरणम्, त्यागः ।

परीक्षकः-सू. २८-३७. श्रुतं बुद्धिः स्मृतिर्दाक्ष्यं धृतिर्हितनिषेवणम् । वाग् विशुद्धिः शमो धैर्यमाश्रयन्ति परीक्षकम् ॥ एवंगुणविशिष्टः शास्त्रानुसारेण हितसमालोचकः परीक्षकः ।

परीक्षा-चि. २५-१७. समालोचना ।

पर्योगः-सू. १५-७. कटाहः ।

पर्व-शा. ७-४. अवयवसन्धिः ।

पर्वभेदः-सू. २२-३६. सन्धिभङ्गरोगः, तथा सन्धिवेदना, यथा चालने भङ्गाशङ्का जायते (वै. श.)

पर्शुका- इ. ३-५. पार्श्वास्थि (श. क.)

परुषम्-सू. १८-३१, कठिनम् ।

फलम्-क. १२-९२-चतुःदर्शितं नानम्, त्रुटिः, ..., चतुर्थिका, बिल्वम्, पोडशिका, आम्रम् ।

पवनः-चि. २६-३६. वायुः ।

पवनेन्द्रियः-शा. २-१७. शुक्राशयं गर्भगतस्य हत्वा करोति वायुः पवनेन्द्रियत्वम् ।

पाकः-सू. २६-११. पचनम् ।

पाक्यम्-चि. ३-१९७ शृतम् ।

पाक्यक्षारः-चि. २१-१२२ पाकेन सुश्रुतोक्तेन विधानेन कृतः क्षारः पाक्यक्षारः ।

पाचनम्-चि. १५-७५. यवाग्वादि, पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद् यत् तद्धि पाचनम् (शा. सं.), पाचनं दोषामयोः शोषस्य वा । (व. द.)

पाचनीयम्-सू. १५-७. पाचनम् ।

पाणिः-इ. १-२२. हस्तः ।

पाणितलम्-चि. १५-१७६. क. १२-२४. कर्षः ।

पाणिस्वेदः-चि. २६-१३७. हस्तेन कृतः स्वेदः ।

पाटनम्-चि. २५-४९. छेदनम् । (वै. श.)

पात्रम्-चि. ५-१७३. आढकः ।

पादः-सू. ९-२७. भिषगादीनामेकतमः ।

पादः-चि. १-४ | ६५ चतुर्थांशः ।

पादचर्मणी-इ. ५-३४. पादयोश्चर्मणी ।

पादाः-इ. ११-२७. भिषगादयः ।

पानकः-क. १-२६. पानद्रव्यविशेषः (श. क.)

पानम्-सू. १-८७. द्रवद्रव्यगलाधःकरणव्यापारः (वै. श.)

पाप्मा-चि. ३-१३. ज्वरः पापनिर्वर्त्यत्वात् ।

पामा-चि. ७-१३. सास्रावकण्डूपरिदाहकाभिः पामाऽणुकाभिः पिडकाभिरुक्ता (सु. नि. ५-१४.) ।

पायुः-चि. ७-५८. गुदम् ।

पारिषद्यः-सू. १५-७. परिषदि शस्तः ।

पारुष्यम्–चि. ९–१०. खरत्वम्।

पार्थिवः–सू. १–६८. पृथिवीविकारः।

पार्ष्णिः–सि. ३–२९. गुल्फस्याधोभागः। (वै. श.)

पार्श्वम्–इ. ३–५. कक्षाधोभागः। (श. क.)

पार्श्वशूलम्–चि. ८–१७. पार्श्वदेशस्थं शूलम्। (वै. श.)

पाषण्डाः–चि. २३–१६०. कापालिकादयः

पिचु–चि. ५–७४ कर्षः।

पिचुः–चि. ३०–६१. कार्पासखण्डः औषधाप्लावितः।

पिचुक्रिया–चि. ३०–६१. पिचुप्रणयनम्।

पिचुधारणम्–चि. १९–४६. भेषजसाधितक्वाथ-स्नेहाप्लुतस्य तूलकस्य वस्त्रखण्डस्य वा योनौ स्थापनम्। (व. द.)

पिच्छनम्–सू. १८–४. अत्यर्थपीडनम्।

पिच्छा–सू. १८–१४. पिच्छिलो गाढश्च स्रावः।

पिच्छावस्तिः–सि. ५–१८. अल्पया मात्रया निरूहाख्यो बस्तिः।

पिच्छिलः–सू. १–६१. विजिलः। (व. द.)

पिटका–चि. ६–५८. पिटका, व्रणविशेषः (वै. श.)

पिण्डः–चि. २१–१०१. वर्तुलाकृतिः। (व. द.)

पिण्डस्वेदः–सू. १४–२५. पिण्डरूपः स्वेदः।

पिण्डिका–इ. ६–१३. सि. ३–२९. जङ्घामांस-पिण्डिका।

पिण्डितम्–चि. ५–४३. पिण्डरूपम्।

पित्तम्–सू. १२–११. शरीरस्थधातुविशेषः। (श. क.)

पित्तम्–सि. ६–७९. शोणितगतं पित्तं रक्तपित्तमिति यावत्।

पित्तस्थानम्–चि. २१–४५. मध्यशरीरम्।

पित्तासृक्–चि. ४–२९. रक्तपित्तम्।

पिष्टम्–चि. २१–८१. पिष्टिः।

पिष्टस्वेदनम्–चि. १–२। १४. अधच्छिद्र

पिष्टान्नम्–चि. ७–१२. पिष्टेन कृतमन्नम्।

पिहितः–चि. ३०–२७. अवरुद्धः।

पीठसर्पी–सि. २–२१. पङ्गुः।

पीडनम्–सू. २०–४. पीडा।

पीडा–सि. ९–३. रुजा।

पीनसः–चि. ८–६५. नासिकारोगविशेषः।

पुटपाकः–सि. ९–११५. पुटपाको हि शालाक्ये स्नेहन–लेखन–प्रसादनभेदात् त्रिविध उक्तः।

पुण्डरीकम्–चि. ७–१३. कुष्ठभेदः।

पुनरागतः–चि. ३–३३५. पुनरावृत्तः।

पुनरावर्तकः–चि. ३–३४३. पुनरावृत्तो ज्वरः।

पुनर्भवः–सू. ११–६. जन्मान्तरम्।

पुराणज्वरः–चि. ३–१७२. जीर्णज्वरः।

पुरीषजननः–सू. २५–४० पुरीषोत्पादकः।

पुरीषम्–सू. ७–३. विष्ठा।

पुरीषवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. मलवहनाड्यः।

पुरीषविरजनीयः–सू. ४–८ पुरीषस्य विरजनं दोष-सम्बन्धनिरासं करोतीति (व. द.)

पुरीषसंग्रहणीयः–सू. ४–१५। ३१. पुरीषस्य संग्रहं रोधं करोतीति।

पुरीषस्रंसनम्–चि. ८–८८. द्रवपुरीषनिर्गतिः।

पुरीषाधानम्–शा. ३–६. पक्वाशयः।

पुरुषः–शा. १–३९. आत्मा।

पुरुषः–शा. ५–४. षड्धातवः समुदिताः 'पुरुष' इति शब्दं लभन्ते।

पुरुषः (विपर्संज्ञितः)–चि. २३–४. स पुरुषः विपमुच्यते विषादनाद्धेतोः।

पुरुषकारः–वि. ३–३०. इह जन्मनि कृतं कर्म सामान्येनोच्यते, स्मृतः पुरुषकारस्तु क्रियते यदिहापरम्।

पुष्टिः–चि. २४–९. मांसादीनामुपचयः।

पुष्टिकरः–सू. २५–४०. मांसाद्युपचयकरः।

पूपलिका–वि. ७–२१. चापडिकेति ख्याता।

पूपाः–सू. २७–२६७. पिष्टिकाः।

पुष्पनेत्रम्–सि. ९–५०. पुष्पनेत्रमित्युत्तरबस्तिनेत्रस्य संज्ञा।

पुष्पम्–इ. १–२१. नखदन्तेषु अरिष्टलक्षणम्।

पुष्पम्–शा. ८–५. आर्तवदर्शनम्।

पुंसवनम्–शा. ८–१९. पुत्रजनकं विधानम्।

पुंस्त्वम्–सू. २५–४०. शुक्रम्।

पुंस्त्वोपघाति–सू. २५–४०. शुक्रक्षयकरम्। (व. द.)

पूति–वि. ७–१२. शटितम्।

पूतिः–वि. ८–९७. दुर्गन्धः।

पूतिनस्यम्–चि. ४–२६. नासाया दुर्गन्धता।

पूपवर्तिः–चि. २४–१२६. वर्त्याकारा पूपलिका।

पूर्वपक्षः–सि. १२–४३. प्रतिज्ञातार्थसंदूषकं वाक्यम्।

पूर्वरूपम्–नि. १–६. चि. २८–१९. अव्यक्तं लक्षणं तेषां पूर्वरूपमिति स्मृतम्। उत्पित्सुरामयो दोषो विशेषेणानधिष्ठितः। लिङ्गमव्यक्तमल्पत्वाद् व्याधीनां तद्यथायथम्॥ (मा. नि.)

पृथक्त्वम्–सू. २६–३३. 'इदं द्रव्यं पटलक्षणं घटात् पृथक्' इत्यादिका बुद्धिर्यतो भवति, तत् पृथक्त्वं भवति।

पृथुत्वम्–इ. ८–१०. महत्त्वम्। (श. क.)

पृष्ठेपिका–इ. ३–५. पृष्ठवंशः।

पृष्ठम्–इ. ८–२२. शरीराधोभागः।

पेयम्–सू. २७–२०४. पानम्।

पेयम्–इ. ९–११. जलम्। (श. क.)

पेया–क. २–५. अल्पसिक्थपेयद्रव्यम्। (शा. क.)

पेयादिक्रमः–सि. ६–२३. संसर्जनक्रमः।

पेयामण्डः–चि. ८–१२७. पेयाया उपरि अच्छो भागः।

पेशी–चि. २४–१८३. फलगतं सस्यं।

पेष्याः–सि. ३–४०. कल्कीकृताः।

पैत्तिकः–चि. ३–१४४. पित्तजो व्याधिः।

पौत्तिकम्–सू. २७–२४३. पिङ्गला मक्षिका महत्यः पुत्तिकाः तद्भवं मधु पौत्तिकम्।

पौरुषम्–सू. ३०–२४. उत्कृष्टं कर्म।

पौरुषम्–चि. २४–६१. शुक्रम्।

पौर्वदेहिकम्–सू. ११–३१. पूर्वदेहकृतम्।

पौष्करम्–सू. २६–८४. पुष्करपत्ररूपं शाकम्।

पौष्टिकी–चि. १–१। ३०. बृंहणी।

प्रकाशः–सू. २६–११. दीप्तिः।

प्रकुञ्चः–क. १२–९२. पलम्।

प्रकृतिः–सू. ९–४. आरोग्यम्।

प्रकृतिः–सू. २१–१२. देहजनकं बीजम्।

प्रकृतिः–वि. १–३. २१–१. तत्र प्रकृतिरुच्यते स्वभावो यः। सपुनराहारौषधद्रव्याणां स्वाभाविको गुर्वादिगुणयोगः।

प्रकृतिः–सू. २१–५९ स्वभावः। यथा स्वभावादेव केचिदनिद्रा भवन्ति।

प्रकृतिः इ. ६–२४. स्वभावः सुशीलत्वादिरूपः किंवा जन्मप्रतिबद्धा श्लेष्मप्रकृत्यादिरूपा।

प्रकृतिः–चि. ३–१२. स्वभावः, तथा यत्कारणमयं कार्यं भवति तदुच्यते।

प्रकृतिः–(तृतीया) शा. २–२५. नपुंसकः।

प्रकृति-स्थापनम्–चि. ९–१३. चिकित्सितम्।

प्रकोपः–सू. १२–५. वातादीनां सङ्क्षोभहेतुः।(वै.श.)

प्रकोपणम्–सू. १२–३. प्रकोपकारकम्

प्रक्लिन्नम्–चि. २१–३०. गलितं, शटितम्।

प्रक्लेदि–वि. १–१६. क्लेदयुक्तम्।

प्रक्षालनम् (एतत्) चि. २१–९८. एतैः प्रक्षालनार्थः क्वाथः कर्तव्यः।

प्रक्षेपः–सू. ७–३७. हितस्य सेवनम्।

प्रघर्षः–सू. ३–२९. शरीरोद्वर्तनम्।

प्रघर्षणम्–सि. १२–१५५. प्रघर्षः।

प्रच्छनम्–चि. ७–४०. ऋज्वसंकीर्णं सूक्ष्मं सममनवगाढमनुत्तानमाशु च शस्त्रं पातयेन्मर्मसिरास्नायुसन्धीनां चानुपघाति। (सु. सू. अ. १४–२६)

प्रच्छर्दनम्–सू. ७–१५. वमनम्।

प्रच्छादनम्–चि. २५–९५. प्रावरणम् (श. क.)

प्रच्छिन्नम्–इ. १०–१२. प्रच्छिन्नमिव प्रच्छिन्नं, छेदनाकारवेदनायुक्तत्वात्।

प्रजननम्–सू. २८–४. लिङ्गम्।

प्रजास्थापनः–सू. ४–१८ | ४८. एकोनपञ्चाशत्तमो महाकषायः; प्रजोपघातकं दोषं हृत्वा प्रजां स्थापयति (व. द.)

प्रजीर्णम्–शा. १–१११. विदग्धम्।

प्रज्ञापराधः–सू. ७–५२. बुद्धेः अपराधः, अज्ञानदुर्ज्ञाने।

प्रज्ञापराधः–शा. १–१०२, धीधृतिस्मृतिविभ्रष्टः कर्म यत् कुरुतेऽशुभम्। प्रज्ञापराधं तं विद्यात् सर्वदोषप्रकोपणम्॥ बुद्ध्या विषमविज्ञानं विषमं च प्रवर्तनम्। प्रज्ञापराधं जानीयान्मनसो गोचरं हि तत्॥

प्रज्ञाविपर्यासः–इ. ४–२६. प्रज्ञाविपर्यासैरिति शेषीभूतासु प्रभावकृतः प्रज्ञाविपर्यासः।

प्रणाडी–सि. ९–१०३. नस्यदाननलिका।

प्रतापः–सू. १८–५. प्रभावः।

प्रतिकर्म–इ. १२–५८. चिकित्सितम्।

प्रतिकारयेत्–चि. २४–१०७. चिकित्सां कुर्यात्।

प्रतीघातः–चि. ३०–१६८. वेगनिरोधः।

प्रतिच्छाया–इ. १–३. देहच्छाया।

प्रतिपत्तिः–सू. ७–५५. उपदिष्टार्थस्य सम्यगवबोधः।

प्रतिपत्तिः–वि. ४–११. कर्मणां यथार्हतया अनुष्ठानम्।

प्रतिभा–सू. २७–३४९. प्रज्ञा।

प्रतिभानम्–वि. ८–१८. बुद्धिः।

प्रतिमर्शः–सि. ९–८९. नस्तःकर्म।

प्रतिरूपकाः सू. ११–५१. वैद्यसदृशाः।

प्रतिलोमानुलोमगाः–इ. ७–२० अधोमार्गोर्ध्वमार्गगताः।

प्रतिवादः– सू. २५–२७. प्रतिपक्षः।

प्रतिवापः–सि. १०–१७. कषाये चूर्णादिप्रक्षेपः। (वै. श.)

प्रतिविनीतम्–सू. १५–१७. आलोडितम्।

प्रतिषेधः–वि. ४–८. व्यावृत्तिः।

प्रतिसारणम्–चि. २३–३६. मणघर्षणम् (वै. श.)

प्रतुदाः–सि. १२–१८ | ४. प्रतुद्य बहुधाऽभिहत्य भक्षयन्ति इति।

प्रत्यक्षम्–सू. ११–२०. आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। व्यक्ता तदात्वे या बुद्धिः प्रत्यक्षं सा निरुच्यते॥ इह च प्रत्यक्षफलरूपापि बुद्धिः प्रत्यक्षशब्देनाभिधीयते, तथैव लोकव्यवहारात्; परमार्थतस्तु यतो भवतीन्द्रियादेरीदृशी बुद्धिस्तत् प्रत्यक्षम्।

प्रत्यक्षम्–वि. ४–४. यदात्मना इन्द्रियैः चक्षुरादिभिः अव्यवधानेन गृह्यते रूपादि तत्प्रत्यक्षमिति बाह्यप्रत्यक्षं गृह्णाति, मनसाऽव्यवधानेन यदुपलभ्यते सुखादि तच्च मानसं प्रत्यक्षं गृह्णाति।

प्रत्यनीकम्–सि. १–३५. विपरीतम् ।

प्रत्ययः–सू. १–२४. निमित्तकारणम् ।

प्रत्याख्येयः–सू. १०–१९. प्रत्याख्यातुं योग्यः असाध्यभेदः असाध्यत्वकथनपुरःसरं चिकित्स्यः ।

प्रत्यात्मनियता–इ. १–५. प्रतिपुरुषभिन्ना ।

प्रदेशः–सि. १२–४२. यद् बहुत्वादर्थस्य कार्त्स्न्येनाभिधातुमशक्यमेकदेशेनाभिधीयते ।

प्रदेशिनी–चि. २८–१०३. अङ्गुष्ठानन्तराऽङ्गुली ।

प्रदेहः–सू. ११–५५. लेपस्य भेदः प्रदेहस्तूष्णः शीतो वा बहलोऽबहुरविशोषी च । (सु. सू. १८–६.)

प्रदोषम्–शा. ४–३०. प्रदोष इत्यत्र प्रशब्देन दुष्टिप्रकर्षं प्रकृष्टबन्ध्यतारूपकार्यजनकं दर्शयति ।

प्रधमनम्–सि. ९–९६. नस्यविशेषः (वै. श.)

प्रधमापनम्–सि.९–१०७. प्रधमननस्यदानम् ।

प्रपचनम्–वि. ८–३६. पाकः ।

प्रपन्नः–शा. २–१४. आगतः ।

प्रपाणिकौ–इ. ८–२६. मणिबन्धादूर्ध्वं कूर्परपर्यन्तं द्वयोर्भुजयोर्भागौ ।

प्रबाधकम्–चि. २४–६४. निवर्तकम्, निवारकम् शामकम् ।

प्रभवः–शा. १–५३. कारणम् ।

प्रभा–इ. ७–१४. वर्णप्रकाशिनी, प्रकृष्टा दूरात् प्रकाशते इतिलक्षणद्वयविशिष्टः कान्तिविशेषः ।

प्रभावः–सू. २६–६७. अचिन्त्या द्रव्यशक्तिरभिप्रेता रसादिकार्यत्वेन या नावधारयितुं शक्यते ।

प्रभावः–वि. १–४. प्रकृष्टो भावः प्रभावः शक्तिरित्यर्थः, सचेहाचिन्त्यश्चिन्त्यश्चग्राह्यः, रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम् । (च. द.)

प्रभावतत्त्वम्–वि. १–९. प्रभावतात्पर्यम् ।

प्रमथ्या–सि. ७–१०. प्रमथ्या प्रोच्यते द्रव्यं पलमात्रं तु कल्कितम् । किञ्चिदम्लेन संयुक्तमथवान्यविवर्जितम् । तोये चाष्टगुणे साध्यं पानमाहुः पलद्वयम्॥(वै. श.)। प्रमथ्येतिपाचनकषायस्यायुर्वेदसमयसिद्धसंज्ञा ।

प्रमथ्या–चि. १९–२९. पाचनदीपनीयः कषायः

प्रमाणम्–वि. ४–७. देहपरिमाणम् । (वै. श.)

प्रमाणवन्ति–चि. १४–१७. महाप्रमाणानि ।

प्रमाथि–सू. ७–९. अनुलोमनम् ।

प्रमिताशनम्–चि. १४–१२. अत्यल्पाशनम् ।

प्रमिताशनम्–सू. १५–१५. एकरसाभ्यासः ।

प्रमिताशनम्–चि. ११–८. एकरसाभ्यासः दिवा अतीतकालभोजनम् ।

प्रमीलकः–सू. २३–७. सततं प्रध्यानम् ।

प्रयोगः–सू. २४–५६. प्रयुक्तिः उपयोगः ।

प्रयोगः–सू. ५–३७. प्रायोगिकधूमः ।

प्रयोजनम्–सि. १२–४२. यदर्थं कामयमानः प्रवर्तते ।

प्ररोहः–सू. १–७८. अङ्कुरः ।

प्रलयः–चि. ३–५. मरणम् ।

प्रलापः–सू. १७–५२. अनर्थकं वचः ।

प्रलुञ्चय–चि. ७–२५. निस्तुषीकृत्य।

प्रलेपः–सू. २१–४६. कफादिभिः लिप्तता।

प्रवाहणम्–चि. १२–९६. कुन्थनम्, मलादिनिष्कासनार्थं प्रयत्नः।

प्रवाहिका–चि. १९–३४. वायुर्विवृद्धो निचितं बलासं नुदत्यधस्तादहिताशनस्य। प्रवाहतोऽल्पं बहुशो मलाक्तं प्रवाहिकां तां प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥ (सु. उ. अ. ४०–१३८.)

प्रवृत्तिः–चि. ३–१४. प्रथमाविर्भावः।

प्रवृत्तिः–वि. ८–६८. प्रवृत्तिस्तु खलु चेष्टा कार्यार्था सैव क्रिया, कर्म यत्नः कार्यसमारम्भश्च।

प्रवेणी–सू. ६–१५. गोणी।

प्रशमः–सू. १७–११४. चि. २१–४०. शमनम्।

प्रशमः–सू. ३०–१४. शान्तिः।

प्रशमनम्–सू. २५–४०. शमनकरम्।

प्रसङ्गः–सि. १२–४३. पूर्वाभिहितस्यार्थस्य प्रकरणागतत्वादिना पुनरभिधानम्।

प्रसन्नम्–सू. २७–२१७. निर्दोषम्।

प्रसन्ना–चि. २६–१८. मद्योपरि स्वच्छो भागः

प्रसहाः–सू. ६–१२. प्रसह्य भक्षयन्तीति प्रसहास्तेन संज्ञिताः। प्रसहा द्विविधा मांसादा व्याघ्रश्येनादयः, तथा अमांसादाश्च गवादयः।

प्रसादः–सू. २७–३४९. प्रसन्नता (श. क.)

प्रसारणम्–शा. ७–१६, चि. २८–९. नैयायिकाभिमतपञ्चविधकर्मान्तर्गतकर्मविशेषः, ऊर्ध्वदेशसंयोगकरणम्।

प्रसेकः–शा. ८–३६. अल्पत्वेन बिन्दुशो वा क्षरणम्।

प्रसेचनम्–चि. ७–१५९. परिषेकः।

प्रस्कन्दनम्–चि. ३–२३०. विरेचनम्।

प्रस्राविणी–चि. २३–१५८. स्रावशीला।

प्रसृतः–क. १२–९०. द्वे पले प्रसृतं विदुः।

प्रस्तरः–सू. १४–४२. प्रस्तीर्यते इति प्रस्तरः शयनप्रमाणेन स्वेदवस्तूनां विस्तरणम्।

प्रस्थः–चि. २२–४३. क. १२–९४. षोडशपलप्रमाणः।

प्रस्रंसनम्–चि. ५–१८४. विरेचनम्।

प्राग्भक्तम्–चि. ५–८१. भोजनस्य प्राक्, परिणामेन वा यथा भोजनात्प्रत्यासन्नं भवति।

प्राक्–सू. २५–१८. सर्गादौ।

प्राग्रूपम्–चि. २२–८. पूर्वरूपम्।

प्राणवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. प्राणसंज्ञकवातवहानि स्रोतांसि।

प्राणः–सू. १२–८. मूर्धोरःकण्ठजिह्वास्यनासिकासंचारी ष्ठीवनक्षवथूद्गारश्वासाहारादिकर्मकारी वायुविशेषः; यो वायुर्वक्त्रसंचारी स प्राणो नाम देहधृक्। सोऽन्नं प्रवेशयत्यन्तः प्राणांश्चाप्यवलम्बते॥ प्रायशः कुरुते दुष्टो हिक्काश्वासादिकान्गदान्। (सु. नि. १–१३½.)

प्राणाचार्यः–चि. १–४ | ४०. वैद्यः।

प्राणाः–चि. २८–१२. जीवितम्, अग्निः सोमो वायुः सत्त्वं रजस्तमः पञ्चेन्द्रियाणि भूतात्मेति प्राणाः (सु शा. ४–३.)

प्राणापानौ–शा. १–७०. उच्छ्वासनिःश्वासौ।

प्राणाभिसरः–सू. ९–१८, २९–४. प्राणान् गच्छतो व्यावर्तयतीति प्राणाभिसरः; तस्माच्छास्त्रेऽर्थविज्ञाने प्रवृत्तौ कर्मदर्शने। भिषक् चतुष्टये युक्तः प्राणाभिसर उच्यते॥

प्राणायतनम्–सू. २९–३. शा. ७–९. नाभ्यादयः प्राणस्थित्याधाराः (वै. श.)। दशैवायतनान्याहुः प्राणा येषु प्रतिष्ठिताः शङ्खौ मर्मत्रयं कण्ठो रक्तं शुक्रौजसी गुदम्॥ दशप्राणायतनानि; तद्यथा मूर्धा, कण्ठः, हृदयं, नाभिः, गुदं, बस्तिः, ओजः, शुक्रं, शोणितं, मांसमिति।

प्राणैषणा-सू. ११-३. प्राणो जीवितं, तत् साध्यते दीर्घत्वेन रोगानुपहतत्वेन चानयेति प्राणैषणा ।

प्रादुर्भावः-शि. ९-५. आविर्भावः (श. क.)

प्रायश्चित्तम्-चि. १-१ | ३३. चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम् । प्रायश्चित्तं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम् ॥ विद्याद्भेषजनामानि ।

प्रायोगिकी-सू. ५-२४३. नित्यपेयधूमवर्तिसंज्ञा ।

प्रीणनः-सू. २५-४०, २७-३१२. तृप्तिकरः ।

प्रेरणम्-सू. २०-५. कारणम् ।

प्रोक्षणम्-शा. ५-१०. जलावसेचनम्, जलबिन्दूनामवकिरणम् ।

प्लीहा-वि. ५-८. कुक्षिवामपार्श्वस्थमांसखण्डम् । (श. क.)

फलम्-सू. २५-३०. कार्यफलं पुनस्तद् यत्प्रयोजना कार्याभिनिर्वृत्तिरिष्यते ।

फलवत्-चि. २-४ | ५०. प्रजोत्पत्तिकरम् ।

फलवर्तिः-सि. ७-१०. गुदादौ प्रयुज्यमाना औषधद्रव्यवर्तिः ।

फलसारिकम्-चि. २-४ | १८. दाडिमामलकादिफलसारसंस्कृतम् ।

फाणितम्-सू. १५-७. पाकात् किञ्चित् घनीभूतम् ।

फाण्टम्-सू. ४-७. क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितं तत् फाण्टं परिकीर्तितम् ।

फेनसङ्घातः-सू. १९-४. फेनराशिः ।

फेनिलम्-सू. १९-४ | १. सफेनम् ।

बलकरम्-सू. २५-४०. बलजनकम् ।

बलजननम्-सि. १२-१६. बलोत्पादकम् ।

बलदः-सि. ३-४३. शक्तिदः

बलम्-वि. १-३. व्यायामानुमेया शक्तिः, उत्साहः, उपचयः, ओजः, शरीरसंरक्षणी शक्तिः ।

बल्यम्-सू. १-१०७. बलाय हितम्, बलकरम् ।

बलवर्धनम्-सि. ४-११. बलोपचयकरम् ।

बलिः-सू. ३०-२१. उपहारः

बस्तिः-सू. १-८७. बस्तिकर्म, चर्मपुटकद्वारेण गुदाध्वना क्वाथादिप्रदानरूपः कर्मविशेषः स द्विविधः अनुवासननिरूहभेदात् । स्नेहबस्तिरनुवासनं कषायबस्तिर्निरूहः । (व. द.)

बस्तिः-सू. ११-४८. मूत्राशयः ।

बस्तिः-सि. ३-१०. मूत्राशयपुटकम् ।

बस्तिकर्म-सू. ७-७. पञ्चकर्मणामन्यतमम् ।

बस्तिद्वारम्-सि. ९-४१. मूत्राशयद्वारम् ।

बस्तिनियमः-सि. ६-१६. बस्तौ यथोक्तनियमसेवा, किंवा बस्तिनियमशब्देन कर्म-काल-योगरूपं बस्तिसंख्यानियमं कर्तव्यतया दर्शयति ।

बस्तिनिबन्धनम्-सि. ३-१०. बस्तिनिबन्धनार्थमुपयुक्ता कर्णिका ।

बस्तिनिर्लेखनम्-सि. ७-५५. वायुना च तीक्ष्णेन बस्तिकर्षणम्, बस्तिकर्मजन्यं घर्षणम् ।

बस्तिनेत्रम्-सू. १५-७. बस्तिनलिका ।

बस्तिशीर्षम्-इ. १०-१२. बस्त्यूर्ध्वभागः ।

बहलम्-सू. २२-१३. घनम् ।

बहिःपरिमार्जनम्-सू. ११-५५. बाह्यम् परिमार्जनम्-शोधनम्-रोगदूरीकरणम् । यत्पुनः बहिःस्पर्शमाश्रित्याभ्यङ्गस्वेदप्रदेहपरिषेकोन्मर्दनाद्यैरामयान् प्रमार्ष्टि तद् बहिःपरिमार्जनम् ।

बाधनम्-चि. १-१ | ५. स्वल्पमपथ्यं तदात्वमात्रबाधकम् ।

बाह्यकर्म-सू. ११-५६. बाह्यपरिमार्जनम् ।

बाह्यरोगमार्गः–सू. ११–४८. रक्तादिधातुस्वग्रूपः शाखाभिधो रोगमार्गः ।

विडालकः–चि. २६–२३१. नेत्रबहिर्लेपः शालाक्ये उच्यते ।

विडालपदकम्–चि. १३–१६०. कर्षः ।

विल्वः–वि. ७–२६. पलम् ।

वीजम्–शा. २–१८. शुक्रशोणितम् ।

वीजग्रहणम्–शा. २–१३. शुक्रस्य योनौ निषिक्तस्यानिःसरणम् ।

वीजाभिसंस्कारः–सू. १२–८. बीजस्य शाल्यादेः अभिसंस्कारोऽङ्कुरजननशक्तिः ।

वीजोपघातः–सू. १९–४ | ५. शुक्रोपघातः ।

बुद्धिः–सू. २५–४०. सम्यग्बोधनम्, निश्चयात्मकं ज्ञानम् ।

बुद्धिः–शा. १–२३. निश्चयात्मकज्ञानवती धीः ।

बुद्धिः–शा. १–६३. महच्छब्दाभिधेया ।

बृहच्छरीरः–चि. २–४ | ४. महाकायः ।

बृंहणम्–सू. १–१०७. देहस्थूलताकरम् । (व. द.)

बृंहणः–सू. २७–१०. तर्पणः ।

बृंहणी सू. २–२५. बृंहणजननी ।

बृंहणीयः सू. ४–८, शा. ८–२७. द्वितीयो महाकषायः ।

ब्रध्नः–सू.१४-१७ गुदः ।

ब्रह्म–चि. १–१ | ८० मोक्षम् ।

ब्रह्मचर्यम्–सू. ११–३५ ब्रह्मचर्यशब्देन इन्द्रियसंयमसौमनस्यप्रभृतयो ब्रह्मज्ञानानुगुणा गृह्यन्ते ।

ब्राह्मम्–शा.४–३. ब्रह्मसत्त्वयुक्तम् ।

भक्तपाचनः–सू. २७–१८१. अन्नपाचनः ।

भक्तिः–इ. १–३. इच्छा ।

भक्तोपरोधः–चि. २२–५२. भक्तच्छेदः ।

भक्ष्यः–सू. २५–२६. भक्षणीयः ।

भगन्दरः–चि. ४–२७. गुदस्य श्वयथुले क्षेत्रे पार्श्वतः पिडकार्तिकृत् । भिन्नो भगन्दरो ज्ञेयः स च पञ्चविधो मतः ॥ (मा. नि.) वातपित्तश्लेष्मसन्निपातागन्तुनिमित्ताः शतपोनकोष्ट्रग्रीवपरिस्राविशम्बूकावर्तोन्मार्गिणो यथासंख्यं पञ्च भगन्दरा भवन्ति । ते तु भगगुदबस्तिप्रदेशदारणाच्च 'भगन्दरा' इत्युच्यन्ते । अभिन्नाः पिडकाः भिन्नास्तु भगन्दराः ॥ (सु. नि. ४–३).

भग्नः–सि. ९–३९ प्रतिहतः ।

भङ्गः–सि. ९–४० भङ्गाकारवेदना ।

भञ्जनम्–सू. १८–४ जर्जरीकरणम् ।

भस्म–चि. २३–४७ दग्धकाष्ठादिविकारः, भूतिः ।

भस्मप्रहरणः–वि. ३–२३ भस्मायुधः ।

भाः–इ. ७–१६ दीप्तिः, भास्तु वर्णप्रकाशिनी, भाः प्रकृष्टा प्रकाशते ।

भावः–सू. ११–४२ सम्यगवस्थानम् ।

भावना–वि. १–२२–२ द्रवपदार्थेन पुनः पुनः औषधमारणं शोषणं च । (वै. श.)

भाष्यम्–वि. ८–३. भाष्यते विस्तततया वर्ण्यते इति । (श. क.)

भिषक्– सू. १०–४ वैद्यः, भिषङ्नाम यो भिषज्यति यः सूत्रार्थप्रयोगकुशलः यस्य चायुः सर्वथा विदितं स्यात् ।

भिषक्छद्मचराः–सू.११–५०. भिषग्वेशचराः ।

भिषग्जितम्–वि. ३–४१. औषधम् ।

भिषग्विद्या–सू. १२–९. आयुर्वेदः ।

भिषङ्मानी-सू. ९-१७. आत्मानमभिषजं भिषक्त्वेन मन्यते इति।

भूगृहम्-सू. १४-२८. भूस्वेदार्थं गृहम्।

भूतगुणाः-सू. १-५६. शब्दादयः।

भूतधात्री-सू. २१-५९. भूतानि प्राणिनः दधाति पुष्णातीति भूतधात्री, धात्रीव धात्री। रात्रिस्वभावप्रभवाया निद्राया नामान्तरम्।

भूतविद्या-सू. ३०-२८. भूतानां राक्षसादीनां ज्ञानार्था प्रशमार्था च विद्या। भूतविद्या नाम देवासुरगन्धर्व-यक्षरक्षःपितृपिशाचनागग्रहमुपसृष्टचेतसां शान्तिकर्म बलि-हरणादि ग्रहोपशमनार्थम् (सु. सू. १.)

भूताधिकारः-चि. ३-११६. देवादयोऽपुन्मादे भूता उक्ताः तेऽधिक्रियन्ते अस्मिन्निति भूताधिकारः।

भूतानि-सू. २५-१३. प्राणिनः।

भूमिः-सू. २५-३२. पृथ्वी।

भृतम्-सू. ६-१२. भृतं भर्तृिर्मिति प्रसदम्। (चक्रः)

भृष्टः-चि २२-३१. भर्जितः।

भेदः-सू. १७-४६. भेदनवद्वेदनाविशेषः।

भेदनम्-सू. ११-५५. आशयविदारणम्

भेदनीयः-सू. ४-८. चतुर्थो महाकषायः।

भेदप्रकृतिः-वि. ६-४. भेदकारणम्।

भेदाग्रम्-वि. ६-४. भेदसंख्यारूपं परिमाणम्।

भेदि-सू. २६-१९१ भेदनशीलम्, मल बद्धस्यधतुदित्यर्थः।

भेद्यम्-वि. ८-१३९. अणुशः भेदनार्हम्।

भेषजम्-चि. १-१४. "स्वस्थस्योर्जस्करं किंचित् किंचिदार्तस्य रोगनुत्" इति द्विरूपमौषधशब्दवाच्यम्।

भेषजम्-सू. १०-३ औषधम्, चिकित्सितम्, व्याधि-हरम्, पथ्यम्, साधनम्, प्रायश्चित्तम्, प्रशमनम्, प्रकृतिस्था-पनम्, हितम्।

भेषजसमुदायः-सू. १०-५. औषधसमूहः।

भेषजसंग्रहः-चि. २६-१३३. भेषजाभिधायको ग्रन्थः।

भेषजसंयोगः-चि. ३-१५१. औषधेन मिश्रत्वं संस्कृतत्वं सिद्धत्वं वा।

भैषज्यम्-सू. १-१३४. भेषजम्।

भोजनम्-सू. २५-४०. भक्षणम्, अभ्यवहारः।

भोज्यम्-सू. २७-२०४. अकठिन आहारविशेष ओदनादिः।

भौमः-चि. १५-१३. पार्थिवः।

भ्रूः-इ. ३-५. नयनोर्ध्वभागरोमराजिः।

भ्रष्टम्-सू. २७-१९८. पतितम्।

भ्रंशः-इ. ३-४. दूराधोगमनम्।

मङ्गलम्-सू. ३०-२१. शुभम्, शस्तम्।

मज्जा-सू. १-६८. अस्थिसारः (श. क.)

मज्जसारः-वि. ८-१०८. मज्जा षष्ठो धातुः सारः बलवान् उत्कृष्टो विशुद्धतरो वा यस्मिन्नितरेभ्यो धातुभ्यः स मज्जसारः।

मज्जवाहीनि स्रोतांसि-वि. ५-८. मज्जधातुवाहकाः मार्गाः।

मणिकः-इ. ३-५. करबाहुसन्धिः।

मणिसन्धिः-चि. ९-३३. शिश्नस्य तन्मणेश्च यत्र सन्धानं भवति तत्स्थानम्

मण्डः-सू. १३-२२. यवादिसाधितः सिक्थ-रहितः द्रवद्रव्यविशेषः (वै. श.)

मण्डलानि-चि. २८-६४ वर्तुलानि।

मतिः–सू. २९–७. बुद्धिः, धीः, प्रज्ञा ।

मदः–चि. २४–३४. हृदि मद्यगुणाविष्टे हर्षस्तर्षो रतिः सुखम् । विकाराश्च यथासत्त्वं चित्रा राजसतामसाः॥ जायन्ते मोहनिद्रान्ता मद्यस्यातिनिषेवणात् । स मद्यविभ्रमो नाम्ना 'मद इत्यभिधीयते॥ (च. चि. २४–४०.) मदमूर्च्छायसंन्यासास्तेषां विशाद्विचक्षणः । यथोत्तरं बलाधिक्यं हेतुलिङ्गोपशान्तिषु ॥ दुर्बलं चेतसः स्थानं यदा वायुः प्रपद्यते । मनो विक्षोभयन् जन्तोः संज्ञां संमोहयेत्तदा ॥ पित्तमेवं कफश्चैवं मनो विक्षोभयन्नृणाम् । संज्ञां नयत्याकुलतां.... ॥ (च. सू. २४—२७-२९.)

मदात्ययः–चि. ३–१५४. अतिमद्यपानादिजन्यरोगविशेषः ।

मदिरा–सू. २७–१८०. सुरामण्डः ।

मद्यम्–चि. २६–६३. सुरा ।

मधु–सू. २७–२४५. क्षौद्रम् ।

मधुजातयः–सू. २७–२४३. क्षौद्रजातयः ।

मधुद्रवम्–चि. ५–१३०. मधुना कृतं द्रवम्, मधु निश्रयित्वा द्रवीकृतमित्यर्थः ।

मधुमाणिका–चि ९–५०. द्रवत्वाद् द्वैगुण्येन माणिकाया द्विकुडवरूपायाः षोडशपलं भवति ।

मधुरः–सू. १–६१, २६–७४. रसविशेषः, भूम्यम्बुगुणबाहुल्यात् मधुरः ।

मधुरविपाकः–वि. १–०६. जाठराग्निसंयोगकृतः रसविशेषः ।

मधुरस्कन्धः–वि. ८–१३८. मधुरगणः मधुरवर्गो वा षड्विधास्थापनमध्ये मधुरवर्गीयद्रव्यकृतास्थापनविशेषः (वै.श)

मधुशुक्तम्–चि. २६–२०७. मधुप्रधानं शुक्तम् । मधु च शुक्तं च इति वा ।

मधूदकम्–सू. २७-३२३. मधुमिश्रमुदकम् ।

मधूलिका–सू. २७–१९०. मधूलकः गोधूमभेदः तेन निर्वृत्ता सुरा मधूलिका ।

मध्यम् औषधम्–क. १२–५५. नातिहीनयोगेन कर्मकारि भेषजम् ।

मध्यमो रोगमार्गः–सू. ११–४८. मर्मास्थि—सन्धिरूप औषधमार्गभेदः ।

मध्यः स्नेहपाकः–क. १२–१०२, १०३. संयाव इव निर्यासे मध्यो दर्वीं विमुञ्चति ।

मनः–सू. ३०–२५. अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्वसंज्ञकं 'चेतः' इत्याहुरेके, तदर्थात्मसंपदायत्तचेष्टं चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम् ।

मनः–सि. ९–४. अन्तःकरणम् ।

मनः–शा. १–१८. युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिङ्गम् । (योगदर्शनम्)

मनः–शा. ३–१३. अस्ति खलु सत्त्वमौपपादुकं; यज्जीवं स्पृक्शरीरेणाभिसंबध्नाति, यस्मिन्नपगमनपुरस्कृते शीलमस्य व्यावर्तते, भक्तिर्विपर्यस्यते, सर्वेन्द्रियाण्युपतप्यन्ते, बलं हीयते, व्याधय आप्याय्यन्ते, यस्माद्धीनः प्राणाञ्जहाति, यदिन्द्रियाणामभिग्राहकं च 'मन' इत्यभिधीयते ।

मनोवहस्रोतः–इ. ५–४१. वातपित्तश्लेष्मणां पुनः, सर्वशरीरचराणां सर्वाणि स्रोतांस्ययनभूतानि । तद्वदतीन्द्रियाणां पुनः सत्त्वादीनां केवलं चेतनावच्छरीरमयनभूतमधिष्ठानभूतं च तदेतत् स्रोतसां प्रकृतिभूतत्वान्न विकारैरुपसृज्यते शरीरम् । (च. अ. ५–६.); मनवहानि स्रोतांसि यद्यपि पृथङ्नोक्तानि, तथापि मनसः 'केवलं चेतनावच्छरीरमयनभूतम्' इत्यभिधानात् सर्वशरीरस्रोतांस गृह्यन्ते ।

मनोविघातकरा भावाः–वि. १–२५ | ६. चित्तोपतापकराश्चित्तविकाराः कामक्रोधलोभमोहेर्ष्याह्रीशोकमानोद्वेगभयोपतापः ।

मन्त्र.–सू. ३०–२१. वेदभेदः । स च मन्त्रस्वरूपभागः । मननात् त्रायते यस्मात्तस्मान्मन्त्रः प्रकीर्तितः । (श. क.)

मन्थः–सू. २३–३५. सक्तवः सर्पिषाऽभ्यक्ताः शीतोदकपरिप्लुताः। नातिद्रवा नातिसान्द्रा मन्थ इत्यभिधीयते॥ (रा. नि.)

मन्दः–चि. २३–८. मन्दः गुणविशेषः तीक्ष्णविरुद्धः।

मन्दकम्–सू. २५–४० मन्दजातं दधि।

मन्दाग्निः–चि. ६–१२ स्वल्पापचारमपि यो न सहते, स मन्दः अग्निः।

मन्दाग्निः–सू. १३–३८ मन्दः पाचनासमर्थः अग्निः यस्य सः।

मन्दः अनलः–चि. ९–३८. अग्निमान्द्यम्।

मन्या–सि, ९–८४ ग्रीवापार्श्वशिराद्वयम्।

मरणम्–सू. ३०–२५. मृत्युः। स्वभावः प्रवृत्तेरुपरमो मरणमनित्यता निरोध इत्येकोऽर्थः।

मर्दनम्–सू. १८–१० अङ्गमर्दनम्।

मर्म–चि. १७–९१ हृदयादीनि।

मर्म–चि. २१–२६. हृदयम्।

मर्माणि–सू. ११–४८ मारयन्ति इति मर्माणि। मर्माणि पुनर्बस्तिहृदयमूर्धादीनि। तानि मर्माणि पञ्चात्मकानि भवन्ति; तद्यथा–मांसमर्माणि, सिरामर्माणि, स्नायुमर्माणि सन्धिमर्माणि चेति। न खलु मांससिरास्नाय्वस्थिसन्धिव्यतिरेकेणान्यानि मर्माणि भवन्ति, यस्मान्नोपलभ्यन्ते। (सु. शा. ६–३.)

मर्मसंज्ञकानि स्रोतांसि–सि. ९–४ नहि स्रोतसां मर्मत्वमस्ति; किंवा स्रोतोमर्मशब्देन सिरामर्मग्रहणं किंवा मर्मसंबद्धानि मर्मपोषकाणि वा स्रोतांसि मर्मसंज्ञकानि स्रोतांसि।

मलः–सू. २२–१९ विट्।

मलवृद्धिः–सू. ७–४३ पुरीषस्य स्वमानादधिकता।

मलशोधनम्–चि. ६–१६. विट्शोधनम्

मलाः–सू. २४–२५. दुष्टदोषाः।

मलायनानि–सू. ७–४२. द्वे गुदलिङ्गे, छिद्राणि, द्वे श्रोत्रे, द्वौ नासापुटौ, द्वे अक्षिणी, मुखं, लोमकूपानि एतानि सर्वाणि मलस्यायनानि निर्गमद्वाराणि।

मस्तिष्कम्–सि. ९–७९. शिरःस्थो मज्जा।

मस्तु–सू. २४–७. दधिमण्डः।

मस्तुलुङ्गः–चि. ९–१०१. मस्तिष्कम्, अविलीनघृताकारा मस्तकमज्जा। (सु. शा. १०–४२ डल्हणः)

महत्–सू. ३०–३ हृदयम्।

महागदः–चि. ८–२७. राजयक्ष्मा।

महात्ययत्वम्–चि. ६–७. मज्जादिगम्भीरधात्वपकर्षकत्वेन महाव्यापत्तिकर्तृकत्वादाशुकारित्वाच्च।

महानिम्नम्–सू. ११–४८. कोष्ठः।

महाफलाः–सू. ३०–१२ येनौजसा वर्तयन्ति प्रीणिताः सर्वदेहिनः। यदृते सर्वभूतानां जीवितं नावतिष्ठते॥ यत् सारमादौ गर्भस्य यत्तद्गर्भरसाद्रसः। संवर्तमानं हृदयं समाविशति यत्पुरा॥ यस्य नाशात्तु नाशोऽस्ति धारि यद् हृदयाश्रितम्। यच्छरीररसस्नेहः प्राणा यत्र प्रतिष्ठिताः॥ तत्फला बहुधा वा ताः फलन्तीव (वि) महाफलाः। (च. सू. ३०–८–११½); तत्फला ओजःफला ओजोवहा इति यावत्। एतेन, यथोक्तगुणशालित्वेनौजो महत्; एतद्वहनेन फलन्तीवेति, महाफला धमन्य उक्ताः। द्वितीयां निरुक्तिमाह—बहुधा वा ताः फलन्तीति, 'ता हृदयाश्रिता दश धमन्यो बहुधा अनेकप्रकारं फलन्तीति निष्पद्यन्ते; एतेन, मूले हृदये दशरूपाः सत्यो महासंख्याः शरीरे प्रतानभेदाद्भवन्तीत्युक्तम्।

महाभूतानि–शि. ९–८. आत्मसंबद्धानि सूक्ष्ममहाभूतानि। (चक्रः)

महामूलाः–सू. ३०–८. महत् हृदयं मूलं यासां ताः। तेन मूलेन महता महामूला मता दश (च. सू. ३०–८.)

महास्नेहः–सू. १–७५. क्षीरमांसादीनामपि स्नेहतया स्नेहाध्याये वक्ष्यमाणत्वेन, तेषु सर्पिरादीनां भूरिस्नेहवत्त्वेन 'महत्त्वम्' (चक्र:) सर्पिस्तैलं वसा मज्जा सर्वस्नेहोत्तमा मताः (च. सू. १३.)

महास्रोतः–सू. ११–४८. कोष्ठः, महानिम्नम्, आमपक्वाशयः, शरीरमध्यम् ।

महेन्द्रसलिलम्–चि. १४–१८८. आन्तरिक्षं जलम्

माक्षिकम्–सू. २७–२४३. मक्षिकाः पिङ्गलाः तद्भवं माक्षिकम्. मधुभेदः ।

माञ्जिष्ठमेहः–चि. ६–१०. मञ्जिष्ठोदकसंकाशं भृशं विस्रं प्रमेहति । पित्तस्य परिकोपात्तं विद्यान्माञ्जिष्ठमेहिनम् ॥ (च. नि. ४–३३.)

मात्रा–सू. २–१५. अनपायि परिमाणम् ।

मात्राप्रमाणम्–सू. ५–४. आहारमात्राप्रमाणम् (श. क.)

मात्रावस्तिः–सि. ४–५२. ह्रस्वायाः स्नेहमात्राया मात्रावस्ति समो भवेत् (च. सि. ५–५३) ह्रस्वाया इति अर्धाहःपरिणमनीयायाः । उक्तं हि–"अहोरात्रमहः कृत्स्नं दिनार्धं च प्रतीक्षते उत्तमा मध्यमा ह्रस्वा स्नेहमात्रा जरां प्रति" (सू. अ. १३.) इति । सुश्रुतेनापि वस्तिप्रमाणमुक्तः यथा–अनुवासने "तस्यापि विकल्पोऽर्धार्धमात्रावकृष्टोऽपरिहार्यो मात्रावस्तिः (सु. चि. ३५) इति, अनेन च सार्धपलमानो मात्रावस्तिरुक्तो भवति; तत्र हि षट्पलः स्नेहवस्तिरुक्तः, अनुवासनं तु त्रिपलम् ।

मात्राशी–सू. ५–३. मात्रां मात्रावदन्नमशितुं भोक्तुम् शीलं यस्यासौ मात्राशी, यदि वा मात्रया अशितुं भोक्तुम् शीलं यस्य स तथा ।

माधुतैलिकवस्तिः–सि. ७–२०. मधुतैलाभ्यां कृतो वस्तिः ।

माधुर्यम्–वि. १–१४. मधुरत्वम् ।

[माध्]वीकम्–सू. २७–१८८. मधुप्रधानम् ।

मानसः–सू. ११–४५. मनसि भवः ।

मारुतः–सू. १–५९. वायुः ।

मारुतनिग्रहः–सि. ३–४१ वातविबन्धः ।

मारुताशयः–चि. २१–४६. पक्वाशयाधःशरीरम् ।

मार्गशुद्धिः–चि. ५–६०. स्रोतःशोधनम् ।

मार्गसंरोधः–चि. २९–१५५ स्रोतोऽवरोधः ।

मार्दवम्–सू. १८–५०. मृदुता ।

मार्द्वीकम्–चि. १२–३४. मृद्वीकारसकृतं मद्यम् ।

मांसम्–सू. २८–४. रक्तजधातुविशेषः ।

मांसलः–सि. ५–६. अतिपुष्टमांसधातुः ।

मांसवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. मांसवहानि स्रोतांसि ।

मांससारः–वि. ८–१०५. मांसमेव सारः उत्कृष्टः विशुद्धतरो धातुः यस्मिन्सः ।

मिथ्याचारः–चि. ३०–८. असम्यगाहाराचारः ।

मिथ्यायोगः–सू. १–५४. रूपादीनां विरुद्धयोगः । (वै. श.)

मिन्मिनः–शा. ३–१५. सानुनासिकाव्यक्तस्वरः ।

मुक्तः–शा. ५–२२. प्राप्तमोक्षः । नात्मनः करणाभावाल्लिङ्गमप्युपलभ्यते । स सर्वकरणायोगान्मुक्त इत्यभिधीयते ॥

मुष्कः–सि. ९–४. अण्डकोषः ।

मुष्टिः–चि. १३–१२१. पलम् ।

मूकः–चि. २४–६३. अवाक् ।

मूकत्वम्–चि. ३–१०८. मन्दवचनत्वम्, अवचनता वा ।

मूढगर्भः–चि. २३–८६. जडगर्भः (श. क.) । मूढो निरुद्धगतिः । तदुक्तं सर्वावयवसंपूर्णो मनोबुद्ध्यादिसंयुतः । विगुणापानसंमूढो मूढगर्भोऽभिधीयते" इति । (सु. नि. ८–१. डल्हणः)

तमेव कदाचिद्विगुणमसम्यगागतमपत्यपथमनुप्राप्तमनिरस्यमानं-विगुणापानसंमोहितं गर्भं मूढगर्भमित्याचक्षते (सु नि. ८-३.)

मूढचेताः-चि. ९-७. उन्मत्तः।

मूत्रग्रहः-चि. ६-१७. स्तोकं स्तोकं सफेनञ्च कृच्छ्रान्मूत्रं करोति यः। तस्य वातसमुत्थन्तु विद्यान्मूत्रग्रहं बुधः॥ (वै. श.)

मूत्रम्-इ. १-१३. आहारस्य सारहीनमलद्रवः, वस्ति-पूरणविक्लेदकृन्मूत्रम्।

मूत्रवाहिन्यः नाड्यः-सि. ९-४. पक्वाशयगतास्तत्र नाड्यो मूत्रवहास्तु याः। तर्पयन्ति सदा मूत्रं सरितः सागरं यथा। सूक्ष्मत्वान्नोपलभ्यन्ते मुखान्यासां सहस्रशः (सु.नि.३-२९३).

मूत्रवाहीनि स्रोतांसि- वि. ५-८. मूत्रवहा नाड्यः

मूत्रविरजनीयः-सू. ४-१५/३४. मूत्रस्य विरजनं करोति इति। चतुस्त्रिंशो महाकषायः।

मूत्रविरेचनीयः-सू. ४-१५ | ३५. मूत्रस्य विरेचनं करोति इति पञ्चत्रिंशो महाकषायः।

मूत्रसंग्रहणीयः-सू. ४-१५ | ३३. मूत्रस्य संग्रहणं करोति इति। त्रयस्त्रिंशो महाकषायः।

मूत्रस्रोतः-सि. ९-४३. शेफसि स्थितो मूत्रमार्गः।

मूत्राधारः-सि. ९-४. मूत्रं धारयतीति, मूत्राशय इत्यर्थः; बस्तिः।

मूत्राशयः-चि. २६-४२ मूत्राधारः, बस्तिः।

मूर्च्छा-सि. ३-२१. संमोहः।

मूर्च्छायः-चि. ४-२६. मूर्च्छा।

मूर्तिः-शा. ४-१२. काठिन्यम्।

मूर्धविरेचनम्-सू. ५-२७. चि. ३-१७४. शिरोविरेचनम्।

मृत्युः-चि. ३-१३. मृत्युकारणत्वान्मृत्युर्ज्वर एवोच्यते।

मृत्स्नम्-चि-१-३ | ५६. मसृणम्।

मृदितः-चि. ४-७७. फाण्टीकृतः।

मृदुः-सू. १२-७, सू. २७-२१७. कठिनविपरीतः, दारुणविपरीतः।

मृदु औषधम्-क. १२-५६. अतीक्ष्णम् औषधम्।

मृदुकोष्ठः-सू. १३-७, क. ७-८. कोमलकोष्ठः।

मृदुविरेचनम्-सू. २५-४० अतीक्ष्णविरेचनम्।

मृदुवीर्यम्-सि. ११-५. अतीक्ष्णवीर्यम्।

मृदुस्नेहपाकः-क. १२-१०२,१०३. अतीक्ष्णस्नेह-पाकः; तुल्ये कल्केन निर्यासे भेषजानां मृदुः स्मृतः।

मृद्वीकासवः-सू. २७-१८८. द्राक्षासवः।

मेढ्रम्-इ. ३-५. शिश्नः, लिङ्गम्।

मेदः-सू. २१-९, चि. १५-१६ शरीरस्थचतुर्थधातुः (वै. श.) सर्वभूतानामुदरेऽस्थिषु च स्थितः शरीरगतः स्नेह-विशेषः।

मेदकः-चि. १-२६७. जगलः।

मेदःसारः-वि. ८-१०६. मेदः एव सारः उत्कृष्टः विशिष्टतरो धातुः यस्मिन् सः; मेदस्वी।

मेदुरः-सि. १-३६. मेदस्वी।

मेदोवाहीनि स्रोतांसि:-वि. ५-८. मेदोवहा नाड्यः।

मेद्यम्-चि. ३-३०५,-१५-२३३. मेदुरम्, मेदो-जनकं वा।

मेधा-सू. २७-३५०, धारणावती धीः।

मेध्यम्-सू. १-१०७. पवित्रम्।

मेहः-चि. ६-३. मेहति क्षरति शुक्रादि अनेनेति। (श. क.)

मेहनम्-सू. ७-६. शिश्नः,लिङ्गम्।

मैथुनधर्मः-शा.३-४/२. व्यवायः।

मैरेयम्–सू. २७–१८७. आसवस्य सुरायाश्च द्वयोरेकत्र भाजने। सन्धानं तद्विजानीयात् मैरेयमुभयाश्रयम्॥

मोक्षः–सू. १–१५. संसारविमोक्षः। मोक्षो रजस्तमोऽभावात् बलवत्कर्मसंक्षयात्। वियोगः सर्वसंयोगैरपुनर्भव उच्यते। (च. शा. १–१४२.)

मोदकः–क. १–२३. वटकः।

मोरटम्–सू. २७–२३४. पीयूषः सद्यःप्रसूतायाः गोः क्षीरं सप्ताहं यावत्। तदेव सप्ताहात् परतः यावत् प्रसन्नतां न गच्छति तावत् मोरटम् इत्युच्यते। वचनं च-क्षीरं सद्यः प्रसूतायाः पीयूषमिति संज्ञितम्। सप्तरात्रात् परं क्षीरं प्रसन्नं न च मोरटम्। इति। विनष्टक्षीरभवं मस्तु मोरटमिति जेज्जटः।

मोहः–शा. ७–१९. अहं स्थिरशरीरी एको, ममेदमुपकारकं ममेदमपकारकं इत्यादिरूपः मोहः।

मोहः–चि. २३–७४. संज्ञाव्याकुलता संज्ञानाशो वा।

मौलम्–चि. २३–१७. मूले भवम्, तत्र जातम् वा; मूलजम्।

म्लाना–सू. १७–६५. गतविभवा, नष्टकान्तिः, शिथिलीभूता।

यकृत्–चि. ५–८. दक्षिणकुक्षेरधःस्थशरीरावयवविशेषः (वै. शः) कालखण्डः।

यक्ष्मा–नि. १–५. ज्वरः यक्ष्मशब्देन च राजयक्ष्मवदनेकरोगयुक्तत्वं विकाराणां दर्शयति।

यक्ष्मा–चि. ८–७. राजयक्ष्मा।

यज्ञोपवीतप्रतिमाः–चि. १२–९१. यज्ञोपवीतव्याप्यस्थानमात्रव्यापकाः।

यन्त्रम्–सू. १२–८. सन्धयः।

यन्त्रम्–इ. १२–४५. सिरास्नाय्वादिरूपम्।

यमकम्–चि. १९–३६. घृततैले।

यवागूः–चि. २६–१५५. उचितात्मचतुर्गुणतण्डुलचूर्णकृतषड्गुणवारिपक्वा बहुसिक्था उष्णिका (वै. श.)

यवाग्रजम्–चि. ५–९६. यवक्षारः।

यवाग्वादिक्रमः–वि. ७–१९. संसर्जनक्रमः। अथ द्वितीये तृतीये चान्नकाले पुराणानां लोहितशालितण्डुला स्ववक्लिन्ना मण्डपूर्वा सुखोष्णा यवागूः यथाग्निबलं, चतुर्थे पञ्चमे षष्ठे चान्नकाले तथाविधानामेव शालितण्डुलानामुत्स्विन्ना विलेपी उष्णोदकद्वितीया अस्नेहलवणा अल्पस्नेहलवणा वा, सप्तमे अष्टमे नवमे चान्नकाले तथाविधानामेव शालीनां द्विप्रसृतं सुस्विन्नमुष्णोदकानुपानं तनुना तनुस्नेहलवणोपपन्नेन मुद्गयूषेण, दशमे एकादशे द्वादशे चान्नकाले लावकपिञ्जलादीनामन्यतमस्य मांसरसेनोदकलवणिकेन नातिसारवता भोज्यम्।

यापनम्-चि. ३–३०२. यापनाबस्तिः।

यापनाबस्तयः–सि. १२–१६ | १. आयुषः यापनं दीर्घकालानुवर्तनं कुर्वन्ति इति यापनाबस्तयः।

याप्यम्–सू. १०–९, १०–२७. असाध्यभेदः। याप्यं त्वनुपक्रमं न भवति, यापनाकर्तृत्वेन किञ्चित्करत्वात्। शेषत्वादायुषो याप्यमसाध्यं पथ्यसेवया। लब्धाल्पसुखमल्पेन हेतुनाऽऽशु प्रवर्तकम्॥

यायावराः–चि. १/४–३. सर्वदा गमनशीलाः नैकत्रस्थायिनः।

यावकः–चि. १–३ | २७. यवान्नम्।

युक्तिः–सू. ११–७. बुद्धिः पश्यति या भावान् बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेया त्रिवर्गः साध्यते यया॥ (च. सू. ११–२५) बहुकारणयोगो बहूपपत्तियोगः जनिश्चार्थं ज्ञानार्थे, तेन बहूपपत्तियोगज्ञायमानानर्थान् या बुद्धिः पश्यति ऊहलक्षणा सा युक्तिरिति प्रमाणसहायीभूता। एवमनेन भवितव्यमित्येवंरूप ऊहोऽत्र युक्तिशब्देनाभिधीयते; सा च परमार्थतोऽप्रमाणभूतापि वस्तुपरिच्छेदे प्रमाणसहायत्वेन व्याप्रियमाणत्वात्, तथा तथैव ऊहरूपया प्रायो लोकानां व्यवहारादिह प्रमाणत्वेनोक्ता। (चक्रः)

युक्तिः–सू. २६–२९,३१. युक्तिश्चयोजना या तु युज्यते(३१)। युक्तिश्चेत्यादौ योजना दोषाद्यपेक्षया भेषजस्य

समीचीनकल्पना। अत एवोक्तं या तु युज्यते; या कल्पना यौगिकी भवति सा तु युक्तिरुच्यते अयौगिकी तु कल्पनापि सती युक्तिर्नोच्यते पुत्रोऽप्यपुत्रवत्। (चक्र.)

युक्तिः–वि. ४–४. सम्बन्धः अविनाभाव इत्यर्थः। तेनाविनाभावजं परोक्षज्ञानमनुमानमित्यर्थः (चक्रः)

युक्तिव्यपाश्रयम्–सू. १–५८,११–५४. युक्तिः योजना; शरीरभेषजयोः हितो यो योगः तदपेक्षं संशोधन–संशमनादि युक्तिव्यपाश्रयमुच्यते (चक्रः)। युक्तिव्यपाश्रयं–पुनराहारौषधद्रव्याणां योजना।

युगपत्–शा. ६–६. एककालम्

यूकाः–वि७–१०. बालकृमयः (श. क.) केशश्मश्रु-लोमपक्ष्मवासःसु जाता अणवः बहुपादाः कृष्णाः शुक्ला वा कृमयः।

यूषः–चि. २६–२९. मुष्टमुद्गदलानान्तु पलैकेन विपाचितः। पूतापनीतविरलः तद्यूषः कृताकृतः॥ (वै. श.)

योगः–शा. १–१३७–१३९. योगे मोक्षे च सर्वासां वेदनानामवर्तनम्। मोक्षे निवृत्तिर्निःशेषा योगो मोक्षप्रवर्तकः॥ आत्मेन्द्रियमनोऽर्थानां सन्निकर्षात् प्रवर्तते। सुख-दुःखमनारम्भादात्मस्थे मनसि स्थिरे॥ निवर्तते तदुभयं वशित्वं चोपजायते। सशरीरस्य योगज्ञास्तं योगमृषयो विदुः॥

मोक्ष आत्यन्तिक शरीरव्युच्छेद। निःशेषेति न पुनर्भवति। एतेन, योगे निवृत्ता वेदना पुनर्भवतीति सूचयति। मोक्षप्रवर्तक इति मोक्षकारणम्। (चक्रः)

योगः– सि. ६–३१. योगः सम्यक् प्रवृत्तिः स्यात्।

योगः– सि. ६–४१. योगो नाम योजना, व्यस्तानां पदानामेकीकरणम् (चक्र)

योगवाहि–सू. २७–२४९. यस्मान्नानारसवीर्यादिभ्यः पुष्पेभ्य उत्पन्नं तन्मधु तेनानभिव्यक्तनानाशक्तिकमेव। ततश्च येन द्रव्येण वामनीयेन वाऽऽस्थापनीयेन वा द्रव्येण कार्यान्तरकारकेण वा युज्यते तस्यैव कर्म करोति, समानानुकारिद्रव्यप्रबोधितशक्तित्वादिति भावः। चकारोऽत्र हेत्वन्तरसमुच्चये, तेन प्रभावाच्चेति बोद्धव्यम्। तेन यद्यपि नानौषधिसंभवत्वे प्रभावान्न क्षीरमद्यादयो योगवाहिनः; तथा, अनानात्मका अपि शिलाजतुतैलादयो योगवाहिनो भवन्ति। (चक्रः) गृह्णाति योगवाहि द्रव्यं संसर्गिवस्तुगुणान्। पच्यमानं यथैतन्मधुजलतैलाज्यसूतलौहादि॥ (व. द.)

योनिः–शा. १–६. जातिः।

योनिः–चि. ३०–१३३. कारणम्।

योनिः–वि. ४–६. वातादयः।

योनिः–चि. २३–३. अधिष्ठानम्।

योनिदोषः–चि. ३०–१५. अपत्यपथरोगः।

योनिशूलम्–जि. ५–७५. योनिरोगविशेषः।

रक्तपित्तम्–वि. ४–४. रोगभेदः।

रक्तवस्तिः–सि. ६–८३. रक्तेन वस्तिः।

रक्तम्–चि. १५–१६. रुधिरम्।

रक्तमोक्षः–सि. ९–२४. शृङ्गालाबूजलौकोभिः सिराव्यधेन वा रक्तावसेचनम्।

रक्तवाहि अर्शः–चि. ७–१४८. रुधिरस्रावियुदकीलः।

रक्तवाहिन्यः धमन्यः–वि. ७–११. रुधिरवाहिन्यः नाड्यः।

रक्तवाहिस्रोतांसि–वि. ५–२४. रुधिरवाहिन्यः नाड्यः।

रक्तविमोक्षणम्–चि. १२–१००. शृङ्गालाबूजलौकोभिः सिराव्यधेन वा रक्तावसेचनम्।

रक्तसारः–वि. ८–१०४. रक्तमेव सारः उत्कृष्टः विशुद्धतरो धातुः यस्मिन्सः।

रक्तावसेकः–चि. ३–२९० रक्तमोक्षः।

रक्तावसेचनम्–चि. ३–२८८. रक्तमोक्षणम्।

रजः–शा. २–३४; चि. ३०–२५. आर्तवम्।

रजः–सू. १–५७. रजोगुणः।

रजः–सू. २१–२३. चूर्णम्।

रजस्वला-चि. ३०-१६५. आर्तवयुक्ता, पुष्पवती।

रजोदोषः-चि. ३०-९५. आर्तवविकारः।

रसः-सू. १-६४, २६-२८, २७-७०. रसनेन्द्रियग्राह्यो गुणो रसः। यं पञ्चानामिन्द्रियार्थानामन्यतमं जिह्वाविषयं भावमाचक्षते कुशलाः स पुनरुदकादनन्यः।

रसः-सि. ३-३५. क्वाथः।

रसः-चि. १५-१६. रसधातुः, आद्यो धातुः।

रसः-चि. ८-१३३. सि. १२-१९ स्वरसः।

रसः-सू. २६-६६. रसो निपाते द्रव्याणाम्। निपाते इति रसनायोगे; रसनेन्द्रियग्राह्यजातिमत्वं रसत्वम् (द. स.)

रसः-सू. २८-४. आहारप्रसादाख्यः।

रसः-चि. ८-१३२. मांसरसः।

रसक्रिया-चि. २६-२०२. घनीभूतरसस्य संज्ञा, क्वाथादेर्यद् पुनः पाकाद् घनत्वं सा रसक्रिया (व. द.)

रसनम्-इ. १-३. जिह्वेन्द्रियम्।

रसना-सू. १-६४. जिह्वा।

रसवाहीनि स्रोतांसि-वि. ५-८. हृदयस्थदशधमनीनां शाखाप्रशाखाः।

रसाञ्जनम्-सू. ५-१५. दार्वीक्वाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यदा घनम्। तदा रसाञ्जनाख्यं तत् नेत्रयोः परमं हितम्॥ (वै. श.)

रसायनविधिः-चि. १-१/१४. जराव्याधिनाशनविधिः।

रसायनम्-सू. ७-४८. रसायनन्तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम्। यथामृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी (व. द.) दीर्घमायुः स्मृतिं मेधामारोग्यं तरुणं वयः। प्रभावर्णस्वरौदार्यं देहेन्द्रियबलं परम्॥ वाक्सिद्धिं प्रणतिं कान्तिं लभते ना रसायनात्। लाभोपायो हि शस्तानां रसादीनां रसायनम्॥

रसायनी-वि. ५-९ रसः अयते गच्छति यया सा रसायनी, धमनी, नाडी, सिरा, स्रोतः।

रसाला-चि, २-२/२६. सचातुर्जातकाजाजि सगुडार्द्रकनागरम्। रसाला स्याच्छिखरिणी सुघृष्टं ससरं दधि॥

राजयक्ष्मा-नि. ६-१२; चि. ८-९. तं सर्वरोगाणां कष्टतमत्वाद्राजयक्ष्माणमाचक्षते भिषजः। यस्माद्वा पूर्वं मासीद्भगवतः सोमस्योडुराजस्य तस्माद्राजयक्ष्मेति। यद्वा कष्टतमत्वात्तदा 'राजेव यक्ष्मा राजयक्ष्मेति'. निरुक्तिर्बोद्धव्या। उडुराजस्येति वचनाद् राजसंज्ञत्वं सोमस्य दर्शयति; ततश्च "राज्ञो यक्ष्मा राजयक्ष्मा" इति निरुक्तिर्भवति। (चक्रः)

राजसं सत्त्वम्-शा. ४-३६. रजोगुणभूयिष्ठं मनः राजसं सदोषमाख्यातं रोषांशत्वात्।

राजार्हः-सू. ९-१९. हेतौ लिङ्गे प्रशमने रोगाणामपुनर्भवे। ज्ञानं चतुर्विधं यस्य स राजार्हो भिषक्तमः॥

राजी-इ. ११-१३. रेखा, पङ्क्तिः।

राजी-चि. १३-१९. व्यक्ता सिरा।

राशिः-वि. १-२२/४. राशिस्तु सर्वग्रहपरिग्रहौ मात्रामात्रफलविनिश्चयार्थः। तत्र सर्वस्याहारस्य प्रमाणग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः, परिग्रहः पुनः प्रमाणग्रहणमेकैकश्येनाहारद्रव्याणाम्। सर्वस्य हि ग्रहः सर्वग्रहः सर्वतश्च ग्रहः परिग्रह उच्यते। सर्वतः इति प्रत्येकावयवत इत्यर्थः। (चक्रः)

राक्षसम् (सत्त्वम्)-शा. ४-३८. अमर्षिणमनुबन्धकोपं छिद्रप्रहारिणं क्रूरमाहारातिमात्ररुचिमामिषप्रियतमं स्वप्नायासबहुलमीर्ष्युं राक्षसं विद्यात्॥

रुग्णः-सि. १-३२. सन्धिमुक्तः।

रुचिकरम्-सू. २५-४०. रुच्युत्पादकम्।

रुजा-चि. २१-३९. पीडा।

रुधिरम्:-इ. ९-२१. रक्तम्।

रुद्धमार्गः–सि. ७–२१. निवारिताधोमार्गः

रूपम्–नि. १–९. तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिह्नं संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

रूक्षः–सू. २०–१९. रूक्षस्तद्विपरीतः स्यात् विशेषात् स्तम्भनः खरः। (व. द.) तद्विपरीतः स्निग्धविपरीतः ।

रूक्षः–सू. १७–३०. रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम् ।

रूक्षणम्–सू. २२–१०. रौक्ष्यं खरत्वं वैशद्यं यत् कुर्यात्तद्धि रूक्षणम् ॥

रेचनम्–सि. ९–९२. विरेचनम् । विपक्वं यदपक्वं वा मलादि द्रवतां नयेत् । रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ॥ (व द.)

रेतः–चि. ३०–१४६. शुक्रम् ।

रेतोदः–सि. ३–४३. रेतः वीर्यम् ददाति यः सः शुक्रजननः शुक्रवर्धनः वा ।

रेतोदोषः–चि. ३०–१४८. शुक्रदोषः ।

रेतोवहाः सिराः–चि. ३०–१३८. शुक्रवहानि स्रोतांसि ।

रोगः–नि.–१–५; चि. ३–११. तत्र व्याधिरामयो गद आतङ्को यक्ष्मा ज्वरो विकारो रोग इत्यनर्थान्तरम्; ज्वरो विकारो रोगश्च व्याधिरातङ्क एव च । एकोऽर्थो नामपर्यायैर्विविधैरभिधीयते ॥

रोगानीकम्–वि. ६–१ रोगसमूहः ।

रोगी–चि. २२–६१. रोगयुक्तः

रोगेशः चि. ८–११३. राजयक्ष्मा ।

रोचनम्–वि. १–१८ रुचिकर्तृ ।

रोपणः–चि. २९–१६२. रोहणः।

रोम–चि. २३–२३०. लोम, सूक्ष्मवालः, त्वक्छिद्रे जातः सूक्ष्मकेशः ।

रोमकूपाः–चि. ४–१७. लोमविवराणि ।

रोमहर्षः–नि. १–२१. रोमाञ्चः ।

लक्षणम्–नि. १–८. लिङ्गम् ।

लक्षणम्–इ ३–४. मरणलक्षणम् ।

लक्षणनिमित्ता (विकृतिः)–इ. १–७ | १. तत्र लक्षणनिमित्ता नाम सा यस्याः शरीरे लक्षणान्येव हेतुभूतानि भवन्ति दैवात् । हेतुभूतानीति हेतुसदृशानि । तेन दैवमेव नखरेखापद्मादिसामुद्रिकोक्तलक्षणयुक्ते शरीरे राज्यधनगमनवधबन्धनादिरूपविकृतिप्राप्तौ हेतुः । लक्षणानि तु दैवनिमित्तानि बोधकमात्राणि, अतएव दैवादित्युक्तम्; दैवं च प्राक्तनं कर्मोच्यते (चक्रः)

लक्ष्यनिमित्ता (विकृतिः)–इ–१–७ | २. लक्ष्यनिमित्ता तु सा यस्या उपलभ्यते निमित्तं यथोक्तं निदानेषु ।

लघुः–सू. १–५९. लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनो रोपणस्तथा (व. द.) तद्विपरीतः गुरुविपरीतः ।

लङ्घनम्–सू. २२–९, १८. यत् किञ्चिल्लाघवकरं देहे तल्लङ्घनं स्मृतम् ॥ चतुष्प्रकारा संशुद्धिः पिपासा मारुतातपौ । पाचनान्युपवासश्च व्यायामश्चेति लङ्घनम् ॥

लङ्घनम्–चि. ३–१४०, १५–७५. उपवासः, अनशनम् ।

ललाटम्–इ. ३–५ भालम्

लवणः–सू. १–६५. २६–७६ रसविशेषः, तोयाग्निगुणबाहुल्यात् लवणः ।

लवणम्–सू. १–७० सैन्धवादि ।

लवणस्कन्धः–वि. ८–१४१ लवणरसद्रव्यसमूहः ।

लसीका–शा. ७–१५. त्वगन्तरे व्रणगतमुदकम् ।

लाघवम्–वि. १–१४ लघुता

लाघवम्–सि. ३–१९ शीघ्रक्रियता ।

लाला–चि. ६–९ मुखस्रावः ।

लिङ्गम्–नि. १–६ प्रादुर्भूतलक्षणं पुनर्लिङ्गम्, व्याधेः स्वरूपं लिङ्गयते ज्ञायते अनेन इति लिङ्गम्, आकृतिर्लक्षणं, चिह्नं, संस्थानं व्यञ्जनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

लिङ्गग्राह्यम्–शा. १–६२. अनुमानग्राह्यम् ।

लीनम्–सि. १–८. श्लिष्टम् ।

लेखनम्–चि. २३–१७१. गणलेखनम् ।

लेखनीयः–चि. २३–१७१. तृतीयो महाकषा लिखति इति लेखनीयः,

लेपः–चि. ७–१२२. लिम्पति इति लेपः । लेपस्य द्वौ भेदौ–आलेपः प्रदेहश्च । तयोरालेपः आर्द्रमाहिषचर्मवत् शीतलः तनुर्विशोषी च । प्रदेहः आर्द्रः घनः उष्णश्चेति ।

लेपज्वरः–इ. ८–२४. स्वल्पशीतयुक्तः कफज्वरः ।

लेपनम्–सू. २५–४०. लेपः ।

लेलीतकः–चि. ७–७०. पाषाणभेद गौन्धारपाषिकः, उच्यते हि निघण्टौ " आसीद्दैत्यो महाबाहुर्लेलिहानो महासुरः । योजनानां त्रयस्त्रिंशत् कायेनाच्छाद्य तिष्ठति । विष्णुचक्रेण संछिन्नो पपात धरणीतले । वसा तस्य समाख्याता लेलीतक इति क्षितौ" इत्यादि ।

लेह्यः–चि. ६–४७. लिह्यते इति लेह्यः, नातिद्रवो नातिघन औषधकल्पभेदः ।

लोम–इ. ३–६. रोम ।

लोमकूपः–सू. २८–४. रोमकूपः ।

लोमहर्षः–चि. ७–११. रोमहर्षः ।

लौकिकः–सू. २८–३८. अपरीक्षकः, रजोमोहावृतात्मा, अयथार्थदर्शी ।

लौल्यम्–सू.२५–४०. चाञ्चल्यम्, चलचित्तता, लोलुपता ।

वक्त्रम्–इ. ८–१७. मुखम् ।

वक्री–शा. २–३०. मातुर्व्यवायप्रतिघेन वक्री स्याद्बीजदौर्बल्यतया पितुश्च । मातुर्व्यवायप्रतिघेनेति व्यवायकाले मातुर्व्यवायानिच्छा विषमाङ्गन्यासो वा व्यवायप्रतिघः तेन यस्य शुक्रं गर्भाशयं नियमान्नोपैति स वक्रीत्युच्यते । बीजदौर्बल्यतया च पितुर्वक्री स्यादिति योजना । अत्र दुर्बलस्य कर्म दौर्बल्यं तस्य भावो दौर्बल्यता तेन पितुर्बीजस्य दुर्बलक्रियतयेत्यर्थः । (चक्रः)

वङ्क्षणः–इ ३–५. ऊरुसन्धिः । (श. क.)

वदनम्–इ. १–१२. मुखम् ।

वनस्पतिः–सू. १–७१. फलैर्वनस्पतिः । फलैर्वनस्पतिरिति विना पुष्पैः फलैर्युक्ता वटोदुम्बरादयः । यदुक्तं हारीते "तेषामपुष्पाः फलिनो वनस्पतय इति स्मृताः" इति । (चक्रः)

वपावहनम्–वि–५–८, मेदःस्थानम् । वपा उदरस्था स्निग्धवर्तिका यामाहुर्जनास्तैलवर्तिकेति ।

वमनम्–सू.–१–८४ छर्दनम्, तत्र दोषहरणमूर्ध्वभागं वमनसंज्ञकम् । १७–१७

वमनोपगः–सू. ४–१३ | १३. वमने छर्दनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छतीति वमनोपगः । त्रयोविंशतितमो महाकषायः ।

वमिः–सि. ६–५३ प्रच्छर्दिका । (श. क.)

वयः–वि–१–३. आयुषोऽवस्थाविभागः, बाल्यादि ।

वयः–वि–८–१२२ वयस्तश्चेति कालप्रमाणविशेषापेक्षिणी हि शरीरावस्था वयोऽभिधीयते ।

वयःस्थापनः–सू. ४–१८ | ५० वयस्तरुणं स्थापयति इति । (व. द.) पञ्चाशत्तमो महाकषायः ।

वर्चोभेदः–चि. ८–१७. अतिपुरीषप्रवृत्तिः ।

वर्चोवाहीनि–वि. ५–२१, वर्चः पुरीषं वहन्ति इति वर्चोवाहीनि

वर्जनीयः–सि. १–४. अचिकित्स्यः ।

वर्ज्यम्–चि–३–३२३ निषिद्धम्, त्याज्यम् ।

वर्णः–इ. १–३. श्वेतरक्तादिवर्णः; वर्णशब्देन च वर्णसहचरिताश्चक्षुर्ग्राह्या रौक्ष्यादयोऽपि गृह्यन्ते, अत एव वर्णप्रस्ताव एव वक्ष्यति–यत् "वर्णग्रहणेन ग्लानिहर्षरौक्ष्यस्नेहा व्याख्याताः" इति

वर्णकः–चि. ७–९२. वर्णकरमालेपनम्, रञ्जनचूर्णम् ।

वर्णनाशः–चि. ४–२७. रङ्गनाशः ।

वर्ण्यः–सू.४–१० | ८. वर्णाय हितः; अष्टमो महाकषायः ।

वर्तः–सू. २०–१२. वर्तुलीकरणम् ।

वर्तिः–सू. ५–२३. धूमवर्तिः ।

वर्तिः–सू. ७–९; सि. २–१३. फलवर्तिः—पिष्टैर्मदनफलादिभिर्यवाकाराऽङ्गुष्ठमात्रा शलाकाकारेण वर्तिता औषधपिण्डिः ।

वर्तिकाः–चि. २–२–१२. वर्त्याकाराः भक्ष्याः ।

वर्तिक्रिया–क १–१. वर्तिक्रियायां चतुर्गुणेन क्वाथेन पाकाद्वर्त्याकारता कर्तव्या ।

वर्त्म–इ. ८–५. नयनगोलकावरकं निमेषोन्मेषाश्रयं पटलद्वयं वर्त्म उच्यते ।

वली–सि. ३–२५. गुदवली, त्वक्सङ्कोचजन्यो निम्नोन्नतरूपो भङ्गीविशेषः ।

वशी–शा. १–७. स्वेच्छाधीनप्रवृत्तिः ।

वश्या–चि. २–१ | ८. आयत्ता ।

वसा–सू. १–६८. मांसप्रभवधातुविशेषः (श.क.) शुद्धमांसस्य यः स्नेहः सा वसा परिकीर्तिता ॥ (सु. शा. ४)

वाक्यशः–सू. ३०–१७. तन्त्रमार्षं कार्त्स्न्येन यथाम्नायमुच्यमानं वाक्यशो भवत्युक्तम् ।

वाक्यशेषः–सि. १२–४२. यल्लाघवार्थमाचार्येण वाक्येषु पदमकृतं गम्यमानतया पूर्यते ।

वाक्यार्थशः–सू. ३०–१८. बुद्ध्या सम्यगनुप्रविश्यार्थतत्त्वं वाग्भिर्व्यासमासप्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनयुक्ताभिस्त्रिविधशिष्यबुद्धिगम्याभिरुच्यमानं वाक्यार्थशो भवत्युक्तम् ।

वाजीकरणम्–सू. ३०–२८; चि.२–४/५१. वाजीकरणमिति अवाजिनं वाजिनं कुर्वन्त्यनेनेति वाजीकरणं, येन वाऽत्यर्थं व्यज्यते स्त्रीषु शुक्रं तद्वाजीकरणम् । अन्ये तु वाजो वेगः प्रस्तावाच्छुक्रस्य, स विद्यते येषां ते वाजिनः ते क्रियन्तेऽनेनेति वाजीकरणमित्याहुः । किंवा वाजः शुक्रं सोऽस्यास्तीति वाजी अवाजी वाजी क्रियते येन तद्वाजीकरणम् । किंवा वाजो मैथुनम् उक्तं हि हारीते "वाजो नाम प्रकाशत्वात्तच्च मैथुनसंज्ञितम् । वाजीकरणसंज्ञाभिः पुंस्त्वमेव प्रचक्षते"—इति शिवदासमेनः । यस्माद् द्रव्याद् भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं हि तत् । यथाश्वगन्धा मुशली शर्करा च शतावरी ॥ (व. द.) येन नारीषु सामर्थ्यं वाजिवल्लभते नरः व्रजेच्चाभ्यधिकं येन वाजीकरणमेव तत् ॥

वाट्य.–चि. ५–९८. क्षुण्णशुष्कयवौदनः ।

वातः–सू. १–८८. वाति गच्छति इति वातः, सदागतिः; समीरणः ।

वातकण्टकः–सू. १४–१३. गुल्फाश्रितो वातः; रुक् पादे विषमे न्यस्ते श्रमाद्वा जायते यदा । वातेन गुल्फमाश्रित्य तमाहुर्वातकण्टकम् ॥ (अ. हृ. नि. १५–५३)

वातबलासः–चि. २९–११. वातस्यावरणेन बलमस्त्यस्मिन् शोणिते, इति वातबलासः ।

वातप्रकृतिः–वि. ६–१३. वातप्रधाना प्रकृतिः स्वभावः यस्य सः इति वातप्रकृतिः ।

वातयन्त्रम्–चि. २४–१५८. वायुसंचारार्थं यन्त्रम् ।

वातलः–सि. ५–६. वातदुष्टः ।

वातविकाराः–सि. ४–७. वातजनिता रोगविशेषाः ।

वातवेगः–सि. ३–२५. वायुवेगः ।

वातिकषण्ढः-शा. २-१७. वाय्वग्निदोषाद् वृषणौ तु यस्य नाशं गतौ स वातिकषण्डः।

वादः-सू. २५-२७; वि. ८-२८. तत्र वादो नाम स यत् परेण सह शास्त्रपूर्वकं विगृह्य कथयति।

वानस्पत्यः-सू. १-७१. "पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि" इति पुष्पानन्तरं फलभाज इत्यर्थः। (चक्रः)

वायुः-सू. १-५७. वातः।

वारुणीमण्डः-चि. ५-९२. सुरामण्डः। (श. क.)

वारुण्याः प्रसादः-चि. ८-६९. सुराप्रसादः। (श. क.)

वार्तलक्षणम्-सू. २५-४०. आरोग्यलक्षणम्।

वार्ता-शा. ४-३०. स्त्र्याकृतिभूयिष्ठा असौ इति स्त्रीदण्डविशेषः; असंपूर्णस्त्रीलक्षणां वार्ता नामेति वार्तासंज्ञा शास्त्रसमयकृता। (चक्रः)

विकल्प-वि. १-३. समवेतानां पुनर्दोषाणामंशांशबलविकल्पः।

विकल्पनम्-सि. १२-४४. पाक्षिकाभिधानं यथा- "क्षारोदकं वाऽथ कुशोदकं वा" (चि. अ. ६) इत्यादि।

विकल्पना-सि. ११-२३. विशेषकल्पना।

विकारः-सू. ९-४. धातुवैषम्यम्।

विकासि-चि. २३-२४. हिंसनशीलं, विपूर्वो हि कसति हिंसार्थः। विकासी विकसन्नेवं धातुबन्धान् विमोक्षयेत्। व.द.) सन्धिबन्धांस्तु शिथिलान् यत् करोति विकासि तत्। विशोष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्रवौ॥ (व. द.)

विकृतिः-इ. १-३. विकारः

विक्षेपः-सि. १-३०. वियोगः।

विगन्धः-सि. ३-११. विगतः पूतिगन्धो यस्य सः विगन्धः।

विगीतिः-वि. ६-४. विरुद्धा गीतिः विगीतिः विरुद्धभाषणमित्यर्थः।

विगुणः-सि. ९-३९. गुणवैपरीत्यविशिष्टः। (श. क.)

विगृह्यसंभाषा-वि. ८-१८. जल्पवितण्डारूपा संभाषा

विघातः-सि. ११-१७. प्रकोपकहेतुनाऽसंबन्धः।

विचर्चिका-चि. ७-१३. क्षुद्रकुष्ठभेदः। तल्लक्षणम्- राज्योऽतिकण्डूवर्तिरुग्भः सरूक्षा भवन्ति गात्रेषु. विचर्चिकायाम्। (सु. नि. ५-१३)। (वै. श.)

विचारः-सू. २६-९. विचारणा, द्रव्यान्तरसंयोगः।

विचारणा-सू. १३-४. द्रव्यान्तरासंयुक्तस्नेहपानं वर्जयित्वा स्नेहोपयोगः।

विज्जलम्-वि. ८-१६. पिच्छलम्।

विज्ञानानि-इ. ९-२३. लक्षणानि, नयनादिवैकृतानि

विज्ञानम्-शा. १-४०. शास्त्रार्थज्ञानम्।

विज्ञानम् सू. २५-७३. विज्ञायते अनेन इति विज्ञानं लक्षणमित्यर्थः।

विट्-सि. ६-४५. पुरीषम्।

विड्भेदः-चि. ८-२६. पुरीषभेदः।

वितण्डा-वि. ८-२८. जल्पविपर्ययो वितण्डा वितण्डा नाम परपक्षे दोषवचनमात्रमेव॥ परपक्षे दोषवचनमात्रमित्यनेन नस्वपक्षसाधनवचनं वैतण्डिकस्येति दर्शयति। (चक्रः)

विश्रामननम्-शा. ८-६४. भयदानम्।

विद्रधिः-सू. १८-९५. दुष्टरक्तातिमात्रत्वात्

स वै शीघ्रं विदह्यते। ततः शीघ्रविदाहित्वाद् विदग्धीत्यभिधीयते ॥

विदाहः-चि. २४-१४४. हृदये दाहः।

विदाहि-सू. २७-२९३. विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लं कुर्यात्तथा तृषाम्। हृदि दाहञ्च जनयेत् पाकं गच्छति तच्चिरात् ॥ (व. द.)

विधानम्-सि. १२-४१. विधानं नाम सूत्रकारस्य विधाय वर्णयति; यथा-" मलायनानि बाध्यन्ते दुष्टैर्मात्राधिकैर्मलैः इत्यत्र दुष्टिशब्देन मलानां हीनत्वमधिकत्वमाचार्यगृहीतमाचार्यो वर्णयति- "मलवृद्धिं गुरुतया लाघवान्मलसंक्षयम्। मलायनानां बुध्येत संगोत्सर्गादतीव च" (सू. अ. ७) इति। (चक्रः)

विधारणम्-सि. ९-२९. वेगनिरोधः।

विनता-सू. १७-८९. अवगाढरुजाक्लेदा पृष्ठे वाऽप्युदरेऽपि वा। महती विनता नीला पिडका विनता मता ॥

विनिमित्तानि-इ. ४-१७. विगतनिमित्तानि।

विनिर्मथ्य-सि. ६-७८. क्षोभयित्वा।

विपत्-सू. २५-२९. वैगुण्यम्।

विपर्ययः-सि. १२-४३. अपकृष्टात् प्रतीपोदाहरणम्।

विपाकः-सू. २६-६६. विपाकः कर्मनिष्ठया। कर्मनिष्ठयेति कर्मणो निष्ठा निष्पत्तिः कर्मनिष्ठा क्रियासमाप्तिः, रसोपयोगे सति योऽन्त्याहारपरिणामकृतः कर्मविशेषः कफशुक्राभिवृद्ध्यादिलक्षणः, तेन विपाको निश्चीयते। विपाकस्तु नित्यपरोक्षः, तत्कार्येणानुमीयते (चक्रः)। जाठरेणाग्निना योगाद् यद् यदेति रसान्तरम्। रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः। (व. द.)

विपाटनम्-चि. १३-२५. दारणम्।

विपादिका-चि. ७-२१. कुष्ठभेदः

विप्लुतः-शि. ८-३. व्यापन्नः

विबद्धः-चि. २४-६३. विबन्धवान्।

विबद्धः दोषः-चि. ३-१०९. अत्र दोषशब्दो विबद्धोपपदान्मले वर्तते। (चक्रः)

विबन्धः-नि. ४-४९. आनाहरोगः

विभ्रंशः-सू. १५-१३. प्रातिलोम्येन गमनम्।

विभ्रंशः-सि. ६-३९. विपरीतप्रवृत्तिसामर्थ्यम्।

विमलम्-सू. २७-११८. निर्मलम्।

विमूर्छिताः-सि. ९-७१. संस्थिताः।

वियोगः-सू. ११-१२. भूतानामात्मनो वियोगः, मरणम्।

वियोनिः-इ. २-१६. निर्हेतुकः।

विरजनीयः-सू. २५-४०. विरजनं दोषसम्बन्धनिरासं करोति इति सः।

विरसः-इ. २-२१. अनिष्टरसः।

विरुद्धाशनम्-चि. २-८ विपरीत आहारः।

विरुद्धयोनयः-इ. ६-२२. परस्परविरुद्धधर्माणः।

विरूक्षणम्-चि. ५-१८. रूक्षीकरणम्

विरूक्षस्वेदः-सि. ७-१६. स्नेहरहितः स्वेदः।

विरेकः-सू. ७-१५. मलभेदः। (श. क.)

विरेचनम्-सू. १-८०. विरेकः।

विरेचनोपगानि-सू. ४-१३ | २४ इमानि द्रव्याणि विरेचनक्रियायां सहायत्वेनोपगच्छन्ति।

विलङ्घितः-सि. ६-५७. कृतलङ्घनः।

विलयेत्–चि. १२–८२. विम्लापनं कुर्यात् । विम्लापनम् अङ्गुल्यादिमर्दनेन शोफविलयनम् । (सु. चि. अ. १–२२. डल्हणः)

विलेपनम्–च. ६–५० गात्रानुलेपनम् ।

विलेपिका–सू. २७–२५१ विरलद्रवा यवागूः ।

विलेपी–नि. ४–५ यवागूः ।

विवर्णम्–इ. ४–१७ विरुद्धवर्णम्

विवृता–इ. ८–११, निर्गता ।

विशदः–सू. २६–११ पिच्छिलविपरीतः । विशदो विपरीतोऽस्मात् क्लेदाचूषणरोपणः । (व. द.)

विशिरा–इ ७–५. शिरोविरहिता ।

विशुद्धं शोणितम् सू. २४–२३, २४ तपनीयेन्द्रगोपाभं पद्मालक्तकसन्निभम् । गुञ्जाफलसवर्णञ्च विशुद्धं विद्धि शोणितम् ॥

विशेषः–सू. १–२८–४४, ४५ विशिष्यते व्यावर्तत इति विशेषः पृथक्त्वकृत् ॥

विशोधनम्–सू. २७–१३१ विशुद्धिकारकम् ।

विश्लेषः–इ. १२–५१. पृथग्भावः अयोगः (श. क.)

विषम्–चि. २३–३ गरलम् (श. क.)

विषगरवैरोधिकप्रशमनम्–सू. ३०–२८. विषं गरलम्, गरः कालान्तरप्रकोपि विषम्, वैरोधिकं संयोगविरुद्धम्, तेषां प्रशमनमगदतन्त्रम् ।

विषण्णम्–चि. २३–५ खिन्नम्

विषघ्नः–सू. ४–८. विषनाशकः षोडशः कषायवर्गः ।

विषमक्रियत्वम्–चि. ६–७ विषमक्रियत्वमिति पित्तस्य संशमनचिकित्सायाः कट्वादिरूपाया विषमत्वम् ।

विषमज्वरः–चि. ३–७३. दोषोल्वोऽहितसम्भूतो ज्वरोत्सृष्टस्य वा पुनः । धातुमन्यतमं प्राप्य करोति विषमज्वरम् ॥ (मा. नि.)

विषमाग्निः–वि. ६–१२, चि–१३–१३६. समलक्षणविपरीतलक्षणस्तुविषम इति ॥

विषमाशनम्–चि. १५–४२, २३६. विषमं बहु वाऽल्पं वाऽप्यप्राप्तातीतकालयोः भोजनम्; बहुस्तोकमकाले वा तज्ज्ञेयं विषमाशनम् ॥ (सु. सू. ४६–५०८.)

विषमाहारः–वि. ६–१३ विषमाशनम् ।

विषादः–सू. २५–४०. खेदः ।

विषाधानम्–चि. १३–४२. विषस्य प्रसारकम् ।

विष्किराः–चि. १२–१८ | ४ विकीर्य भक्षयन्ति इति ।

विष्टम्भः–चि. १४–२१ अप्रचलत्वम् ।

विष्यन्दनम्–सू २८–३३ विलयनम् ।

विसर्गः–चि. ३–५९. परित्यागः ।

विसर्गः–सू. ६.–४. विसृजति जनयति आप्यमंशं प्राणिनां च बलमिति विसर्गः ।

विसर्पः–चि २१–११. विविधं सर्पतीति अथ उर्ध्वं तिर्यक् तथास्क टशोफादिभिः प्रसरतीति विसर्पः ।

विसर्पिणी जिह्वा–इ. ८–१४. बहिर्निर्गता जिह्वा ।

विसूचिका–वि. २–११. विविधवेदनोद्भेदैर्वाय्वादिभृशकोपतः । सूचीभिरिव गात्राणि विध्यतीति विसूचिका ॥ (अ. सं. सू. ११)

विस्फोटकम्–चि. ७–१६. विस्फोटकं नाम कुष्ठं तनुत्वग्भिः श्वेतलोहितैः स्फोटैर्व्याप्तम् ।

विस्मापनम्–चि. १७–१३७. विस्मयजननम् ।

विस्रगन्धि–चि. १४–१४. पूतिगन्धम्, आमगन्धम् ।

विस्रत्वम्–सि. ५–७. आमगन्धता।

विहारः–शा. २–२९. गमनभ्रमणादिशारीरचेष्टा।

वीतीभावः–इ. ३–४. अतिक्षीणत्वम्।

वीर्यम्–सू. २६–६४. मृदुतीक्ष्णगुरुलघुस्निग्धरूक्षोष्ण-शीतलम्। वीर्यमष्टविधं केचित्, केचिद् द्विविधमास्थिताः॥ शीतोष्णमिति, एतच्चैकीयमतद्वयं पारिभाषिकीं वीर्यसंज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तम्। वैद्यके हि रसविपाकप्रभावव्यतिरिक्ते प्रभूतकार्यकारिणि गुणे वीर्यमिति संज्ञा, तेनाष्टविधवीर्यवादिमते पिच्छिलविशदादयो गुणा न रसादिविपरीतं कार्यं प्रायः कुर्वन्ति, तेन तेषां रसाद्युपदेशेनैव ग्रहणं; मृद्वादीनां तु रसाद्यभिभावकत्वमस्ति, यथा - पिप्पल्यां कटुरसकार्यं पित्तकोपनमभिभूय तद्गते मृदु शीतवीर्ये पित्तमेव शमयत इति, तथा कषाये तिक्तानुरसे महति पञ्चमूले तत्कार्यं वातकोपनमभिभूयोष्णेन वीर्येण तद्विरुद्धं वातशमनमेव क्रियते, तथा मधुरेऽपीक्षौ शीतवीर्यत्वेन वातवृद्धिरित्यादि यदुक्तं सुश्रुते–"एतानि खलु वीर्याणि स्वबलगुणोत्कर्षाद्रसमभिभूयात्मकर्म दर्शयन्ति" (सु. सू. अ ४०.) इत्यादि। एतच्च मतद्वयमप्याचार्यस्य परिभाषासिद्धमनुमतमेव, येनोत्तरत्र "रसवीर्यविपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते" इत्यादौ पारिभाषिकमेव वीर्यं निर्देक्ष्यति। (चक्रः)

वीर्यम्–सू. २६–६५. वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया। नावीर्यं कुरुते किञ्चित् सर्वा वीर्यकृता क्रिया॥ पारिभाषिकवीर्यसंज्ञापरित्यागेन तु शक्तिपर्यायस्य वीर्यस्य लक्षणमाह–वीर्यन्त्वित्यादि। वीर्यमिति शक्तिः। येनेति रसेन वा विपाकेन वा प्रभावेण वा गुर्वादिपरादिभिर्वा गुणैर्या क्रिया तर्पणह्लादनशमनादिरूपा क्रियते, तस्यां क्रियायां तद्रसादि वीर्यम्। अत एवोक्तं सुश्रुते–"येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम्" (सु. सू. अ. ४०.) इति अत्रैव लोकप्रसिद्धामुपपत्तिमाह–नावीर्यमित्यादि। अवीर्यम् अशक्तमित्यर्थः। वीर्यकृतेति वीर्यवता कृता वीर्यकृता। (चक्रः)

वीर्यम्–सू. २६–६६. वीर्यं यावदधीवासान्निपाताच्चोपलभ्यते॥ अधीवासः सहावस्थानं, यावदधीवासादिति यावच्छरीरनिवासात्। निपाताच्चेति शरीरसंयोगमात्रात्; तेन किञ्चिद्वीर्यमधीवासादुपलभ्यते, यथा–अनूपमांसादेरुष्णत्वं, किञ्चिच्च निपातादेव लभ्यते, यथा मरीचादीनां तीक्ष्णत्वादि; किञ्चिच्च निपाताधीवासाभ्यां, यथा मरीचादीनामेव। वीर्यं तु किञ्चिदनुमानेन; यथा सैन्धवगतं शैत्यमानूपमांसगतं वा औष्ण्यं, किञ्चिच्च वीर्यं प्रत्यक्षेणैव यथा राजिकागतं तैक्ष्ण्यं घ्राणेन, पिच्छिलविशदस्निग्धरूक्षादयः चक्षुःस्पर्शनाभ्यां निश्चीयन्ते इति वाक्यार्थः। एतच्च वीर्यं सहजं कृत्रिमं च ज्ञेयम्। एतच्च वीर्यलक्षणं पारिभाषिकवीर्यविषयमेव (चक्रः)। एतच्च वीर्यं सहजं कृत्रिमं च ज्ञेयं; तत्राद्यं माषाणां गौरवं मुद्गानां लाघवमित्यादि, कृत्रिमं तु लाजादीनां लघुत्वमित्यर्थः" इति शिवदाससेनः।

वीरुधः–सू. १–७१. प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः।

वृक्कौ–शा. ७–१०. भाषायां 'गुर्दे' इति, आङ्ग्लभाषायां च 'किड्निज्' इति ख्यातौ।

वृत्तः–चि. २१–३९. वर्तुलः।

वृत्तिः–सि. ७–४२. पेयादिक्रमः।

वृषः–चि. २/४–७. वीर्यपुंस्त्वशक्तिसम्पन्नः।

वृषणौ–चि. ५–८ अण्डकोषौ।

वृषता–चि. २/४–२४ वीर्यपुंस्त्वशक्तिसंपन्नत्वम्।

वृष्यम्–चि. ३०–६७ वाजीकरम् (श. क.)

व्रणः–चि. २५–४ वृणोति यस्माद् रूढेऽपि व्रणवस्तु न नश्यति। आदेहधारणात्तस्माद् व्रणइत्युच्यते बुधैः (सु. सू. अ. २१)

वेगधारणम्–सू. ११–३८ वेगनिरोधः।

वेगनिग्रहः–सि. ६–७१ वेगविधारणम्।

वेगप्रतिघातः–चि. ८–२१ वेगसंधारणम्।

वेगोदीरणम् सू. ११–३८· अप्राप्तवेगप्रवर्तनम्।

पेणिका–चि. २३–३८. रज्जुः ।

वेदः–सू. ३०–२०. आयुर्वेदः ।

वेदनास्थापनः सू. ४–१८ | ४७ सप्तचत्वारिंशत्तमो महाकषायः । वेदनायां सम्भूतायां तां निहत्य शरीरं प्रकृतौ स्थापयति इति (च. द.)

वेपनम्–शि. ३–१९. वेपथुः ।

वेशवारः–सू. २७–२६९. मांसं निरस्थि सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषितम् . पिप्पलीशुण्ठिमरिचगुडसर्पिःसमन्वितम् ॥ ऐकध्यं विपचेत्सम्यग्वेशवार इति स्मृतः ॥

वेष्टनम्–सि. ४–२८. पार्श्ववेष्टनम् ।

वैकृतम्–चि. ३–२९. अन्यथात्वम् ।

वैगन्ध्यम्–सू. १९–४ | १ विकृतगन्धता, अनिष्टगन्धता च ।

वैगुण्यम्–सि. ६–३०. गुणानां न्यूनता ।

वैधवृत्तिः–सू. ९–२६. मैत्रीकारुण्यमार्तेषु शक्ये प्रीतिरुपेक्षणम् । प्रकृतिस्थेषु भूतेषु वैद्यवृत्तिश्चतुर्विधा ॥

वैपादिकम् (विपादिका)– चि. ७–२२. चतुर्थं क्षुद्रकुष्ठम्, वैपादिकं पाणिपादस्फुटनं तीव्रवेदनम् ॥

वैरस्यम्–सू. १९–४ | १ विरसता ।

वैरेचनिकाः धूमाः–चि. ७–४९. शीर्षविरेचनार्था धूमाः । सूत्रस्थाने यद्यपि एक एव वैरेचनिको धूम उक्तस्तथापि तत्रोक्तद्रव्यैर्व्यस्तसमस्तैर्बहवो धूमा भवन्तीति बहुवचनमिह कृतम् । (चक्रः)

वंशः–सू. १४–३१ वेणुः ।

व्यक्तिदर्शकः–चि. २४–७३. आकारदर्शकः ।

व्यञ्जनम्–नि. १–९. तत्र लिङ्गमाकृतिर्लक्षणं चिह्नं संस्थानं व्यंजनं रूपमित्यनर्थान्तरम् ।

व्यत्यासः–चि. १७–१३४ विपर्यासः ।

व्यथनम्–नि. ८–६ व्यथा ।

व्यधः–सू. २८–४ व्यधनम् ।

व्यधनम् सू. ११–५५ व्यधः ।

व्यपदेशः सू. ११–५२ अन्यसम्बन्धेन कीर्तनम् ।

व्यपायः–चि. २६–३९ मूत्रमार्गापगमः ।

व्यवसायः–चि. ४–८ प्रवृत्तिः ।

व्यवायः–सू. ६–३६. मैथुनम् ।

व्यवायि–चि. २३–२६. क. १–५. शीघ्रं व्यवायिभावादाशु व्याप्नोति केवलं देहम्; व्यवायित्वं सर्वतः प्रसरणशीलत्वं पानीयपतिततैलवत्; पूर्वं व्याप्याखिलं कायं ततः पाकं च गच्छति । व्यवायि तद् यथा भङ्गा फेनं चाहिसमुद्भवम् ॥ (च. द.)

व्यसनम्–इ. १२–२७. वस्त्रादीनां यत् स्फुटनादि ।

व्यसनी–इ. १२–२७. व्यग्रः कलहवान् वा ।

व्यस्तानि–इ. ३–५. पृथग्भूतानि ।

व्याकृतीनि–इ. ४–१७. विविधाकृतीनि ।

व्याख्यानम्–सि. १२–४३. यत्सर्वबुद्धयविषयं व्याक्रियते, यथा "प्रथमे मासि संमूर्छितः सर्वधातुकलुषीकृतः खेटभूतो भवत्यव्यक्तविग्रहः" (शा. अ. ४.) इत्यादिनाऽस्मदाद्यविदितार्थव्याकरणम् (चक्रः)

व्याधिः–नि. १–५. विविधं दुःखमादधातीति ।

व्यानः–चि. १५–३६. शरीरस्यापवाद्यन्तर्गतसर्वशरीरगवायुः (स. क.)

व्यापत्–सू. २५–४०. रोगः ।

व्यायामः–शा. ८–४५. विस्तारः ।

व्याविद्धः–सि. ९–३९. वक्री ।

व्यासः–सू. २०–१२. विस्तरणम् ।

शकृद्ग्रहः–सि. ७–८. पुरीषाप्रवृत्तिः ।

शक्तुः–चि. २१–१३०. भर्जितयवादिचूर्णम् (श. क.)

शतारुः–चि. ७–१३. दशमं क्षुद्रकुष्ठम ; रक्तं श्यावं सदाहार्ति शतारुः स्याद् बहुव्रणम् । (श. क.)

शब्दः–इ. १२–५८. नादः

शब्दश्रवौ–इ. ८–१२. कर्णौ ।

शमः–शि. १–५. शान्तिः ।

शमनम्–चि. ३–२७२. कषायसर्पिःपानादि; न शोधयति यद् दोषान् समान्नोदीरयत्यपि । समीकरोति संवृद्धान् शमनं तद् यथामृता ॥ (व. द.)

शमीधान्यम्–सू. २७–६. माषादि । (श. क.)

शराविका–सू. १७–८४. अन्तोन्नता मध्यनिम्ना श्यावा क्लेदरुगन्विता । शराविका स्यात् पिडका शरावाकृतिसंस्थिता ॥

शरीरान्ताः–इ. ९. ६. हस्तपादादयः ।

शर्करा–इ. ३–६. मलो दन्तगतो यस्तु पित्तमारुत-शोषितः । शर्करेव खरस्पर्शो सा ज्ञेया दन्तशर्करा ॥ (मा. नि.)

शर्म–सू. १–२९. सुखम्

शल्यम्–चि. २५–१०६. न केवलं काष्ठतृणादि शल्यं, किन्तु "अतिप्रवृद्धं मलदोषजं वा शरीरिणां स्थावर-जङ्गमानाम् । यत्किंचिदाबाधकरं शरीरे तत् सर्वमेव प्रवदन्ति शल्यम्" इति । (सु. सू. १–८/९. डल्हणः)

शल्यापहर्तृकम्–सू. ३०–२८. शल्योद्धरण-कर्तृकम् ।

शष्कुली–क. १–२९. पिष्टकविशेषः । (वै. श.)

शस्त्रकर्म–सू. १–९१. शस्त्रनिर्वर्त्यं कर्म छेदनादि (वै. श.)

शस्त्रप्रणिधानम्–सू. ११–५५. शस्त्रावचारणम्—छेदनभेदनव्यधनदारणलेखनोत्पाटनप्रच्छनसीवनैषणक्षारजलौक-सश्चेति ।

शस्त्रम्–चि. २६–२७२. कृष्णं लोहम् । (चक्रः)

शस्यानि–चि. १–१ | ३७. अस्थिरहितानि फलानि । (चक्रः)

शाखा–सू. ३०–३१. तत्र युर्वेदः शाखा विद्या सूत्रं ज्ञानं लक्षणं तन्त्रमित्यनर्थान्तरम् ।

शाखा. सि. ९–३. शाखाशब्देन चेह शाखा इव शाखेति कृत्वा बाहुद्वयं सक्थिद्वयं चोच्यते । नेह शाखाशब्देन रक्तादिधातूनां ग्रहणं, रक्तादिधातूनां स्कन्धेऽपि विद्यमानत्वात् । (चक्रः)

शाखा–सू. ११–४८; १७–११३. रक्तादयो धातवस्त्वक् च, स बाह्यो रोगमार्गः ।

शाणः–क. १२–८९. त्रयो माषकाः । (चक्रः)

शान्ताग्निम्– चि. ७–३७. नष्टाग्निम्

शारीरः–चि. ७–३६. शरीरजातः

शार्करः–सू. २७–१८३. शर्कराप्रकृतिक आसवः । (चक्रः)

शालाक्यम्– सू. ३०–२८. पटलवेधशलाकाप्रधानमङ्गं शालाक्यम् । (चक्रः); शालाक्यं नामोर्ध्वजत्रुगतानां श्रवणनयनवदनघ्राणादिसंश्रितानां व्याधीनामुपशमनार्थम् । (सु. १–८ । २); शलाका पटलवेधनी, तस्याः कर्म शालाक्यं; ब्राह्मणादित्वात् ष्यञ्, शालाक्यप्रधानमङ्गं शालाक्यम् । एतेन शिरोरोगप्रतीकारस्यापि ग्रहणं, प्राधान्यं च शालाक्यस्य प्रधानचक्षुर्विषयतया । (शिवदाससेनः)

शालाक्यतन्त्रम्–चि. २६–१२३ शलाकाविषय-मधिकृत्य कृतं शास्त्रम् ।

शास्त्रम्-सू. ३०-३१. आयुर्वेदः ।

शास्त्रवादः-सू. ११-२७. शास्त्ररूपो वादः ।

शिरः-सू. १७-१२. प्राणाः प्राणभृतां यत्र श्रिताः सर्वेन्द्रियाणि च । यदुत्तमाङ्गमङ्गानां शिरस्तदभिधीयते ॥

शिरःशूलम्-चि. ८-१६. शिरोरोगः (वै. श.)

शिरोधरा-सू. १७-२१. ग्रीवा ।

शिरोवस्तिः-सि. ९-७८. आशिरोव्यायतं चर्म कृत्वाऽष्टाङ्गुलमुच्छ्रितम् । तेनावेष्ट्य शिरोऽधस्तान्माषकल्केन लेपयेत् ॥ निश्चलस्योपविष्टस्य तैलैः कोष्णैः प्रपूरयेत् । धारयेदारुजः शान्त्यै यामं यामार्धमेव वा ॥ शिरोवस्तिर्हरत्येष शिरोरोगं मरुद्भवम् । (यत्र:)। शिरोवस्तिप्रमाणः स दृढगुणो द्वादशाङ्गुलः । शिरःप्रमाणकं बद्ध्वा मस्तके माषपिष्टकैः । तन्निरोधं विधायाशु स्नेहैः कोष्णैः प्रपूरयेत् । तावद् धार्यस्तु यावत् स्यात् नासाकर्णमुखस्रुतिः ॥ (वै. श.)

शिरोरुक्-चि. ८-२५. शिरोरुजा ।

शिरोरुहाः- इ. ८-१८ केशाः ।

शिरोविरेकः-सि. ९-७३. शिरोविरेचनम्, नस्यभेदः ।

शिरोविरेचनम्-सि. ९-७७. शिरोविरेकः ।

शिरोविरेचनोपगः-सू. ४-८. शिरोविरेचनक्रियायाः सहायत्वेनोपगच्छतीति; चत्वारिंशत्तमो महाकषायः ।

शिशिरज्वरः-चि. ३-२७०. शीतज्वरः । (श.क.)

शीघ्रकारित्वम्- चि. ३-५५. शीघ्रं करोति इति शीघ्रकारी तस्य भावः शीघ्रकारित्वम्; स शीघ्रं शीघ्रकारित्वात् प्राणं याति हन्ति वा ।

शीतः-सू. ४-७. द्रव्यादपोथितात्तोये प्रतप्ते निशि संस्थितात् । कषायो योऽभिनिर्याति स शीतः समुदाहृतः ॥

शीतकषायः-चि, ३-१९७. द्रव्यं तंडुलमुष्णोदके क्षिप्य निशास्थितम् । शीतः सर्वैर्मुनिभिः मतः (श. द.)

शीतज्वरः- चि ३-२६७. शिशिरज्वरः

शीतप्रशमनः-सू. ४-८. शीतं प्रशमयति इति; द्विचत्वारिंशत्तमो महाकषायः ।

शीतरसः-चि. ७-४४. शीतकषायः ।

शीतरसिकः-सू. २७-१८५. शीतेक्षुरसकृतः मदिरः ।

शीतलम्-सू. २७-११०. शीतम् ।

शीताङ्गः-चि. ३-३२५. शीतस्पर्शाङ्गः ।

शीधुः-चि. ८-१४० शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् ॥ (प. द.)

शीलम्-वि. ४-८. वस्तुषु सहजो रागः ।

शीर्षविरेचनम्-वि. ९-१७. शिरोविरेचनम् ।

शुक्तम्-चि. २९-६. कन्दमूलफलादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रनागरम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥ (च. चि. २६-२२७ चक्र:) गुडमाक्षिकधान्याम्लमस्त्वम्बु-तिगुण क्रमात् । संधानि चुक्रमिच्छन्ति किंचित् त्रिमधुकान्वितम्॥ (वै. श.)

शुक्तिः-क. १२-१६. द्वे सुवर्णे पलार्धं स्याच्छुक्तिरष्टमिका तथा ।

शुक्रम्-चि. १५-१६. रसाद्रक्तं ततो मांसं मांसान्मेदस्ततोऽस्थि च । अस्थ्नो मज्जा ततः शुक्रं शुक्राद् गर्भः प्रसादजः ॥

शुक्रम्-चि. ३०-१३३. बीजं यस्माद् व्यवाये तु हर्षयोनिसमुत्थितम् । शुक्रं पौरुषमित्युक्तं, तत् स्त्रीपुरुष-संयोगे चेष्टासंकल्पपीडनात् शुक्रं प्रच्यवते स्थानाज्जलमार्द्रात्पटादिव । (चि. २-४/४७) चातो विश्वरूपस्य रूपद्रव्यं यदुच्यते (चि. २-४/४९)

शुक्रजननः-सू. ४-८. शुक्रोत्पादक एकोनत्रिंशो महाकषायः ।

शुक्रदोषः-चि. ३०-१२९. वीर्यदोष ।

शुकलः–सू. २७ ६५. शुक्रवृद्धिकरः; यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुकलं हि तदुच्यते। यथा नागबलाद्याः स्युः बीजं च कपिकच्छुजम् ॥ (व. द.)

शुक्रवाहिनी नाडी वि. ९–४ शुक्रवहस्रोतः।

शुक्रवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–९९. शुक्रप्रापण्यो नाड्यः।

शुक्रशोधनः–सू–४–८ शुक्रं शोधयति विमलीकरोति यः सः विंशो महाकषायः।

शुक्रसारः–वि. ८–१०९, शुक्रं वीर्यापरनामकः सप्तमो धातुः सारः उत्कृष्टः विशुद्धतरो यस्मिन्सः।

शुक्राशयः–चि. ३१–७२. वीर्याशयः।

शुचिः–सू. २८–२८. शोधनम्।

शुद्धसत्त्वम्–शा.–४–३६. सत्त्वगुणप्रधानं चित्तम्।

शुष्कम्–सू. ५–१०. नीरसम्।

शुषिरकरम्–सू १२–७ रन्ध्रकरम्।

शूकधान्यम्–सू. २७–६. श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रसहितं धान्यम्।

शून्यता–सू. १७–३९. चित्तस्यानुपस्थितत्वम्।

शूर्पः–कं. १२–९६. द्रोणस्तु द्विगुणः शूर्पो विज्ञेयः कुम्भ एव च।

शूलम्–चि. २१–३० शङ्कुस्फटनवत्तस्य यस्मात्तीव्राश्च वेदना। शूलासक्तस्य लक्ष्यन्ते तस्माच्छूलमिहोच्यते ॥ (सु. उ. ४२–८१)

शूलप्रशमनः–सू. ४–८. शूलं प्रशमयतीति, पञ्चचत्वारिंशत्तमो महाकषायः

शूल्यानि–चि. ६–४७. शूलपक्वानि।

शृतः–सू. ४–७. यद्दो तु क्वथितं द्रव्यं शृतमाहुश्चिकित्सकाः।

शृतशीतम्–चि. ३–१४६ पूर्वं शृतं पश्चात् शीतम्।

शोकः–सू. २५–४०. बन्ध्वादिवियोगजन्यमनोवेदना।

शोणितम्–इ. ३–४. रक्तम्।

शोणितमोक्षः–चि. ७–१७२. रक्तमोक्षः। (पा. क.)

शोणितवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. शोणितं वहन्ति नयन्ति ये ते मार्गाः

शोणितस्थापनः–सू. ४–८. शोणितस्य दुष्टस्य दुष्टिम् अपहृत्य प्रकृतौ शोणितं स्थापयति इति (चक्रः)। षट्चत्वारिंशत्तमो महाकषायः।

शोथहरः–सू. ४–८. शोथं हरति इति. अष्टत्रिंशो महाकषायः।

शोफः–सू. १७–२९. शोथः।

शोषः–चि. ८–१६३. शरीरशोषको रोगविशेषः, राजयक्ष्मा।

शोषणः–सू. २५–४०. शोषयतीति।

शौचाधानम्–सू. ५–९८. पानीयेन मृदा च शुचित्वापादनम्।

श्मश्रु–सू. २८–४. पुंमुखे दीर्घलोमराजिः।

श्रमहरः–सू. ४–८. परिश्रमं हरति यः सः, चत्वारिंशत्तमो महाकषायः।

श्रोत्रम्–इ. १–३. श्रवणेन्द्रियम्।

श्लक्ष्णः–सू. २६–११. खरविपरीतः।

श्लेष्मप्रकृतिः–वि. ६–१३. श्लेष्मलः, श्लेष्मा कफः प्रकृतिः स्वभावतः प्रबलो यस्मिन्सः।

श्लेष्मा–सू. १२–१२. कफः

श्लोकस्थानम्-वि. ८-३९. सूत्रस्थानम्, श्लोकार्थसंग्रहार्थश्च श्लो स्थानमतः स्मृतम्।

श्वयथुः-चि १०-२३. शोथः।

श्वसनम्-शि ९-१६. श्वासः।

श्वासः-वि. ८-२६. प्राणवायोर्नासिकागलमार्गेण निर्गमप्रवेशौ श्वासः, तद्विकारोपलक्षितो रोगविशेषोऽपि श्वासः।

श्वासहरः-सू. ४-८. श्वासघ्न।

श्वित्रम्-चि. ७-१६२. श्वेतकुष्ठम्। (श.क.)

षडङ्गम्-शा ३-४. षडङ्गानि बाहुद्वयसक्थिद्वयशिरोऽन्तराधिरूपाणि यस्य तत्।

षण्ढः-इं. १२-१६. नपुंसकः।

ष्ठीवनम्-वि. ३-१०८. मुखेन श्लेष्मोद्वमनम्। (श. क.)

सक्तुः-सू. १३-२४. भृष्टयवादिचूर्णम्।

सक्थि-शि. ३-१८. ऊरुदेशः।

सङ्करस्वेदः-सू. १४-४१. तत्र वस्त्रान्तरितैरवस्त्रान्तरितैर्वा पिण्डैर्यथोक्तैरुपस्वेदनं सङ्करस्वेद इति विद्यात् (सू. १४-४१); पिण्डैर्यथोक्तैरिति तिलमाषादिभिः कृशरापायसादिमन्थोत्कपुटकस्वेदश्च पिण्ड, स्वेदनमेवोपस्वेदनम्। (चक्र:)

सङ्क्षेप-सू. २५-४०. संक्षिप्तलक्षणः।

सङ्कीर्णभोजनम्-सू. १७-२७. विरुद्धाहारः।

सङ्गः-वि. १-७. अप्रवृत्तिः।

सतत-चि ३-३४. तत्र सन्तते ज्वरे बलवता दोषेण धात्वादि प्रकुपितत्वाद् बलवान् कालो नियम्यते, सततके तु सन्ततकालापेक्षया हीनबलेन दोषेणाल्पो ज्वरकालः, स ह्यहोरात्रे द्विकालेनात्र व्यापको भवति।

सततक-चि ३-६१. ६२. रक्तधात्वाश्रयः प्रायो दोषः सततं ज्वरम्॥ सप्रत्यनीकं कुरुते कालवृद्धिक्षयात्मकम्। अहोरात्रे सततको द्वौ कालावनुवर्तते॥ प्रायोग्रहणात् सततको रक्तव्यतिरिक्तं मांसादिधातुमप्याश्रयत इति दर्शयति। सप्रत्यनीक इति कालादिषु मध्येऽन्यतमः प्रत्यनीकः। कालवृद्धिक्षयात्मकमिति काल वृद्धिक्षयोचिते काले वृद्धिः क्षयश्च यस्य स कालवृद्धिक्षयात्मा। तेन, दोषानुगुणे काले ज्वरो भवति, दोषानुगुणकालव्यतिरिक्ते च काले क्षयो भवति। ज्वरस्य च प्रकृतिरूपाणां मध्येऽन्यतमाद्रूपात्तौ कस्यामपि दोषसंप्राप्तिमहिम्ना द्विकालभावित्वनियमो ज्ञेयः। (चक्र.)

सत्त्वम्-सू. ८-४. वि. ८-११०. अतीन्द्रियं पुनर्मनः सत्त्वसंज्ञक, 'चेत' इत्याहुरेके तदर्थात्मसंपदायत्तचेष्टं चेष्टाप्रत्ययभूतमिन्द्रियाणाम्॥ चेत इत्याहुरेक इति परमतस्याप्रतिषेधात् स्वमतमप्यनुमतम्। पर्यायकथनं शास्त्रे व्यवहारार्थम्। तदिति मन. अर्थो मनोऽर्थः स च सुखादिश्चिन्त्यविचार्यादिश्च आत्मा चेतनाधिष्ठाता, अनयोः सम्पत् तदर्थात्मसम्पत्, तदायत्ता चेष्टा व्यापारो यस्य तत्तथा; तत्रार्थसम्पत् सुखादीनां चिन्त्यादीनां चाभिमुख्यं च आत्मसम्पदर्थग्रहणे प्रयत्नाभिमुख्यं, मनश्चेष्टा च सुखादिज्ञानं तथा चिन्त्यचिन्तनादि तथा चक्षुरादिप्रेरणं च। इन्द्रियाणां चक्षुरादीनां या चेष्टा स्वविषयग्रहणादिज्ञानलक्षणा, तत्र प्रत्ययभूतं कारणभूतं, मन इति योज्यम्। एतेनैतदुक्तं भवति-यदा सुखादयश्चिन्त्यादयोऽपि विषया भवन्त्यात्मा च प्रयत्नवान् भवति तदा मनः स्वविषये प्रवर्तते, इन्द्रियाणि चाधितिष्ठति, इन्द्रियाणि च मनोऽधिष्ठितान्येव स्वविषयग्रहणे प्रवर्तन्ते। (चक्र:)

सत्त्वसारः-वि. ८-११०. सत्त्वं मनः, सारः विशुद्धतरो धातुः, उत्कृष्टं बलवद् वा यस्मिन्सः।

सत्त्वावजयः-सू. ११-५४. अहितेभ्योऽर्थेभ्यो मनोनिग्रहः।

सत्त्वौदार्यम्-सू. २१-५६. सत्त्वगुणभूयिष्ठत्वम्।

सदनम्-सू. १७-५३. अवसादः।

सद्यःप्राणहराणि-वि. ८-९४. शीघ्रघातीनि।

सन्धातृ-सू.-२७-२४५. सन्धानीयम्।

सन्धानकरः-सू. १२-८. सद्रूहनकरः (श. क.)

सन्धानम्-सू. १-१०८. घातविशेषात् द्विधाभूतस्य अवयवस्य ऐक्यभावः (व. द.)

सन्धानीयः-सू.-४-८. भग्नसंयोजनः (वै. श.), पंचमो महाकषायः।

सन्धायसंभाषा-वि. ८-१७. अनुलोमसंभाषारूपो वादः।

सन्धारणम्-सू. १७.-८. वेगसंवारणम्, वेगावरोधः।

सन्धिः-इ. ३-४. अस्थिसंयोगस्थानम् (वै. श.)

सन्निपतिताः-चि. ३-१२९. त्रयोऽपि मिलिताः।

सप्रत्यनीकः-चि. ३-६२. कालादिषु मध्येऽन्यतमः प्रत्यनीकः तेन सहितः।

समक्रियत्वम्-चि. ६-७. क्रियायाः दोषेण तुल्येण प्राविरुद्धत्वम्।

समधातुः-वि. ८-९५. समाः स्वप्रमाणस्थिताः क्षयवृद्धिरहिता धातवो यस्य सः।

सममांसचयः-सू. २१-१९. समः नातिस्थूलकृशः मांसस्य चयः वृद्धिः यस्मिन्सः। क्षुत्पिपासातपसहः शीतव्यायामसंसहः। समपक्ता समजरः सममांसचयो मतः॥

समयः-वि. ८-५४ सिद्धान्तः, समयः पुनस्त्रिधा भवति; यथा-आयुर्वैदिकसमयः-चतुष्पादं भेषजमिति, याज्ञिकसमयः-आलभ्या यजमानैः पशव इति, मोक्षशास्त्रिकसमयः-सर्वभूतेष्वहिंसेति।

समयोगः सू. ११-४३. समः हीनातिमिथ्यात्वरहितः अर्थानां कर्मणः कालस्य च योगः मेलनं समयोगः।

समयोगवाहि-शा ६-४. समेन उचितप्रमाणेन धातूनां मेलनेन सम्यङ् नीरोगतया वहतीति समयोगवाहि।

समवायः-सू. १-२९, ५०. समवायोऽपृथग्भावो भूम्यादीनां गुणैर्मतः। स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रानियतो गुणः॥ (द्रव्यगुणसंग्रहः)

समवायिकारणम्-सू. १-५१. यत् स्वसमवेतं कार्यं जनयति।

समवायी-सू. १-५१. समवायवान्।

समशनम्-चि. १५-२३५. पथ्यापथ्यमिहैकत्र भुक्तं समशनं मतम्; हिताहितोपसंयुक्तमन्नं समशनं स्मृतम्। (सु. सू. ४६-५०८).

समाग्निः-वि.-६-१२. अपचारतो विकृतिमापद्यमानोऽनपचारतः प्रकृतावपतिष्ठमानोऽग्निः।

समातीतम्-सू. २७-३०९. एकवर्षातीतम्।

समानः-वि. ६-४. उभयवाचकत्वेन तुल्यः।

समावृतः-चि. २१-२९. सम्यक् प्रकारेण आवृतः

समासः-सू. ३०-१८. संक्षेपः

समीरणः-वि. ४-८ वायुः

समुच्चयः-वि. १२-४४. यदिदं चेदं चेतिकृत्वा विधीयते।

समुत्क्लिष्टाः वि. २-९. प्रकुपिताः।

समुत्क्षिप्ता-चि. २८-४१ अतित्वरिता।

समुदीरणम्-चि-९-७ प्रेरणम्।

समृद्धः-इ. ९-४ उपचितः।

सम्यग्योगः-सि. ६-१० हीनातिमिथ्यायोगविपरीतं यथा स्यात्तथा प्रवर्तनम्।

सरः-सू. २७-२३७. मलानामपानवायोश्च प्रवर्तकः, सरोऽनुलोमनः प्रोक्तः सरस्तेषां प्रवर्तकः। (व. द.)

सरत्वम्-चि. २/४-४८. अस्थैर्यम्।

सर्पिः-चि. ५-१८३ घृतम्, दुग्धसम्भूतस्नेहः। (वै. श.)

सर्पिर्मण्डः-चि. २६-२३२. घृतस्योपरितनोऽच्छो भागः।

सर्वग्रहः वि. १-२१ | ४. सर्वस्य आहारस्य प्रमाणग्रहणमेकपिण्डेन सर्वग्रहः।

सर्वक्षमः-सि. १२-९. सर्वरसाभ्यासक्षमः।

सर्षपी-सू. १७-८७. पिडका नातिमहती क्षिप्रपाका महारुजा। सर्षपी सर्षपाभाभिः पिडकाभिश्चिता भवेत्॥

सात्म्यम्-वि. १-१९-२०. सात्म्यं नाम तद्यदात्मन्युपशेते सुखयति अपथ्यमपि सद्विकारं न जनयति। सात्म्यार्थो ह्युपशयार्थः; ओकसात्म्यद्-ओकादभ्यासाद् सात्म्यम्। उपशेते यदौचित्यादोकसात्म्यं तदुच्यते।

सात्म्यम्-वि. ८-१३० यद् यस्य सेवितं सुखाय सम्पद्यते तत्तस्य सात्म्यम् (वै. श.)

सात्त्विकः-चि. २४-५५ सत्त्वगुणप्रधानः।

साद्गुण्यम्-वि. १-२४ | १ प्रशस्तगुणयोगिता।

साधनम्-चि. १-१ | २. चिकित्सितं व्याधिहरं पथ्यं साधनमौषधम्। प्रायश्चित्तं प्रशमनं प्रकृतिस्थापनं हितम्। विद्याद् भेषजनामानि।

सानुबाधनम्-चि १-१ | ५. दीर्घकालावस्थायी कुष्ठादिविकारकारी अभेषजप्रकारः।

सामान्यम्-सू. १-२८. सामान्यमेकत्वकरम्। तुल्यार्थता हि सामान्यम्।

सारः-सू. १-७३ वृक्षान्तर्गतकठिनकाष्ठम्।

सारः-वि. ८-१०२. विशुद्धतरो धातुः।

साहसम्-चि. ८-१९. सदृशां शक्तिमनालोच्य यानि क्रियन्ते तानि साहसानि।

सिद्धम्-सि. ३-४६. पक्वम्, साधितम्, संस्कृतम्।

सिद्धसाधिताः-सू. ११-५०, ५२ श्रीयशोज्ञानसिद्धानां व्यपदेशादतद्विधाः। वैद्यशब्दं लभन्ते ये ज्ञेयास्ते सिद्धसाधिताः।

सिद्धिः-सू. २५-२२. उत्पत्तिः।

सिराः-स. ३०-१२ सरणात् सिराः।

सिराकर्म-चि. २६-२०४ सिराव्यधनम्।

सिराजालम्-सू. १७-२१. सिराणां जालकाकारेण ग्रथनम्।

सिरानद्धः-चि, ५-१६९. सिराभिः आसमन्ताद्बद्धः नद्धः।

सिराव्यधनम्-चि. ७-४० सिरावेधः।

सीधुः-चि. ८-१६५ पक्वापक्वेक्षुरसकृतमद्यम्। (वै. श.)

सीमन्तः-इ. ८-६. केशविन्यासः।

सीवनम्- चि. २५-५५. विभक्तस्य सूत्रेण सूच्या च सन्धानम्।

सुकम्-सू. २४-७. कन्दादिकृतसन्धानविशेषः। (वै. श.)

सुखम्-स ३०-१३. आरोग्यम्।

सुगन्धिः- सू. २७-१६७. शुभगन्धः।

सुप्तसुप्तानि-चि. १४-१७. अत्यर्थं निश्चेतनानि।

सुप्ताङ्गता-चि. ७-१२. अङ्गानामसंवेदनशीलता।

सुप्तिः-चि. १२-१२. स्पर्शाज्ञानम्।

सुभावितम्-चि. ५-१५३. द्रवद्रव्येण सुष्ठु आर्द्रीकृतम्।

सुमदम्-चि. २४-७५. सममदम् ।

सुमुखाः-चि. २४-८०. प्रियाकाराः ।

सुमूर्च्छितम्-चि. २९-७९. साधु मिलितम् ।

सुरा-सू. २७-१२३. अनुद्धृतमण्डा ।

सुरासवः-सू. २७-१८७. सुराकृत आसवः यत्र सुरयैव तोयकार्यं क्रियते ।

सुषमा-इ. ७-८. परमा शोभा ।

सुसंहननम्-वि. ८-११६ निबिडसन्धानम् ।

सूक्ष्मः-सू. १-५९. सूक्ष्मस्तु सौक्ष्म्यात् सूक्ष्मेषु स्रोतःस्वनुसरः स्मृतः ।

सूतिकागारम्-शा. ८-३३. यत्र गर्भिणी प्रसूता, यत्र च तिष्ठति तत् सूतिकागारम्, अरिष्टम् ।

सूत्रम्-सू. ३०-३१. आयुर्वेदः । तत्र सूचनात् सूत्रणाच्चार्थसन्ततेः सूत्रम् ।

सूपः-सू. १३-२३. मुद्गादि द्विदलदालीनिर्मितं द्रवं भोजनम् ।

सेचनम्-चि. २१-१५. सेकः ।

सेवनी-चि. ९-४. मेढ्राधोभागे चर्मसन्धिः ।

सौम्यः-सू. ६-५. सोमगुणप्रधानः ।

सौवीरम् चि २९-६. काञ्जिकभेदः । सौवीरं तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम् । गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिदूचिरे ॥ (व. द.)

सौवीरम्-सू. ५-१५. सुवीरानदीभवं सौवीरम् ।

सौवीरकम्-सू. २७-१९१. मद्यविशेषः ।

सौहित्यम्-सू ५-६. मात्रातिक्रमेण तृप्तिः, तृप्तिमात्रं वा ।

संकरः-चि. १७-७१. स्वेदविशेषः ।

संकल्पः-चि. २ | ४-४७. योषिदनुरागः ।

संख्या-नि. १-१२ | २. सू. २६-१२. गणना. संख्या स्याद् गणितम्, गणितमित्येकद्वित्र्यादि ।

सङ्गः-वि. ४-८. नार्यादिसङ्गः ।

संग्रहणः-चि. ८-१२८. संग्राही ।

सांग्राहिकम्-सू. २५-४०. आग्नेयगुणभूयिष्ठं तोयांशं परिशोषयेत् । संगृह्णाति मलं तत् स्याद् ग्राही शुण्ठ्यादयो यथा (व. द.)

संज्ञा-शा. १-१५४. आलोचनं निर्विकल्पकम् ।

संज्ञानाशः-सि. ६-८५. चेतनानाशः ।

संज्ञास्थापनः-सू. ४-८. संज्ञां ज्ञानं च स्थापयतीति संज्ञास्थापनः, अष्टचत्वारिंशत्तमो महाकषायः ।

संतर्पणम्-वि. ८-४८. तृप्तिजनकं धातुवर्धनं च । (व. द.)

संतापः-चि. ३-२६. देहेन्द्रियमनसां तापः ।

संदीपनम्-चि. ५-१६८. अग्निदीप्तिकरम् ।

संधारणम्-वि. ५-१०. वेगनिरोधः ।

संतानदोषः-मृतवत्सत्वादिः ।

संपत्-शा. २-६. प्रशस्तगुणता ।

संप्रतिपत्तिः-वि. ७-८. सम्यक् प्रतिपत्तिः ।

संप्रसादनाः-चि. २१-९८. सवर्णकराः सवर्णे साध्ये कर्तव्या इत्यर्थः; किंवा संप्रसादनाः इति रक्तपित्तप्रसादनाः ।

संप्राप्तिः-नि. १-६, ११. जातिः जन्म; संप्राप्त्यागतिजातिशब्दैर्योऽर्थोऽभिधीयते स व्याधेः संप्राप्तिरित्यर्थः ।

व्याधिजनकदोषव्यापारविशेषयुक्तं व्याधिजन्मेह संप्राप्तिशब्देन वाच्यम्, अत एव पर्याये "आगतिः" इत्युक्तम्। आगतिर्हि उत्पादककारणस्य व्याधिजननपर्यन्तं गमनम्। इयं च संप्राप्तिर्व्याधिविशेषं बोधयत्येव। यथा ज्वरे "स यदा प्रकुपितः प्रविश्यामाशयम्" इत्यारभ्य 'तदा ज्वरमभिनिर्वर्तयति' इत्यन्तेन या संप्राप्तिरुच्यते, तया ज्वरस्यामाशयसमुत्थत्वान्नुपघातकत्वरसदूषकत्वादयो धर्माः प्रतीयन्ते। न च वाच्यं—दोषाणामयमामाशयदूषकत्वादिर्धर्मः, ततश्च कारणधर्माणां निदानग्रहणेनैव ग्रहणं भवतीति; यतः कारणधर्मोऽप्ययं पृथक् कृत्वोच्यते; यथा — लिङ्गत्वाविशेषेऽपि भाविव्याधिबोधकत्वविशेषात् पूर्वरूपं पृथगुच्यते, अत एव वाग्भटेऽप्येवमेव संप्राप्तिलक्षणमुक्तं—"यथा दुष्टेन दोषेण यथा चानुविसर्पता। निर्वृत्तिरामयस्यासौ संप्राप्तिर्जातिरागतिः" (वा. नि. अ. १) इति। (चक्रः)

संभवः–सि. १२–४५. संभवो नाम यद्यस्मिन्नुपपद्यते स तस्य संभवः; यथा मुखे पिप्लुव्यङ्गनीलिकादयः संभवन्तीत्यादि। (चक्रः)

संभारः–वि. ७–२६. तद्योग्याखिलद्रव्यसमुदायः।

संभाषा–वि. ८–१५. भिषक् भिषजा सह संभाषेत। तद्विद्यसंभाषा हि ज्ञानाभियोगसंहर्षकरी भवति, वैशारद्यमपि चाभिनिर्वर्तयति, वचनशक्तिमपि चाधत्ते, यशश्चाभिदीपयति, पूर्वश्रुते च संदेहवतः पुनः श्रवणाच्छ्रुतसंशयमपकर्षति, श्रुते चासंदेहवतो भूयोऽध्यवसायमभिनिर्वर्तयति, अश्रुतमपि च कंचिदर्थं श्रोत्रविषयमापादयति, यच्चाचार्यः शिष्याय शुश्रूषवे प्रसन्नः क्रमेणोपदिशति गुह्याभिमतमर्थजातं तत्परस्परेण सह जल्पन् पिण्डेन विजिगीषुराह संहर्षात् तस्मात्तद्विद्यसंभाषामभिप्रशंसन्ति कुशलाः।

संभाषाविधिः–वि. ८–१५. द्विविधा तु खलु तद्विद्यसंभाषा भवति–सन्धायसंभाषा, विगृह्यसंभाषा च।

संमोहः–सू. १०–२०. मनसो मोहः।

संयोग–वि. ६–१०. द्वयोर्बहूनां वा द्रव्याणां संहतीभावः।

संवत्सरः–सू. ३०–२५. वत्सरः।

संवाहनम्–सू. ७–२३; चि. २–३/२५. पाणिना पादादिप्रदेशे सुखमभिहननमुन्मर्दनं च (चक्रः)

संवृतः–च. २५–२०. आवृतमुखः।

संवृतकोष्ठः–सि. २–८. वायुनाऽल्पीकृतकोष्ठः, वायुव्याप्तकोष्ठ इत्येके।

संवृत्तिम्–इ. १२–५६. निष्पत्तिम्।

संशमनम्–चि. ३–३१६. न शोधयति यद्दोषान् समान्नोदीरयत्यपि। समीकरोति च क्रुद्धांस्तत् संशमनमुच्यते॥ (सु. सू. ३९–७ डल्हणः)

संशयः–सि. १२–४३. विशेषाकांक्षाऽनिर्धारितोभयविषयज्ञानम्; यथा मातरं पितरं चैके मन्यन्ते जन्मकारणम्। स्वभावं परनिर्माणं यदृच्छां चापरे जनाः (सू. अ. ११)।

संशोधनम्–चि. ३–२२७ स्थानाद् बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वा मलसंचयम्। देहसंशोधनं तत् स्याद् देवदालीफलं यथा॥ (वृ. द)

संसर्गः–सि. ८–२१. दोषद्वयमेलकः।

संसर्गः–शा.–३–३. मैथुनम्।

संसर्जनक्रमः–सू. १६–२६. पेयादिक्रमः।

संसृष्टाः–चि. ३–१२९. युग्मभूताः

संस्कारः–सू. २६–३४; वि. १–२२. संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते। ते गुणास्तोयाग्निसंनिकर्षशौचमन्थनदेशकालवासनभावनादिभिः कालप्रकर्षभाजनादिभिश्चाधीयन्ते॥

संस्कारवादः शा. २–१९. संस्कारेण वस्तिराजीकरणादिना परं यस्य शुक्रमदुष्टद्वारं सत् प्रवर्तते स संस्कारवादः (चक्रः)

संस्तम्भः–सि. ९–४०. स्तब्धता।

संस्थानम्-नि. १-९. संस्थानमाकृतिर्ज्ञेया सुषमा विषमा च या (इ. अ. ७)।

संस्नेहनम्-चि. १-२९. संसर्जदनुवासनम्।

संस्पर्शनः-चि. २-४/४६. संस्पर्शनवान्।

संस्पर्शासहः-चि. ७-२४. हस्तादिस्पर्शेन तीव्रवेदनावान्।

संस्वादविशेषः-सू. २६-८. रसानामवान्तरभेदः। संस्वादभेदस्तु एकस्यामपि मधुरजाताविक्षुक्षीरगुडादिगतः प्रत्यक्षमेव भेदो दृश्यते, स तु संस्वादभेदः स्वसंवेद्य एव; यदुक्तं-"इक्षुक्षीरगुडादीनां माधुर्यस्यान्तरं महत्। भेदस्तथापि नाख्यातुं सरस्वत्याऽपि शक्यते" इति ॥ (चक्रः)

संहननम्-शा. ८-३२. शरीरम्। (रा. नि.)

संहर्षः-वि. ८-१५. स्पर्धा।

संहर्षणः-सू. २५-५०. मनःप्रसन्नताजनकः।

सांख्यः-शा. ५-१७. संख्या तत्त्वज्ञानं, तया वर्तत इति सांख्यः (चक्रः)

सांग्राहिकः-चि. ८-१३० ग्राही।

स्कन्धः-वि. ९-३. स्कन्धशब्देनान्तराधिरुच्यते (चक्रः)

स्कन्धः-नि. १-२१. बाहुग्रीवासन्धिः।

स्कन्धः-सू. २५-३८. समूहः।

स्कन्नम्-इ. ३-५. च्युतम्।

स्तन्यजननः-सू. ४-८. सप्तदशो महाकषायः।

स्तन्यम्-चि. ३०-२२९. दुग्धम्।

स्तन्यशोधनः-सू. ४-८. अष्टदशो महाकषायः।

स्तन्याशयः-चि. ३०-२४३. स्तनः।

स्तम्भनम्-सू. २२-१२. स्तम्भनं स्तम्भयति गतिमन्तं चलं ध्रुवम्। रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद् भवेत्। वातकृत् स्तम्भनं तत् स्याद् यथा वत्सकटुण्टुकौ ॥ समीरगुणभूयिष्ठं शीतत्वाद् यदसंस्वतः। विधाय वृद्धिं स्तम्भाति स्तम्भनं तद् यथा वटः ॥ (व. द.)

स्तैमित्यम्-सू. २१-४६. अङ्गानामार्द्रपटावगुण्ठितत्वमिव। (वै. श.)

स्थावरा-चि २३-६. अचलाः।

स्थिरम्-सू. २२-१४. स्थिरो वातमलस्तम्भी। (व. द.)

स्थूलम् सू. २२-११. स्थूल. स्याद् बन्धकारकः। स्थूलः स्थौल्यकरो देहे स्रोतसामवरोधकृत्। (व. द.)

स्निग्धम्-सू. २२-१५. स्नेहमार्दवकृत्स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा। स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम्। (व. द.)

स्नेहनम्-सू. २२-११. स्नेहनं स्नेहविष्यन्दमार्दवक्लेदकारकम्।

स्नेहपिचुः चि. ३०-१०८. भेषजसाधितक्वाथस्नेहाप्लुतं तूलकं वस्त्रखण्डं वा (व. द.)

स्नेहमात्रा-सू. १३-२९. स्नेहस्य परिमाणम्।

स्नेहसाध्यः-चि. ३-२१७. स्नेहसाध्यः।

स्नेहविधिः-चि ६-३७. स्नेहनविधिः।

स्नेहविमर्दनम्-सू. ५-८५. स्नेहेन मर्दनम्।

स्नेहविरेचनम्-चि. ५-१७२ स्नेहेन विरेचनम्।

स्नेहाभ्यङ्गः-सू. ५-८५. स्नेहेन अभ्यङ्गः।

स्नेहाशयाः-सू. १३-११. स्नेहस्थानानि।

स्नेहोपगः-सू. ४-८. एकविंशो महाकषायः।

स्नैहिकधूमः सू. ५-३७. वसाघृतमधूच्छिष्टैर्युक्तियुक्तैर्वरौषधः ॥ वर्ति मधुरकैः कृत्वा स्नैहिकीं धूममाचरेत् । (च. सू. ५-२५३)

स्पन्दनम्-सू. १८-७ | १ ईषत्कम्पनम् ।

स्पर्शनम्-सू. ५-८७. स्पर्शनेन्द्रियम् ।

स्पर्शविज्ञानम्-सू. ३०-६ स्पर्शो विज्ञायतेऽनेनेति. स्पर्शं वा विजानातीति स्पर्शविज्ञानम् ।

स्पर्शाज्ञत्वम्-चि. ७-११. स्पर्शज्ञानाभाववत्त्वम् ।

स्पर्शासहः चि. ५-१३. हस्तादिस्पर्शेन तीव्रवेदनाजनकः ।

स्मृतिभ्रंशः शा. १-१०१. तत्त्वज्ञाने स्मृतिर्यस्य रजोमोहावृतात्मनः । भ्रश्यते स स्मृतिभ्रंशः स्मर्तव्यं हि स्मृतौ स्थितम् ॥

स्रावः-सि. ५-७. स्रवः ।

स्रावणम्-सू. ५-१५ नेत्रस्रावणम् ।

स्रावणम्-चि. २३-४५ रक्तास्रावणम् ।

स्रावी-चि. २५-२०. व्रणभेदः ।

स्राव्यम्-चि. १५-७५. विरेचनीयम् ।

स्रोतः-सू. ३०-१२ वि-५-४. स्रवणात् स्रोतांसि ।

स्रोतसां प्रवर्तनम्-सू. १२-८ स्रोतसां प्रवृत्त्युत्पादनम् ।

स्रोतसां शोधनम्-सू. २७-१९३. स्रोतसां शुद्धिकारकम् ।

स्रोतोविशोधनम्-सू. २७-२२८. स्रोतसां शोधनम्

स्रंसः-सू. २०-१२ किञ्चित्स्वस्थानचलनम् ।

स्रंसः-इ. ३-४. मनागगमनम् ।

स्रंसनम्-चि. २८-२४१. पक्तव्यं यदपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम् । नयत्यधः स्रंसनं तद् यथा स्यात् कृतमालकः ॥ (श. द.)

स्वनः-इ. ५२२ शब्दः ।

स्वप्नः-वि. ८-८७. निद्रा ।

स्वप्नदर्शनम्-इ. १-३. स्वप्नानां दर्शनम् ।

स्वभावः-सू. ११-६. स्वकीयो भावः; परिदृश्यमानपृथिव्यादिभावानामेवायं स्वभावो-यत्-प्रयोगविशेषान्मिलिताः सन्तश्चेतनं पुरुषादिलक्षणं कार्यविशेषमारभन्ते, यथा सुराबीजादीनि प्रत्येकममदकराण्यपि मदकरं मद्यमारभन्ते, नात्र कश्चिदात्मा विद्यते यस्य परलोकः स्यादिति स्वभाववादिनो भावः । (चक्रः)

स्वरक्षयः चि. ८-२६ स्वरभेदः ।

स्वरश्च गन्धश्च-इ. १-१-३ स्वरादिग्रहणेन च स्वराद्यभावोऽपि गृह्यते. तेनाङ्गुलिपर्वशब्दाभावगन्धाभावादयोऽपि रिष्टान्यवरुध्यन्ते ।

स्वरसः सू. १-७३. सू. ४-७ स्वो रसः स्वरसः प्रोक्तः ।

स्वर्यम्-चि. ८-११५ स्वराय हितम् ।

स्वसंज्ञा-सि. १२-४४. या तन्त्रकारैर्व्यवहारार्थं संज्ञा क्रियते सा ।

स्वस्त्ययनम्-सू. ३०-२१ .स्वस्तिवाचनम् ।

स्वस्थवृत्तम्-शा. ६-७. येन विधिना स्वस्थस्तिष्ठति तदाचरणम् । (वै श.)

स्वस्थवृत्तिः-सू. १-६७. सुष्ठु अवतिष्ठते नीरोगत्वेनेति स्वस्थः तस्य वृत्तिः स्वस्थरूपतयाऽनुवर्तनम् ।

स्वाधारम्-वि. ८-३. शोभनाभिधेयम् ।

स्वाभाविकरोगः–शा. १–११५. कालस्य परिणामेन जरामृत्युनिमित्तजाः। रोगाः स्वाभाविका दृष्टाः स्वभावो निष्प्रतिक्रियः॥ जरामृत्युरूपाभिनिमित्ताज्जाता जरामृत्युनिमित्तजाः, मृत्युशब्देनेह युगानुरूपायुःपर्यन्तप्राप्तभवकालमृत्युर्ग्राह्यः किंवा जरामृत्योरैक्यमिति मत्तं तस्माज्जाता जरामृत्यु निमित्तजाः; जरामृत्युनिमित्तं च प्राणिनां साधारणदेहनिर्वर्तकभूतस्वभावोऽदृष्टं च। अथ स्वाभाविकानां का चिकित्सेत्याह–स्वभाव इत्यादि। निष्प्रतिक्रिय इति साधारणचिकित्सया रसायनवर्ज्यया न प्रतिक्रियते, रसायनेन तु प्रतिक्रियत एव; तेन "अस्य प्रयोगाच्च्यवनः सुवृद्धोऽभूत्पुनर्युवा" (चि. अ. १.) इत्यादि रसायनप्रयोगेण सम न विरोधः; किंवा, स्वाभाविका जरादयो रसायनजनितप्रकर्षादुत्तरकाले पुनरवश्यं भवन्तीति निष्प्रतिक्रियत्वेनोक्ताः। (चक्रः)

स्वास्थ्यम्–सू. सि. ६–२६. स्वस्थता।

स्वास्थ्यरक्षणम्–सू. ३०–२६. स्वस्थतानुपालनम्।

स्विन्नः–सू. २७–२५७. उत्स्विन्नधान्यतण्डुलकृतः, किंवा सम्यक्स्विन्नत्वेन मृदूभूतः।

स्वेदः–सू. १४–१. ततः सेकतपाणिर्भास्यक्सूतैः स्वेदोऽथवाङ्गारकैर्लेपाद् वातहरैः सद्दाम्ललवणस्नेहैः सुखोष्णैस्तथा। एवं तत्प्रयोऽप्युग्रातशमनकाथ दिसेकादिभिः स्वप्नैस्तोयनिषेचनोद्भवबृहद्भाण्डैः शिराधैः कवात्॥(व.द.)

स्वेदनम्–सू. २२–११ स्तम्भगौरव शीतघ्नं स्वेदनं स्वेदकारकम्।

स्वेदवाहीनि स्रोतांसि–वि. ५–८. स्वेदवहा धमन्यः।

स्वेदोपगः–सू. ४–१३. (२२) द्वाविंशो महाकषायः।

हनुः–इ. ३–५. कपोलाभ्यां परा चिबुकस्याधो हनुः।

हरितकम्–सू. ८–२०. आर्द्रकादि।

हरितम्–चि. ८–५१. शिरीषादि ग्रगतवर्गवत्।

हर्षः–चि. २/४. संकल्पपूर्वकशुक्रोद्रेकध्वजोच्छ्रायादिकारीच्छा।

हस्तौ–इ १–१२. भुजौ।

हावः–चि.२–१ | ९. नरं प्रति स्त्रीणां शृङ्गारचेष्टाविशेषः।

हिक्काघ्नम्–सि. ७–२७. हिक्काचिकित्सोक्तं भेषजम्।

हिक्कानिग्रहणः–सू. ४–८. त्रिंशो महाकषायः।

हितम्–सि. २–२४. पथ्यम्।

हिताशनैः उपेक्षेत–चि. ५–४६. हिताशनस्तिष्ठेत्, न किंचिद्भेषजं कुर्यात्।

हिताशी–चि. ९–९६. पथ्याशी।

हिताहितम्–सू. २५–३२. ३३. भगवन्तमात्रेयमग्निवेश उवाच–कथमिह भगवन् हिताहितानामाहारजातानां लक्षणमनपवादमभिजानीमहे। तमुवाच भगवानात्रेयः–यदाहारजातमग्निवेश समांश्चैव शरीरधातून् प्रकृतौ स्थापयति विषमांश्च समीकरोतीत्येतद्धितं विद्धि, विपरीतं त्वहितमिति; इत्येतद्धिताहितलक्षणमनपवादं भवति।

हिमम्–सू. २७–२००. हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति। यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः॥ (वै. श.)

हीनतेजाः–चि. ३–३३५. हीनकान्तिः।

हीनदृष्टिके–इ. ३–६. अदूरदर्शिनी, नष्टदृष्टिके वा।

हीनमात्रम्–सि. १–५९. हीनमात्रायां प्रयुक्तम्।

हीनयोगः–शा. १–१२८. हीनयोगेनेहायोगो ग्राह्यः।

हीनसत्त्वम्–चि. ९–२१. हीनमनसम्।

हीनाग्निः–सि. ६–५८. मन्दाग्निः।

हृत्–सि. १–१६. हृदयम्।

हृदयम्–सू. ३०–६,७. यस्मिंस्तत्र स्पर्शविज्ञानं धारि तत्तत्र संश्रितम्॥ तत् परस्यौजसः स्थानं तत्र चैतन्यसंग्रहः। हृदयं महदर्थश्च तस्मादुक्तं चिकित्सकैः॥

हृदयापकर्षणम्–सि. २–९ हृदयहिंसनम्।

हृद्यः–सू. ४–८ सि. २३–५५ मनोहरः।

हृद्विशोधनम्–चि. ७–१७ हृदयस्य विशोधनम्।

हृल्लासः–चि. ५–१५. उपस्थितवमनरयवान् उत्क्लेशः।

हृष्टः–सि. ९–८४ स्तब्धः।

हेतुः–सि. १–३८. कारणम्।

हेतुचतुष्टयम्–सू. ८–३० चत्वारो हेतवः।

हेतुप्रतीक्षिणः–सू. २८–३२. कारणापेक्षिणः।

हेतुवर्जनम्–चि. ७–२७ निदानस्य त्यागः।

हेतुविपरीतः–नि. १–१०. निदानेन विपरीतः।

हेतुविपरीतार्थकारि–नि. १–१० हेतुना विपरीतार्थकारि; विपरीतार्थकारि तदेवोच्यते यदविपरीततयाऽऽपाततः प्रतीयमानं विपरीतस्यार्थं प्रशमलक्षणं करोति (चक्रः)

हेतुवैषम्यम्–सू. १६–२७ हेतोः विषमता।

हेतुव्याधिविपरीताः–नि. १–१०. हेतुना तथा व्याधिना तथा हेतुव्याधिभ्यां च विपरीताः।

हेत्वर्थः–सि. १२–४१ हेत्वर्थो नाम यदन्यत्राभिहितमन्यत्रोपपद्यते; यथा–"समानगुणाभ्यासो हि धातूनां वृद्धिकारणम्" (सू. अ. १२) इति वातमधिकृत्योक्तं, तत्र 'वात'स्येतिवक्तव्ये यदयं समानशब्दं धातूनामिति करोति, तेन यथा वायोस्तथा रसादीनामपि समानगुणाभ्यासो वृद्धिकारणमिति गम्यते। (चक्रः)

हेत्वाभासाः–वि. ८–५९. हेतुवदाभासन्त इति हेत्वाभासाः। (चक्रः)

होमः–सू. ३०–२१. हवनम्।

हंसोदकम्–सू. ६–४७ दिवा सूर्यांशुसंतप्तं निशि चन्द्रांशुशीतलम्। कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम्॥ हंसोदकमितिख्यातं....।

ह्रासः–शा. ६–९. क्षयः।

ह्रीमत्त्वम्–चि. ८–२०. लज्जावत्त्वम्।

चरकसंहितागतः

The group of waters

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१ ऐन्द्रं जलम्	ऐन्द्रमिति प्राण्यदृष्टवशेनेन्द्रप्रेरितम्	
२ कारम्		करा वर्षोपलास्तेषां तोयम्
३ हिमम् (हैमम्)		तदेव (अवश्यायजं निशाजलमेव) संहतावयवत्वेन स्फटिकशिलाशकलसदृशावयवं हिमं तद्भवं हैमम्

चरकसंहितागतः

The group of milks

१ गव्यं पयः		
२ महिषीपयः (माहिषम्)		
३ उष्ट्रीपयः (औष्ट्रकम्)		
४ ऐकशफं पयः	ऐकशफमिति वडवायाः	एकशफा अश्वादयः
५ छागं पयः (आजम्)		
६ आविकं पयः		
७ हस्तिनीपयः		
८ मानुषं पयः		
९ दधि		
१० मन्दकम्	यदा क्षीरं विक्रियामापन्नं घनत्वं न याति तदा तन्मन्दकम्	
११ जातदधि	मन्दकावस्थामुत्सृज्य घनतया जातम्	
१२ सरः	दध्युपरिस्नेहः	
१३ मण्डः	दधिमण्डो मस्त्विरपर्यः	
१४ तक्रम्		

जलवर्गः ।

In the Caraka Samhita

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री

आन्तरिक्षम् (अ.); दिव्यम् (हे.)

निरुक्त्यादि

इन्द्रस्य इदम् ऐन्द्रम्

कराणामिदम्

गोरसवर्गः ।

in the Caraka Samhita

गोरिदं गव्यं पीयते इति पयः

महिष्या इदम्

महिष्याः पयः

उष्ट्रीणां क्षीरम् (अ.); कारभम् (हे.)

उष्ट्र्याः पयः

एकशफाया इदं ऐकशफम्

आजं-छागलं क्षीरम्

छाग्या इदं छागम्

अव्या इदं आविकम्

हस्तिन्याः पयः

मानुष्या इदम्

मन्थयति इति

तपति द्रुतं गच्छति इति, तक्रं पादजलं प्रोक्तम्

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१५ नवनीतम्		
१६ घृतम्		
१७ पीयूषः	सद्यःप्रसूतायाः क्षीरम्	सद्यःप्रसूतायाः गोः क्षीरं सप्ताहं यावत्
१८ मोरटम् (मोरटः)	तदेव (सद्यःप्रसूतायाः क्षीरमेव) यावन्न परतः प्रसन्नतां याति तावत् 'मोरट' इत्युच्यते	तदेव सप्ताहात् परतो यावत्प्रसन्नतां न गच्छति तावत् 'मोरट' इत्युच्यते
१९ किलाटः	नष्टक्षीरभागः यं लोका क्षीरसामित्याहुः	कूर्चिकीभूतक्षीरस्य घनभागः किलाटः; यं लोकाः क्षीरांशुमित्याहुः
२० तक्रपिण्डकः	तक्रकूर्चिकाया एव सुतदशो घनो भागः	

चरकसंहितागतः

The group of the products of Sugarcane

१ इक्षुः	
२ पौण्ड्रकः	
३ वंशकः	
४ गुडः	
५ क्षुद्रो गुडः	अचिर गुड इत्युच्यते
६ धौतगुडः	
७ मत्स्यण्डिका	खण्डमध्ये पाकात् घनीभूता मत्स्याण्डनिभा
८ खण्डशर्करा	
९ गुडशर्करा	
१० यासशर्करा	दुरालभाकाथकृता शर्करा
११ मधुशर्करा	मधुभाण्डेषु शर्कराकारा भवति

चरकसंहितागतः

The group of Honeys

१ माक्षिकम्	मक्षिकाः पिङ्गलाः तद्भवम्
२ भ्रामरम्	

महाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेनाम्नी	निरुक्त्यादि
	दध्नो मथितान्नवं तरलाकं नीतमुद्धृतं नवनीतं घृतयोनिः
	ध्रियते इति घृतम्।
	पीयते
	मुरति इति मोरटः
	तक्रस्य पिण्डः

इक्षुवर्गः
In the Caraka Samhita

	इष्यते इति इक्षुः
	पुण्ड्रदेशे जातः
	गुडति इति
	मन्दं स्यन्दते इति; मत्स्यानमति दजति इति; शर्करोक्ता तु मीनाण्डी श्वेता मत्स्यण्डिका सिता। (धन्वन्तरीयनिघण्टुः २–१०४)

मधुवर्गः
in the Caraka Samhita

	भ्रमरैः निर्मितम्

	चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहितातट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
३ क्षौद्रम्	क्षुद्रमक्षिकाभवम्	
४ पौत्तिकम्	पिङ्गला मक्षिका महत्यः पुत्तिकाः तद्भवम् ।	

चरकसंहितागतः
The Group of cooked foods

१ पेया	बहुद्रवा यवागूः (चक्रः)	पेया सिक्थसमन्विता (सु.) यवागूर्विरलद्रवा। (सु.)अत्र पेया यवागूरुच्यते, सा च सिक्थसमन्विता भवति । पेया यवागवपरपर्याया सिक्थसमन्विता विरलद्रवा । (ड.)
२ विलेपिका (विलेपी)	विरलद्रवा यवागूः (चक्रः)	विलेपी बहुसिक्था स्यात् (सु.) बहुसिक्था घनसिक्था पृथग्द्रवरहिता अत एव लेह्या (ड.)
३ मण्डः		तदुपरितनो (पेयाया उपरितनो) भागः (ड). सिक्थविरहितः (सु)
४ ओदनः		
५ कुल्माषः	यवपिष्टमुष्णोदकसिक्तमीषत्स्विन्नमपूपीकृतम् । (चक्रः) ।	यवपिष्टमुष्णोदके सिक्तमीषत्स्विन्नमृदितं शृङ्गाटादिप्रकारं कुल्माषमाहुः 'यवादयः स्विन्ना' इत्येके (ड.)
६ स्विन्नभक्ष्याः	उत्स्वेदनमात्रकृताण्डरिकादयः ।	
७ अकृतयूषः	अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना (चक्रः)	अस्नेहलवणं सर्वमकृतं कटुकैर्विना ।
८ कृतयूषः	विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम् ॥ (सु. सू. अ. ४६) [चक्रः]	विज्ञेयं लवणस्नेहकटुकैः संस्कृतं कृतम् ॥ (सु.)
९ यूषः		
१० सूपः		
११ सक्तुः		
१२ अपूपः		
१३ धान्यः	भृष्टयवौदनः । (चक्रः)	यवगोधूमादिभिर्दलितैः कृतः; अन्ये तु भृष्टयवकृतो भक्ष्य इत्याहुः । (ड)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
कृतान्नवर्गः । **in the Caraka Samhita**	
पेया सिक्थसमन्विता; निर्दिष्या प्राकृता पेया तक्र-दाडिमतण्डुलैः (अ.) अल्पसिक्था पेया (हे.)	पातुं योग्या ।
घनसिक्था विलेपी स्यात् (अ.) बहुसिक्था विलेपी (हे).	विलिम्पति इति ।
सिक्थैर्विरहितो मण्डः; लाजाम्बुसैन्धवकणाधान्यनागर-दाडिमैः। युक्तो विमृदितः पूतो मण्डः संस्कृत उच्यते॥(अ.) असिक्थो द्रवो मण्डः (हे.)	मण्डयति इति ।
अद्रवाणि सिक्थानि ओदनः। (हे.)	उनत्ति-क्लियति इति
यूषो धान्यैः (हे.)	यूषति इति
भृष्टानां निस्तुषयवानां चूर्णम् (हे.)	धानाचूर्णं सक्तवः स्युः न पूयते न विशीर्यते, अद्भिरुप्यते इति नैरुक्ताः

	चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहितातट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
१४ धानाः	भृष्टयवाः (चक्रः)	भृष्टयवाः (ड)
१५ विरूढधानाः	अङ्कुरितस्य यवस्य धानाः (चक्रः)	
१६ शष्कुल्यः	शालिपिष्टैः सतिलैस्तैलपक्वाः क्रियन्ते	'शांकुळी' इति लोके (ड.)
१७ मधुक्रोडाः	पाकघनीभूतमधुगर्भाः; मधुशीर्षक एव मधुक्रोडः (चक्रः)	
१८ पूपाः	पिष्टकाः (चक्रः)	"पुआ" इति लोके (ड.)
१९ पूपलिका	चापडिकेतिख्याता (चक्रः)	
२० वेशवारः	मांसं निरस्थि सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषितम्। पिप्पलीशुण्ठिमरिचगुडसर्पिःसमन्वितम् ॥ ऐकध्यं विपचेत्सम्यग्वेशवार इति स्मृतः।	मांसं निरस्थि सुस्विन्नं पुनर्दृषदि पेषितम् ॥ पिप्पलीशुण्ठिमरिचगुडसर्पिःसमन्वितम्। ऐकध्यं पाचयेत् सम्यग्वेशवार इति स्मृतः ॥ (सु.)
२१ क्षीरपूपकाः	क्षीरप्रधानाः पूपाः (चक्रः)	
२२ इक्षुरसपूपकाः		
२३ षाडवः	षाडवस्तु मधुराम्लद्रव्यकृतः (चक्रः)	स्पष्टाम्लमधुरोऽस्पष्टकषायलवणोषणः। अतिकः खाडवः कोलकपित्थाद्युपसंहितः(ड.)
२४ पर्पटः		
२५ पृथुकाः	चिपिटाः (चक्रः)	आर्द्रशालिधान्यं मृदु भृष्टं मुसलाघातचिप्पटीभूतावयवं 'पृथुका' इत्युच्यते (ड.)
२६ विमर्दकः	नानाद्रव्यैः समायुक्तः पक्वामक्लिन्नभर्जितैः (चक्रः)	
२७ रसाला	सचतुर्जातकाजाजि ससितार्द्रकनागरम्। रसाला स्याच्छिखरिणी संघृष्टं ससरं दधि (चक्रः)	शिखरिणी (ड.)
२८ पानकम्		पानकानि अम्लिकाद्राक्षादिकृतानि(ड.)
२९ रागषाडवः	कथितं तु गुडोपेतं सहकारफलं नवम्। तैलनागरसंयुक्तं विज्ञेयो रागषाडवः (चक्रः)	स तु दाडिममृद्वीकायुक्तः स्याद्रागषाडवः (सु.) स इति मुद्गयूषः (ड.)
३० आम्रामलकलेहाः	आम्रामलकलेहास्तु तयोः पृथक् क्वाथेन सशर्करेण घनाः क्रियन्ते।	
३१ शुक्तम् (चुक्रम्)	यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम्। धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते (चक्रः)	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
धाना भृष्टयवादि (अ.) भृष्टयवादि धान्यम् (हे).	धीयन्ते इति, धानाः शुष्कभृष्टयवाः (अ. को.)
	मधु कोशे येषां ते
	पुनन्ति इति
	पूपं तदाकारं याति
स्विन्नं पिष्टं गुडक्षीरकादिविमिश्रितं मांसम् (हे.) नागरधान्यकाजाजिहिङ्गुघृतादिसंस्कृतं मांसम् (अ.) (हे.)	
	क्षीरे भाविताः पूपकाः इति शिवदाससेनः
	इक्षुरसे भाविताः पूपकाः इति शिवदाससेनः
पृथुकाख्यिपिटसंज्ञाः (अ.) अशुष्कधान्यानां भृष्टास्तण्डुलाः (हे.)	
	निमर्दकः। विमर्दकः घृतगुडकान्वितद्रव्यमिति केचित् [अ.को.]
करमथितेन मरिचशर्करादियुक्तेन दध्ना कृता उल्लेखिकासंज्ञा (अ.) मरिचशर्करादियुक्तं करमथितं दधि (हे.)	रसमलति इति। दधिसितामरीचादिकृतं लेह्यम्।
गुडाम्लिकादिसंस्कृतमुदकादिकम् (हे.)	पानाय कायति इति
	लिह्यन्त इति
शुक्तं कन्दादिसन्धानम्। कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च। यत्रैकत्राभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते (हे.)	ईशुचिर् पूतीभावे, पूतीभावः क्लेदः शुच्यति इति, चुक्यतेऽनेनेति चुक्रम्

	चरकसंहिता तट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
३२ शिण्डाकी	शिण्डाकी ·स्वनामप्रसिद्धा तीरभुक्तौ (चक्र:)	मूलकादि शाकमेव किंचित् स्विन्नं क्षुण्णं सुगन्धिकटुकद्रव्यान्वितं वटकीकृतं शुष्केषु "सिण्डाकी" इत्युच्यते, अन्ये तु "शाक-सिक्थमण्डाकृति: सिण्डाकी" इत्याहु:
३३ उत्कारिका		
३४ उदमन्थ:	उदकप्रधानो मन्थ: (चक्र:)	
३५ काम्बलिक:	दधिलवणस्नेहतिलादिकृत ईषदम्ल: (चक्र:)	अथ काम्बलिकोऽपर: ॥ दध्यम्ललवणस्नेह-तिलमाषसमन्वित: । (ड.)
३६ किलाट:	नष्टक्षीरभाग: यं लोका: क्षीरसामित्याहु: (चक्र:)	क्षीरकूर्चिकापिण्ड:
३७ कृशरा	तिलतण्डुलमाषकृता यवागू: (चक्र:)	तिलतण्डुलमाषकृता यवागू : (ड.)
३८ खड:	सशाकपल्लवेन कृतो यूष: (चक्र:)	खडो द्विविध:–सतक्रशमीधान्य: सतक्रशाकश्च। तथा हि–"सतक्राणि शमीधान्यानि स्निग्धानि संग्राहकाणि खडानि" इति, सतक्रशाकस्तु "कपित्थतक्रचाङ्गेरीमरिचाजाजिचित्रकै: । सुपक्व: खडयूषोऽयम्...." इति (ड.)
३९ पायस:	परमान्नम् (चक्र:)	
४० फाणितम्	(गुडस्य) तन्तुलीभावाद्भवति (चक्र:)	
४१ मन्थ:	सक्तव: सर्पिषा युक्ता: शीतवारिपरिप्लुता: । नात्यच्छा नातिसान्द्राश्च मन्थ इत्यभिधीयते ॥ (चक्र:)	
४२ लाजा:		
४३ तक्रम्		
४४ उदश्वित्		
४५ कूर्चिका	क्षीरेण समं दधि तक्रं वा पक्वम् (चक्र:)	विग्रथितं क्षीरं घनत्वमापन्नं कूर्चिका (ड.)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारारुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
मूलकसर्षपशाकानि क्वथितासुतानि कालजीरकराजिकाचूर्णभावितान्यम्लतीक्ष्णानि शाण्डाकीशब्देनोच्यन्ते (अ.) शाकमुद्गादिवटकसन्धानं शाण्डाकी। उक्तं च "शाण्डाकी कन्दमूलादिमुद्गादिवटकैः कृता॥" तथा "मूलकच्छेदसन्धानं शाण्डाकी स्याद् बहुद्रवा॥" इति (हे.)	
	उत्कीर्यते इति
उदकालोडिताः सक्तवः सर्पिष्का उदमन्थपर्याख्या जलावक्षीरीसंज्ञाः (अ.) द्रवालोडिताः सक्तवो मन्थः, स एवोदके द्रवे उदमन्थः (हे.)	उदकेन सह मथ्यते इति
तिलकल्काम्लप्रायः काम्बलिकः स्मृतः [हे.]	
अल्पक्षीरो बहुना तक्रेण कृतः (अ.) दध्ना तक्रेण वा सह पाकात् तयोर्घनभागः पृथग्भूतः किलाटः [हे.]	
	कृशाय (बलं) राति इति
.रालः फलैः मूलैश्च [हे.]	
	पयसा संस्कृतः
घनगुडीभूत इक्षुरसः [अ.]	फाण्यते द्रवत्वात् इति फाणितं खण्डश्वेता
	मथ्यते इति
भृष्टानां धान्यानां तण्डुलाः [हे.]	लज्यन्ते इति
मथितं दधि तक्रम् [हे.]	तक्रं चतुर्भागाम्बु। तकति द्रुतं गच्छति इति
	उदश्विदर्धाम्बु, उदकेन श्वयति इति
दधितक्रकृता किलाटिका [अ.] दध्ना तक्रेण वा सहपाकात्पृथग्भूतं घनद्रवभागं क्षीरम् [हे.]	कूर्चस्तक्रमस्तु अस्ति अस्याः

	चरकसंहितातट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यः
४६ मस्तु		
४७ यवागू		यवागूर्विरलद्रवा । (सु.)
४८ पिण्याकः	तिलकल्कः (चक्रः)	

प्रसहवर्गः

चरकसंहितागणः
The group of Creatures

१ गौः		
२ खरः	गर्दभः	गर्दभ
३ अश्वतरः	वेगसरः स च अश्वायां खराज्जातः	अश्वायां गर्दभेन जनितो "वेसर" इति लोके,
४ उष्ट्रः		करभः
५ अश्वः		घोटकः
६ द्वीपी	चित्रव्याघ्रः	व्याघ्रभेदश्चित्रव्याघ्रः, "चित्रक" इति लोके ।
७ सिंहः		पराक्रमी निद्रालुः
८ ऋक्षः	भल्लूकः	भल्लूकोऽतिलोमशः "रिंछ" इति लोके
९ वानरः		मर्कटः
१० वृकः	कुक्कुरानुकारी पशुशत्रुः	कुक्कुरसदृशः पशुः क्षुद्रः
११ व्याघ्रः		विकृतमुखो निद्रालुर्हिंस्रः
१२ तरक्षुः	व्याघ्रभेदः "तरच्छ" इति ख्यातः	मृगशत्रुर्व्याघ्रविशेषः, 'जरख' इति लोके
१३ बभ्रुः (महाबभ्रुः)	अतिलोमशः कुक्कुरः पर्वतोपकण्ठे भवति । केचिद् बृहन्नकुलमाहुः	तद् [नकुल] भेदः महाबभ्रुः
१४ मार्जारः		बिडालः, गुहाशयत्वादरण्यबिडालो बोद्धव्यः
१५ मूषिकः		भूमिमूषिकः
१६ लोपाकः	स्वल्पशृगालो महालाङ्गूलः	शृगालभेदः, 'लाङ्गलक' इति लोके

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
सुजातस्य दध्नो द्रवभागो मस्तु [हे.]	मस्यति–परिणमति इति
विरलद्रवा (अ.) ससिक्थो द्रवो यवागूः (हे.)	यूयते पिष्टादिना इति
तिलादीनां निष्पीडिततैलः कल्कः [अ.] उद्धृततैलतिलादिपिण्डः [हे.]	पीड्यते इति

प्राणिवर्गः ।
in the Caraka Samhita

	गच्छतीति ।
गर्दभः (हे.)	खं शब्दं रातीति, खमस्त्यस्य वा इति
वेगसरः (अ.) अश्वायां गर्दभाज्जातः (हे.)	तनुरथः
करभः (हे.)	उष्यते दह्यते मरौ इति
तुरगः (अ.) घोटकः (हे.)	अश्नुतेऽध्वानम् इति
चित्रव्याघ्रः द्वीपी (हे.)	द्वौ वर्णावीयते द्वीपोऽस्त्यस्य वा तद्विवासित्वात् इति द्वीपं द्विवर्णं चर्म तदस्त्यस्य इति वा
केशरी (हे.)	हिनस्ति इति
लोमशो मर्कटसदृशः (हे.)	ऋक्षति, ऋक्ष्णोति हिनस्ति इति
मर्कटः (हे.)	वने रमते इति वनरः तस्यायम्
वरघभक्षकः (हे.)	वर्धते इति
महाव्याघ्रः (हे.)	व्याघ्रिमन्हन्ति इति
मृगादनः (हे.)	तरं (मार्गं) क्षिणोति (खण्डि) इति
जाहको, नकुल इत्यन्ये (अ.) अच्छभल्लः (हे.)	बिभर्ति इति
बिडालः (हे.)	आखुभ्यो गृहं मार्ष्टि इति
उन्दुरुः (हे.)	मूषति इति
लोमशः (अ.) लोमशो जम्बुकसदृशः (हे.)	

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१७ जम्बुकः		शृगालः
१८ श्येनः		सिचानो गरुडान्वयः
१९ वान्तादः	कुक्कुरः	
२० चाषः	कनकवायसः	इन्द्रनीलमणिसदृशपक्षः शस्तदर्शनः 'करटाशन' इति लोके प्रसिद्धः
२१ वायसः		
२२ शशघ्नी [शशघाती]	'पाञ्जिः' इति ख्याता	चिल्ह्याकारो महाचरणनखः प्रहारेण शशकाहरणशीलः 'शशामि' इति लोके
२३ मधुहा		
२४ भासः	भस्मवर्णः पक्षी शिखावान्	गोकुलचारी गृध्रविशेषः श्वेतशिखावान्.
२५ गृध्रः		मांसाशी योजनदृष्टिः.
२६ उलूकः		कौशिकः
२७ कुलिङ्गकः	कालचटकः कुलिङ्गः	कुलिङ्गो वन्यचटको ग्राम्यचटकाकारः।
२८ धूमिका		चिल्ह्याकारो नादोत्थापितमत्स्यो हस्तमत्स्यग्राही 'कुरल' इतिलोके।
२९ कुररः		

भूमिशयवर्गः

१ श्वेतः काकुलीमृगः	काकुलीमृगः "मालुयाबर्प" इति ख्यातः तस्य श्वेत इत्यादयश्चत्वारो भेदाः	
२ श्यामः ,,		
३ चित्रपृष्ठः ,,		
४ कालकः ,,		
५ कूर्चिका	मद्गुरः	
६ चिल्लटः	चिभारः	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारारुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
शृगाल: (अ.) (हे.)	जमति इति
गरुडाकृतिः (अ.) शशानक: (हे.)	श्यायते इति
श्वा (अ.) (हे.)	वान्तमति इति
किकीदिवि: (अ.)	चपति इति
काक: (अ.) (हे.)	वम एव वायस: वयते वा
शशारिः (हे.)	शशं हन्ति इति
मधुघातकः [हे.]	मधु हन्ति इति
श्वेतशिखावान् गृध्रसदृशो गोष्ठचारी [हे.]	
कृष्णो महान् दूरदर्शी [हे.]	गृध्यति मांसम् इति
काकारि: [अ.] घूकः [हे.]	उलति नेत्राभ्यां दहति इति
कृष्णचटक: [अ.] कुलिङ्गो गृहचटकः (हे.)	कौ लिङ्गति–गच्छति, यद्वा कुत्सितं कृष्णवर्णं लिङ्गं वर्ण यस्य सः
धूम्याटः (हे.)	धूम इव जलीयपदार्थोऽटित अस्याः
अरुण: श्वेतमस्तको मत्स्यमाही (हे.)	कुरेति शब्दं राति इति

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
७ मेकः		
८ गोधा		
९ शल्लकः	महाशकली 'शलक' इति ख्यातः	शल्यको वज्रशकलो बृहद्गोधानुकारी 'साला' इति लोके
१० गण्डकः	गोधाभेदः	
११ कदली	"कदलीहट्ट" इति ख्यातः	महाबिडालसमो व्याघ्राकारः 'कदलीहण्ड' इति पौण्ड्रे प्रसिद्धः अन्ये सर्पविशेषमाहुः।
१२ नकुलः		भुजङ्गशत्रुः
१३ श्वावित्	'शेजक' इति ख्यातः	सूचिसदृशरोमयुक्ता 'सेहे' इति लोके
आनूपवर्गः		
१ सृमरः	महाशूकरः	महाशूकरः, अन्ये तु महाश्वाकारश्चमरान्तकः
२ चमरः	केशमृत्युः	केशमृत्युर्गोसदृशः
३ खड्गः (खड्गी)	गण्डकः	गण्डकः
४ महिषः		
५ गवयः	गवाकारः	गोसदृशः
६ गजः		हस्ती
७ न्यङ्कुः	न्यङ्कुशो हरिणः	'न्यंगुण' इति लोके
८ वराहः		शूकरः
९ रुरुः	बहुश्रृङ्गो हरिणः	शरदि शृङ्गत्यागी, तल्लक्षणमुच्यते 'विकटबहुविषाणः शम्बराकारदेहः सलिलतटचरत्वाच्छम्बरेभ्यो विभिन्नः। त्यजति शरदि शृङ्गं रौत्यतोऽसौ रुरुः स्यात्पृथुलमृगविशेषः प्रायशश्चेदिदेशे॥ इति।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारारुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
मण्डूकः [हे.]	बिभेति इति
पञ्चनखग्राहिणी [हे.]	गृह्णाति इति
	गण्डति संहन्यते इति
	नास्ति कुलमस्य इति
शलाकासदृशरोमा [हे.]	श्वानं विध्यति इति
वनतुरगः [हे.]	सरति इति
वन्यो गौः [हे.]	चमति इति
गण्डकः [हे.]	खडति भिनत्ति, इति
अश्वशत्रुः [हे.]	महति, मह्यां शेते इति वा
सास्नाककुदरहितो गोसदृशः [हे.]	गवति, गवते इति वा, गवं शब्दं याति प्राप्नोति गव इति शब्दं याति इति वा
हस्ती [अ.] [हे.]	गजति माद्यति इति
कुरङ्गसदृशो विकटबहुविषाणः [हे.]	न्यक्षति इति
शूकरः [हे.]	वरमाहन्ति इति
बहुविषाणः शरदि शृङ्गत्यागी [हे.]	रौति इति

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
वारिशयवर्गः		
१ कूर्मः		कच्छपः
२ कर्कटकः		द्विविधः शुक्लकृष्णभेदेन
३ मत्स्यः		
४ शिशुमारः	गोतुण्डनक्रः	हस्त्याकारोऽन्तर्वक्त्रो बहिर्निःश्वासभुक्, सोऽपि द्विविधो वर्तुलदीर्घभेदेन दीर्घ'फाणित' इति लोकाः प्राहुः
५ तिमिङ्गिलः	सामुद्रो महामत्स्यः	तिमिर्महत्तमो मत्स्यः, तिमिङ्गिलस्ततोऽपि महत्तमः
६ शुक्तिः	मुक्ताप्रभवो जन्तुः	समुद्रजा शिम्पिः
७ शङ्खः		
८ उद्रः	जलविडालः	उद्रः पानीयविडालः 'ओदन' इति लोके
९ कुम्भीरः	घटिकावान्	नानाभेदो घडियालगोधादिभेदेन
१० चुलुकी	"शुशु" इति ख्यातः	
११ मकरः		हिंस्रदंष्ट्रकः
जलचरवर्गः		
१ हंसः	हंसश्चतुर्विधोऽपि राजहंसादिर्ग्राह्यः	कलस्वरो ललितगतिः प्रसिद्धः
२ क्रौञ्चः	"कोंच" इति ख्यातः	क्रौञ्चिरः
३ बलाका	शुक्ला	बकभेदः 'बगुली' इति लोके
४ बकः	पाण्डुरपक्षः	पाण्डुरपक्षः
५ कारण्डवः	काकवक्त्रः	शुक्लहंसभेदोऽल्पः अन्ये करड(इ)वमाहुः उक्तं च "कारण्डवः काकवक्त्रो दीर्घाङ्घ्रिः कृष्णवर्णभाक्" इति
६ प्लवः	स्वनामप्रसिद्धः प्रसेवगलः	महाप्रमाणः प्रसेवकगलः "सगट" इति लोके
७ शरारिः [शरारीमुखः]	"शराली" इति लोके	शरारीमुखः खदिरवर्णो "मिर्गराटी" इति लोके ।

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
कच्छपः [हि]	कुरति कुमूर्येति इति वा
कुलीरः [हे.]	कृणोति इति
जलान्तर्वासिनो मत्स्याः [हे.]	माद्यति इति
शिशुघ्नः [हे.]	
तिमिः शतयोजनविस्तृतः तं गिलतीति [हे.]	तिमिं गिलति इति
मुक्तास्फोटः [हे.]	शुक गतौ, शोकति इति
कम्बुः [हे.]	शाम्यति अशुभमस्मात् इति
जलबिडालः [हे]	उनत्ति इति
महानकच्छपः (हे)	कुम्भिनं हस्तिनमपीरयति इति
चुलुकी दन्त्याकारोऽन्तर्वक्त्रो बहिर्निश्वाससमुक् (हे.)	
सिंहदंष्ट्रः (हे.)	मा कुर्यात्छिद्रमिदिति मस्यन्त्यस्मात् इति
मानसौकाः (हे.)	हन्ति–गच्छति इति
कुरर् (हे.)	कुरति इति
बिसकण्ठिका [हि.]	बलाहकान् कायति बलेनाकति याति वा
पाण्डुरपक्षः हे.]	वल्गते इति
कुक्को हंससदृशः (हे.)	करण्डे भवं कारण्डं पञ्जरपन्थं वाति इति
महान् प्रसेवकगलः (हे.)	प्लवते इति
	वारं जलं ऋच्छति इति

	चरकसंहिता तट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
८ पुष्कराह्वः [पुष्कर-शायिका]		पुष्करशायिका, पद्मपत्रशायिका
९ केशरी		
१० मणितुण्डकः		
११ मृणालकण्ठः		
१२ मद्गुः	पानीयकाकः	जलकाकः
१३ कादम्बः	कलहंसः	कलहंसोऽतिधूसरपक्षः, अन्ये तु रक्तचञ्चुशिरः-कृष्णपादादीनां लक्षणेन कृत्वा 'कर्दम' इति पठन्ति ।
१४ काकतुण्डकः	श्वेतकारण्डवः	
१५ उत्क्रोशः	"कुरल" इति ख्यातः	कुररभेदो मत्स्याशी
१६ पुण्डरीकाक्षः	पुण्डरः	पुण्डरीको नलिननयनः
१७ मेघरावः	मेघनादः चातक इत्यन्ये तन्न तस्य वारिचरत्वा-भावात्	चातकः
१८ अम्बुकुक्कुटी	जलकुक्कुटी	जलकुक्कुटी कृष्णवर्णा, 'बुडियाक' इति लोके ।
१९ आरा	आरा स्वनामख्याता	
२० नन्दीमुखी	पत्राटी	नन्दीमुखः पत्राटी आटीभेदः
२१ वाटी		
२२ सुमुखाः		
२३ सहचारिणः		
२४ रोहिणी		
२५ कामकाली		
२६ सारसः	सारसः प्रसिद्धः	लक्ष्मणो रक्तशिराः प्रसिद्ध एव
२७ रक्तशीर्षकः	सारसभेदो लोहितशिराः	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारारुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	मणिरिव तुण्डं यस्य सः
जलकाकः (हे.)	मज्जति इति
कलहंसः (हे.)	कदम्बच्छायं पक्षचारित्वात्
कुररसदृशः (हे.)	उच्चैः क्रोशति इति, उत्क्रोशकुररौ समौ
	पुण्डरीके इव अक्षिणी यस्य सः
	मेघस्य इव रावो यस्य सः
	अम्बुगः कुक्कुटी
लक्ष्मणः (हे).	सरसि भवः

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
२८ चक्रवाकः		द्वन्द्वचरो निशावियोगी
जाङ्गलवर्गः		
१ पृषतः	चित्रहरिणः	बिन्दुचित्रितः चित्र इति लोके
२ शरभः	अष्टापद उष्ट्रप्रमाणो महाशृङ्गः पृष्ठगतचतुष्पादः काश्मीरे प्रसिद्धः	अष्टापद उष्ट्रप्रमाणो महाशृङ्गः पृष्ठगतचतुष्पादः काश्मीरे प्रसिद्धः
३ रामः	हिमालये महामृगः	
४ श्वदंष्ट्रः	चतुर्दंष्ट्रः कार्तिकपुरे प्रसिद्धः	चतुर्दंष्ट्रोऽतिदुष्टः 'कर्कटक' इति कार्तिकपुरे (ड.)
५ मृगमातृका	स्वल्पा पृथूदरा हरिणजातिः	अल्पा पृथूदरा चतुरङ्गजो 'भेदली' इति लोके (ड.)
६ शशः		
७ उरणः		
८ कुरङ्गः	हरिणभेदः	चतुरगतिः 'चतुरङ्ग' इति लोके यो न कृष्णो न ताम्रश्च कुरङ्गः सोऽभिधीयते [सु.]
९ गोकर्णः	गोमुखहरिणविशेषः	गोकर्णो गोसदृशकर्णः 'गोन' इति प्रसिद्धः (ड.)
१० कोट्टकारकः		
११ चारुष्कः	हरिणभेदः	चारुशरीरः स्वल्पतनुर्मृगभेद एव
१२ हरिणः	ताम्रवर्णः	हरिणस्ताम्रउच्यते (सु) गौरहरिणः (ड).
१३ एणः	कृष्णसारः	एणः कृष्णः (सु) कृष्णहरिणः (ड.)
१४ शम्बरः		
१५ कालपुच्छकः		
१६ ऋष्यः	नीलाण्डो हरिणः	ऋक्षो नीलाण्डः 'रोझ' इति प्रसिद्धः (ड.)
१७ वरपोतः	हरिणभेदः	
विष्किरवर्गः		
१ लावः		लावः प्रसिद्धः (ड.)

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारारुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
चक्राङ्गः (हे.)	चक्र इत्याख्यया उच्यतेऽसाविति
	पृषन्ति बिन्दवः सन्ति अस्य इति मत्वर्थीयः अच्
अष्टचरणः (हे.)	शृणाति इति
	रमन्तेऽस्मिन् इति
	शुनो दंष्ट्रेव दंष्ट्रा यस्य सः
लघुपृथुतरा शशाभा (हे.)	
बिलेशयः (हे.)	शशति प्लुत्वा गच्छति इति
	उच्चै रणो यस्य, उरण्यति देवताः प्रीणातीति श्रीभोजः कण्ड्वादिपाठात्
लघुचतुरगतिः (हे.)	कौ रङ्गति इति
गोसदृशकर्णो रासभाकारः (हे.)	गोः कर्णाविव कर्णौ यस्य
चारुशृङ्गः (हे.)	
ताम्रवर्णः (हे.)	ह्रियते गीतेन इति
कृष्णवर्णः (हे.)	एति इति
विकटबहुविषाणः (हे.)	संवृणोति इति
नीलाण्डः (हे.)	ऋषति इति ऋषीगतौ इत्यस्मात्। इयर्ति इति वा
चित्रयोधी (हे.)	लाति (लावयति) लूयते इति वा।

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
२ वर्तीरकः (वर्तीरः)	कपिञ्जलभेदः	कपिञ्जलानुकः कपिञ्जलादल्पो वर्तिकातः किंचिन्महान् वर्तिकासदृश एव 'घघेरा' इति लोके [ड.]
३ वार्तीकः	चटकभेदः संघातचारी	
४ कपिञ्जलः	गौरतित्तिरिः	गौरतित्तिरिः [ड.]
५ चकोरः		रक्ताक्षो विषसूचकः स्वनाम्ना ख्यातः [ड.]
६ उपचक्रः	चकोरभेदः	चकोरभेदः कृशचञ्चुर्मदाविलः [ड.]
७ रक्तवर्त्मकः कुक्कुभः	रक्तवर्त्मक इति कुक्कुभविशेषणं तेन स्थूलकुक्कुभो गृह्यते	
८ वर्तकः	"वट्ठी" इति ख्यातः	
९ वर्तिका	स्वल्पप्रमाणा जात्यन्तरमेव	वर्तीरभेदः [ड.]
१० बर्ही	मयूरः	
११ तित्तिरिः		कृष्णतित्तिरिश्चित्रपक्षः [ड.]
१२ कुक्कुटः		
१३ कङ्कः		
१४ शारपदः		
१५ इन्द्राभः	महाकङ्कः	
१६ गोनर्दः	मोटाकङ्कः	गोक्ष्वेडः
१७ गिरिवर्तकः		
१८ क्रकरः		लावान्तकः कपिञ्जलात्स्थूलः 'कमर' इति लोके
१९ अवकरः		
२० वारडः		

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
अल्पकपिञ्जलसदृशः [हे.]	
वनचटकः स्वल्पसंघातचारी (हे.)	
गौरतित्तिरिः (हे.)	कपिरिव जवते वेगेन गच्छति इति यद्वा कं श्रुतिसुखदं पिञ्जयति इति
रक्ताक्षः (हे.)	चकते ज्योत्स्नया तृप्यति इति
धन्वचरः कृशचञ्चुर्मदाविलः (हे.)	
कुक्कुभो द्विविधः स्थलजो जलजश्च । रक्तवर्त्मकविशेषणात्स्थलजो गृह्यते [हे.]	कुक्कुशब्दं करोति इति
वर्तीरादल्पः [हे.]	वर्तते इति
वर्तीका वर्तकादप्यल्पा तत्सदृशा (हे.)	वर्तते इति
शिखी मयूरः (हे.)	बर्हमस्याऽस्ति इति
चित्रपक्षः (हे.)	तित्तिशब्दं राति इति
ताम्रचूडाख्यः (हे.)	कुगुच्चारणेन कुटति इति
	कङ्कते इति
कङ्कसदृशः चारुगतिः (हे.)	
कङ्कसदृशो विविधवर्णः (हे.)	शारपदेन्द्राभ इत्येकपदमिति चक्रपाणिदत्तः (अ. को.)
गोक्ष्वेडः (हे.)	गौरिव नर्दति इति
	गिरौ वर्तते इति
ककचशब्दकारी पीतकृष्णगलः कृष्णचञ्चुचरणो रक्तपृष्ठः (हे.)	क्रेति करोति वाशते इति

प्रतुदवर्गः	चरकसंहिता तट्टीकाकारश्चक्रपाणिदत्तश्च	सुश्रुतसंहिता तट्टीकाकारो डल्हणाचार्यश्च
१ शतपत्रः	काष्ठकुक्कुटः	दार्वाघाटः 'काष्ठकुट्टक' इति लोके
२ भृङ्गराजः	प्रसिद्धो भ्रमरवर्णः	भ्रमरको धूम्याटसदृशः 'पक्षिराज' इति लोके
३ कोयष्टिः	'कोडा' इति ख्यातः	कोयष्टिका दीर्घजङ्घा "कोयष्ट" इति लोके
४ जीवजीवकः	विषदर्शनमृत्युः	विषदर्शनमृत्युः
५ कैरातः		
६ कोकिलः (परभृतः)		कोकिलः
७ अत्यूहः	डाहुकः 'दात्यूह' इति वा पाठः	दात्यूहः कालकण्टकः "रायुक" इति लोके
८ गोपापुत्रः		
९ प्रियात्मजः (मातृनिन्दकः)		मातृनिन्दकः प्रियात्मकः "पुत्रप्रक" इति लोके
१० लट्टा [लट्वा]	फेञ्चाको रक्तपुच्छाधोभागः	फेञ्जातको रक्तपुच्छाधोभागः अन्ये भरद्वाजमेदमाहुः "लाट" इति लोके
११ लट्ट[ट्ट]षकः [लट्टूषकः]	तद्भेदः (लट्टाभेदः)	द्वितीयफेञ्जातकः, अन्ये सर्वानचञ्च्वाकृतिं च भ्रूमार्गं दीर्घपुच्छादिलक्षणेन प्रतुदं विहङ्गमाहुः
१२ बभ्रुः		
१३ वटहा		
१४ डिण्डिमानकः [डिण्डिमाणवकः]	डिण्डिमवदुत्कटध्वनिः	डिण्डिमोत्कटध्वनिः
१५ जटी		
१६ दुन्दुभिः		
१७ पाक्षारः		
१८ लोहपृष्ठः		

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	शतं बहूनि पत्राणि यस्य सः, दार्वाघाटः
भृङ्गाह्वो भृङ्गराजः कृष्णवर्णचटकसदृशः शिखावान् गोप्रेरकः (हे.)	भृङ्ग इव राजते इति
	कं जलं वहिरिवास्य इति
एकोदरो द्विशिराः (हे.)	जीवं जीवयति इति
	किराते पर्यन्तभूमौ भवः
परपुष्टः (हे.)	कोकते चित्तं गृह्णाति इति
दात्यूहः अन्धकाकः (हे.)	अतिशयेन ऊहते इति
	प्रिया आत्मजा यस्य सः
लट्वा—रक्तपुच्छाधोभागः (हे.)	लटति इति
	बिभर्ति भरति इति वा
	जटा अस्य अस्ति इति
	डुन्डु इति अव्यक्तशब्देन भाति इति
	लोहस्य इव कठिनं श्यामलं वा पृष्ठं यस्य सः, लोहपृष्ठस्तु कङ्कः स्मात्

	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः	सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः
१९ कुलिङ्गकः	कुलिङ्ग इति वनचटकाकारः पीतमस्तकः 'वाऐ' इति लोके	वन्यचटको ग्राम्यचटकाकारः
२० कपोतः		वनवासी "पाण्डुक" इति लोके स च नानाविधः
२१ शुकः		
२२ शारङ्गः		चातकः
२३ चिटी		
२४ कङ्कुः		
२५ यष्टिका		
२६ सारिका		
२७ कलविङ्कः	ग्राम्यचटकः	
२८ चटकः	देवकुलचटकः स्वल्पप्रमाणः	
२९ अङ्गारचूडकः		
३० पारावतः		पारावतो गृहदेवकुलालयः
३१ पाण्ड(न)विकः		

चरकसंहितागतः
The group of Wines

मद्यवर्गः	परिभाषा	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः
१ शुक्तम्	कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च । यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते ॥	
२ शीधुः	शीधुरिक्षुरसैः पक्वैरपक्वैरासवो भवेत् ॥	
३ आरनालम्	आरनालन्तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः । पक्वैर्वा सन्धितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥	
४ स्वल्पचुक्रम् (शुक्तं चुक्रम्)	यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं स्वल्पं चुक्रं तदुच्यते ॥	
५ आसवः	यदपक्वौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।	

अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री	निरुक्त्यादि
	के लिङ्गं चूडा अस्य
पाण्डुकः (हे.)	
	को वायुः पोतः नौरिवास्य, कस्य वायोः पोतः इव वा
कीरः (हे.)	शोभते, शोकति, शवति वा इति
	शीर्यते आतपैः इति
मेधाविनी (हे.)	चरति इति
	कलं मधुरास्फुटं वद्दते रौति इति
कलविङ्कः (हे.)	चटति भिनत्ति धान्यादिकम् इति
	पारे गिरिदुर्गनद्यादिपरपारे आपततीति, पृषोदरादित्वात् पस्य वः

मद्यवर्गः

in the Caraka samhita

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो उल्हणाचार्यः	अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री
सर्वं मद्यं पयरसं कालान्तरवशाद्यदा त्यक्त्वाऽन्यरसमम्लत्वं याति शुक्तं तदुच्यते ॥	कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च यत्र द्रवेऽभिषूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते (हे.)
यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥ (हे.)	यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सगुडक्षौद्रकाञ्जिकम् । धान्यराशौ त्रिरात्रस्थं शुक्तं चुक्रं तदुच्यते ॥ (हे.)
द्रवप्रधान आसवः	औषधयुक्तैर्मद्याकरैः कृतं मद्यम् आसवः (हे.)

	परिभाषा	चरकसंहिताटीकाकारश्चक्रपाणिदत्तः
६ अरिष्टः	अरिष्टः क्वाथसिद्धः स्यात् सम्पक्वो मधुरद्रवैः ।	औषधक्वाथमध्वादिसंपादितः
७ शीधुः (सीधुः)	आस्रवश्चापि शीधुः स्यादित्याहुस्तद्विदो जनाः ।	
८ प्रसन्ना	सुरामण्डः प्रसन्ना स्यात्	
९ कादम्बरी	ततः कादम्बरी घना ।	
१० जगलः	तदधो जगलो ज्ञेयो	भक्तकिण्वकृता सुरा ।
११ मेदकः	मेदको जगलाद् घनः ॥	
१२ किण्वम्	सुराबीजञ्च किण्वकम् ।	
१३ वारुणी	यत्तालखर्जूररसैः सन्धिता सैव वारुणी ।	
१४ गुडशुक्तम्	गुडाम्बुना सतैलेन कन्दशाकफलैस्तथा । आस्रुतं चाम्लतां यातं गुडशुक्तं तदुच्यते ॥ एवमेवेक्षुशुक्तं स्यात् मृद्वीकासम्भवं तथा ।	
१५ तुषाम्बु	तुषाम्बु चास्रुतं ज्ञेयमामैर्विदलितैर्यवैः ।	
१६ सौवीरकम्	तुनिस्तुषैश्च पक्वैश्च सौवीरं चास्रुतं भवेत् ॥	
१७ धान्याम्लम्	कुल्माषो धान्यमण्डेन चास्रुतं काञ्जिकं भवेत् ।	
१८ तुषोदकम्	भृष्टान्माषतुषान् सिद्धान् यवचूर्णसमन्वितान् । आस्रुतानम्भसा तद्वज्जातं तच्च तुषोदकम् ॥	
१९ काञ्जी	आसु धान्यं क्षोदितञ्च बालमूलन्तु खण्डशः । कृतं प्रस्थमितं पात्रे जलं तत्राढकं क्षिपेत् ॥ तावत् सन्धाय संरक्षेत् यावदम्लत्वमागतम् । काञ्जिकं तत्तु विज्ञेयमेतत् सर्वत्र पूजितम् ॥	
२० शिण्डाकी	शिण्डाकी चासुता ज्ञेया मूलकैः सर्षपादिभिः ।	
२१ मधुशुक्तम्	जम्बीरस्वरसप्रस्थं मधुनः कुडवं तथा । तावच्च पिप्पलीमूलाद्येकीकृत्य घटे क्षिपेत् । धान्यराशौ स्थितं मासं मधुशुक्तं तदुच्यते ॥	

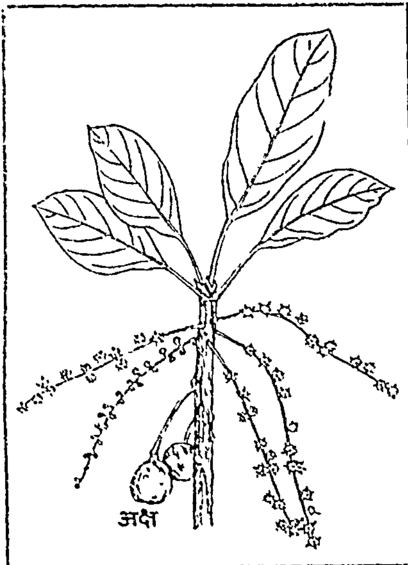
सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः	अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री
द्रव्यप्रधानमरिष्टम्	स (आसव) एव क्वथितौषधैः अरिष्टः (हे.)
उभय(द्रवद्रव्य)प्रधानं मद्यम्	अपक्वेक्षुरसकृतः, पक्वेक्षुरसकृतश्च (अ.)
सुराया मण्ड उपर्यच्छो भागः	
जगलोऽधःकिट्टं मद्यस्य, यो बहिस्त्यज्यते; किण्वमथासुरा जगलः	वारुण्या अधोभागो घनो जगलः (अ.)
	जगलस्याधोभागो मेदकः (अ.)
	वारुणी श्वेतसुरा। सा च श्वेतपुनर्नवादिमूलयुक्तेन शालिपिष्टेन क्रियते (हे.)
गुडाम्बुना सतैलेन सन्धानं कार्त्तिकं तु यत्। कन्दशाकफलैर्युक्तं गुडशुक्तं तदुच्यते॥	
	सतुषैः यवैः कृतम् (अ.)
	वितुषैः यवैः कृतम् (अ.)
	तण्डुलकण्डनादिकृतम् (अ.)
	शाण्डाकी कन्दमूलफलादिमुद्गादिवटकैः कृता, तथा मूलकच्छेदसन्धानं शाण्डाकी स्याद् बहुद्रवा।
जम्बीरस्य फलरसं पिप्पलीमूलसंयुतम्। मधुभाण्डे विनिक्षिप्य धान्यराशौ निधापयेत्॥ त्र्यहेण तज्जातरसं मधुशुक्तमुदाहृतम्।	

	परिभाषा	चरकसंहिताटीकाकारचक्रपाणिदत्तः
२२ सुरा	अनुद्धृतमण्डा	अनुद्धृतमण्डा
२३ मदिरा	सुरामण्डः	सुरामण्डः
२४ शार्करः		शार्कराप्रकृतिक आसवः
२५ पक्वरसः		यः क्वथितेनेक्षुरसेन क्रियते
२६ शीतरसिकः		शीतेक्षुरसकृतः
२७ गौडः		गुडप्रकृतिकः
२८ सुरासवः		यत्र सुरैव तोयकार्यं क्रियते
२९ मैरेयम्	मैरेयं धातकीपुष्पगुडधान्याम्लसंयुतम् ।	आसवस्य सुरायाश्च द्वयोरेकत्र भाजने । सन्धानं तद् विजानीयान्मैरेयमुभयाश्रयम् ॥
३० मधूलकम्		मधूलकः गोधूमभेदः । तत्कृतं मद्यम् । अन्ये तु मेदकमाहुः
३१ माध्वीकम्		मधुप्रधानम्
३२ आक्षिकी (सुरा)		
३३ आसुतम्		

सुश्रुतसंहिताटीकाकारो डल्हणाचार्यः	अष्टाङ्गहृदयटीकाकारावरुणदत्तहेमाद्री
सुरा लोहितवर्णा पिष्टकिण्वकल्केन किंचित्कलुषा	शालिपिष्टकृतं मद्यं सुरा (हे.)
गुडशर्करया खण्डशर्करया वा क्रियते	शर्करासंबन्धी मद्यविशेषः (अ.)
पक्वेनेक्षुरसादिना कृतः	पक्वेनेक्षुरसेन कृतं पक्वरसः .(हे.)
अपक्वरसकृतः	
	गुडकृतं मद्यं गौडम् (हे.)
सुरया सूयते तोयकार्यं क्रियते यस्मिन् सः	तत्र मधुनैव सुरासन्धानेन या क्रियते तां सुरां सुरासवमाहुः
सुरासवयोः प्रत्येकनिष्पादितयोरेकीकृत्य पुनः सन्धानान्मैरेयः	मैरेयः कोद्रवैर्जायते (अ.)
मधूलकः स्वल्पगोधूमो मध्यदेशे 'पीशीका' इति ख्यातः, मर्कटहस्ततृणं वा तत्फलकिण्वं मधूलकम्	
अक्षस्य बिभीतकस्य वल्कलैः सह कृता	बिभीतकवल्कलयुक्तशालिपिष्टकृता बैभीतकी सुरा (हे.)
	कन्दमूलफलाद्यं च लवणोदकसंयुतम् । सन्धानाच्चिरकालाम्लमासुतं परिकीर्तितम् (हे.)

चरकसंहितायाः अकारादिक्रमेणानुक्रमणिका।

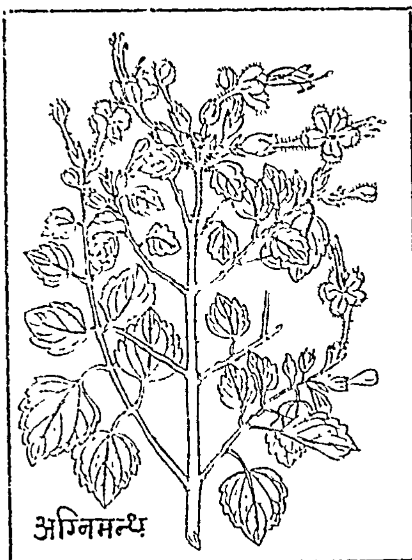
The Alphabetical Index to the Caraka Samhita



1. Terminalia belerica Roxb.



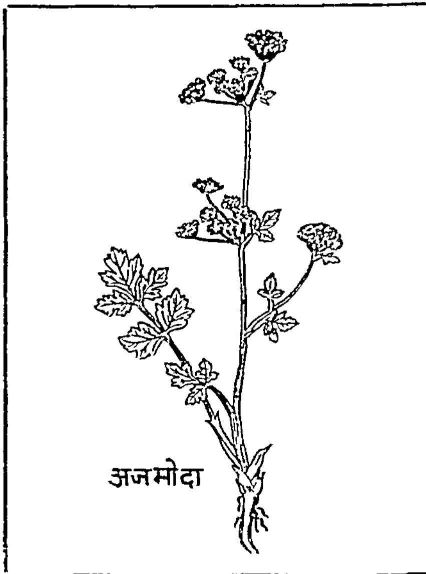
2. Aquilaria Agallocha Roxb.



3. Chlerodendron phlomoides L.



4. Alangium lamarkii Thw.



5. Apium graveolens L.



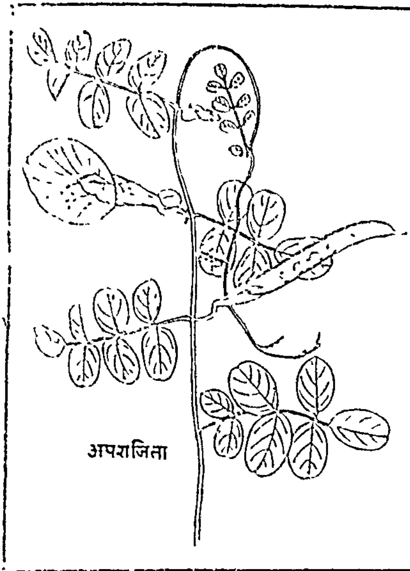
6, Linum Usitatissimum L.



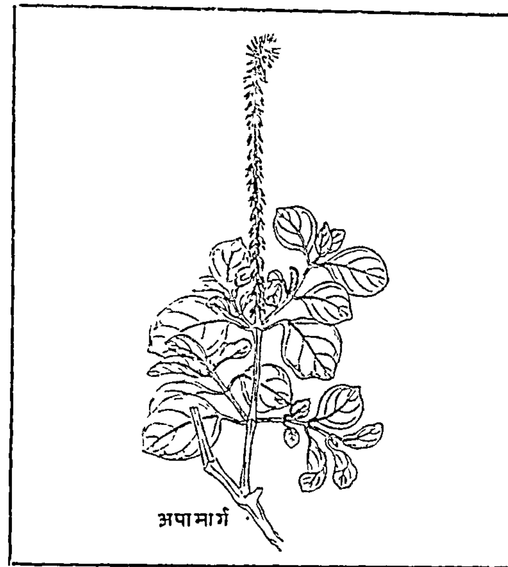
7. Abutilon indicum G. Don.



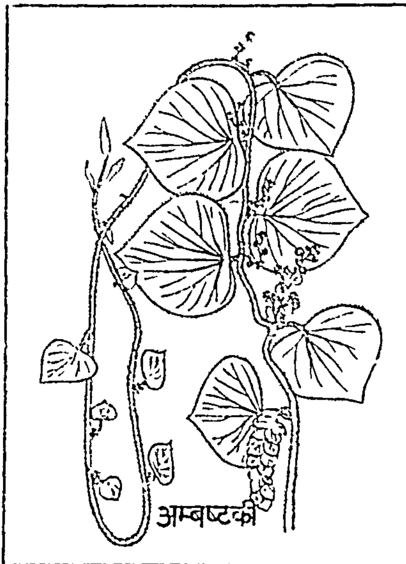
8. Ȧconitum heterophyllum Wall.



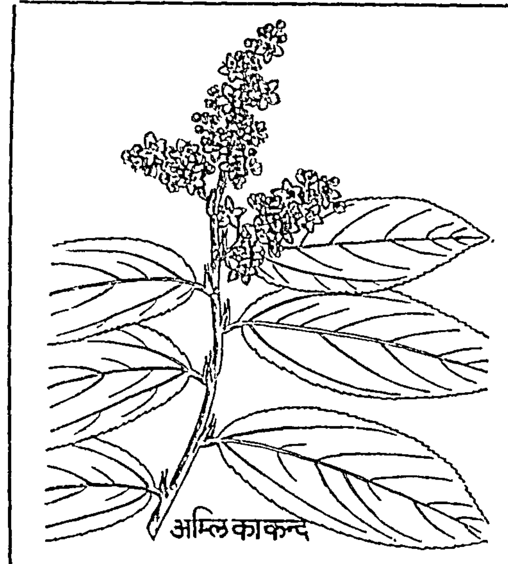
9. गिरिकर्णिका Clitoria ternatea L.



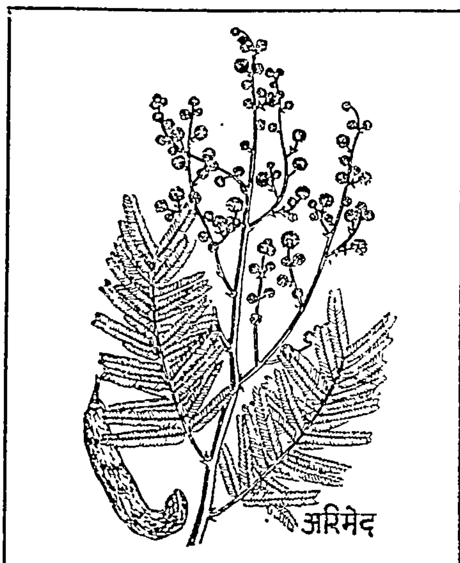
10. Achyranthes aspera L.



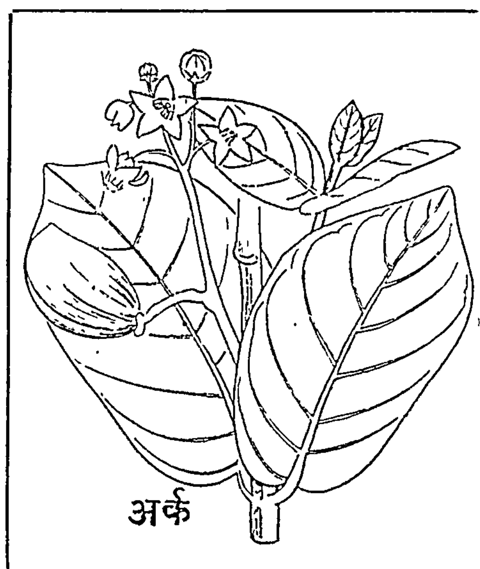
11. Cissampelos pareira L.



12. Dioscorea oppositifolia L.



13. Acacia leucophloea Willd.



14. Calotropis gigantea R. B. R.



15. Ocimum gratissimum L.



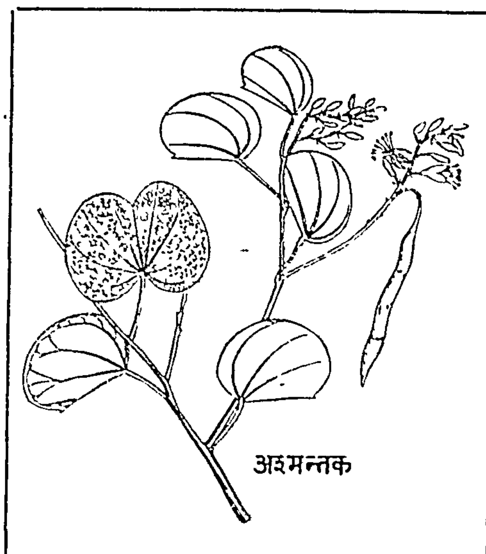
16. Terminalia Arjuna W. & A.



17. Trichodesma indicum R. B. R.



18. Saraca indica L.



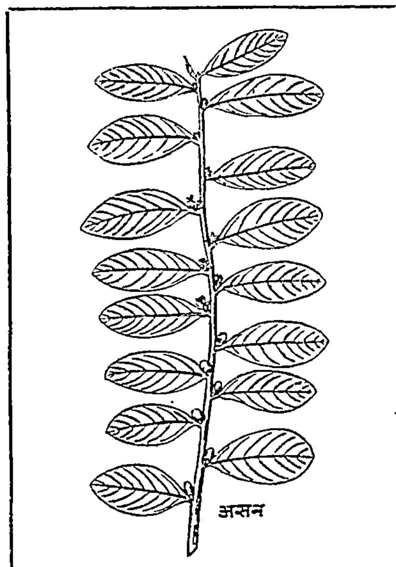
19. Bauhinia racemosa Lam.



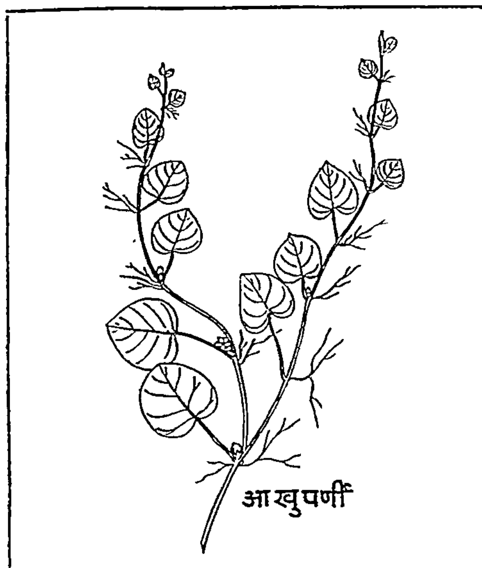
20. Withania somnifera Dunal.



21. Ficus religiosa L.



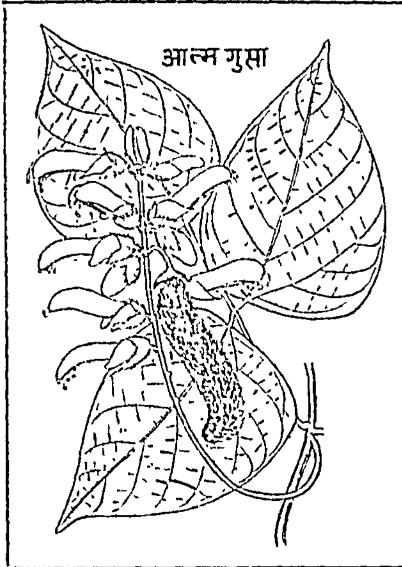
22. Bridelia montana Wall.



23. Ipomea reniformis Chois.



24. Cajanus indicum Spreng.



25. Mucuna pruriens D. C.



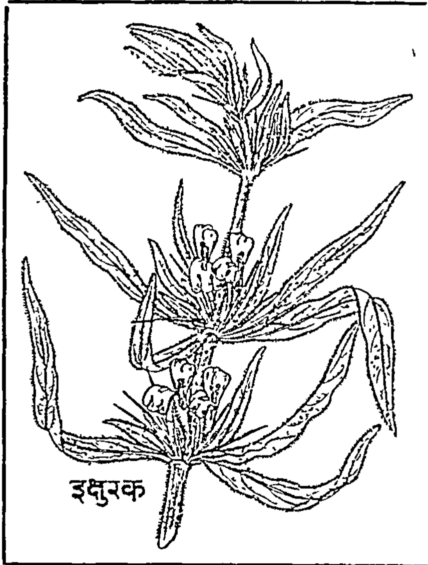
26. Phyllanthus emblica L.



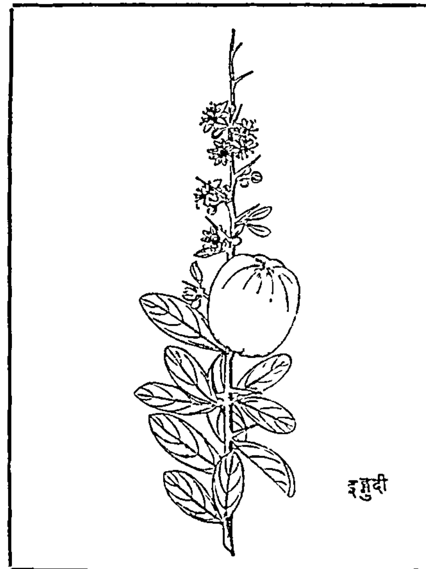
27. Mangifera indica L.



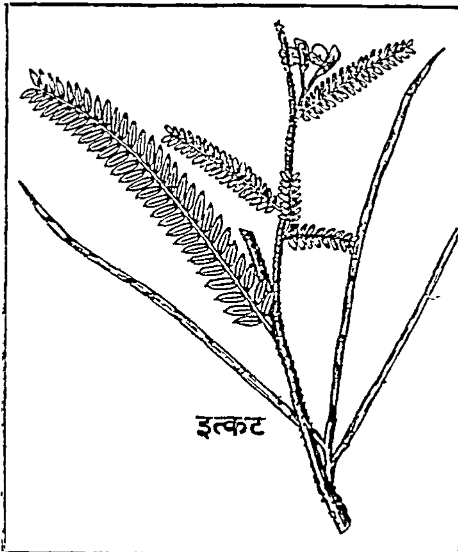
28. Saccharum officinarum L.



29. Hygrophila spinosa Andres.



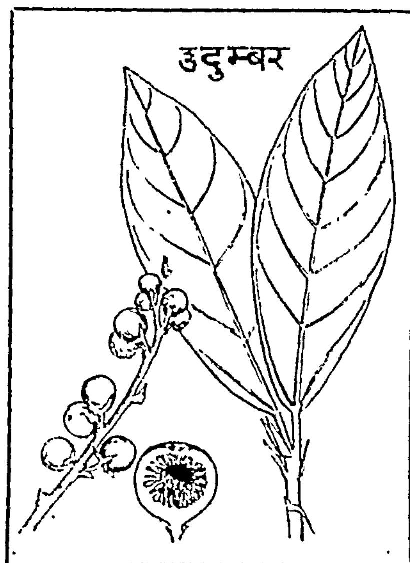
30. Balanites Roxburghii Planch.



31. Sesbania aculeata Pers



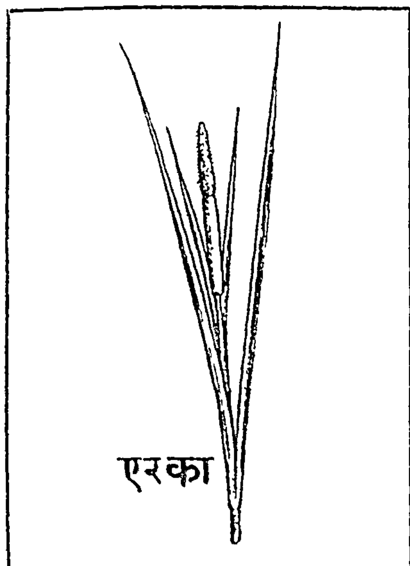
32. Blepharis edulis Pers.



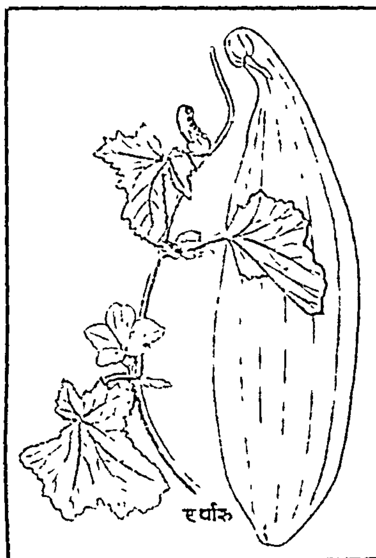
33. Ficus glomerata Roxb.



34. Basella rubra L.



35. Typha elephantina Roxb.



36. Cucumis utilissimus L.



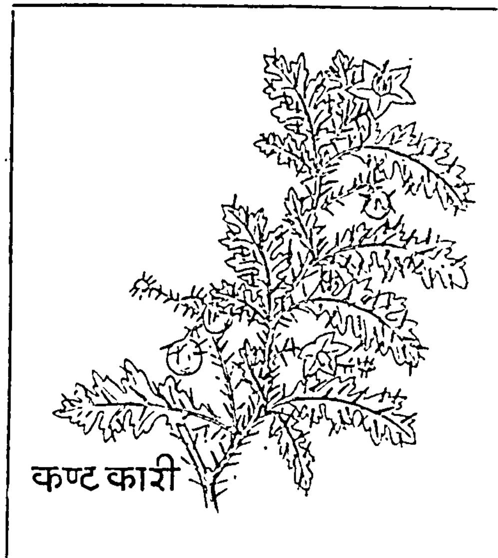
37 Ricinus Communis L.



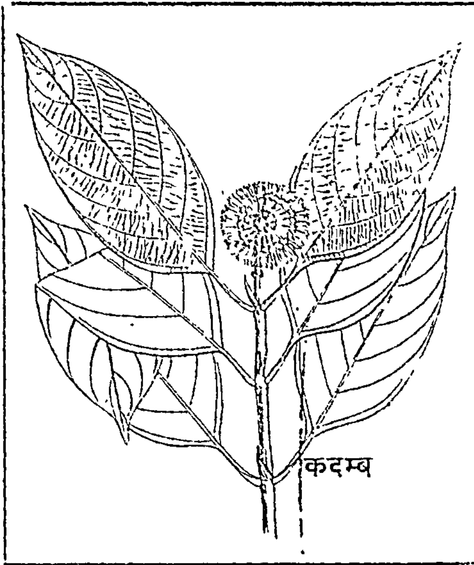
38. Lagenaria vulgaris Ser.



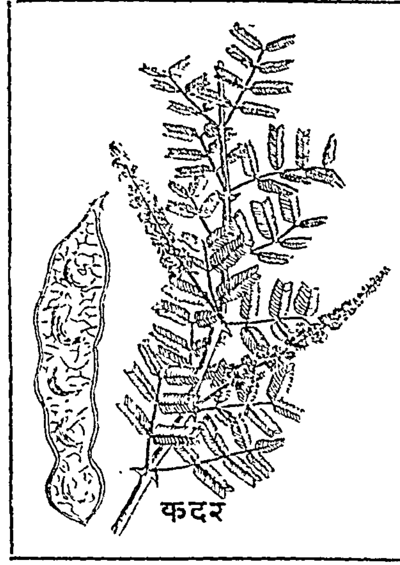
39. Hibiscus abelmoschus L.



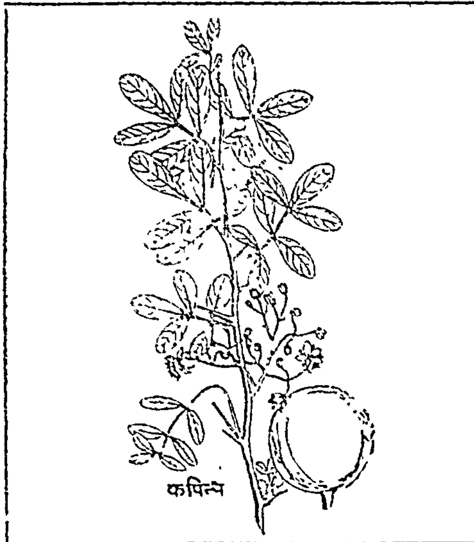
40. Solanum Xanthocarpum Sche.



41. Anthocephalus cadamba Miq.



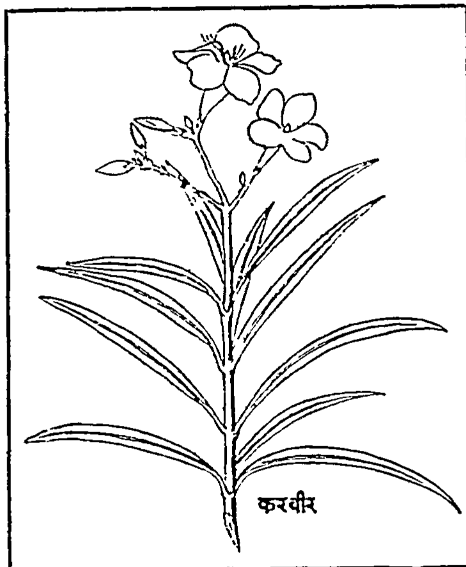
42. Acacia senegal Willd.



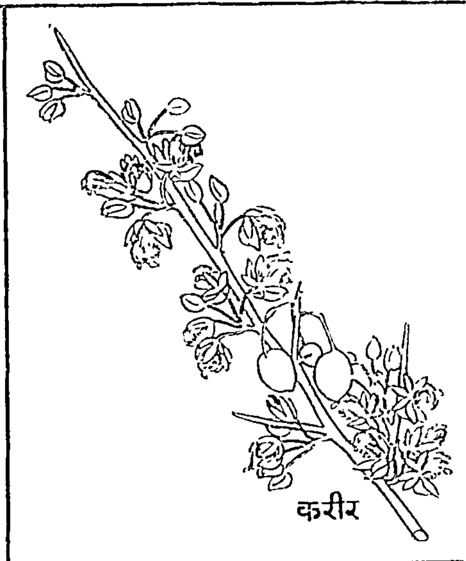
43. Feronia elephantanum Correa.



44. Carisa carandas L.



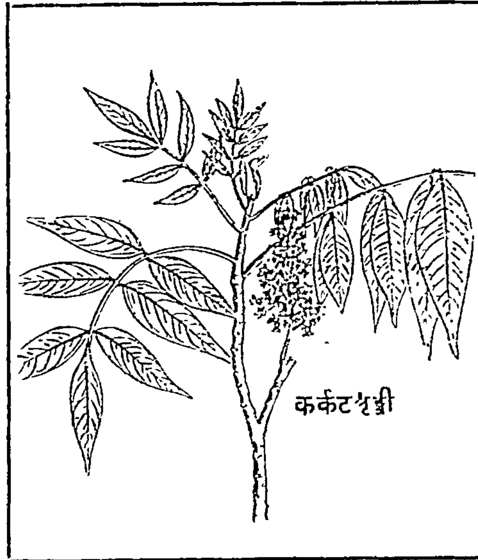
45. Nerium odorum Soland.



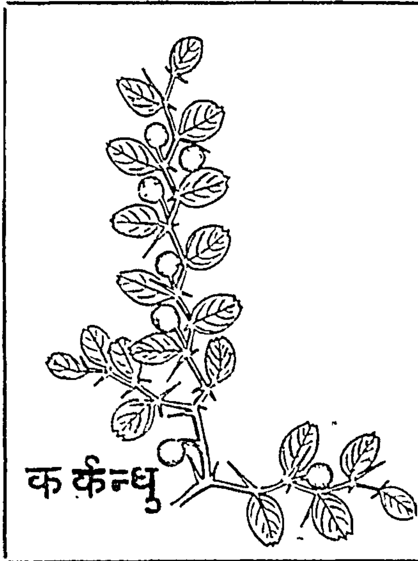
46. Copparis aphylla Roth.



47. Pongamia glabra Vent.



48. Rhus Succedanea L



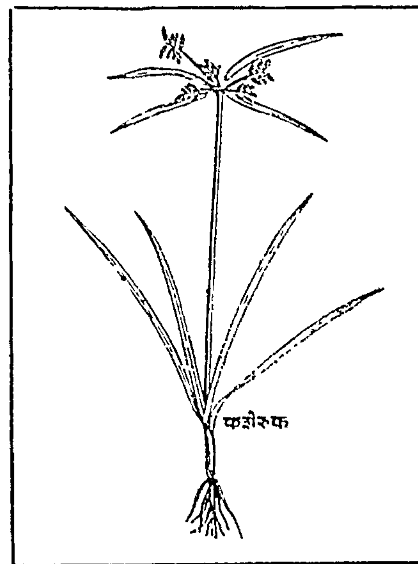
49. Zizyphus nummularia W.C.



50. Dryobalanops aromatica Goertn.



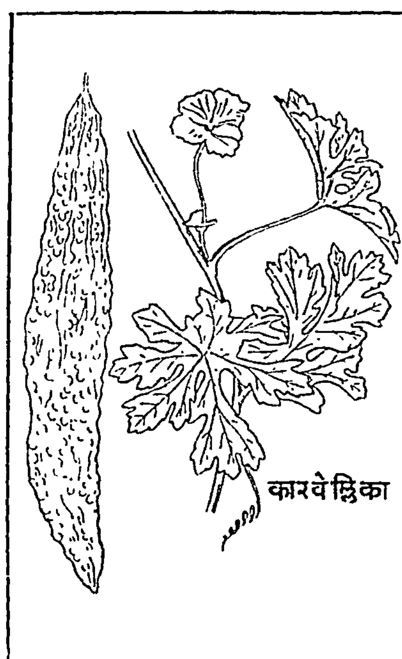
51. Lathyrus Sativus L.



52. Scirpus kysoor R.



53. Solanum nigrum L



54. Momordica charantia L.



55. Gos-ypium herbaceum L.



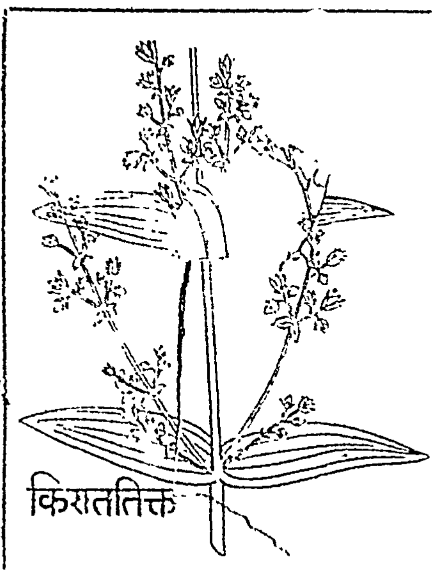
56. Ichnocarpus frutesceus Br.



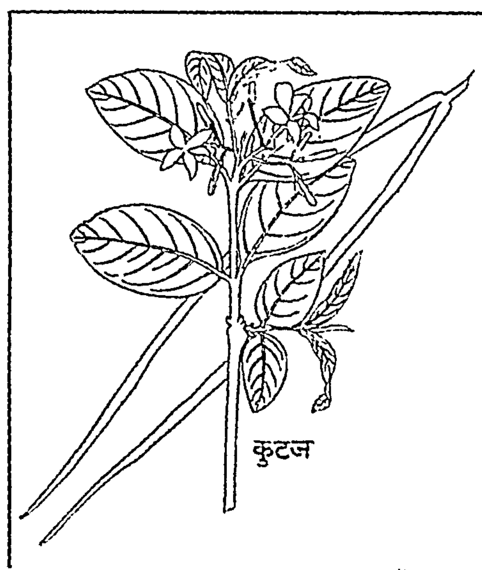
57. Gmelina arborea L.



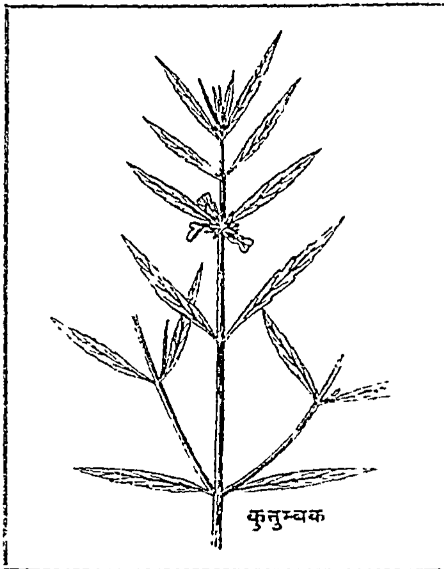
58. Cassia occidentalis L.



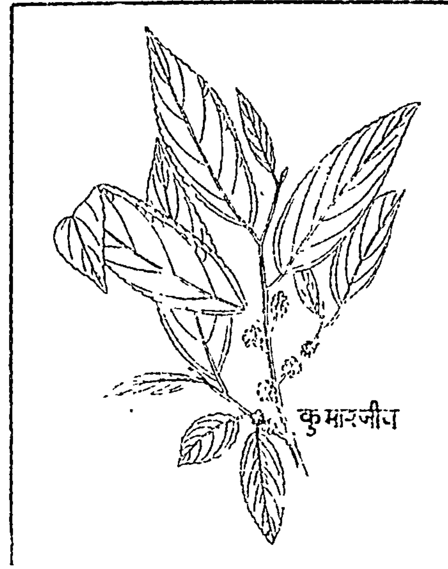
59. Swertia chirata Ham.



60. Holarrhena antidysenterica Wall.



61. Leucas linifolia Spreng.



62. Putranjiva Roxburghii Wall.



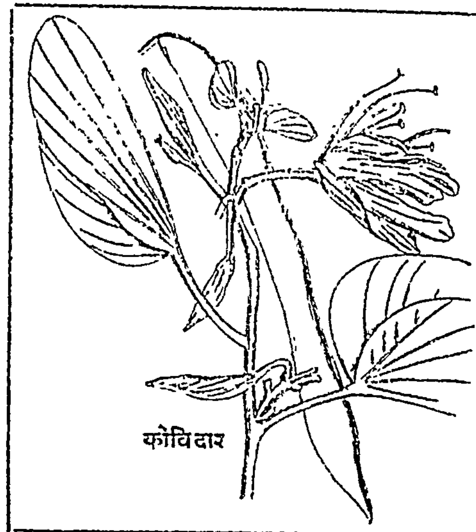
63. Careya arborea R.



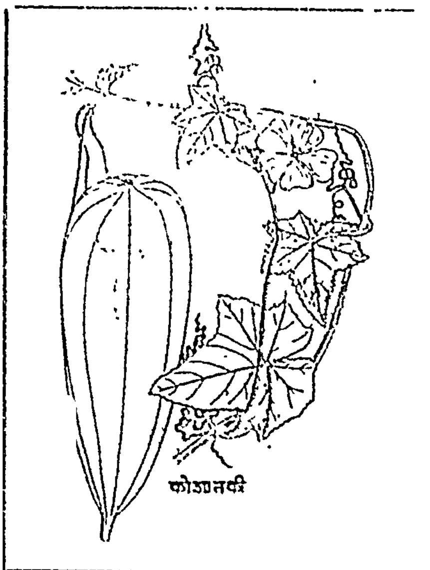
64. Barleria prionitis L.



65 Carathmus tinctorius L.



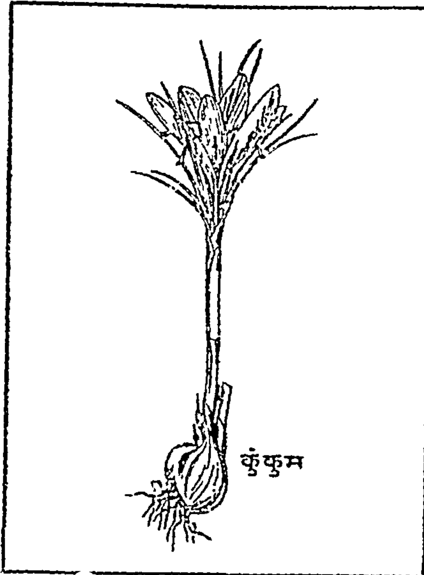
66. Bauhinia variegata L.



67. Luffa acutangula var amara Clerke.



68. Schleichera trijuga Willd.



69 Crocus sativus L



70. Acacia catechu Willd.



71. Balsamodendron mukul Hook.



72. Abrus precatorius L.



73. Tinospora cordifolia Miers.



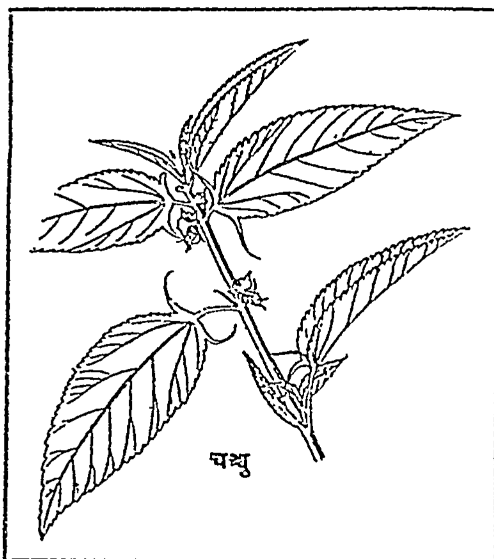
74. Tribulus terrestris L.



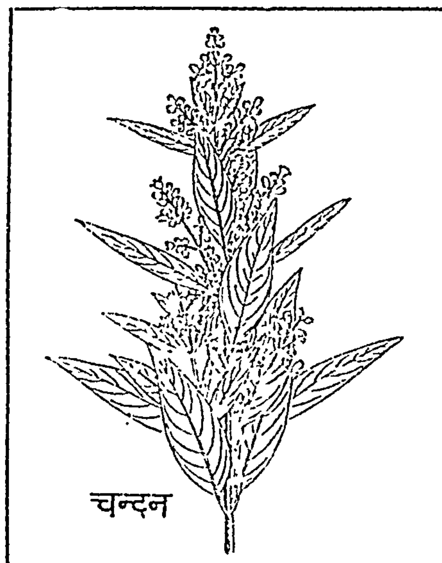
75. Elephantopus Scaber L.



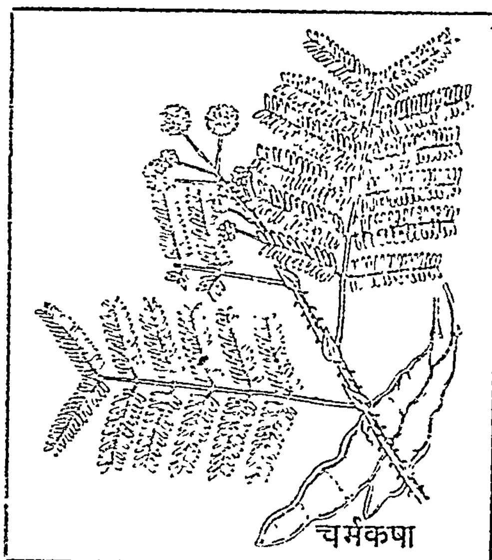
76. एडगज Cassia tora L.



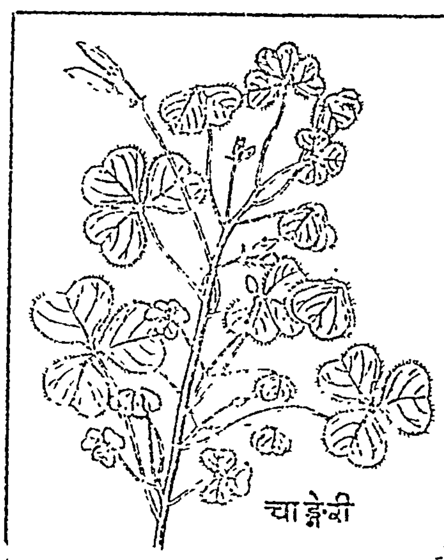
77. Corchorus olitorius L.



78. Santalum album L.



79. Acacia concinna D. C.



80. Oxalis corniculata L



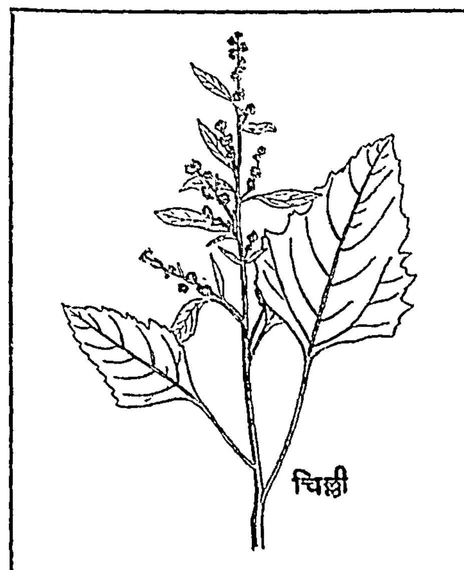
81. Plumbago zeylanica L.



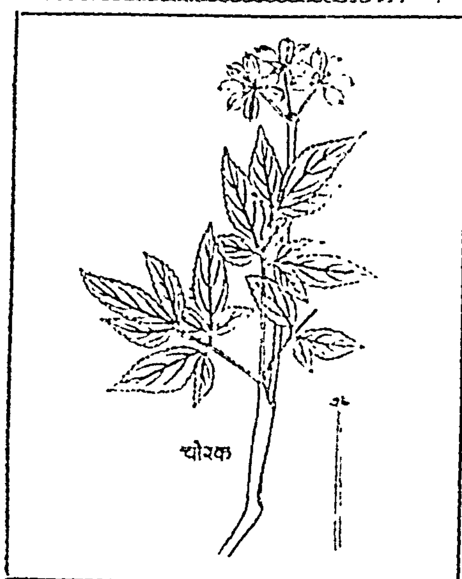
82. Holoptelia integrifolia Planch.



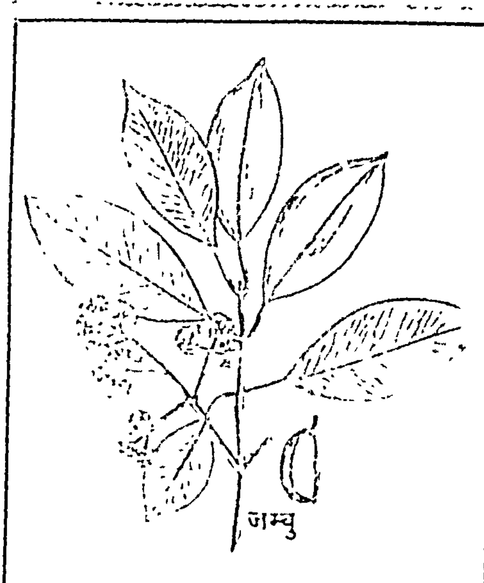
83. Cucumis melo L.



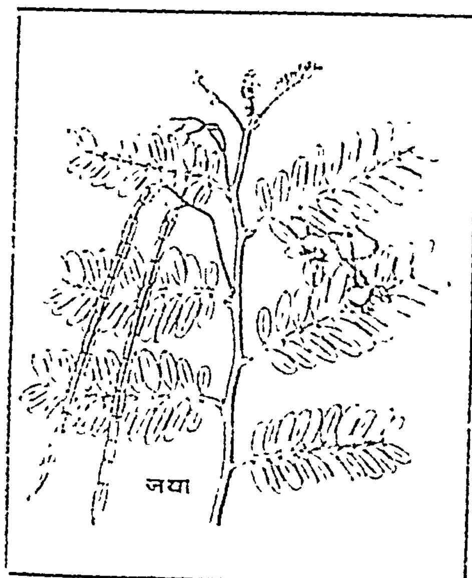
84. Chenopodium album L.



85. Angelica glauca Edgew.



86. Eugenia jambos Lamk.



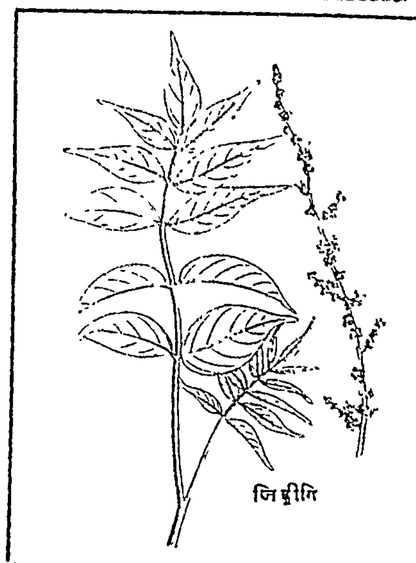
87. Sesbania egyptica Pers.



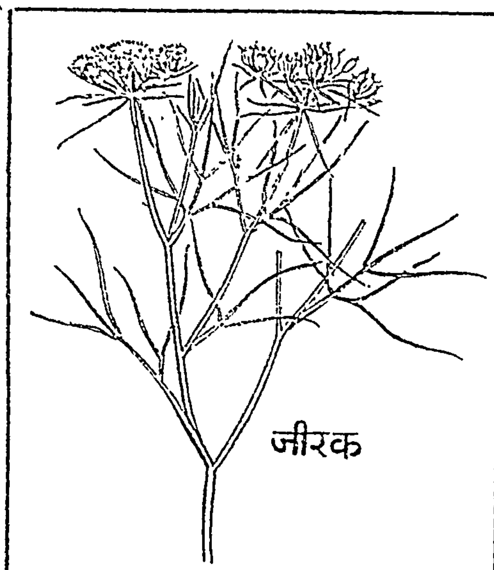
88. Lippia nodiflora Rich.



89. Myristica fragrans Houtt.



90. जिङ्गिनी Odina wodier Roxb.



91. Cuminum cyminum L.



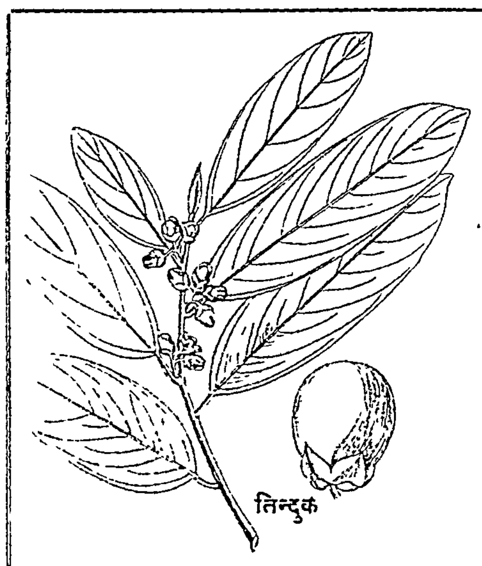
92. Celastrus paniculata Willd.



93. Cinnamomum tamala Fr. Nees.



94. तिन्तिडीक Tamarindus indica. L.



95. Diospyros embryopteris Pers.



96. Sesamum indicum L.



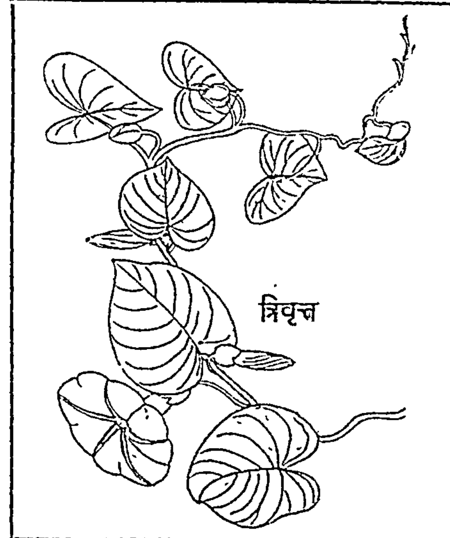
97. Gynandropis pentaphylla D. C.



98. Zanthoxylum alatum Roxb.



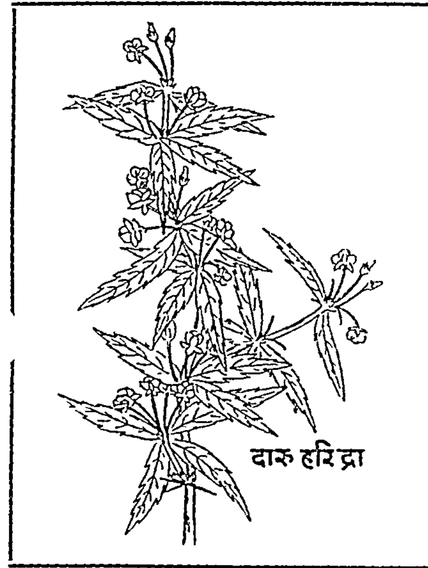
99. Morus indica L.



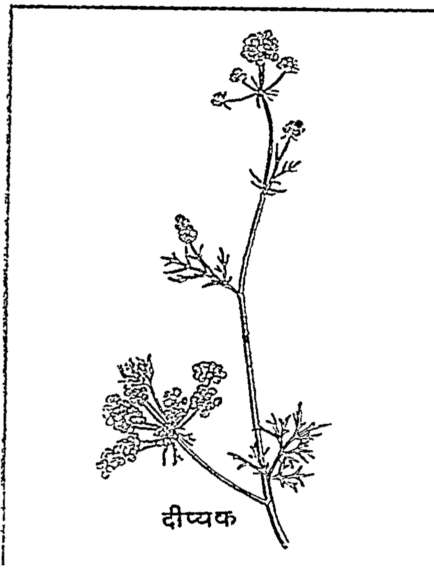
100. त्रिवृत् Ipomea turpethum Br.



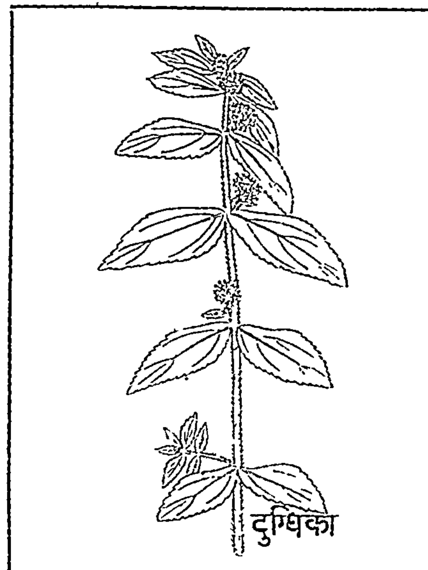
101. Punica granatum L.



102. Berberis aristata D. C.



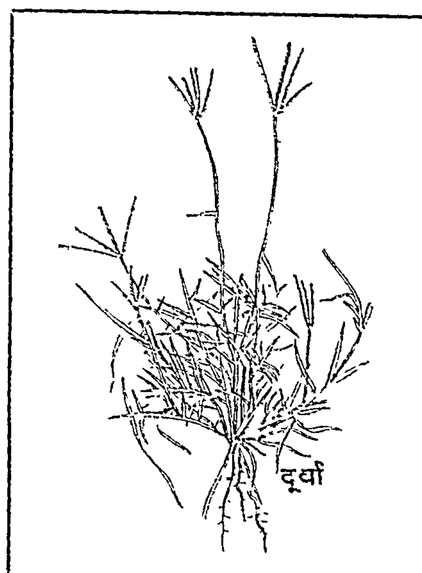
103. Carum copticum Benth.



104. Euphorbia pilulifera L.



105. Fagonia arabica L.



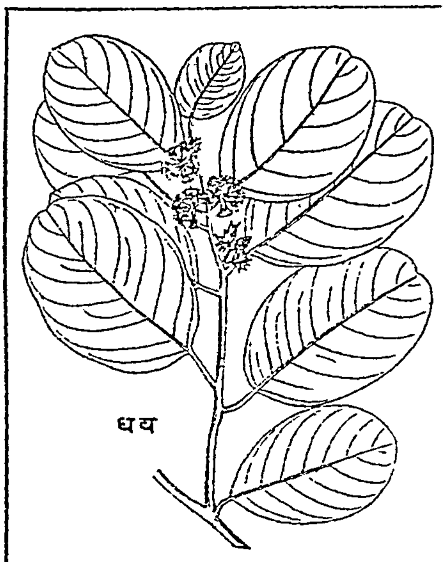
106. Cynodon dactylon Pers.



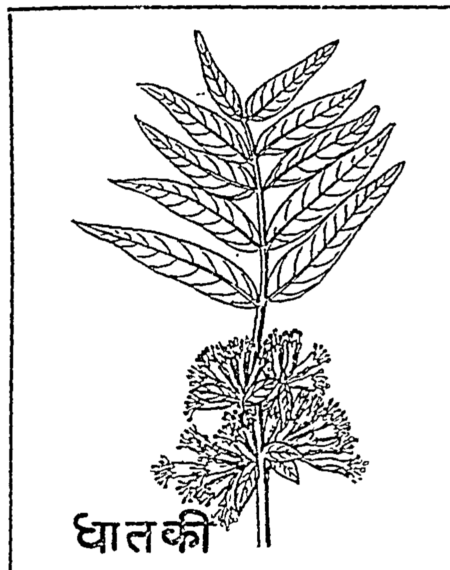
107. Vitis vinifera L.



108. Grewia tiliefolia Vahl.



109. Anogeissus latifolia Wall.



110. Woodfordia floribunda Salisb.



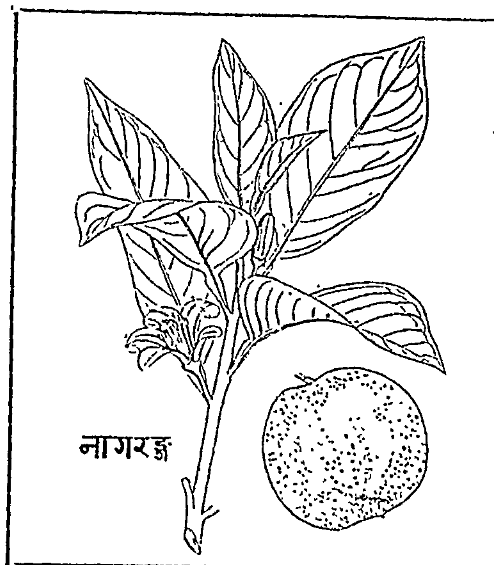
111. Coriandrum sativum L.



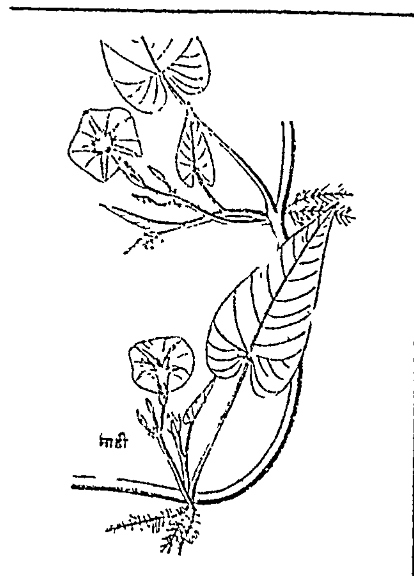
112. Ficus retusa L.



113. Onosma echioides L.



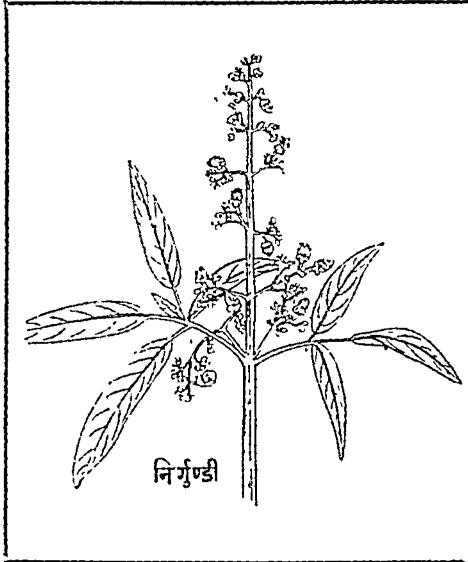
114. Citrus aurantium L.



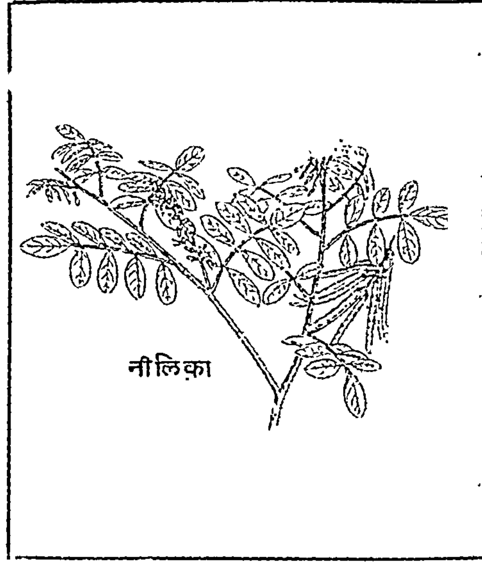
115. Ipomea aquatica Forsk.



116. Melia azādirachta L



117. Vitex negundo L.



118. Indigofera tinctoria L.



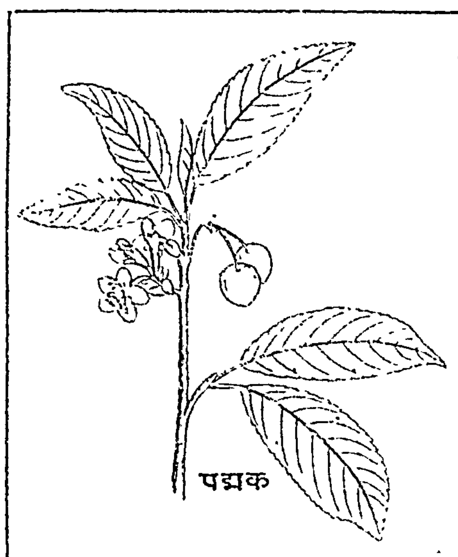
119. Ficus Bengalensis L.



120. Trichosanthes dioica Roxb



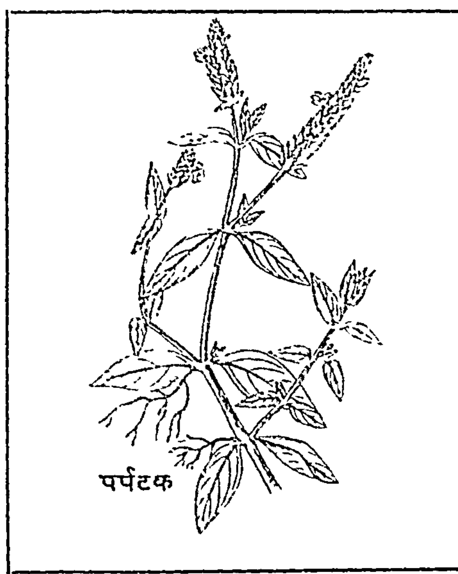
121. Cinnamomum iners Reinw.



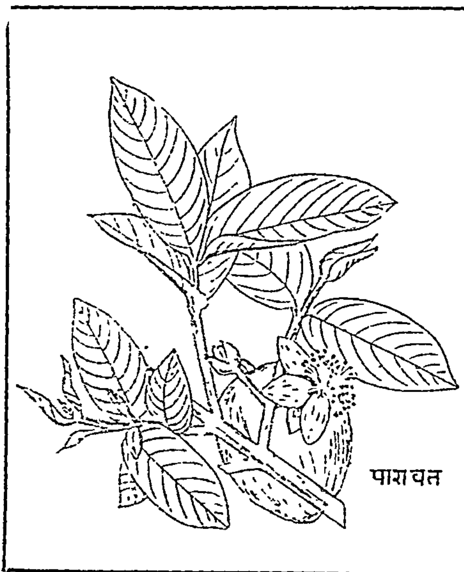
122. Prunus puddum Roxb.



123. परूषक Grewia asiatica L.



124. Rangia repens Nees.



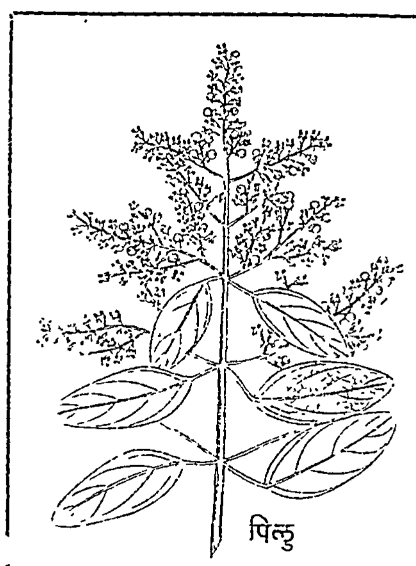
125. Psidium guyava L.



126. Saxifraga/ligulata Wall.



127. Piper longum L.



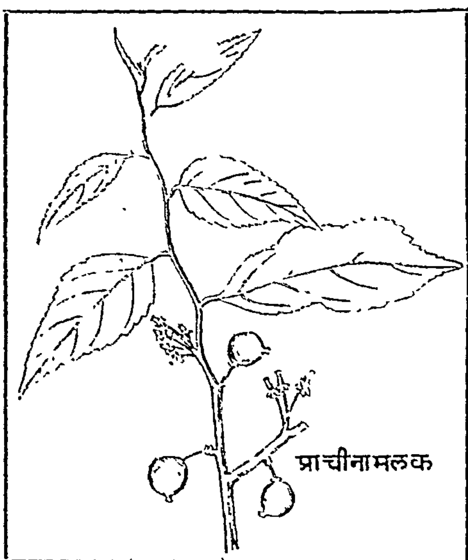
128. - पीलु Salvadora persica L.



129. Berhavia repens L.



130. Pederia fetida L.



131. Flacourtia cataphracta Roxb.



132. Aglaia roxburghiana Miq.



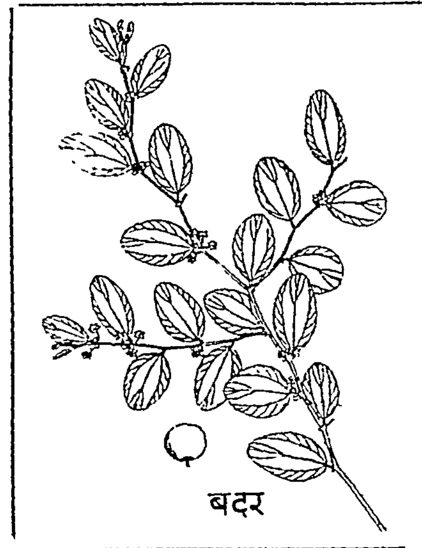
133. Ficus tsiela Roxb.



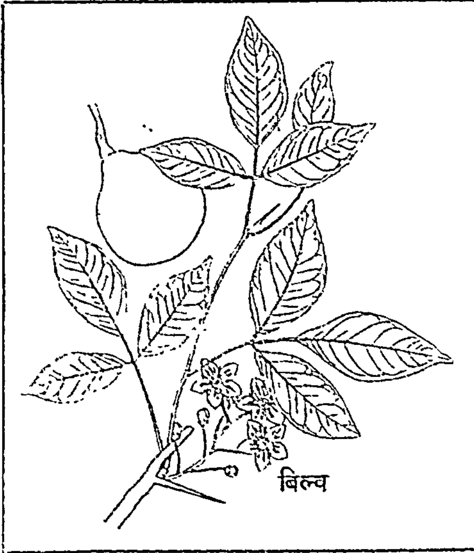
134. Sapindus trifoliatus L.



135. Mimusops elengi L.



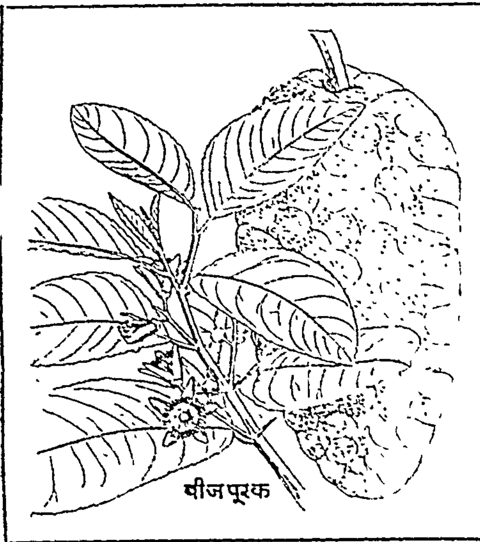
136. Zizyphus jujuba Lamk.



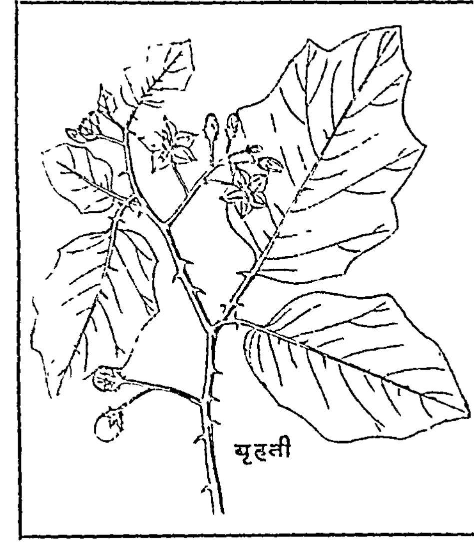
137. Ægle marmelos Corr.



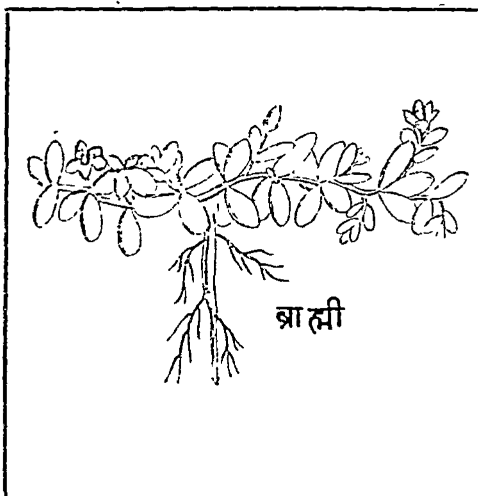
138. Pterocarpus marsupium Roxb.



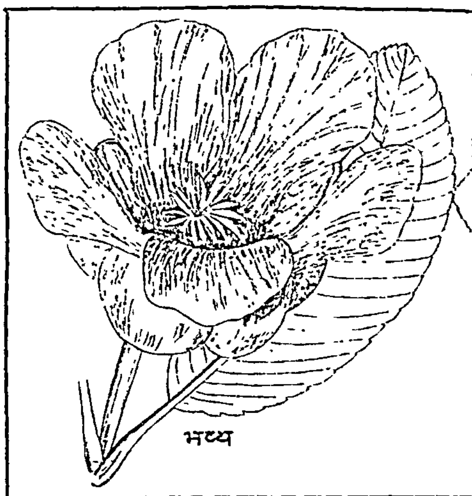
139. Citrus medica L.



140. Solanum indicum L.



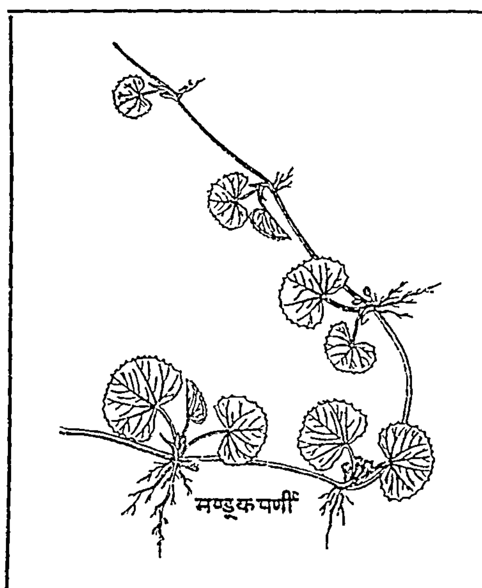
141. Herpestis monniera Benth.



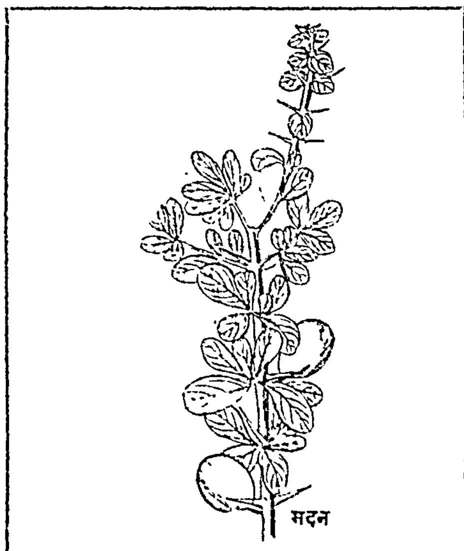
142. Dillenia indica L.



143. Eclipta alba Hassk.



144. Hydrocotyle asiatica L.



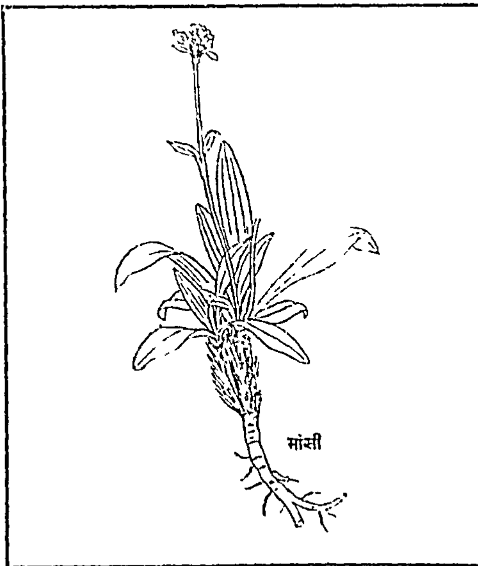
145. Randia dumetorum Lam.



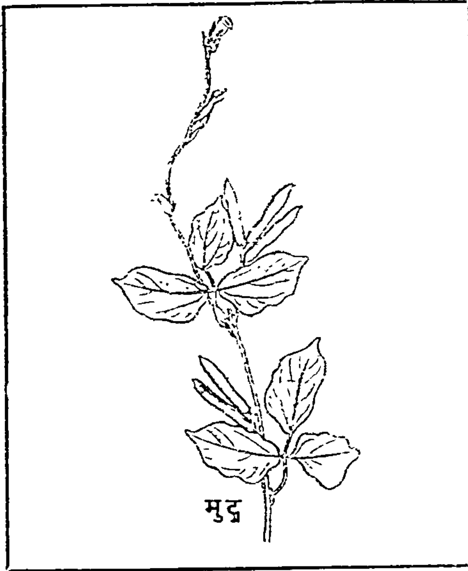
146. Bassia latifolia Roxb.



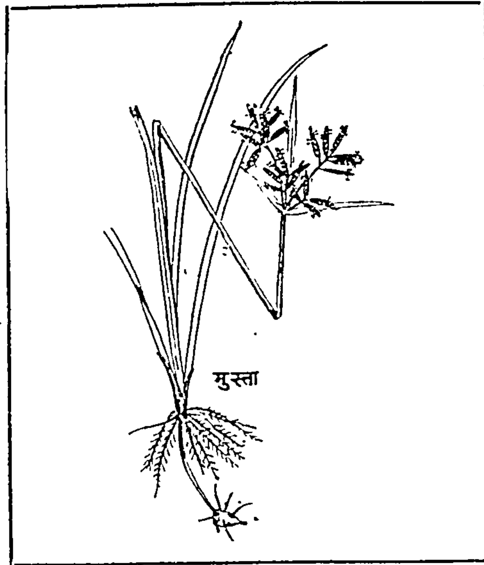
147. Piper nigrum L.



148. Nardostachys jatamansi D.C.



149. Phaseolus mungo L.



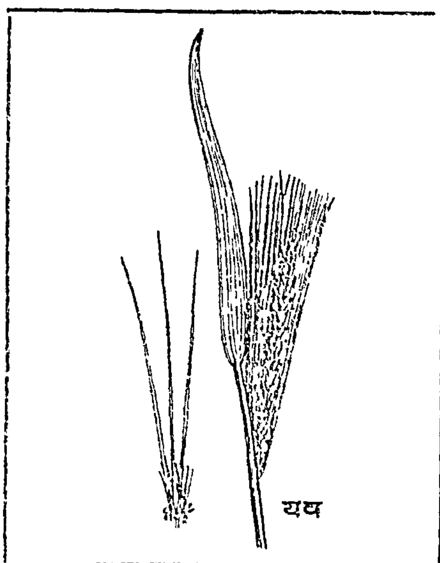
150. Cyperus rotundus L.



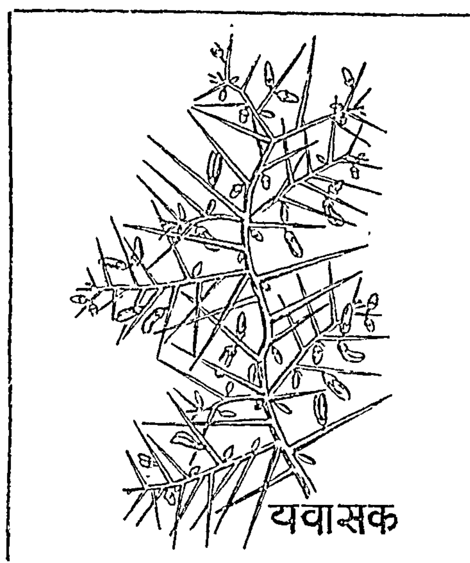
151. Clematis triloba Heyne.



152. Raphanus sativus L.



153. Hordeum vulgare L.



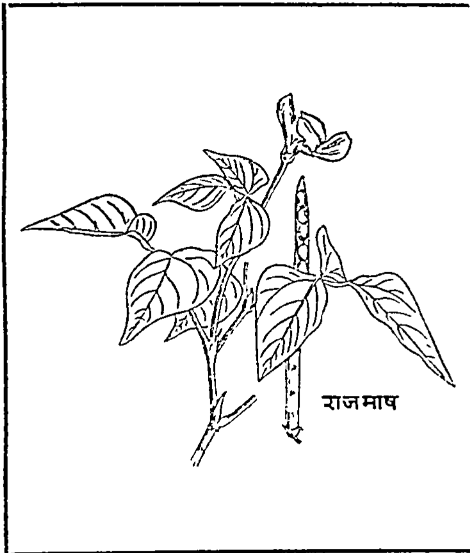
154. Alhagi maurorum. Desv.



155. Nymphœa lotus L



156. Dœmia extensa Br.



157. Vigna catiang Endl.



158. Mimusops hexandra Roxb.



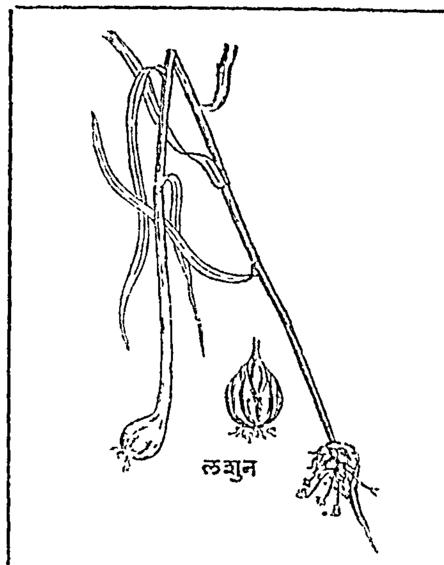
159. Pluchea lanceolata Oliv.



160. Loranthus falcatus L.



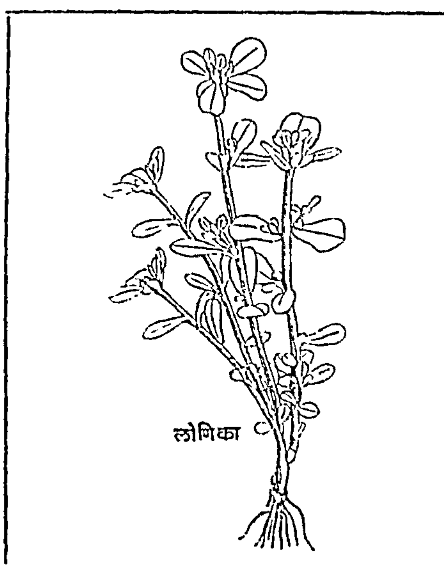
161. Soymida febrifuga Juss.



162. Allium sativum L.



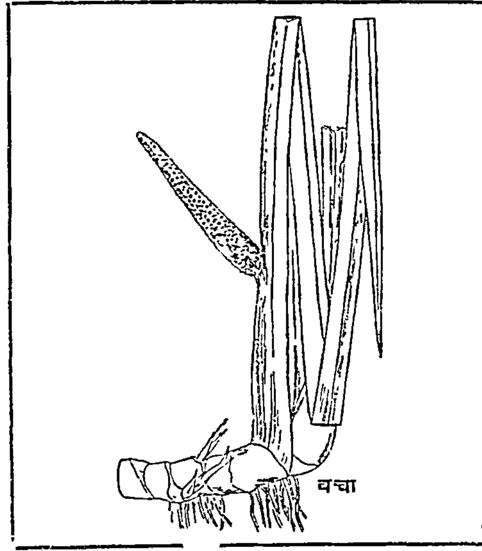
163. Artocarpus Lokoocha Roxb.



164. Portulaca oleracea L.



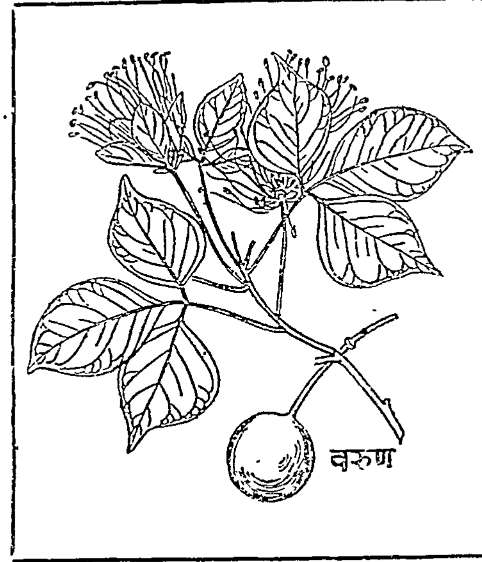
165. Symplocos racemosa Roxb.



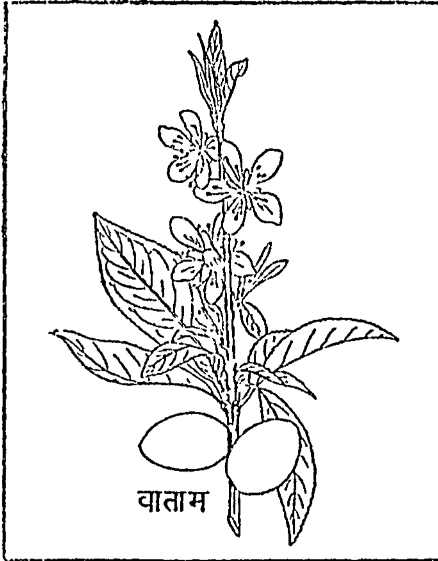
166. Acorus calamus L.



167. Salix tetrasperma Roxb.



168. Cratœva religiosa Forst.



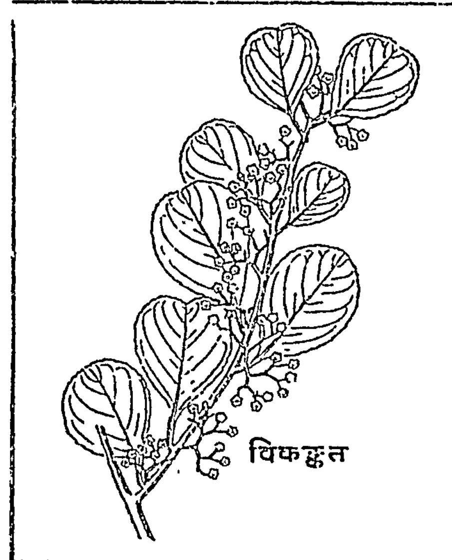
169. Prunus amygdalus Baill.



170. Solanum melongena L.



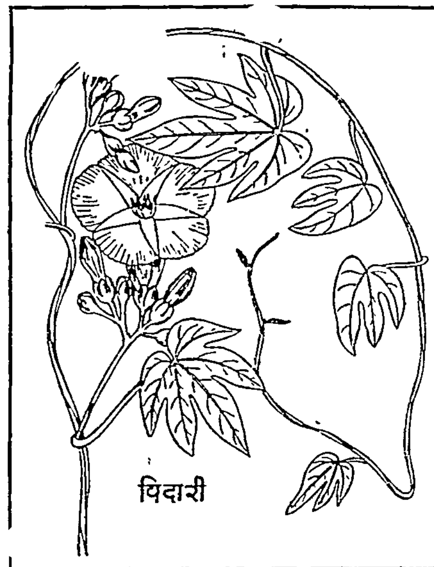
171. Adhatoda vasica Nees



172. Gymnosporia montana Benth.



173. Embelia ribes Burn.



174. Ipomœa digitata L.



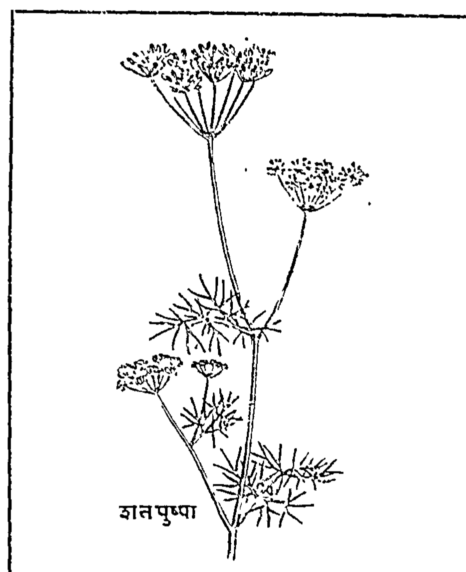
175. Evolvulus alsinoides L.



176. Crotalaria juncea L



177. Crotalaria verrucosa L.



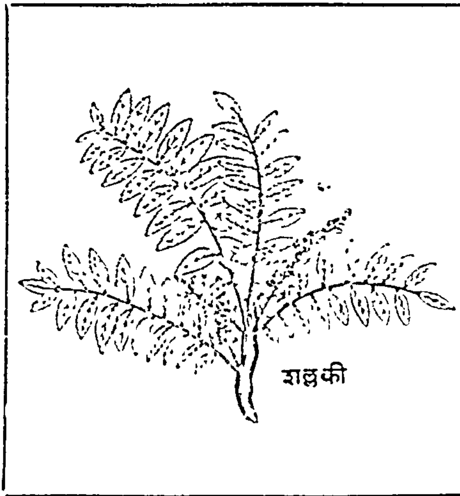
178. Peucedanum graveolens Benth.



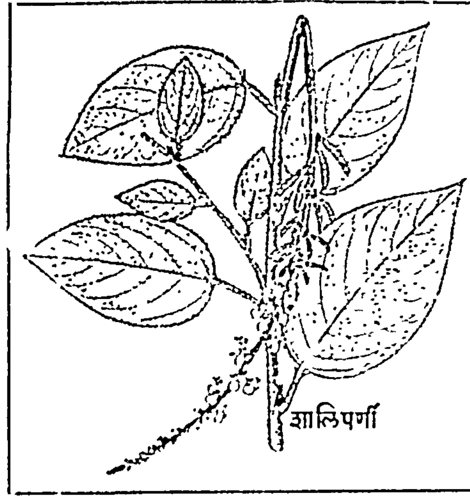
179. Asparagus racemosus Willd.



180. Prosopis spicigera L.



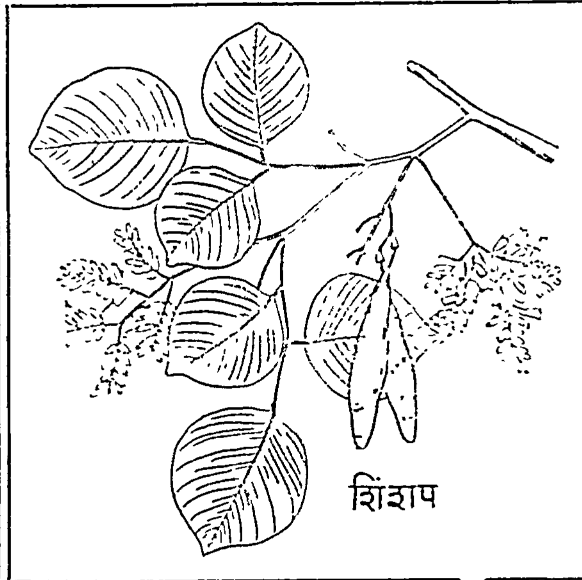
181. Boswellia serrata Roxb.



182. Desmodium gangeticum D. C.



183. Bombax malabaricum-D. C.



184. Dalbergia sissoo Roxb.



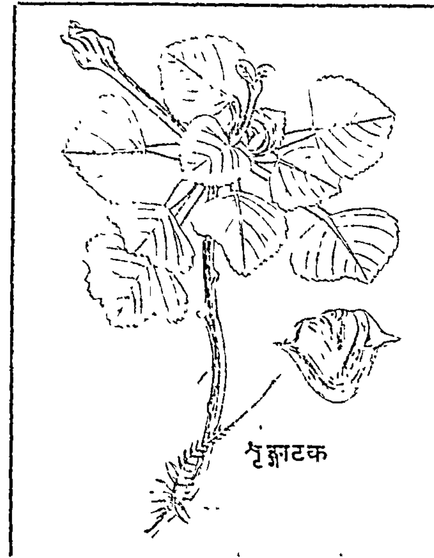
185. Moringa pterygosperma Gœrtn.



186. Albizzia lebbeck Benth.



187. Zingiber officinale Rose.



188. Trapa bispinosa Roxb.



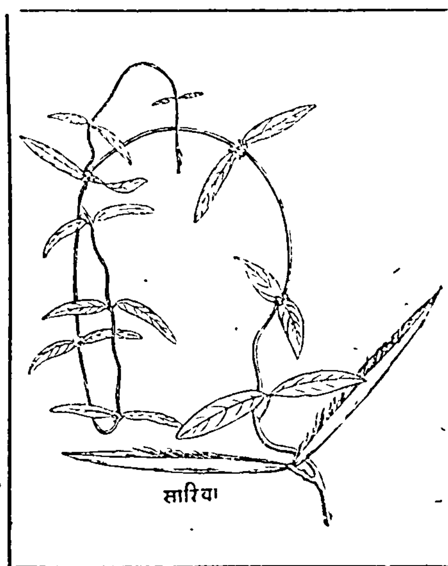
189. Alstonia scholaris R. Br.



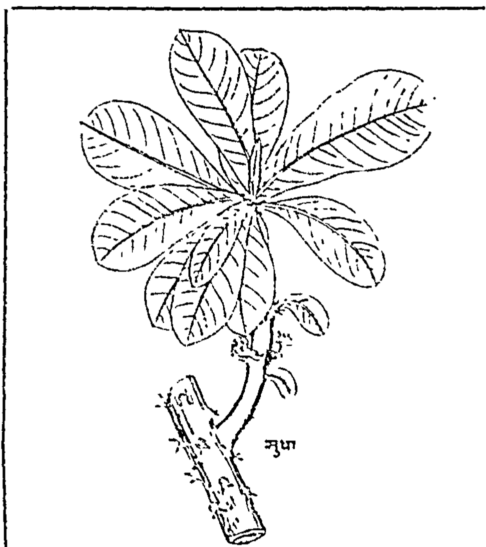
190. Shorea robusta Gœrtn.



191. Brassica Campestris L.



192. Hemisdesmus Indicus Br.



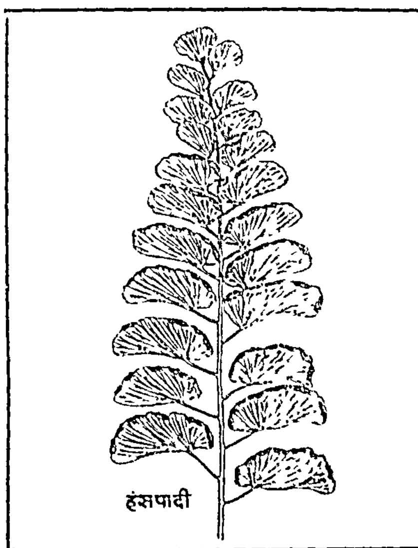
193. Euphorbia nerifolia L.



194. Ocimum sauctum L.



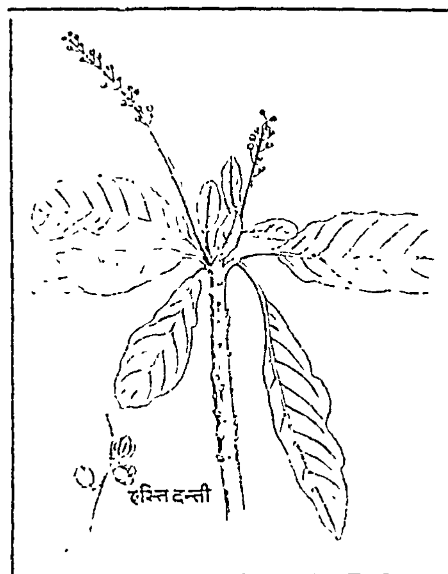
195. Proralea corylifolia L.



196. Adiantum lunulatum Burm.



197. Juniperus communis L.



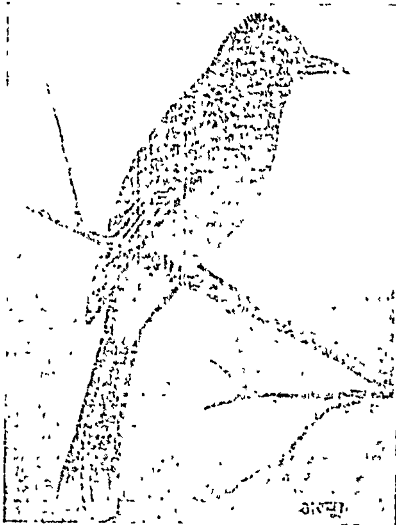
198. Croton oblongifolius Roxb.



199. Adina cordifolia Hook.



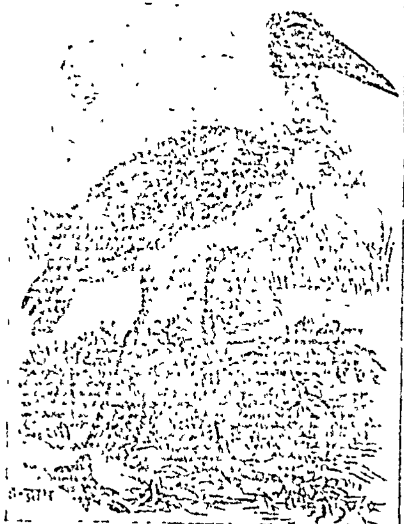
200. Argemœ Mexicana L.



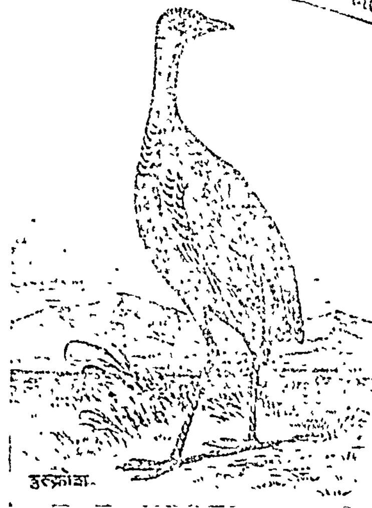
1. अत्यूह The bulbul



2. अम्बुकुक्कुटी The water hen



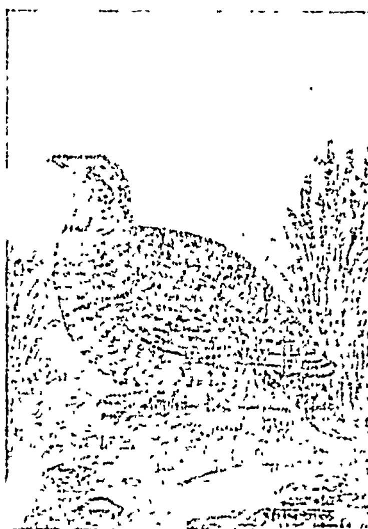
3. इन्द्राभ The adjutant



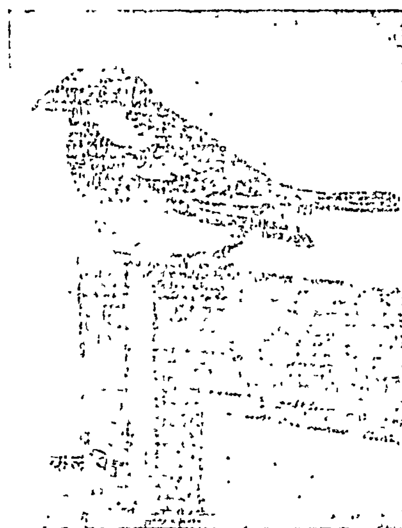
4. उत्क्रोश The trumpeter



5. कङ्क The heron



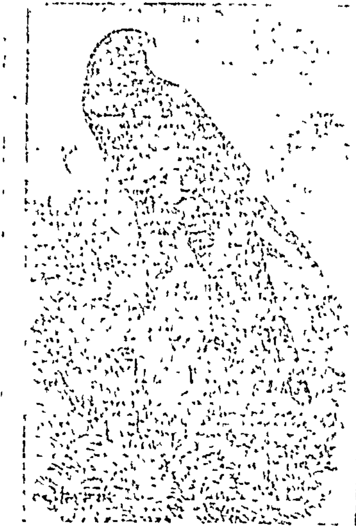
6. कपिञ्जल The grey partridge



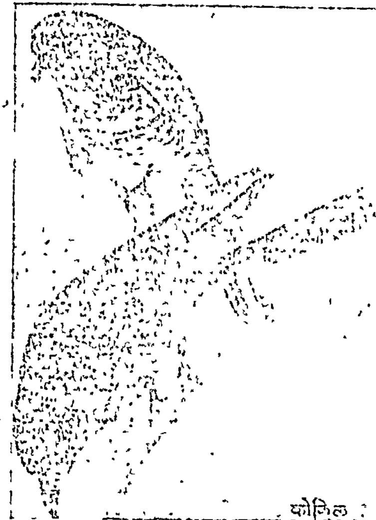
7. कलविङ्क The house sparrow



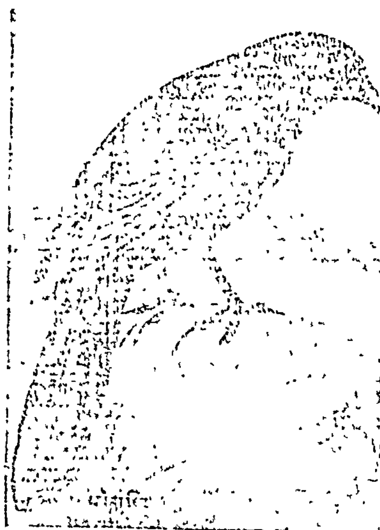
8. कुरर The fish eagle



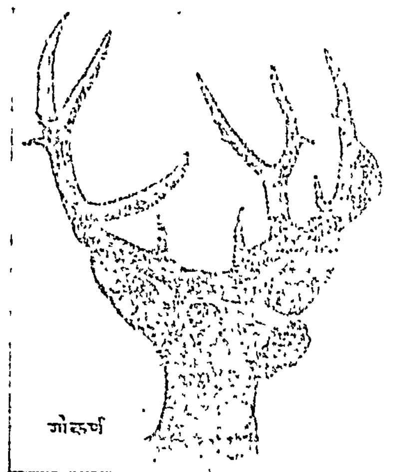
9. कुलिङ्क The sparrow hawk



10. कोकिल The koel



11. कोयष्टि The Coucal



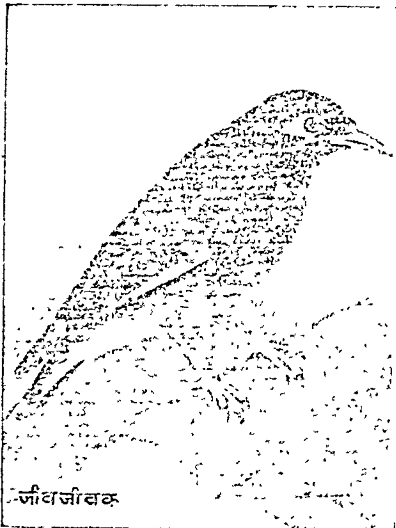
12. गोकर्ण The mule deer



13. गोधा Iguana



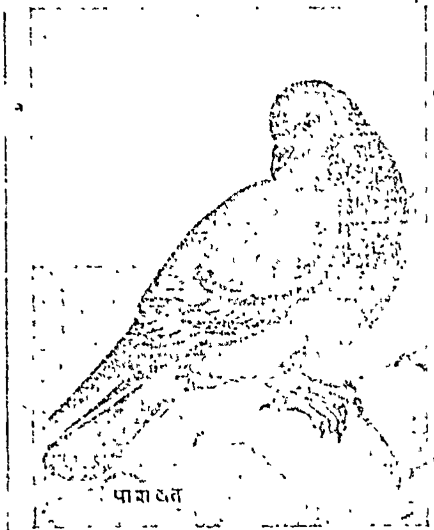
14. चारुष्क The gazelle



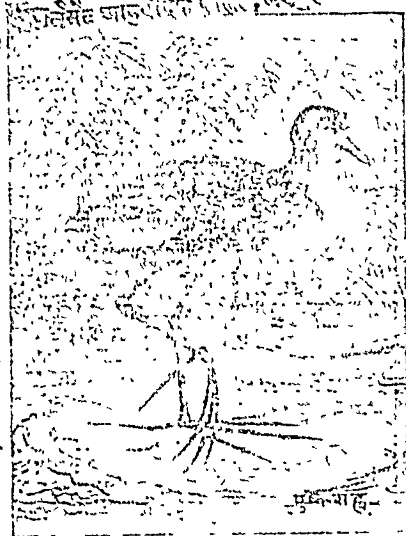
15. जीवञ्जीवक The common mynah



16. दुन्दुभि The hornbill



17. पारावत The pigeon



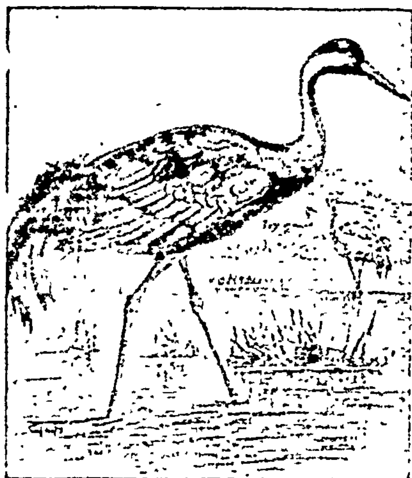
18. पुष्कराह्व The lily trotter



19. पृषत The chital (Spotted deer)



20. प्रियात्मज The babbler



21. बक The common crane



22. बलाका The snow wreath crane



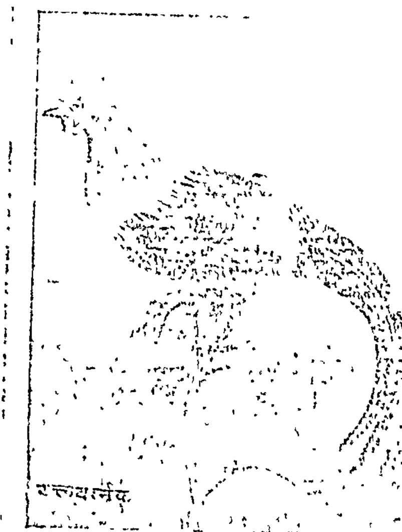
23. भास The bearded vulture



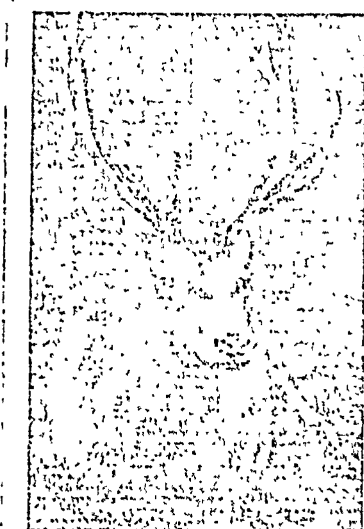
24. मत्स्य The fish



25. मृणालकण्ठ The snake bird



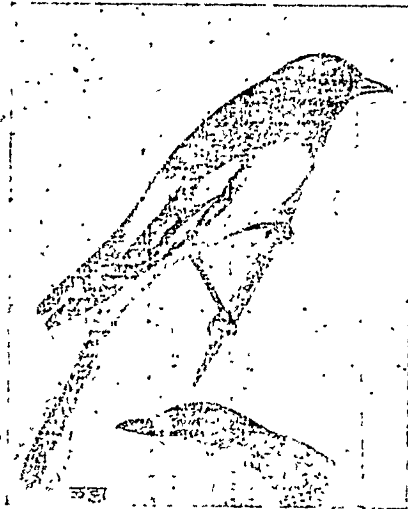
26. रक्तवर्त्मक The red jungle fowl



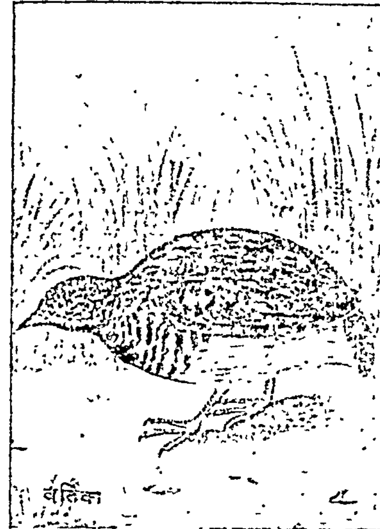
27. राम The hangal or Kashmir deer



28. लट्वक The minivet



29. कड्डा The scarlet minivet



30. वर्तिका The female bustard or button quail



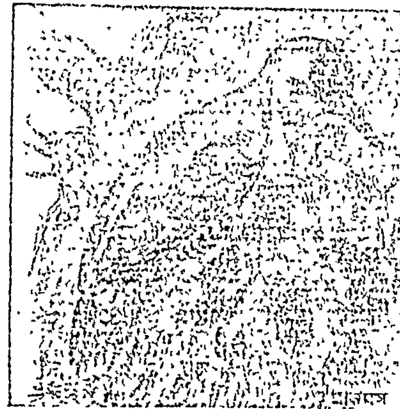
31. वर्तीरक The rain quail



32. वानर The monkey



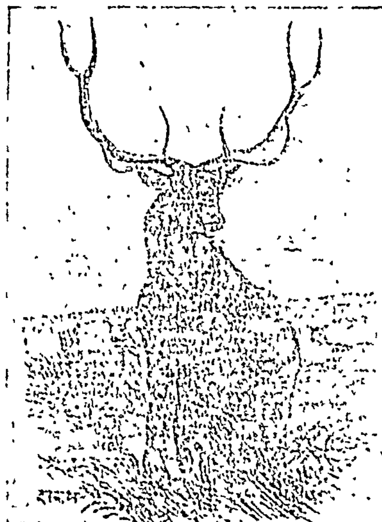
33. वार्तीक The jungle bush quail



34. शतपत्र The wood pecker



35. शम्बर The Indian sambhar



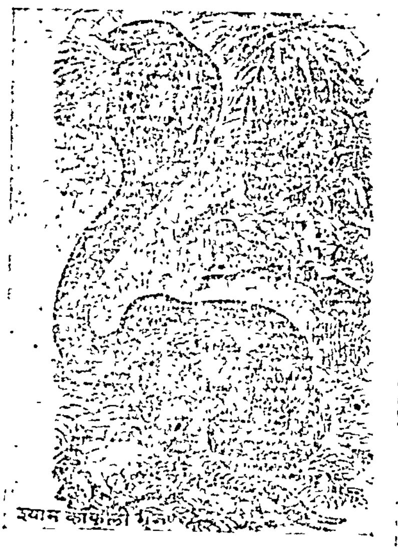
36. शरभ The elk or wapiti



37. शशघ्नी The golden eagle



38. शारपद The stork



39. श्यामकाकुलीमृग The dark-brown python



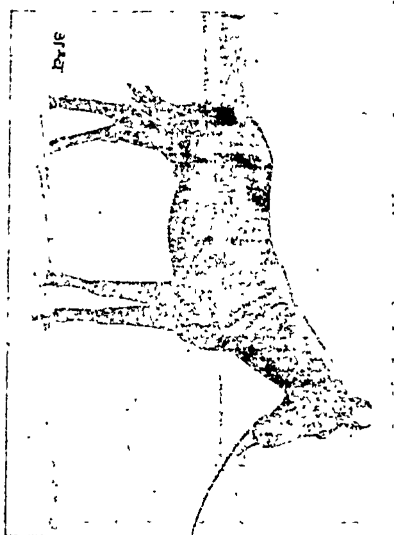
4U. श्येन The hawk



41. सिंह The lion



42. हंस The swan



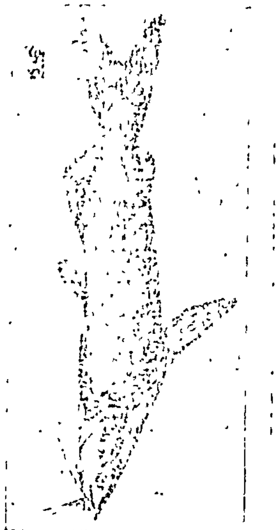
43. अश्व The horse



44. अश्वतर The mule



45. आरा The cobbler's owl bird (Avocet)



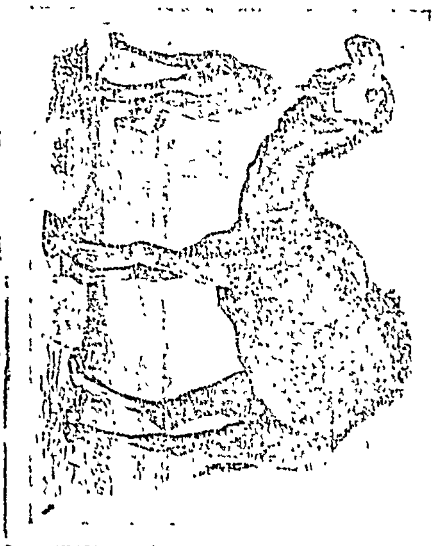
46. उद्र The cat-fish



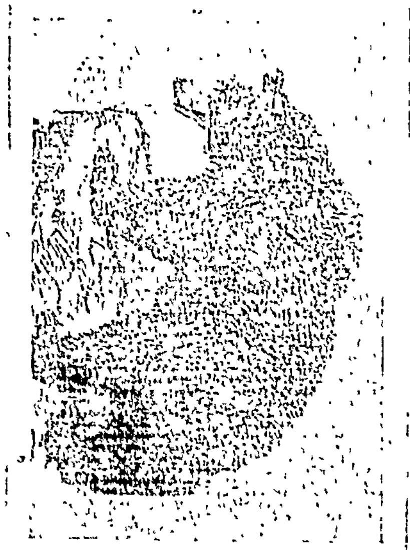
47. उरभ्र The oorial (wild sheep)



48. उलूक The owl



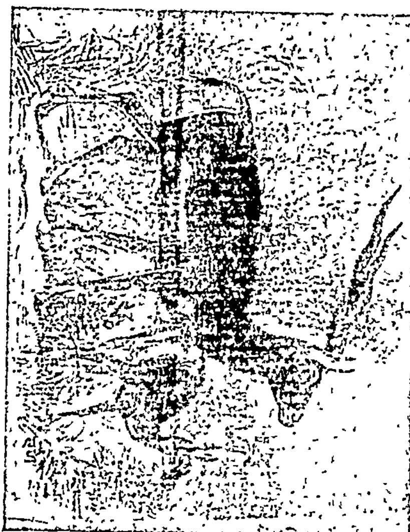
49. उष्ट्र The camel



50. ऋक्ष The bear



51. ऋश्य The musk deer



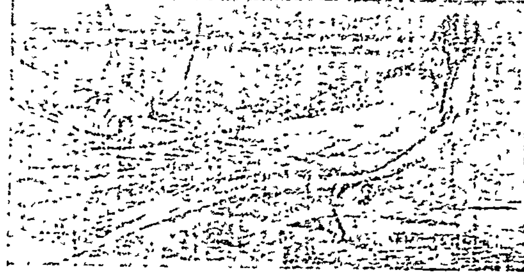
52. एण The black buck (Indian antelope)



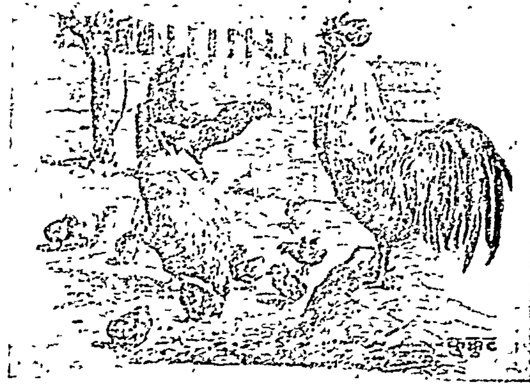
53. श्वद्री The marmet



54. कर्कट The crab



55. काकतुण्डक The common river tern



56. कुक्कुट The cock



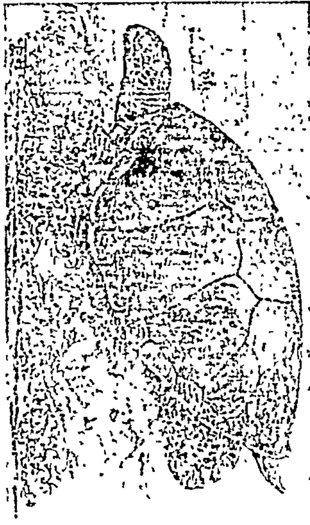
57. कुम्भीर The gangetic garial



58. कुरङ्ग The roe deer



59. कुलिङ्ग The baya of weaver bird



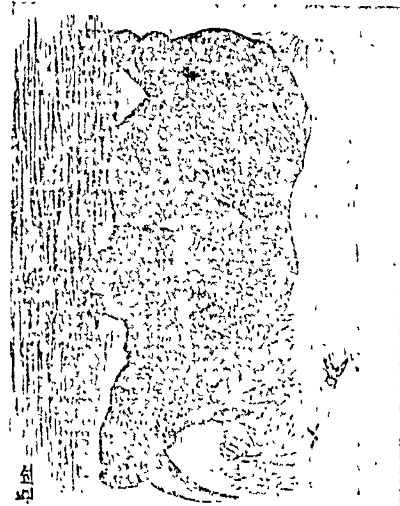
61. कूर्म The tortoise



60 श्विका The hedgehog



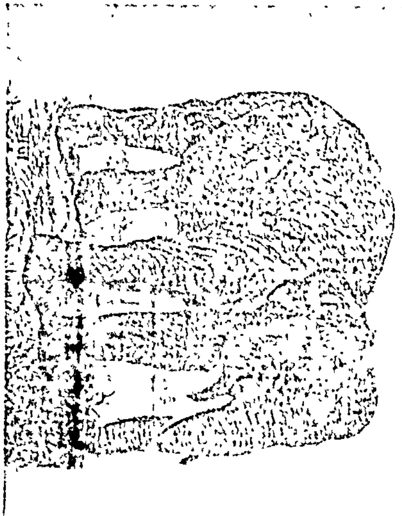
62. कोट्टकारक The Indian muntjak (Barking deer)



63. खड्ग The rhinoceros



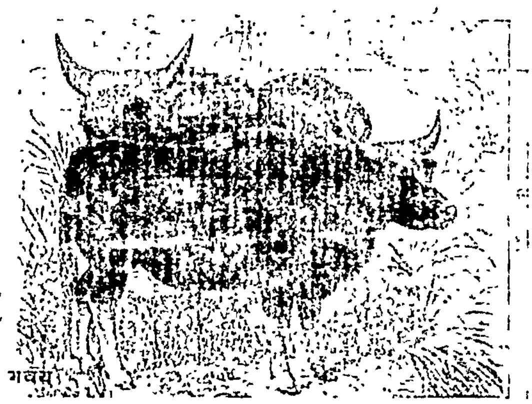
64. खर The ass



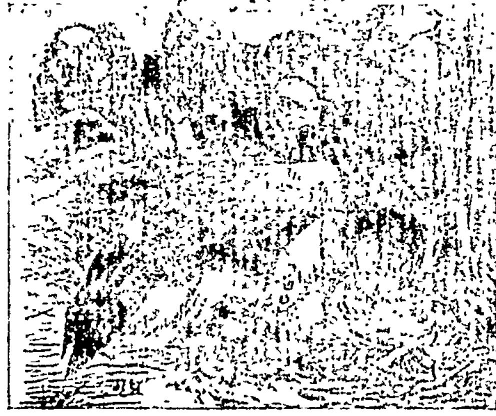
65. गज The elephant



66. गण्डक Gecko



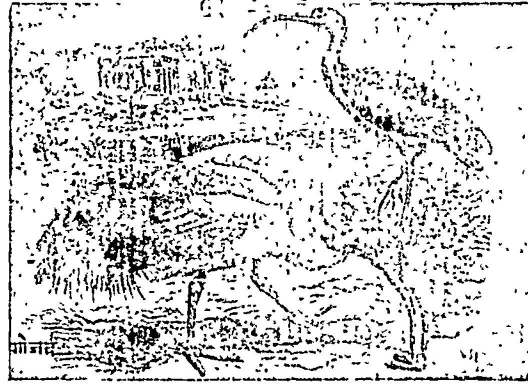
67. गवय The gayal cow



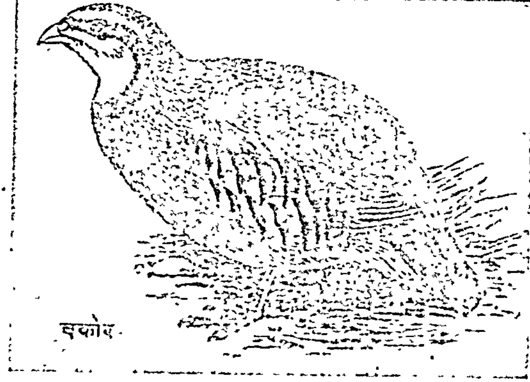
68. गृध्र The vulture



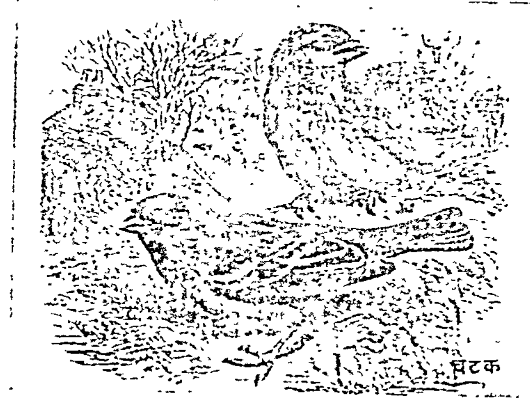
69. गो The cow



70. गोनर्द The hill partridge



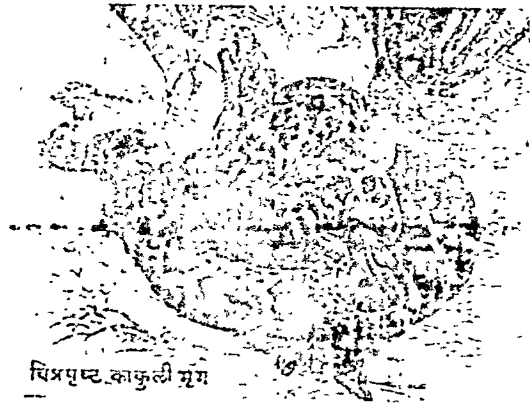
71. चकोर The chukor



72. चटक The tree sparrow



73. चमर The yak



74. चित्रपृष्ठकाकुलीमृग The reticulated python



75. चिल्लट The musk shrew



76. उलूपी The susu (Gangetic dolphin)



77. जटी The hoopoe



78. क्रोष्टुक The jackal



79. तरक्षु The hyena



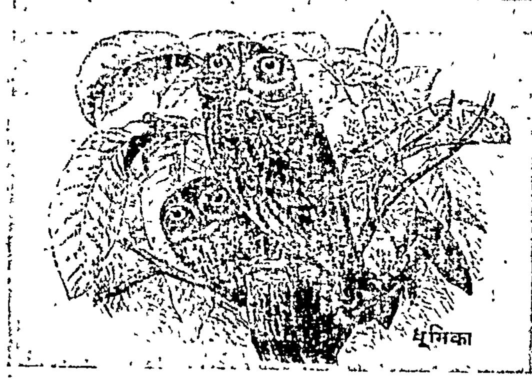
80. तित्तिरि The partridge



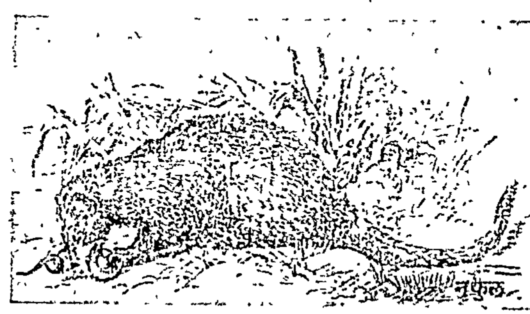
81 तिमिङ्गिल The whale



82. द्वीपी The panther



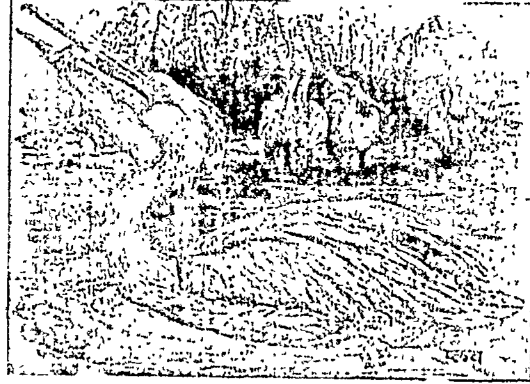
83. धूमिका The owlet



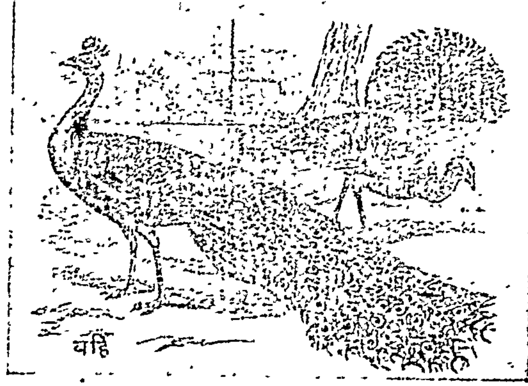
84. नकुल The mongoose



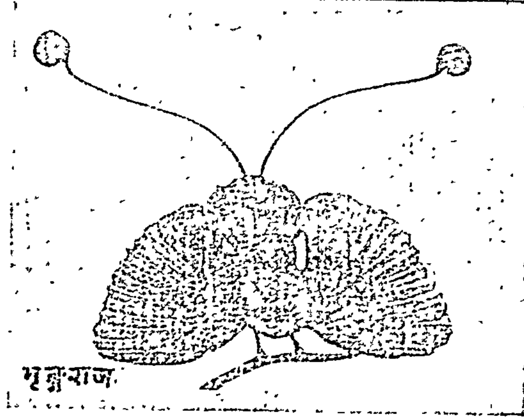
85. नन्दीमुखी The flamingo



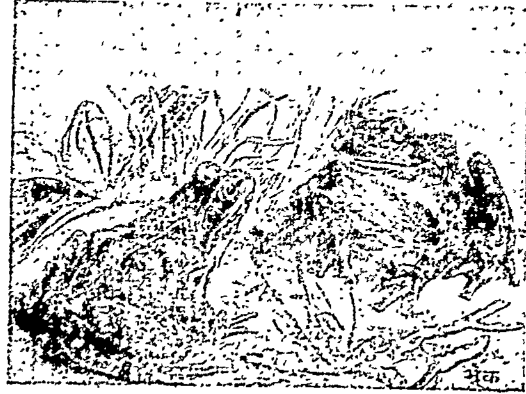
86. प्लव The pelican



87. बर्हि The peacock



88 भृङ्गराज The king bird of paradise



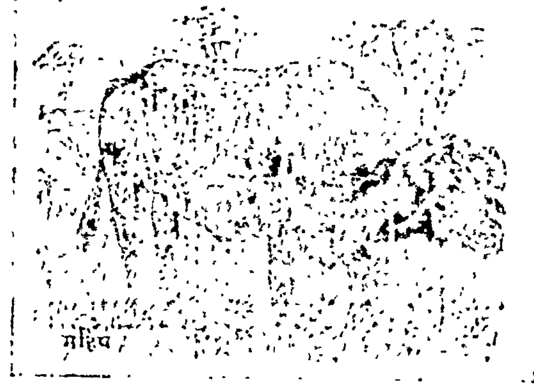
89. भेक The frog



90. मकर The magar (the great Indian crocodile)



91. मधुहा The honey buzzard



92. महिष The buffalo



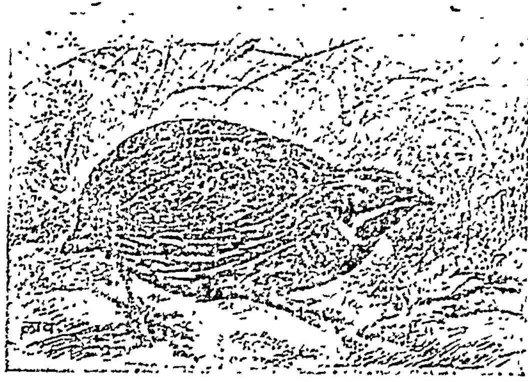
93. मार्जार The cat



94. मूषिक The mouse



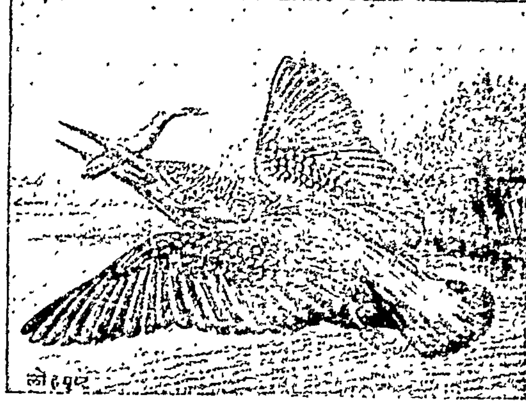
95. मृगमातृका The hog deer



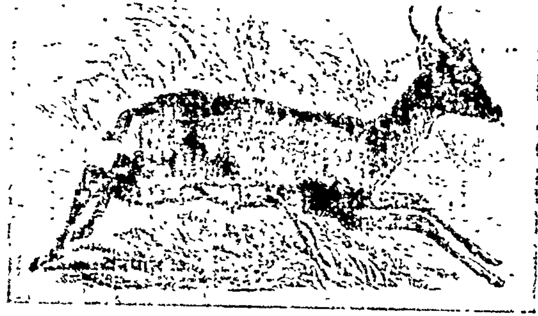
96. लाव The commcn quall

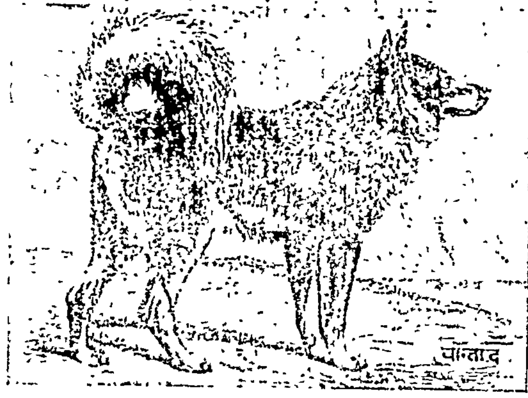


97. लोपाक The fox



98. लोहपृष्ठ The king fisher

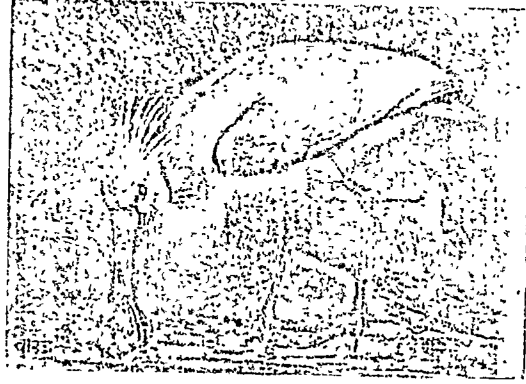

99. चरपोत The deerlet



100. वान्ताद The dog



101. वायस The crow


102. वारड The spoon-bill



103 वृक The wolf



104. व्याघ्र The tiger



105. शङ्ख The conch snail



106. शरारी The skimmer or scissorbill



107. [illegible] The hare



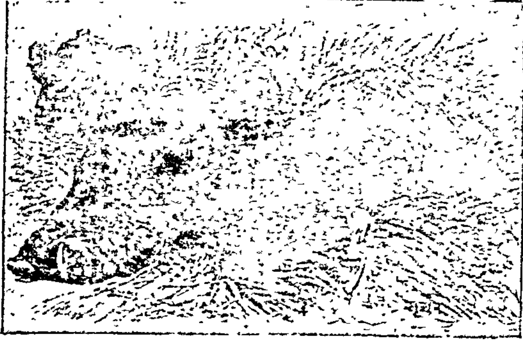
108. [illegible] The estuarine crocodile



109 [illegible] The pearl oyster



110. [illegible] The porcupine



111. चमर The wild boar



112. हरिण The red deer